सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर : समूह या सेल अगुवा

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 6

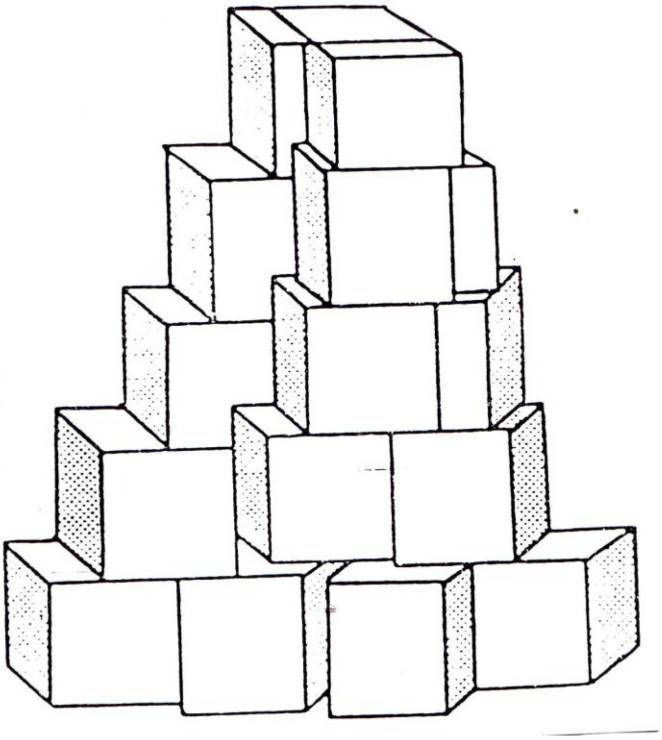

स्तरः

5. सेवक

4. अगुवा / पास्टर

3. समूह या सेल अगुवा

2. चेला

1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

उद्देश्य:

- ### उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

  (विकसित होना / परिपक्व होना)

  - यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

  - 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

  - 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

  - कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- ### और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

  (गुणा / पुनरुत्पादन)

  - 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

  - 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

  - इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

  - 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

सिद्धान्त : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11 :36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक क्र.: 6

क्रमाँक | पृष्ठ

- मैं संदेश कैसे तैयार करूँ? (एक आधारीय परिचय) 767
- वचन की सेवा का महत्त्व (संदेश की तैयारी) 771
- संदेश का प्रचारक 780
- बाइबल अध्ययन की अगुआई कैसे करें 785
- बाइबल का सफलतापूर्वक अध्ययन करना (25 विचार) 790
- अपने लिए बाइबल का अध्ययन कैसे करें 797
- परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने के बाइबल के तरीके 805
- आराधना के अगुवों के लिए निर्देश 812
- आराधना में प्रभावशाली तरीके से अगुआई कैसे करें 816
- एक आराधना के अगुवे को कार्य 825
- कलीसिया स्तुति और आराधना का स्थान क्यों हो? (प्रभु की स्तुति और आराधना कैसे करें?) 827
- बाइबल की स्तुति और आराधना (11 अध्याय) 838
  - (1) नया याजक का पद
  - (2) स्तुति की आत्मा
  - (3) हमें प्रभु की स्तुति क्यों करनी चाहिए
  - (4) स्तुति परमेश्वर की आशीष कैसे लाती है
  - (5) स्तुति में रुकावटें
  - (6) प्रभु की स्तुति करने के बाइबल के तरीके
  - (7) स्तुति रूपी बलिदान चढ़ाना
  - (8) स्तुति और आराधना
  - (9) स्तुति और आराधना में संगीत
  - (10) एक आराधना सभा की अगुआई करना - अगुवों में विशेषताएँ
  - (11) स्तुति का भविष्यसूचक महत्त्व
- पुराने नियम की पुस्तकों की संक्षिप्त रूपरेखा 871
- नए नियम की पुस्तकों की संक्षिप्त रूपरेखा 874
- बाइबल के इतिहास के युग 876
- पुराने नियम और नए नियम में विरोध 879
- बाइबल की पुस्तकों के विश्लेषण 880

एक संक्षिप्त अध्ययन: मैं संदेश कैसे तैयार करूँ?

नहेम्याह 8:8 "उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से पढ़कर अर्थ समझा दिया; और लोगों ने पाठ को समझ लिया।"

इस वचन से एक संदेश के तीन सबसे आधारीय पहलू साफ-साफ देखे जा सकते हैं:

एक वचन होना चाहिए (उन्होंने व्यवस्था की पुस्तक पढ़ी)
वचन को समझाया जाना चाहिए
वचन का एक व्यावहारिक उपयोग होना चाहिए (समझ लिया)

एक संदेश के सात भाग होते हैं:

1. **वचन**

यह पवित्रशास्त्र का वह भाग है जिससे बारे में संदेश है।
हर संदेश का प्रायः एक मुख्य वचन होना चाहिए, परन्तु आप अपने संदेश या विषय को सहारा देने के लिए और वचन भी इस्तेमाल कर सकते हो।

उदाहरण:	मत्ती 21:12-16	मुख्य वचन है, जो निम्नलिखित की बात करता है:
	आयत 12	शुद्धता
	आयत 13	प्रार्थना
	आयत 14	सामर्थ्य
	आयत 15-16	सिद्ध हुई स्तुति

संदेश के अन्त तक, किसी भी सुननेवाले को मुख्य वचन के महत्त्वपूर्ण विषयों को याद कर पाने और पहचानने योग्य होना चाहिए।

एक गलती जो नए प्रचारक सामान्य रूप से करते हैं यह है कि वे बहुत सारे अलग-अलग वचन इस्तेमाल करते हैं। परिमाम क्या होता है?

- सुननेवाले पता नहीं लगा पाते कि बल कहाँ दिया गया है।
- जब आप बहुत सारे वचन इस्तेमाल करोगे तो सुननेवालों को उलझन में डाल दोगे।
- अन्त में वे कुछ भी याद नहीं रख पाएँगे जो आप कह रहे थे।

2. **विषय**

उदा., 1 कुरिं. 13 - "प्रेम"। विषय पहचान करता है संदेश किस बारे में है।
संदेश में एक स्पष्ट विषय होना चाहिए। उदा.,: परमेश्वर का मन्दिर, मत्ती 21।

3. **शीर्षक**

यह "नाम" है जो प्रचारक उसके संदेश को देता है।
यह जितना दिलचस्प और जितना "ध्यान आकर्षित करनेवाला" हो सकता है होना चाहिए।
शीर्षक का उदाहरण: "संसार की सबसे महान चीज", वचन: 1 कुरिं. 13, और विषय: "प्रेम"।
सावधान रहो कि गुमराह करने वाले शीर्षक, या ऐसे जो अवास्तविक वादे करते हैं मत इस्तेमाल करो।

4. **प्रस्ताव (उद्देश्य वाक्य)**

यह "संदेश का" दावा है। प्रस्ताव एक वर्णन नहीं है; एक विस्तारित शीर्षक नहीं है, परन्तु यह सारा संदेश एक वाक्य में डाला गया है।

यदि आप एक संदेश का सार एक वाक्य में नहीं डाल सकते हो, तब आपके संदेश के साथ कुछ बहुत गलत है। यह दिखाता है कि आपने इसको अधिक विचार नहीं दिया है। हो सकता है आपको इसे असल में छोटा करना और केन्द्र में लाना होगा।
वह एक चीज क्या है जिसे मैं असल में बताना चाहता हूँ? उदा., मत्ती 21: शुद्धता और प्रार्थना एक सामर्थ्य से भरा जीवन बनाते हैं।

5. **रूपरेखा (ढाँचा, शरीर)**

इसकी तुलना एक टोकरी से की जा सकती है। यह संदेश का मुख्य प्रहार है (इसलिए एक महत्त्वपूर्ण भाग)। यह "खाका" है।
जैसे प्रचारक बोल रहा है, ऐसे सोचो कि वह मण्डली को "अंडे" दे रहा है। इसलिए "टोकरी" ढाँचा है जो "अंडे घर" ले जाने में लोगों की सहायता करती है। यह उनको संदेश और बोले गए वचन को याद रखने में समर्थ करेगा और आगे बढ़ाएगा।

उदाहरण: मत्ती 6:9-13

प्रतिज्ञा -	"हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए"
प्राथमिकताएँ -	"तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो"
प्रबंध -	"हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे"
सिद्धान्त -	"और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर"
सुरक्षा -	"और हमें परिक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा"
स्तुति -	"क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।"

तो इसे याद कर लो; आपके ढाँचे की एक रूपरेखा होनी चाहिए - विचारों की एक सूची जो आपके संदेश में हैं।
एक अच्छे संदेश की तीन सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकताएँ हैं:

1) याद रखने योग्य ढाँचा
2) स्पष्ट उदाहरण
3) परमेश्वर का स्पर्श

याद रहे: सभोपदेशक 12:9-11

6. **परिचय**

मानवीय ज्ञानात्मक मनोवैज्ञान का वक्र रेखा सीखने से पता चलता है कि सुननेवाले एक भाषण के शुरू और अन्त में सबसे अधिक एकाग्र होते हैं।
वे प्रचारक द्वारा कही गई पहली चीज और अन्तिम चीज याद रखते हैं। इही कारण से एक अच्छा परिचय महत्त्वपूर्ण है। इसे सुननेवालों के ध्यान को आकर्षित करना चाहिए।

7. **निष्कर्ष**

संदेश के अन्तिम भाग को सार प्रस्तुत करना चाहिए और उसका एक अन्तिम प्रहार होना चाहिए जो बोला जाना है, और उसमें उपयोग भी शामिल होना चाहिए।
यदि यह एक 30 मिनट का संदेश है, तब एक अच्छा ढाँचा इस प्रकार होगा:

- परिचय 3 मिनट
- मुख्य भाग 22 मिनट
- निष्कर्ष 5 मिनट

अच्छा संदेश बनाने के लिए एक प्रचारक को और क्या करना चाहिए?

1. जीवन को ध्यान से देखनेवाले बनो। (उत्तम उदाहरण आपके व्यक्तिगत अनुभव हैं)। इसीलिए एक प्रचारक को रोजाना के जीवन में दृश्यों और घटनाओं पर ध्यान देना चाहिए जो उसे उसके सुननेवालों के लिए मन में चित्र बनाने में सहायता करेगा।

2. परमेश्वर के वचन पर मनन करने में समय बिताओ। यहोशू अध्याय 1।

3. संदेश की तैयारी के विषय में अनुशासित और गम्भीर बनो। तैयारी के समय आपको शान्त समय, न कि बातचीत चाहिए। मनन का एक आवश्यक संघटक एकान्त है, और प्रार्थना का भी। 1 पतरस 4:7, अपनी प्रार्थना में संयमी और सचेत रहो।

संदेश की शैली

एक सभा शुरू करना

- एक सभा कभी भी एक नकारात्मक कथन के साथ शुरू मत करो।
- सदा अपेक्षा का एक वातावरण बनाओ।
- विश्वास के एक सकारात्मक कथन के साथ शुरू करो जो अब से निपटता हो।

"बुद्धि" का प्रचार करना

अपने बोलने में:

1) स्वाभाविक तरीके से **बोलो**।
उसी तरीके से बोलो जैसे आप सामान्यतः बोलते हो.........................केवल जोर से बोलो।

2) साफ-साफ **बोलो**।
ऐसी चीजें मत बोलो जिन्हें लोग समझते नहीं हैं। और अपने शब्दों का साफ उच्चारण करो।

3) भरोसे और अधिकार के साथ **बोलो।**
भरोसा और अधिकार जानने की स्थिति से से मिलते हैं।
दानिय्येल 11:32, "जो लोग परमेश्वर का **ज्ञान रखेंगे**, वे **हियाब** बाँधकर बड़े काम करेंगे।"

- जब आप अपने मन और हृदय में निम्नलिखित चीजों के विषय में सुरक्षित हो तब आप आश्वस्त होगे:
  - परमेश्वर सभा से क्या चाहता है।
  - इसे कैसे चलाया जाना चाहिए।
  - वह क्या संदेश लोगों तक पहुँचाना चाहता है।

  तब आप भरोसे और अधिकार के साथ बोल सकते हो।
- भरोसा तब आता है जब आप जानते हो आपने वचन को अपने अन्दर ले लिया है।
- अधिकार और अभिषेक अपने "प्रार्थना" के कमरे में परमेश्वर के साथ समय बिताकर आते हैं।

सुरः अपनी आवाज का निचला भाग इस्तेमाल करो।
- जब अपनी प्रबलता बढ़ाते हो, तब जानबूझकर सुर धीमा कर दो।
- सब समय एक समान, एकस्वर सुर में बोलना अत्यन्त "खतरनाक" है; घटाओ-बढ़ाओ!

प्रबलताः जितना जरूरी हो उससे थोड़ा जोर से बोलो।

रफ्तारः जितना बड़ा आपका सेल या समूह होगा, उतना धीमा आपको बोलना चाहिए।

व्याकरणः टूटी-फूटी अँग्रेज़ी से शिक्षित लोगों की रुचि खत्म हो जाती है। उचित अँग्रेज़ी बोलना सीखो।

आदतेंः कुछ शब्दों को दोहराने, आदि पर ध्यान दो।

शरीरः

जब आप बोल रहे हैं (या गीत की अगुआई कर रहे हैं), तब दो सबसे महत्त्वपूर्ण रवैये जिनको आपको दिखाना चाहिएः

सर्तकता
उत्साह

1) **मुद्राः** ध्यान दो आप कैसे बैठते, खड़े होते या चलते हो।
एक ओर मत झुको या झूमो नहीं, परन्तु थोड़ा आगे की ओर झुकने की कोशिश करो।

2) **इशारे करनाः** आपके इशारे आपकी बात के अनुसार जिसे आप समझा रहे हैं के अनुसार होने चाहिए। अपने नाक, कान को छूना, चश्मा निकालना, आदि की आदतें मत बनाओ।

3) **आँखें**ः कमरे में हर व्यक्ति को देखो -------- जाँच करना सीखो।

4) **रूप रंग**ः यह अत्यावश्यक है; शुरू के प्रभाव बने रहते हैं।
एक सेल सभा के लिए सदा साधारण साफ-सुथरे कपड़े पहनो।
- कपड़े साफ, सुथरे और इस्त्री किए हुए होने चाहिए।
- बेढंगे कपड़े बेढंगा रवैया पैदा करता है।

कैसे भी कपड़े मत पहन लो जिससे आपके शारीर का अनावश्यक ध्यान भंग हो।
कुंजीः सेल समूह के सामान्य व्यक्ति से थोड़ा अधिक सन्तुलित कपड़े पहनो।

वचन की सेवा का महत्त्व

परिचय

प्रचार और प्रचारक

परमेश्वर ने प्रचार की मूर्खता के द्वारा अपने आप को मनुष्यों पर प्रकट करने का फैसला किया है (1 कुरिं. 1:21)। प्रचार परमेश्वर का विचार था और जिन्हें प्रचार करने / घोषित करने के लिए बुलाया गया है उन्हें उनके प्रचार करने की कला या कुशलता (उपदेश-कला) में प्रशिक्षण पाने और विकसित होने की आवश्यकता है। इसलिए, प्रचार करना लोगों के एक समूह के सामने खड़े होकर प्रभावशाली तरीके से बोलने से कहीं अधिक है।

महत्त्वपूर्ण: प्रचार परमेश्वर से व्यक्तिगत संदेश का मानवीय हृदयों को बताना है। 1 कुरिं. 1:18। ऐसा प्रचार बहुतों के उद्धार और उन्नति के लिए परमेश्वर के सामर्थ्य को छोड़ेगा। प्रचार ईश्वरीय सत्य को मानवीय व्यक्तित्व के द्वारा बताने की कला है। यह मनुष्य के द्वारा मनुष्यों को उद्धार के सुसमाचार की घोषणा करना है। इसमें दो तत्त्व हैं:

1) एक मनुष्य (व्यक्तित्व)
2) संदेश (सत्य)

एक प्रचारक इसलिए एक संचारक है। वह परमेश्वर से सत्य पाता है और उसे मनुष्यों को प्रभावशाली तरीके से बता देता है। परमेश्वर प्रकटीकरण देता है और मनुष्य प्रस्तुतिकरण देता है।

एक प्रचारक के काम के लिए प्रचार करने का एक निश्चित बुलावा होना चाहिए (गला. 1:15-17), जिसे कलीसिया की अगुआई को स्वीकार किया होना चाहिए (1 तीमु. 4:14; 2 तीमु. 1:6)। वह पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण एक भला व्यक्ति होना चाहिए। ऐसे जीवन और प्रचार से कई लोग प्रभु को ग्रहण करेंगे। (प्रेरितों 11:24)

संदेश प्रचारक का भाग है; यह उसके जीवन और अनुभव की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। सत्य का अनुभव प्रचारक के अपने जीवन में असली होना चाहिए, इससे पहले वह इसे उसके संदेश में और द्वारा दोष सिद्ध करनेवाली और कायल करनेवाली शक्ति और सामर्थ्य के द्वारा घोषित कर सके। इसलिए, परमेश्वर के वचन को अपने हृदय और आत्मा में जड़ पकड़ने दो (इसे अपने जीवन का भाग बनने दो), इसे अपने व्यक्तिगत जीवन और अनुभव में असली बनने दो। क्योंकि जैसे परमेस्वर का वचन तुम में होगा, तुम परमेश्वर से एक संदेश बनोगे। तब आप केवल प्रचार ही नहीं करोगे, परन्तु आपका जीवन और जीवन-शैली उनमें जो आपको जानते और सुनते हैं जीवन, आशीष और शक्ति लाएगा।

प्रचार करने की तैयारी

प्रचार लिखित वचन से बोले गए वचन के द्वारा देहधारी वचन का प्रकटीकरण है!

सामर्थी और अभिषिक्त प्रचार में बढ़ने के लिए, परमेश्वर के साथ एक घनिष्ठ संगति होनी और पवित्र आत्मा पर पूर्ण रूप से निर्भर होना अनिवार्य है। प्रचारक को प्रतिदिन प्रभु के साथ सम्बंध बिताना और परमेश्वर की उपस्थिति में धीरज के साथ बैठना चाहिए, और उससे उसकी आत्मा में बोलने की अपेक्षा करनी चाहिए। योग्य संदेश परमेश्वर के हृदय और मन में आरम्भ होते हैं, जो सब सत्य का स्रोत है, सारा ज्ञान का सोता है। प्रभावशाली प्रचार के लिए परमेश्वर के विचार पाना जरूरी है।

पवित्र आत्मा के द्वारा जीने और नियंत्रण में होने के बावजूद, अपने आपको पुष्टि देने के लिए लगातार परमेश्वर के वचन को पढ़ना और अध्ययन करना आवश्यक है। (2 तीमु. 2:15)। जैसे आप बाइबल पढ़ोगे और अध्ययन करोगे, तब इसके अर्थ को पूरी तरह समझने के लिए वचन से प्रकाश और प्रेरणा के लिए प्रार्थना करो (इफि. 1:17; भजन 119:18, 130)। इसके अतिरिक्त, एक कापी सहायक होगी, विचारों, विषयों को लिख लेने के लिए, जो प्रभु के साथ अपने समय में, या रोजाना की घटनाओं में आपके हृदय और मन में आते हैं। और बहुत अच्छी पुस्तकों को पढ़ने से नए विचार, नए अन्तर्दृष्टियाँ मिलेंगी, और आपका परिदृश्य बढ़ेगा।

प्रचार का उद्देश्य

हर संदेश का एक स्पष्ट विषय / लक्ष्य / उद्देश्य होना चाहिए। प्रचारक को पता होना चाहिए परमेश्वर उसके संदेश के द्वारा क्या पूरा करना चाहता है। इसलिए, पहले ही उसे प्रस्तुत करने वाले सत्य के बारे में अपने से प्रश्न करने चाहिए कि यह सुननेवालों को शिक्षा देगा, सूचित करेगा, प्रेरित करेगा या प्रभावित करेगा।

अ) प्रेरित करना, व्यक्ति की भावनाओं को कार्य करने के लिए जगाना है, उदा., प्रभु और उसके उद्देश्यों की ओर अधिक भक्ति के लिए बुलावा।

आ) शिक्षा देना, सिखाना है और धीमे, साफ-साफ और क्रमानुसार किया जाना चाहिए।

इ) सूचित करना, जिस ज्ञान को परमेश्वर ने आपको दिया है उसे दूसरों के साथ बाँटना।

ई) प्रभावित करना, व्यक्ति के फैसला करने के लिए कायल करना।

प्रचार के विभिन्न पहलू हैं और उसी के अनुसार इसकी तैयारी और शैली होनी चाहिए।

<u>एक विषय या वचन को चुनने के सिद्धान्त</u>

संदेश के उद्देश्य पर फैसला करने के बाद, निम्नलिखित सिद्धान्तों पर विचार किया जाना चाहिए।

1. क्या यह इस समय और स्थान पर लोगों की आत्मिक आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त है? क्या वे इसे स्वीकार कर सकते हैं?
2. क्या मैं सत्य के एक पहलू पर जरूरत से अधिक जोर तो नहीं दे रहा, और क्या सत्य के सारे चक्र का प्रचार कर रहा हूँ, सारे सिद्धान्त सन्तुलित हैं और पूरी तरह लिए गए हैं (प्रेरितों 20:27)?
3. क्या मैं विषय प्रस्तुत कर सकता हूँ? क्या मुझे इसका अनुभव और इसका अभ्यास है? उसका प्रचार मत करो जिसे आप अच्छी तरह समझते नहीं हो। अपने विषय को पूरी तरह जानो!

<u>विषय-वस्तु को इकट्ठा करना, बनाना, व्यवस्थित करना और सूचित करना</u>

एक बार जब विषय / विचार / वचन प्रभु से मिल गया है, उद्देश्य का अपने भीतरी गवाह / हृदय के बोझ के साथ निश्चय कर लिया है, और पानेवालों का स्तर पता लगा लिया है, तब संदेश बनाने के निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए:

1) अपने विषय / बड़े विचार / पवित्रशस्त्र क विश्लेषण करने लगो, विषय, विचार / सत्य के पहलू पर अपने चिन्तन लिख लो। मूल-शब्दों, मूल-विचारों, मूल-पवित्रशास्त्रों को अलग करो (उदा., प्रार्थना पर लूका 18:1-8 के वचन का मूल आयत है: आयत 1)। अलग बाइबल अनुवाद, टीका, यूनानी शब्द-कोष, आदि इस्तेमाल में लाओ।

2) इकट्ठा करना और बनाना पूरा करने के बाद, व्यवस्थित करने का काम आरम्भ हो सकता है। यह आवश्यक है कि अब अपने विचारों को एक व्यवस्थित तरीके से व्यवस्थित किया जाए। आपको पता होना चाहिए आप कहाँ जा रहे हो और आपके विषय को एक दिलचस्प, स्वाभाविक और व्यावहारिक तरीके से विकसित किया जाए। अपने संदेश में विचारों की एक विकसित हो रही प्रगति बनाओ जो आपके सुननेवालों को तर्क की आपकी रेखा को समझने और पकड़ने में सहायता करेगा। इसे जितना सरल बना सकते हो बनाओ जिससे दूसरों को समझने और याद रखने में सहायता मिले।

3) प्रबंध होने के बाद, प्रस्तुतिकरण पर ध्यान दिया जाना चाहिए। सत्य को इस तरीके से साफ-साफ और प्रभावशाली तरीके से बताने का प्रयत्न करो जो सुननेवालों के मन मुग्ध करेगा। और उससे भी बढ़कर, उपयुक्त कार्य के लिए अपने सुननेवालों को प्रेरित करना। (याकूब 1:22)

संदेश की तैयारी

एक संदेश का ढाँचा मुख्य रूप से आपकी विषय वस्तु के बाइबल के संदर्भ में विकास पर और उद्देश्य के कथन पर निर्भर करता है।

<u>फिर भी अधिकतर संदेश के ढाँचों में निम्नलिखित तीन भाग होते हैं:</u>

1) एक परिचय
2) संदेश का मुख्य भाग (तर्कों का विकास)
3) निष्कर्ष और उपयोग

1. परिचय:

एक संदेश के लिए परिचय कढ़ी के लिए मसालों के समान है, यह संदेश के मुख्य अंश में स्वाद लाता है। और आप अपने विषय में सुननेवालों की रुचि जगाने की कोशिश करते और उनका ध्यान पाने हो। जो आनेवाला है उसके लिए उनको तैयार करो।

एक अच्छे परिचय के गुणः

- न अधिक जोरदार, सनसनीखेज या भावात्मक, अपने विषय को धीरे-धीरे गर्म करो और फिर एक चरम तक ले आओ।
- दिलचस्प होना चाहिए।
- अधिक लम्बा नहीं।
- अच्छी तरह तैयार किया हुआ; याद रखो, पहले प्रभाव बने रहते हैं।
- इसका आपके विषय के साथ स्पष्ट सम्बंध होना चाहिए और बाद में स्वाभाविक रूप से इसमें से निकलना चाहिए।

परिचय इन चीजों से बनाया जा सकता हैः घटना क्रम, घटनाएँ या परिस्थितियाँ, उदाहरण, दृष्टान्त, अवसर, बाइबल का भूगोल या रिवाज।

2. विकास का मुख्य भाग:

यहाँ आप अपनी विषय वस्तु प्रस्तुत करते हो। स्पष्टता के लिए अपने संदेश को भागों / बातों में बाँटों। भाग स्वाभाविक और तर्कसंगत और क्रम में होने चाहिए और एक भाग से अगले में एक आसान परिवर्तन या प्रगति होनी चाहिए। सामान्य रूप से भागों को निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने चाहिएः

क्या? पहले भाग को विषय के कथन और परिभाषा से निपटना चाहिए। इसे स्पष्टता लानी चाहिए और इसलिए मुख्य रूप से बुद्धि को सम्भोदित किया जाता है, भावनाओं या इच्छाशक्ति को नहीं।

क्यों? इस बात को विषय की आवश्यकता, कारण या प्रमाण को समझाना चाहिए। यह इस प्रकार के प्रश्न पूछता हैः यह क्यों सत्य है? मैं इसे क्यों विश्वास या स्वीकार करूँ? इसे कैसे प्रमाणित किया जा सकता है? क्या यह उचित है?

कैसे? यह भाग तरीका और ढंग बताएगा जिसके द्वारा संदेश का विषय लाया जा सकता है या जिन हालातों के अन्तर्गत इसे पाया या पूरा किया जा सकता है। प्रायः इस भाग के बरताव में तीन विचार वर्तमान होते हैंः 1) परमेश्वर का भाग; 2) मनुष्य का भाग; 3) साधनों का प्रश्न।

फिर क्या? यह उपयोग में ले जाता है और सबसे महत्त्वपूर्ण है। आपके संदेश की शैली के अनुसार, सबसे प्रभावशाली भागों या प्रमुख विचारों का सारकथन हो सकता है। दूसरे समयों में एक अन्तिम वचन पढ़ा जा सकता है या सुननेवालों की इच्छाशक्ति और भावनाओं को एक अन्तिम अनुरोध किया जा सकता है - उन्हें कार्य करने के लिए प्रेरित करने और सीखे सत्य को लागू करने के लिए।

उदाहरणों का इस्तेमाल

अपने संदेश को कहानियों और घटनाओं द्वारा स्पष्ट करना काफी लाभदायक होता है। यीशु के जीवन में हम देख सकते हैं कि उसके उपदेशों में निम्नलिखित चीजें होती थींः

किस्से (छोटी कहानियाँ)
चित्र (उदा., एक उदाहरण बनोः कहने के बदले, यीशु ने कहाः तुम जगत की ज्योति हो।)
उपमा (एक चीज को दूसरे के बराबर समझना, उदा., परमेश्वर का राज्य एक राई के दाने के समान है।)
उदाहरण (उदा., तुम्हारा स्वर्गीय पिता पक्षियों को भी खिलाता है, तो चिन्ता मत करो।)
रूपक (बिना तुलना के चिन्ह के समानता, उदा., "हे साँप के बच्चो", "लोमड़ी", हेरोदेस को कहा था)।
सूक्ति (चुटकुला, छोटी या विशेष कहावतें, जैसेः "अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो")

अन्योक्ति (काल्पनिक कहानियाँ जिसमें दुष्टता, सद्‌गुण, आदि व्यक्ति पर लगाते हैं, दूसरे शब्दों में: अर्थ वाली कहानियाँ।)
पुराणिक कहानियाँ (पेड़ों, पक्षियों, पशुओं, आदि को विवेक और भाषा देकर नैतिक सत्य प्रदान किया जाता है।)
दृष्टान्त (ऊँचे आत्मिक सत्य का स्पष्टीकरण देने और मन में बैठाने के लिए प्रतिदिन के जीवन से कहानियाँ।)
जीवन-सम्बंधी घटनाएँ (उदा., योना, मछली के पेट में तीन दिन)।

यीशु की सेवकाई से हम प्रचार में उदाहरणों का महान मूल्य देख सकते हैं। उदाहरणों का इस्तेमाल सुननेवालों के लिए संदेश के सत्य को घर ले जाने में बहुत सहायता करता है।

उदाहरणों का उद्देश्य है:

- विषय पर प्रकाश डालने के लिए
- सत्य को स्पष्ट और याद करने में सहायता
- एकसुरा दोहराई से बचने के लिए
- दोषसिद्धि को बढ़ावा दे सकता है
- सत्य के उपयोग में सहायता कर सकता है

साधनों के रूप में इस्तेमाल किए जा सकते हैं: चीजें, अखबार, इतिहास, जीवनियाँ, बाइबल, रोजाना का जीवन, आदि।

याद रखो: एक संदेश को तैयार करने की समानता एक घर के बनाने से की जा सकती है जहाँ:

♦ परिचय उस मार्ग के समान है जो घर तक जाता है। यह आपको प्रवेश फाटक से प्रवेश द्वार तक ले जाता है जिसमें से आप प्रवेश कर सकते हैं।
♦ हर मुख्य भाग घर में कमरों के समान हैं।
♦ उप-भाग हर कमरे में साज-सामान के समान हैं।
♦ उदाहरण (जो गूढ़ सत्य समझने के लिए सरल उदाहरण हैं) हर कमरे में बनी खिड़कियों के समान हैं, उस कमरे में साज-सामान पर प्रकाश डालने के लिए।

संदेश की तैयारी के तरीके:

1) लिखा हुआ संदेश

यहाँ सारा संदेश और हर विचार लिख लिया जाता है। संदेश के हर पहलू को उचित ध्यान और पूरा क्वरेज दिया जा सकता है क्योंकि सारा पहले तैयार किया जाता है। और ढाँचे और शैली को पर्याप्त ध्यान और तैयार दी जा सकती है।

2) ढाँचा प्रकार के लेख की तैयारी

पूरा संदेश लिखने के बदले, मुख्य बातें, उप-भाग और मूल विचार एक रूपरेखा ढंग से लिखे जाते हैं। यह रूपरेखा या अंशों के अनुसार सार संदेश के लिए एक ढाँचा देता है। जो प्रचारक कहना चाहता है यह उसको आकार और ढाँचा देता है। जैसे वह बोलता है, वह ढाँचे को बढ़ाता है और उसके संदेश की हड्डियों पर "माँस" चढ़ाता है। इस तरीके से, संक्षिप्त लेख जिन्होंने उसके विचारों को उत्तेजित किया था बढ़ाए जा सकते हैं और जैसे वह उसका संदेश देता है और प्रेरणा आ सकती है।

3) बिना तैयारी के संदेश

यह प्रचार की एक स्वाभाविक शैली है, जो अकसर लिखे बिना तैयारी है। निस्संदेह विषय पर पहले से काफी विचार दिया जाता है, जिसके द्वारा मन और हृदय संदेश के अत्यावश्यक पहलुओं से भर जाते हैं। यह अकसर एक अधिक प्रेरणात्मक प्रकार का संदेश लाता है, जिसे सुसमाचार की सभाओं में प्रभावशाली तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि संदेश हृदय में से निकलेगा और उसमें भावात्मक शक्ति शामिल होगी। अनुभवी प्रचारक इस शैली को इस्तेमाल कर सकते हैं, हालाँकि इसमें गहराई की हो सकती है जिससे यह सुननेवालों के मन को ही अपील करे।

एक विषय-वाक्य का इस्तेमाल और उद्देश्य

पवित्रशास्त्र के एक विषय-वाक्य को पढ़ना जिस पर व्याख्या की जाती थी जिसके बाद इसके सत्य का उपयोग बताया जाता था एक यहूदी परम्परा थी। पवित्र आत्मा की प्रेरणा में, प्रेरित भी पवित्रशास्त्र के वचनों से प्रचार करते थे। इसलिए, एक विषय-वाक्य का इस्तेमाल का अर्थ माना जाता है: एक संदेश के लिए (अभी समझाया जाना है, संदर्भ में) पवित्रशास्त्र का वचन चुना जाना।

एक विषय-वाक्य के चुनाव का उद्देश्य:

- इससे प्रचारक को जैसे वह प्रचार करता है साहस और अधिकार मिलता है; "प्रभु इस प्रकार उसके वचन में कहता है।" जब आप परमेश्वर के वचन का प्रचार करते हो, तब इस पर पवित्र आत्म का विशेष अभिषेक होगा। परमेश्वर उसके वचन को अभिषेक देता और इसकी पुष्टि करता है1 (मरकुस 16:20)।
- यह संदेश को बाइबल का बनाए रखता है, क्योंकि यह विषय-वाक्य पर केन्द्रित होता है। हालाँकि अपने विषय को बाइबल के दूसरे उपयुक्त भागों से सिद्ध करना अच्छा है। याद रहे कि हमें "वचन का प्रचार" करने को कहा गया है1 (2 तिमु. 4:2)।
- एक निश्चित विषय-वाक्य आपको अपने विषय से भटकने से रोकता है और सुननेवालों की एकाग्रता और ध्यान को बढ़ाता है।
- यह सुननेवालों की रुचि को जाग्रत करेगा और संदेश याद रखने में उनकी सहायता भी करेगा।

संदेश की किस्में:

1. सुसमाचारी संदेश। इसका उद्देश्य खोए हुओं को सुसमचार प्रचार करना है। उद्धार का संदेश स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जाता है, जिससे सुननेवालों को एक चुनाव करने और प्रतिक्रिया करने में सहायता मिलती है।

2. नैतिक संदेश। यह नैतिक मामलों, परमेश्वर के वचन के अनुसार सही और गलत क्या है, से निपटता है (उदा., गर्भपात, गर्द का दुर्व्यवहार, आदि के विषय)।
3. प्रासंगिक या विषयक संदेश। यहाँ लक्ष्य एक विशेष विषय या प्रसंग की व्याख्या करना है। प्रचारक विषय का पूर्ण रूप से अध्ययन करता है और उचित प्रबंध के बाद, उसके सुननेवालों के साथ जो उन्हें विषय के बारे में जानना चाहिए सुनाता है। (उदा., परमेश्वर का प्रेम, विश्वास, पवित्रीकरण, आदि)
4. मूलपाठ-विषयक संदेश। इस में पवित्रशास्त्र का एक संक्षिप्त भाग चुना जाता है। जब प्रचारक ने विषय-वाक्य का परीक्षण, अध्ययन, विश्लेषण और खोज कर ली है, वह इसे उसके सुननेवालों के लिए एक व्यवस्थित और प्रगतीशील तरीके से प्रस्तुत करता है। (उदा., यूहन्ना 3:16; रोमियों 5:1)
5. व्याख्यात्मक संदेश। यह शैली पवित्रशास्त्र के किसी वचन में छिपे अर्थ और सत्य की व्याख्या करना है। इस प्रकार यह वचन के साथ बहुत गहराई से निपटता है, और छिपे हुए सत्य और गहराई को निकालने की कोशिश करता है। यह क्रम से पूरी बाइबल में से सिखाता है और एक पुस्तक चुनने के बाद, एक-एक भाग या अध्याय में से सिखाया जाता है, और इस प्रकार सारी पुस्तक को सिखा दिया जाता है।
6. जीवन-सम्बंधी संदेश। यह तरीका बाइबल के एक चरित्र के जीवन को संदेश में प्रस्तुत करता है। उनके जीवनों का अध्ययन करना और इससे सबक सीखना। (उदा., अब्राहम, मूसा)
7. वर्णात्मक कहानी या ऐतिहासिक संदेश। यहाँ पवित्रशास्त्र की एक घटना आज हमारे लिए इसके सबक के साथ प्रस्तुत की जाती है। (रोमि. 15:4; 1 कुरिं. 10:11); (उदा., सोने का बछड़ा, आदि)
8. प्रतीकी संदेश। इस प्रकार का प्रचार उनके लिए होना चाहिए जो परिपक्व हैं और जिन्हें सारी बाइबल का गहरा और सम्पूर्ण ज्ञान है। यह बाइबल में विभिन्न "प्रतीकों" के नीचे छिपे सत्य को प्रकट करने और बताने की कला है। एक "प्रतीक" एक व्यक्ति, चीज या घटना है जो किसी आनेवाले व्यक्ति या चीज का भविष्यसूचक प्रतीकात्मक है (इब्रा. 8:5; इब्रा. 10:1)। यह भविष्य का कुछ संकेत देता है (उदा., निर्गमन का फसह का मेम्ना मसीह, परमेश्वर का मेम्ना का एक प्रतीक है, यूहन्ना 1:29)।
9. भक्तिमय संदेश। इसका लक्ष्य मसीह के साथ घनिष्ठ सम्बंध को बढ़ाना है।
10. असली संदेश। संदेश समाज, शहर या देश में किसी प्रचलित स्थिति से निपटता है (उदा., प्राकृतिक संकट, सहायता, आदि) जो घटी है और प्रभु में भरोसा करने का संकेत देती है।

11. <u>सादृश्यमूलक संदेश।</u> यह एक सादृश्य में के सत्य को निकालने का प्रयत्न करता है जहाँ एक आत्मिक सत्य को सिखाने के लिए एक स्वाभाविक चीज इस्तेमाल की जाती है (उदा., यूहन्ना 12:24, गेहूँ के दाने का मरना - अपनी मृत्यु)।
12. <u>भविष्यसूचक संदेश।</u> इसमें एक प्रेरणात्मक वचन के लिए परमेश्वर की बाट जोही जाती है जो आज के लिए उचित है; "समय के लिए" एक संदेश।

<u>विषयक संदेश</u>

संदेश के इस तरीके में केन्द्र एक विषय है। इस शैली का लाभ यह है कि यह एकता को निश्चित करता है, हालाँकि इसे मन में रखा जाना चाहिए कि यहाँ अन्तिम सत्य बोलनेवाले के शब्दों के द्वारा बनता है। इसलिए, कुछ पहलुओं को छोड़े बिना, जो अन्तिम निष्कर्ष को बिगाड़ सकता है, विषय का पूरी तरह अध्ययन किया जाना चाहिए। तैयारी में एक बाइबल शब्दानुक्रमनिका इस्तेमाल करना सहायक होता है। यदि आपका विषय बहुत बड़ा बनता लग रह हो, तब सलाह दी जाती है कि अपने अध्ययन को कुछ निश्चित पहलुओं तक ही सीमित किया जाना चाहिए।
क्योंकि बोलनेवाला सत्य को बना रहा है, तब आवश्यक है समय समय पर विषय की व्याख्या करते समय बाइबल के वचनों को दिया जाना चाहिए।
एक बार जब आपने अपने विषय का अध्ययन पूरी तरह कर लिया है, तब आपके संदेश की तैयारी आरम्भ हो सकती है। जैसे पहले समझाया गया है, यह आवश्यक है कि आप ढाँचे की रूपरेखा बना लें जिसमें आप अपने विषय से निपटने वाले हो। इसके होने के बाद एक उचित परिचय और सत्य का निष्कर्ष बनाया जाना चाहिए जो हमारे व्यक्तिगत जीवनों में लागू होता है।

<u>उदाहरण:</u>
* छल से सावधान रहो (शीर्षक)।
मूलपाठः 1 तीमु. 4:1-2; मत्ती 24:3-5

1)	परिचयः	समय के चिन्ह
		विभिन्न चेतावनियाँ (1 कुरिं. 15:33; गलातियों 6:7)
2)	विकासः	अर्थ क्या है -- (इस्तेमाल किए गए यूनानी शब्द को देखो); उदाहरण (मछली)
		छल कैसे आता है ? छल के कर्त्ताः
		- शैतान (2 कुरिं. 11:14), उदा., उत्पत्ति 3 -- स्वर्ग
		- पाप (इब्रा. 3:13), उदा., गिनती 25 -- बिलाम
		- हम खुद (यिर्म. 17:9)
		- दूसरे (रोमि. 16:18), उदा., प्रेरितों 5 -- हनन्याह और शपीरा
3)	निष्कर्षः	सुनो, प्रभु पर निर्भर रहो
4)	उपयोगः	दीन बनो (याकूब 4:7) और वचन का अध्ययन करो (2 तीमु. 3:12-17)।

<u>जीवन-सम्बंधी संदेश</u>

इस प्रकार के संदेश में बाइबल के चरित्र का जीवन और उदाहरण लिया जाता है और व्यक्ति के जीवन से जितना हो सके सीखने के लिए अध्ययन किया जाता है। परमेश्वर के महान पुरुषों को जैसे वे थे प्रस्तुत किया गया था, और संदेश उनके जीवनों की वास्तविकताओं, उनके गुणों और निर्बलताओं से निपटता है। उससे हम काफी कुछ सीख सकते हैं क्योंकि उन्होंने भी संघर्षों, विजयों और असफलताओं का सामना किया था।
एक व्यक्ति के जीवन का अध्ययन करने में, उसके जन्म से आरम्भ करो, उसके नाम के अर्थ का पता लगाओ (अकसर महत्त्वपूर्ण होता है), उसके पालन-पोषण की परिस्थितियों का अध्ययन करो और उसके जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों पर विशेष ध्यान दो।

<u>उदाहरण 1:</u>
* चार चरवाहे या अब्राहम का समर्पण (शीर्षक)
मूलपाठः भजन 25:9-10 या उत्प. 11:31

1)	परिचयः	- अब्राहम कौन था ?
		- जिन समयों में वह रहता था उस समय के समयों की कुछ जानकारी। संस्कृति और समाज।

2) उसके चरवाहे या समर्पण

विकासः # देश और परिवार छोड़ना (उत्प. 12:1)

लूत से अलग होना (उत्प. 13:9)

हाजिरा और इश्माएल को निकालना (उत्प. 21:10)

इसहाक को चढ़ाना (उत्प. 22)

3) निष्कर्षः परमेश्वर का समर्थन पाया, परमेश्वर का मित्र कहलाया। (इब्रा. 11:8 - 20; रोमि. 4; गला. 3:6- -29; याकूब 2:23)

<u>उदाहरण 2:</u>

* दानिय्येल के मित्रों की चुनौती (शीर्षक)

मूलपाठः भजन 125:1-2 या दानि. 1:3-7

1) परिचयः शद्रक, मेशक और अबेदनगो कौन थे ?

2) विकासः अ) फैसला (दानि. 1:8-16)

आ) दृढ़ निश्चय (दानि. 3:16-18)

इ) परीक्षा (दानि. 3:19-23)

ई) विजय (दानि. 3:28-30)

3) निष्कर्षः 1 शमू. 2:30ब - "जो प्रभु का आदर करेंगे वह उनका आदर करेगा।"

मूलपाठ-विषयक संदेश

यह संदेश मुख्य रूप से एक आयत या कुछ आयतों में पाए जाने वाले एक विचार से निपटता है। जैसे आप मूलपाठ को देखते हो तो निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण है। पहला, आयत का ध्यानपूर्वक विश्लेषण करो और इसे कुछ भागों में अलग करने का प्रयत्न करो। बाद में, पता लगाने का प्रयत्न करो कि शब्दों का प्रारंभिक यूनानी और इब्रानी अर्थ क्या था। यहाँ एक यूनानी-इब्रानी शब्द-कोष बहुत सहायक होगा। तीसरा, विकास या जो शिक्षा लेखक देने का प्रयत्न कर रहा है खोजो। दूसरे शब्दों में, संदर्भ या सारे मूलपाठ के स्थापन पर विचार करो। पहले और आगे के वचनों को पढ़कर बाइबल के संदर्भ का अध्ययन करो। संस्कृतिक संदर्भ पर विचार करो, दूसरे शब्दों में, जो लिखा गया है क्या उस पर संस्कृति का प्रभाव था। ऐतिहासिक-भूगोलिक संदर्भ को भी मन में रखो। जिस समय में मूलपाठ लिखा गया था उस पर उसका क्या प्रभाव था। सबसे पहले ये शब्द किसे लिखे गए थे और जो कहा गया था उस पर स्थान का किस हद तक प्रभाव था।

याद रहेः बाइबल के संदर्भ को भूलो मत क्योंकि सारा पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है (2 तीमु. 3:16)। इसका अर्थ है कि हर भाग को सम्पूर्ण के साथ मेल खाने के लिए विश्वासयोग्यता के साथ अर्थ निकालना चाहिए। इसलिए, किसी भी पवित्रशास्त्र को इसके संदर्भ से निकालना नहीं है, परन्तु सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र के अनुसार जो यह सिखाता है इसका अर्थ निकाला जाना चाहिए। <u>पवित्रशास्त्र को पवित्रशास्त्र का अर्थ निकालना चाहिए</u> और एक मूलपाठ की व्याख्या उस से सहमत होनी चाहिए जो सारी बाइबल सिखाती है।

<u>उदाहरण:</u>

- बिना प्रतिबन्ध के एक वरदान (शीर्षक)

  मूलपाठः रोमियों 12:1

  अ) परिचयः समर्पण शब्द का अर्थ क्या है।

  निकालो और समझाओ -- समर्पित, अर्पित, परमेश्वर के लिए अलग किया गया।

  आ) विकासः

  1) किसे समर्पित किया जा सकता है ? - "इसलिए, हे भाइयो..."। वे सब जो यीशु के लहू से धोए गए हैं।

  2) समर्पण का आधार - "मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ..."। बलप्रयोग से नहीं, बल्कि प्रेम और दया से।

  3) समर्पण का कार्य - "कि अपने शरीरों को जीवित...बलिदान करके चढ़ाओ।" स्वेच्छा से - जैसे एक तोहफा देते हैं। व्यक्तिगत - हमारे शरीर / जीवन / सब कुछ जो हमारा है। बलिदान - सब कुछ वेदी पर रख देना, जैसे अब्राहम ने इसहाक को रखा था।

4) समर्पण के लिए तर्क - "यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।" हमारे उद्धार के प्रकाश में, यही तर्कसंगत है कि हम पूरी तरह प्रभु की सेवा करें।

5) मुझे क्या समर्पित करना है और कैसे? - "अपने शरीर"।
अपने शरीर समर्पित करो - जो आपके नहीं हैं, परन्तु प्रभु के हैं (1 कुरिं. 6:19-20)।

- शारीरिक शक्तिः उसके उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करो।
- पैरः सुसमाचार ले जाने के लिए।
- हाथः प्रेम के कार्यो और गिरे हुओं को उठाने के लिए।
- आँखेंः जरूरतमंदों और नष्ट हुए जा रहे हुओं को खोजने के लिए।
- कानः खोए हुओं की पुकार सुनने और उन्हें खोजने के लिए।
- हृदयः पूरी तरह प्रभु के लिए दे देना (2 कुरिं. 8:15)।

इ) निष्कर्षः समर्पण एक प्रक्रिया है। यह एक प्रतिदिन की एक-एक क्षण की मालिक के लिए अर्पित होने की प्रक्रिया है। इसलिए, इसी समय अपना सब कुछ यीशु हमारे प्रभु को समर्पित कर दो।

<u>व्याख्यात्मक संदेश</u>

इस तरीके में पवित्रशास्त्र के एक चुने हुए वचन की व्याख्या की जाती है, अर्थात्, विस्तार से, एक-एक आयत करके अर्थ निकाला और समझाया जाता है।

इसके लाभ इस प्रकार हो सकते हैं:

- प्रचारक और मण्डली दोनों बाइबल में बने रहेंगे।
- यह बाइबल के प्रचार करने के तरीके से मेल खाता है, क्योंकि इस तरीके को यीशु ने इस्तेमाल किया था (लूका 4), स्तिफनुस (प्रेरितों 7 और 8), पौलुस (प्रेरितों 28) और पतरस (प्रेरितों 2 और 3)।
- पवित्र आत्मा की अधिक सहायता उपलब्ध होती है, क्योंकि परमेश्वर का आत्मा सदा परमेश्वर के वचन के साथ सहमत होता है (1 यूहन्ना 5:7)। जब अधिक बाइबल की बातें प्रचार की जाती हैं, तब उतना अधिक आत्मा का अभिषेक प्रचार पर होगा।

कुछ सम्भव कमियाँ:

अ. मण्डली के लिए नीरस बन जाता है।

आ. व्यावहारिक उपयोग की कमी हो सकती है। न ही यह तरीका केवल एक एक आयत पढ़ने और उन पर कुछ टिप्पणियाँ करने तक सीमित हो जाना चाहिए; बल्कि वचनों के सत्य का बलपूर्वक प्रचार किया जाना चाहिए।

<u>उदाहरण:</u>

* यीशु मसीह की मृत्यु से जीवन (शीर्षक)
मूलपाठः रोमियों 5:6-11

अ) परिचयः रोमियों 3 से रोमियों 8 तक पौलुस की बड़ी शिक्षा में इसके स्थान को समझाएँ

आ) विकास रूपरेखाः

1) कोई मरा
 अ) यह एक साधारण तत्य है -- सब मरते हैं
 आ) फिर भी असाधारण, जब हम याद करते हैं:
 -जो मरा उसका चरित्र
 -उसकी मृत्यु से जुड़े दावे

2) लोग जिनके लिए मसीह मरा
 - पापी, अभक्त, निर्बल, शत्रु
 - समझाओः "उनके लिए मरा"

3) मसीह की मृत्यु का उद्देश्य
 अ) नकारात्मक रूप सेः मनुष्यों से प्रेम करने के लिए परमेश्वर को उकसाना / प्रेरित करना नहीं
 आ) सकारात्मक रूप सेः ताकि मनुष्य बदल सकें : (अ) धर्मी ठहराए जाएँ; (आ) मेलमिलाप हो; (इ) कोप से बचें; और (ई) उसके जीवन द्वारा बचें

इ0 निष्कर्षः क्या आप ने अपने लिए उस क्रूस के महान महत्त्व को पहचाना है? क्रूस की दृष्टि से आप अपने जीवन को कैसे चलाओगे?

प्रतीकी संदेश

यहाँ वचन में से 'प्रतीकों' के पीछे छिपे गूढ़ अर्थों को प्रकट किया जाता है (भजन 119:18)।

उदाहरण:

* आराधना कैसे करते हैं ? (शीर्षक)

मूलपाठ: मत्ती 1:18 - 2:12

अ) परिचय: - ये बुद्धिमान पुरुष कौन थे ?
- उन्होंने किसकी आराधना की ? (आयत 11अ)
- उन्होंके किस चीज के साथ आराधना की (आयत 1ब) - उनका सबसे उत्तमः राजा के आदर के लिए।

आ) विकास: वे पुरुष आराधना के लिए क्या लाए थे ?

अ) सोना: राजपद की बात करता है। उपयोग: क्या आपने अपना उत्तम राजा यीशु को सौंपा है ?

आ) लोबान: याजकपद और प्रार्थना की बात करता है। उपयोग: क्या आप महान महायाजक की स्तुति, आराधना और प्रार्थना में आराधना करते हो ?

इ) गन्धरस: दुख, मृत्यु, गाढ़े जाने और पुनरुत्थान की बात करता है। उपयोग: क्या आप अपने इन्कार और बलिदान में अपने जीवन के त्याग के द्वारा परमेश्वर के मेम्ने की आराधना करते हो ?

इ) निष्कर्ष: बुद्धिमान पुरुषों ने उनके अति उत्तम के साथ आराधना की, क्या आप भी अब से ऐसा ही करोगे ?!

उपयोग पर एक टिप्पणी

प्रचार मूल रूप से एक व्यक्तिगत मुलाकात है जिसमें प्रचारक की इच्छाशक्ति सत्य के द्वारा सुननेवाले की इच्छाशक्ति पर एक दावा करती है। यदि कोई बुलावा नहीं है तब कोई संदेश भी नहीं है। उपयोग व्यक्ति का ध्यान उसके जीवन के क्षेत्रों पर लाता है:

- अँगुली उसी स्थान पर रखी जानी चाहिए जहाँ रोग है
- यदि सत्य किसी विशेष सिद्धान्त, आदत, व्यवहार, कारण, अभिप्राय, पक्षपात या जरूरत पर केन्द्रित किया जाएगा, तब यह प्रभावशाली नहीं होगा।
- ऐतिहासिक संदेश को निश्चित सबक पर केन्द्रित होना चाहिए।
- सबसे बड़ा प्रभाव अपने ऊपर उपयोग के द्वारा होता है, "यह मैं हूँ!"
- उपयोग सबक या सीख के रूप में सबसे अच्छी तरह प्रस्तुत किया जा सकता है।

जिसे हम उपयोग कहते हैं उसकी प्रमुख बात प्रत्यायन (अनुनय) है। लोगों को सत्य के विषय में मनवान या उन्हें दिखाना कि यह उन पर कैसे लागू होता है पर्याप्त नहीं है, परन्तु प्रत्यायन की आवश्यकता होती है जो एक प्रतिक्रिया लाता है।

मूल्याँकन – संदेश की सूची बनाना

अपनी तैयारी के मूल्याँकन में, निम्नलिखित प्रश्न पूछो:

- क्या संदेश मजबूती के साथ पवित्रशास्त्र / परमेश्वर के सम्पूर्ण अभिप्राय पर आधारित है ?
- क्या यह हमारे प्रभु यीशु मसीह के व्यक्ति और कार्य को ऊँचा करता है ?
- क्या यह लोगों की जरूरत पूरी करेगा ?
- क्या विषय एक अनन्त सत्य है जिसकी बात करना लाभकारी है ?
- क्या सब वचन और ऐतिहासिक तथ्य सही हैं ?
- क्या संदेश व्यवस्थित है ताकि मैं इसे स्पष्ट रूप से प्रचार कर सकता हूँ और लोग सरलता के साथ समझ सकेंगे ? क्या उद्देश्य एक संक्षिप्त और स्पष्ट कथन है ? क्या विकास की एक स्पष्ट योजना है ? क्या एक व्यावहारिक उपयोग है जो संदेश को व्यक्तिगत बनाएगा ?
- क्या संदेश मेरे लिए व्यक्तिगत है, ताकि मैं इसे दूसरों के लिए भी असली बना सकूँ ?
- क्या यह संदेश उसमें ठीक बैठता है जो प्रभु कलीसिया में कर रहा है और पवित्र आत्मा की बात करता है ?
- क्या संदेश का स्तर सुननेवालों के विकास के स्तर से मेल खाता है ?

संदेश का प्रचारक

अ) चरित्र

क्योंकि प्रचार में ईश्वरीय सत्य को मानवीय व्यक्तित्व के द्वारा बताना सम्मिलित है, उचित चरित्र महत्त्वपूर्ण है, जिसमें सामिल है:
- प्रचार करने के लिए एक निश्चित बुलावा (गला. 1:15-17)
- ऊँचे स्तर की व्यक्तिगत खराई, परिपक्वता, भक्तिपूर्ण चरित्र (2 कुरिं. 2:14-17; 2 कुरिं. 4:1-2)।

- पापी तरीके त्याग दो:-
  # पारदर्शी / खुले / उत्तरदायी / ईमानदार / सच्चे बनो।
  # शुद्ध और पवित्र बनो क्योंकि आप अपने स्वरूप में उत्पन्न करोगे। (उत्प. 1:12,21)। अपनी सेवकाई के द्वारा आप लोगों पर अपने रवैयों और चरित्र का प्रतिबिम्ब बनाओगे। अपवित्र जीवन, आत्मा में कटुता, आलोचक और नकारात्मक रवैया और निराशा से स्वतन्त्र रहो।
- जो आप हो बने रहो, दूसरों की नकल मत करो। परमेश्वर ने आपको अद्वितीय बनाया है, एक नकल नहीं! (1 शमूएल 17:38-39 देखो, जहाँ दाऊद शाऊल का कवच पहनने का प्रयत्न करता है, परन्तु वह उस पर ठीक नहीं बैठा और आशीष के बदले एक रुकावट बन सकता था)।
- वचन को बिगाड़ो मत। सम्पूर्ण सत्य को साहस के साथ, स्पष्टता से और सम्पूर्ण हृदय के साथ घोषित करो (प्रेरितों 20:27)। वचन का अध्ययन करो और परमेश्वर के वचन का एक योग्य सेवक बनने के लिए अपने को समर्पित करो, और बिना समझौता किए उसके ईश्वरीय सत्य को बताओ।
- लाभ या महिमा के साधन के लिए नहीं। एक प्रचारक के रूप में आपको एक लोक-प्रतिमा बनाने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु सच्चे, ईमानदार, और ढोंग या छल से स्वतंत्र रहो।
  इसलिए इनसे सावधान रहो:
  - पैसा माँगना
  - प्रतिजाति के साथ घूमना
  - आत्मिक अधिकार की माँग करना
  - लोगों को चालाकी से प्रभावित करना

आ) प्रचार की माँगें

- स्वाभाविक, शान्त, अपने आप, प्रारंभिक बनो।
- स्वैच्छिक, लचीले और साधारण बनो। आपको लोगों को प्रभावित करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु उनकी सेवा करनी है।
- प्रार्थना का एक व्यक्ति बनो। लूका 5:16-17 से, हम प्रार्थना और परमेश्वर के सामर्थ्य में सम्बंध देख सकते हैं, जो आपके प्रचार को गतिशील बना सकता है।
- पवित्र आत्मा का अभिषेक (1 थिस्स. 1:5), प्रभु यीशु को ऊँचा करेगा और ताज़गी लाएगा।

इ) आवाज़, बोली और शारीरिक संकेत

- अपनी आवाज में सूचक बनो, नीरस बोली से बचो।
- अपनी आवाज की रफतार पर नियंत्रण रखो। रफतार को बदलने की कोशिश करो और बहुत तेजी से मत बोलो। एक क्षण रुकने से भी डरो मत ताकि सुननेवाले आपके साथ रह सकें और आपके संदेश को सोख सकें।
- अपने उच्चारण पर ध्यान रखो, अर्थ है: अपने शब्दों को साफ-साफ बोलो।
- आवाज का प्रबलता; न तो चिल्लाओ और न फुसफुसाओ, परन्तु बातचीत की प्रबलता से या थोड़ा जोर से बोलो।
- शारीरिक संकेत / भाषा; अपने शरीर को स्वाभाविक तरीके से इस्तेमाल करना सीखो, परन्तु अनावश्यक शारीरिक संकेतों से बचो। उचित आखों से आँखें मिलाए रखो, जिससे सब को लगेगा आप उनसे बात कर रहे हो। अपने चेहरे की अभिव्यंजना को अपने विषय से मेल खाने दो।

अन्त में, याद रखो कि प्रचार का वरदान अनुभव और सीखने के द्वारा विकसित किया जा सकता है!!

संदेश मूल्याँकन फार्म

प्रचारक का नामः विषयः मूलपाठः

सिद्धान्तः शीर्षकः

अ. <u>ढाँचा</u>

मूलपाठ से संबंधित विषयः स्पष्टताः प्रभावकारीः

टिप्पणीः

परिचयः क्या इसने मेरा ध्यान पाया?

क्या यह मूलपाठ तक ले गया?

संदेश की किस्मः क्या मुख्य विचार साफ-साफ बताया गया था?

टिप्पणीः

रूपरेखाः इस पेपर के पीछे प्रचारक के संदेश की रूपरेखा लिखो। क्या यह स्पष्ट थी?

प्रगतिः स्पष्ट और स्वाभाविक? ढाँचा याद रखने में सरल?

क्या संदेश शिखर तक ले गया था?

क्या संदेश का प्रहार प्रभावकारी तरीके से सूचित किया गया था? यह कैसा किया गया था?

टिप्पणीः

इस्तेमाल किए गए उदाहरणः क्या उदाहरण संदेश के विषय पर लागू होते थे?

निष्कर्षः सारांशः

सामान्य पुनरीक्षणः

अन्तिम टिप्पणीः

आ. <u>बाइबल की व्याख्याः</u>

क्या मूलपाठ की सही-सही व्याख्या की गई थी? इसे कैसे समझाया गया था?

टिप्पणीः

सिद्धान्तः क्या इसे स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया था? पूरा या टेढ़ा?

विचारः कोई नए विचार या वही पुराने?

कोई बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बातें?

उदाहरणः क्या ये बाइबल के, जीवन की घटनाएँ, इतिहास, साहित्य, विज्ञान, टिप्पणियाँ थीं?

उपयोगः क्या उपयोग संदेश में डाला गया था, अव्यावहारिक था या गायब था?

क्या संदेश ने विवेक, इच्छाशक्ति, मन, या भावनाओं को आकर्षित किया? क्या यह सन्तुलित था? टिप्पणी।

इ. <u>भाषण-शैली</u>

कृपया टिप्पणी करोः

- आवाज - ढंग - मद्रा

- व्याकरण - शब्दावली - बोली

- रूपरंग - आँखों से सम्पर्क - शीरीरक संकेत

सुननेवालों की प्रतिक्रियाः (अ) प्रभावनीय; (आ) उलझन भरा; (इ) संदेश को अनुपयुक्त पाया; (ई) उबाऊ लगा? टिप्पणी।

- कुछ वाक्यों में बताओ कि प्रचारक क्या कहने का प्रयत्न कर रहा था?

- आपकी अपनी प्रतक्रिया क्या थी (सच्चाई से बताओ)? क्या आपको लगा कि संदेश स्पष्ट आया था?

- क्या संदेश ने आपके संदेहों को दूर किया, आपको जानकारी दी, प्रकटीकरण, या आपकी उन्नति की? समझाइए।

- प्रचारक के लिए आपके कुछ सुझाव?

प्रचारक को सामर्थ्य का ईश्वरीय माध्यम होना चाहिए

जीवन की सम्पूर्ण पवित्रता का अध्ययन करो। आपकी सम्पूर्ण उपयोगिता इस पर निर्भर है, क्योंकि आपके संदेश केवल एक या दो घंटों तक चलते हैं; आपका जीवन सारा सप्ताह प्रचार करता है। यदि शैतान एक सेवक को प्रशंसा, सुख, अच्छे भोजन का प्रेमी और लोभी बना दे, तब उसने आपकी सेवकाई नष्ट कर दी है। अपने आपको प्रार्थना में लगाओ, और अपने मूलपाठ, अपने विचार, अपने शब्द परमेश्वर से पाओ। लूथर उसके उत्तम 3 घंटे प्रार्थना में बिताता था।

हम कलीसिया को बढ़ाने और सुसमाचार को फैलाने के नए तरीकों, नई योजनाओं, नई संस्थाओं को बनाने के लिए, यदि तनाव में न भी हों, लगातार खींचे जाते हैं। समय की इस प्रवृत्ति में मनुष्य को भूल जाने या योजना या संस्था में मनुष्य को डुबा देने की प्रवृत्ति है। परमेश्वर की योजना मनुष्य का भरपूर लाभ लेना है, किसी दूसरी चीज से बढ़कर। मनुष्य परमेश्वर का तरीका हैं। कलीसिया बेहतर तरीकों की खोज में है; परमेश्वर बेहतर मनुष्यों की खोज में है।

"एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ जिसका नाम यूहन्ना था।" जो नया युग आरम्भ हुआ और जो मसीह के लिए मार्ग तैयार हुआ इस मनुष्य यूहन्ना के द्वारा हुआ। "हमें एक पुत्र दिया गया है।" संसार का उद्धार उस पुत्र में से निकलता है। जब पौलुस मनुष्यों के व्यक्तिगत चरित्र को आग्रह करता है जिन्होंने संसार में सुसमाचार फैलाया था, वह उनकी सफलता का रहस्य प्रकट करता है। सुसमाचार की महिमा और प्रभावकारिता उन मनुष्यों पर टिकी है जो इसे घोषित करते हैं।

जब परमेश्वर घोषित करता है कि, "यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिए फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह उसकी सामर्थ्य दिखाए।" वह मनुष्यों की आवश्यकता और उन पर उसकी निर्भरता प्रकट करता है जिन्हें वह संसार पर उसका सामर्थ्य दिखाने के लिए माध्यम के रूप में इस्तेमाल कर सके। यह अत्यावश्यक महत्त्वपूर्ण सत्य वह है जिसे यह मशीनी युग भूल जाता है। इसका भूलना परमेश्वर के काम के लिए उतना ही विनाशकारी है जितना सूर्य को उसके स्थान से निकाल देना है। अन्धकार, परेशानी और मृत्यु परिणाम होंगे।

कलीसिया को आज अधिक या बेहतर मशीनों की आवश्यकता नहीं; न नई संस्थाओं या अधिक और नए तरीकों की, परन्तु मनुष्यों की है जिन्हें पवित्र आत्मा इस्तेमाल कर सकता है - प्रार्थना के मनुष्य; प्रार्थना में सामर्थी मनुष्य। पवित्र आत्मा तरीकों में से नहीं मनुष्यों में से कार्य करता है। वह मशीनों पर नहीं, मनुष्यों पर उतरता है। वह मनुष्यों को-प्रार्थना के मनुष्यों को अभिषेक देता है।

सुसमाचार प्रचारक को सौंपा गया है। वह परमेश्वर से मनुष्यों को संदेश को खराब कर सकता है। प्रचारक वह सोने की नली है जिसमें से ईश्वरीय तेल बहता है। नली न केवल सोने की होनी चाहिए, परन्तु खुली और निर्दोष होनी चाहिए, जिसमें से तेल बिना रुकावट, पूरा का पूरा बह सके।

मनुष्य प्रचारक को बनाता है; परमेश्वर को मनुष्य को बनाना चाहिए। दूत, यदि सम्भव हो तो, संदेश से बड़ा होना चाहिए। प्रचारक संदेश बनाता है। जैसे माँ की छाती से निकलनेवाला जीवन देने वाला दूध कुछ और नहीं माँ का जीवन है, उसी प्रकार सब कुछ जो प्रचारक कहता है उससे रंजित होता है और जो वह है उससे भरा होता है। खज़ाना तो मिट्टी के बरतनों में है, और बरतन का स्वाद उसे प्रभावित कर सकता है। मनुष्य, वरन्, सम्पूर्ण मनुष्य, संदेश के पीछे होता है।

<u>प्रचार एक घंटे का प्रदर्शन नहीं है। यह जीवन का परिपूर्ण होकर बहना है</u>। एक संदेश को बनाने में बीस वर्ष लगते हैं, क्योंकि मनुष्य को बनाने में बीस वर्ष लगते हैं। सच्चा संदेश जीवन की एक चीज है। संदेश बढ़ता है क्योंकि मनुष्य बढ़ता है। संदेश शक्तिशाली है क्योंकि मनुष्य शक्तिशाली है। संदेश पवित्र है क्योंकि मनुष्य पवित्र है। संदेश ईश्वरीय अभिषेक से भरा है क्योंकि मनुष्य ईश्वरीय अभिषेक से भरा है।

पौलुस ने इसे "मेरा सुसमाचार" कहा था; इसलिए नहीं क्योंकि उसने इसे उसकी व्यक्तिगत सनकों से भ्रष्ट कर दिया था या स्वार्थी अपनाव के द्वारा इसे बदल दिया था, परन्तु सुसमाचार मनुष्य पौलुस के हृदय और जीवन में डाला गया था, एक व्यक्तिगत भरोसे के रूप में जिसे पौलुस के गुणों से काम करना था, जिसे उसके प्रज्वलित प्राण की प्रज्वलित शक्ति से प्रज्वलित और समर्थ होना था।

संदेश इसकी जीवन देनेवाले शक्ति में मनुष्य से ऊपर नहीं उठ सकता है। मरे हुए मनुष्य मरे हुए संदेश देते हैं; और मरे हुए संदेश मारते हैं। सब कुछ प्रचारक के आत्मिक चरित्र पर निर्भर करता है। यहूदी धर्म में, महा याजक के वस्त्र पर सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ था: "प्रभु के लिए पवित्र।" इसलिए मसीह के हर सेवक को इस पवित्र आदर्श-वाक्य में ढलना और वश में होना चाहिए। मसीही सेवा के लिए यह बड़े शर्म की बात होगी यदि इसका स्तर यहूदी याजकपद के चरित्र की पवित्रता और लक्ष्य की पवित्रता से नीचे गिरता है।

मसीह के सुसमाचार में अपने में कोई प्रसारित करने की सामर्थ्य नहीं है। यह आगे बढ़ता है जैसे वे मनुष्य बढ़ते हैं जिनके पास यह है। प्रचारक को सुसमाचार की मूर्ति होना चाहिए। इसकी ईश्वरीय, अधिक विशेष तत्त्वों को उसमें मूर्त रूप होना है। प्रेम की बाध्य करनेवाली शक्ति प्रचारक में एक दिखनेवाली, सनकी, सर्व-प्रभावशाली, स्वयं-गुमनाम शक्ति के रूप में होनी चाहिए। स्वयं के इन्कार की शक्ति उसके अस्तित्व, उसके हृदय और लहू और हड्डियों में होनी चाहिए। उसे मनुष्यों में मनुष्य के रूप में जाना चाहिए, जो दीनता से ढँका, नम्रता में बना, एक साँप के समान बुद्धिमान, एक पंडुक के समान अहानिकर हो; एक राजा की आत्मा वाला एक सेवक के बन्धनों, राजकीय स्वतंत्र आचरण, एक बच्चे की सरलता और मधुरता के साथ।

प्रचारक को एक सिद्ध स्वयं को खाली करनेवाले विश्वास और एक अपने को भस्म करनेवाले जोश के सारे परित्याग के साथ, मनुष्यों के उद्धार के काम में अपने आप को झोंक देना चाहिए। सच्चे, निष्कपट, वीरोचित, दयालु, निडर शहीद वे पुरुष होने चाहिए जो परमेश्वर के लिए एक पीढ़ी को बनाते हैं। यदि वे कायर समय व्यतीत करनेवाले, पद खोजनेवाले हों, यदि वे मनुष्यों को प्रसन्न करनेवाले या मनुष्यों से डरनेवाले हों, यदि उनके विश्वास की परमेश्वर या उसके वचन पर निर्बल पकड़ हो, यदि उनका इन्कार शरीर या संसार से टूट जाए, वे कलीसिया की अगुआई या परमेश्वर के वचन की सेवा नहीं कर सकते।

प्रचारक का सबसे स्पष्ट और शक्तिशाली प्रचार उसके अपने लिए होना चाहिए। उसका सबसे कठिन, नाजुक, परिश्रमी, और सम्पूर्ण काम उसके अपने साथ होना चाहिए। बारहों का प्रशिक्षण मसीह का सबसे महान, कठिन और टिकाऊ काम था। प्रचारक संदेश बनानेवाले नहीं हैं, वे मनुष्य बनानेवाले और सन्त बनानेवाले हैं, और केवल वह ही इस काम के लिए उचित रूप से योग्य है जिसने पहले अपने को एक मनुष्य और एक सन्त बनाया है। यह कोई महान योग्यता, या महान शिक्षा, या महान प्रचारक नहीं है जिसे परमेश्वर खोजता है, परन्तु पुरुष जो पवित्रता में महान, विश्वास में महान, प्रेम में महान, ईमानदारी में महान, परमेश्वर के लिए महान हैं - पुरुष जो सदा मंच में पवित्र संदेश प्रचार करते हैं, और पवित्र जीवनों में से करते हैं। वे परमेश्वर के लिए एक पीढ़ी बना सकते हैं।

इसी प्रकार से पहले मसीही बनाए गए थे। वे पक्के गठन के पुरुष थे, स्वर्ग के किस्म के प्रचारक - वीरोचित, निर्भीक, दृढ़, सन्त-जैसे। उनके प्रचार का अर्थ था, स्वयं का इन्कार, स्वयं को क्रूसित करना, गम्भीर, परिश्रम, शहीद होना। उन्होंने अपने को इस में इस प्रकार लगाया था जिसका प्रभाव उनके पीढ़ी पर पड़ा था, और इसकी कोख में एक पीढ़ी बनाई जो अभी परमेश्वर के लिए जन्मी नहीं थी। प्रचार करनेवाले पुरुष को प्रार्थना करनेवाला पुरुष होना है। प्रार्थना प्रचारक का सबसे शक्तिशाली हथियार है। अपने आप में एक सर्वसामर्थी शक्ति, जो सबको जीवन और शक्ति देती है।

असली संदेश बंद कमरे (व्यक्तिगत प्रार्थना के लिए गुप्त स्थान) में बनता है। मनुष्य - परमेश्वर के मनुष्य - बंद कमरे में बनते हैं। उसका जीवन और उसके गूढ़ दृढ़ निश्चय परमेश्वर के साथ उसके गुप्त सम्पर्क में बनते हैं। उसके आत्मा की बोझभरी और आँसूभरी प्राणपीड़ा, उके गूढ़ और मधुर संदेश तब मिले थे जब वह परमेश्वर के साथ अकेला था। प्रार्थना मनुष्य को बनाती है; प्रार्थना प्रचारक को बनाती है; प्रार्थना पास्टर को बनाती है।

आज का मंच प्रार्थना में निर्बल है। शिक्षा का अभिमान प्रार्थना की निर्भर दीनता के विरुद्ध है। मंच की प्रार्थना प्रायः केवल औपचारिक है - सभा के नित्यक्रम के लिए एक प्रदर्शन। पौलुस के जीवन और सेवा में प्रार्थना एक सामर्थी शक्ति थी। हर प्रचारक जो उसके अपने जीवन और सेवा में प्रार्थना को एक सामर्थी कारक नहीं बनाता है परमेश्वर के काम में निर्बल है और इस संसार में परमेश्वर के उद्देश्य को बढ़ाने में शक्तिहीन है!

बाइबल अध्ययन का नेतृत्व कैसे करना है

दो हज़ार वर्ष पहले यीशु के पहले चेले विश्वासियों के घरों और बड़ी सभाओं में संगति और शिक्षा पाया करते थे। फिर भी हम अध्ययन कैसे कर सकते हैं, और एक बाइबल अध्ययन की योजना और नेतृत्व की प्रभावकारी योजना कैसे बना सकते हैं।

1. **प्रार्थनापूर्वक लक्ष्य का विचार करो**

- हम क्या पूरा करने का लक्ष्य बना रहे हैं ?
कुछ सामान्य लक्ष्य हैं जो सब अध्ययनों का संचालन करते हैं, जो हैं:

- हर विश्वासी में व्यक्तिगत विकास को बढ़ाना
- अर्थपूर्ण सम्बंध बनाना
- व्यावहारिक देखभाल बढ़ाना
- सुसमाचार सुनाना

दूसरे निश्चित लक्ष्य भी हो सकते हैं, जैसे कि:

- इन लक्ष्यों को निर्धारित करने के लिए हमें: उन लोगों पर विचार करना है जो आएँगे। क्या वे अविवाहित हैं या विवाहित? ग्रहणियाँ हैं या व्यवसायी? मसीही या गैर-मसीही?
- इसके अतिरिक्त, हमें लोगों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के विषय में पता लगाना है। उदाहरण के लिए, यदि कुछ कठिन समय में से गुज़र रहे हैं, तब हमें परीक्षाओं को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

लोगों के विशेष समूह उचित विषयों का अध्ययन करना चाह सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, व्यवसायी लोग जानना चाहेंगे कि बाइबल व्यवसाय के नैतिक मूल्यों के विषय में क्या कहती है। विवाहित लोगों का समूह जानना चाहेंगे कि बाइबल बच्चों के पालन-पोषण के विषय में क्या सिखाती है।
योजना बनाते समय इन सब तत्त्वों पर विचार किया जाना चाहिए। जैसे हम प्रार्थनापूर्वक लोगों की आवश्यकताओं का पता लगाएँगे, स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने में सहायता मिलेगी।

- लक्ष्य कैसे पूरा करना है ?
भाषण मत दो, परन्तु लोगों की स्वयं पता लगाने में सहायता करो। शिक्षा और प्रशिक्षण देने का एक समय है, परन्तु खोजने और विचार-विमर्श करने का भी समय है। बाइबल अध्ययन अगुवों के रूप में हम लेक्टरर नहीं बनना चाहते हैं। हम वैसे अगुवे बनना चाहते हैं जो सही प्रश्न पूछकर और उनके विचारों का संचालन करके समूह में से सत्य को बाहर निकालते हैं।

2. **पाठ की सामग्री**

अ. तैयार सामग्री

एक पाठ की तैयारी करने के बदले, तैयार सामग्री इस्तेमाल करना सम्भव है जो आपके लिए उचित हों।

आ. प्रश्नों की किस्में

यीशु ने उत्तर देने से अधिक प्रश्न पूछे थे। वह सदा उसके चेलों से पूछते रहते थे वे क्या सोचते हैं। उसने फरीसियों से भी उनके विचार पूछे। वह लोगों को सोचने के लिए लगातार उत्तेजित करते रहते थे।

एक अच्छा अगुवा उनके अपने लिए चीजों को खोजने में लोगों की सहायता करता है। इसलिए उसे सही प्रश्न पूछना सीखना चाहिए; हमें, जैसा कहते हैं, आरम्भ करना चाहिए। सही प्रश्न पूछना एक ऊँचाई से बर्फ का ढेला लुड़काने जैसा है। जैसे यह आगे बढ़ता है यह गतिमात्रा पकड़ता है।
एक अच्छा प्रश्न टिप्पणियाँ इकट्ठी करता और विचार-विमर्श आरम्भ करता है।

अच्छे प्रश्न:

- अगुवे की समूह की समझ के स्तर का मूल्याँकन करने में सहायता करते हैं।
- समूह के सदस्यों की सोचने में सहायता करते हैं।
- सदस्यों की अपने लिए स्वयं चीजें खोजने में सहायता करते हैं।

 # खोजनेवाले प्रश्न

खोजनेवाले प्रश्न पूछने के द्वारा अगुवा विचार-विमर्श को आरम्भ करता और संचालन करता है। कुछ उदाहरण हैं:

- यहाँ पवित्रशास्त्र में क्या सिखाया जा रहा है?
- आपने क्या सीखा है?
- किसने आप पर प्रभाव डाला?
- कौन सा वचन सबसे महत्त्वपूर्ण है और क्यों?

खोजनेवाले प्रश्नों के साथ कोई सही या गलत उत्तर नहीं हो सकते हैं, प्रश्न विचार-विमर्श का एक द्वार हैं। लोगों के उत्तरों और रायों के लिए प्रश्न पूछो। दूसरे सहमत, असहमत हो सकते हैं, कुछ जोड़ सकते हैं, भिन्न दृष्टिकोण दे सकते हैं, आदि। अगुवे को सही लक्ष्य की ओर ले जाने के लिए इन प्रश्नों को इस्तेमाल करना चाहिए।

 # प्रश्नों को समझना

ये खोलते या विषय को गहरा करते हैं। वे लोगों की खोजे गए सत्यों के अर्थ को समझने में सहायता करेंगे। ये प्रश्न पूछे जाते हैं ताकि लोग पवित्रशास्त्र के सत्यों को देखेंगे और समझेंगे। कभी-कभार कोई दूसरा भी प्रश्न पूछ सकता है। यह अच्छा है और बढ़ावा देना चाहिए। अपने उत्तर देने से पहले समूह को पूछने से हम और लाभ पा सकते हैं।

 # उपयोग वाले प्रश्न

ये प्रश्न लोगों को जानने में सहायता करते हैं कि खोजे गए सत्यों को जीवन में कैसे लगाना है। इन्हें लोगों के डरों, उनकी कठिनाइयों, और उनकी निर्बलताओं को बाहर निकालने में इस्तेमाल किया जा सकता है। तब देख सकते हैं कि परमेश्वर का वचन इन स्थितियों में कैसे हमारी सहायता करता है।

मत करो:

प्रश्न पूछने तक ही अपने को सीमित मत रखो। उत्तरों में भी भाग लो।
दो प्रश्नों को एक में मत जोड़ो। उन्हें एक-एक करके पूछो।
ऐसे प्रश्न मत पूछो जिनका उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' ही हो।

ध्यान दो: प्रश्न पूछते समय सब को शामिल करो। कुछ प्रश्न सबके लिए हो सकते हैं, परन्तु यदि आप पाओ कि कोई उत्तर नहीं दे रहा है, तब "आपको क्या लगता है" पूछ कर उसे भी शामिल करो।

3. पाठ की तैयारी

अ. पाठ का अध्ययन करो

यदि तैयार सामग्री को इस्तेमाल करना है तब पहले ही उनका अध्यायन किया जाना चाहिए। हमें स्वयं मूलपाठ पढ़ना चाहिए और प्रश्नों के उत्तर देने चाहिए, वचन पढ़ने चाहिए और विषय को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। हमें इसे एक सकारात्मक रवैये के साथ करना चाहिए। यदि आपके रवैये सही नहीं हैं, तब हमारा तैयारी सा समय कठिन और व्यर्थ होगा।

- अपने हृदय को तैयार करो।
- परमेश्वर के वचन के लिए भूख हो।
- परमेश्वर से सुनने की अपेक्षा रखो।
- परमेश्वर के वचन के स्वयं अधीन हो जाओ।
- प्रार्थनापूर्वक पाठ को नियंत्रण में कर लो।

आ. लक्ष्यों पर पुनःविचार करो

दोबारा विचार करो आपका लक्ष्य क्या है:

- पाठ किस बारे में है ?
- मुख्य बातें क्या हैं ?
- उन्हें क्या सीखना चाहिए ?
- मैं सार कैसे प्रस्तुत करूँ ?

इ. प्रश्नों पर विचार करो

- किस प्रकार का प्रश्न चाहिए उस पर विचार करो।
- इसे सरल और समझने में आसान बनाओ।
- निश्चित करो कि उत्तर स्पष्ट रूप से दिखाया गया है और उचित है।
- मुख्य बात पर ध्यान लगाओ।

अपने आप से पूछो आप प्रश्न क्यों पूछ रहे हो।

- क्या प्रश्न भाग लेने को प्रेरित करेगा ?
- क्या यह एक से अधिक व्यक्ति को प्रतिक्रिया करने का अवसर देगा ?
- क्या यह उनकी व्यक्तिगत तैयारी में से निकालेगा ?

उनके उत्तरों और तर्कों को ध्यान से सुनो ताकि एक स्पष्ट सार प्रस्तुत कर सको।

ई. प्रार्थना करो और निमंत्रण दो

पाठ तैयार करते समय विचार करो कि कौन कौन वहाँ होंगे। पहले से उनके लिए रोजाना प्रार्थना करना अच्छा है, और उनको सभा की याद दिलाना भी।

- उन्हें खुद बुलाओ।
- लोगों के रूप में उनके विषय में सोचो।
- समझाओ आप क्या सिखाने वाले हो - यह प्रेरित करेगा।

4. पाठ

अ. समय सूची पर दृढ़ता से बने रहो

यदि अध्ययन समय से आगे चलता है तब आप उनके ध्यान को खोने के खतरे में हैं और भविष्य में उनकी उपस्थिति को भी।

आ. उत्साही बने रहो

मित्रभाव वाले बनो और लोगों का, विशेषकर नए लोगों का, अच्छा स्वागत करो। उत्साह छुतहा है। उत्साह सूचित करो। यदि अगुवा अध्ययन के विषय में उत्तेजित होगा तब दूसरे इसे पकड़ लेंगे और अध्ययन दिलचस्प और उपयोगी दोनों होगी।

इ. बहुत अधिक बातें मत करो

दूसरों को बातें करने में लगाना सीखो। एक प्रश्न पूछने के बाद अपेक्षा करो कि कुछ मिनटों की खामोशी रहेगी जब लोग उत्तर के विषय में सोच रहे होंगे। यह खामोशी के समय लोगों को सोचने का समय देते हैं। उनके उत्तर की प्रतीक्षा करते समय, उस खामोशी के समय को स्वयं प्रश्न पर विचार करने में लगाओ।

कई अगुवे लोगों को सोचने का कोई समय नहीं देने की भूल करते हैं। हर उत्तर की टिप्पणी करना आवश्यक नहीं है, दूसरों को टिप्पणी करने को भी कहो।

ई. लगातार बात करनेवाले के साथ दृढ़ रहो

कुछ लोग अध्ययन पर शासन करते हैं। ऐसा मत होने दो। निश्चित रूप से कहो, "क्या किसी और को कुछ कहना है?" निश्चय करो कि दूसरे भी योगदान दें। यदि व्यक्ति बोलते रहने की कोशिश करता है तब उसे कहो कि दूसरों को भी उनके विचार कहने दे। यदि यह समस्या दीर्घ बनती है, तब सभा के बाद उस सदस्य से अलग से बात करो और उसे दूसरों को भी अवसर देने को कहो।

उ. ऑडियो / वीडियो सहायक इस्तेमाल करने पर विचार करो

एक फलालेन ग्राफ बोर्ड या एक सफेद बोर्ड प्रभावकारी वीडियो सहायक हो सकता है। बाइबल की कहानियों को चित्रित करने के लिए मानचित्र बड़े उपयोगी हैं।

आवाज, संगीत, या वीडियो टेप्स इस्तेमाल करना भी सम्भव है। इन सहायकों को हर समय इस्तेमाल करना आवश्यक नहीं है परन्तु यदि कभी-कभार इस्तेमाल किए जाएँ तब विविधता लाते हैं। तब प्रश्न बाइबल और देखने की सामग्री पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

ऊ. मूल्याँकन करो

एक वरिष्ट सदस्य से अध्ययन कैसा चला था उसके विषय में उसके विचार पूछो। इससे आप को और अच्छा करने में सहायता मिलेगी। एक व्यक्तिगत मूल्याँकन भी किया जा सकता है। सामूहिक योगदान, रुचि का स्तर, और किस हद तक अध्ययन के लक्ष्य पूरे हुए थे इन चीजों को देखा जा सकता है।

5. समूह के सदस्य

अ. नकारात्मक सदस्य

- दर्शक। यह व्यक्ति बैठकर देखते रहने में संतुष्ट है। वह मुस्कराता है, सिर हिलाता है, भौंहें चढ़ाता है, सोता है।
- अविराम बातें करनेवाला। वह अकसर बिना सोचे बोलता है, और सुनता नहीं जो दूसरे बोल रहे हैं: उसकी रुचि उसके अपने बोलने में है। जब दूसरा बोल रहा होता है तब वह सुनता नहीं है परन्तु सोच रहा होता है उसे क्या बोलना है।
- सब कुछ जाननेवाला। वह सदा कहता रहता है, "मैं नहीं मानता।" उसके लगता है वह हमेशा जानता है क्यों सब गलत हैं।
- जोकर। उसको लगता है उसकी सेवकाई मजाक करते रहना है।
- गली की बिल्ली। उसे बाइबलविद्या की हर अंधेरी गली में जाने की एक आदत है और इसलिए अपनी नई सनक को व्यक्त करने के हर अवसर को जाने नहीं देता है।
- रूठनेवाला (चुप व्यक्ति जो अपने ऊपर ध्यान खींचने की कोशिश करता है)। यदि कोई उससे असहमत होता है, वह रूठ जाता है।

इन "नकारात्मक" व्यक्तियों के साथ दृढ़ता और सकारात्मक तरीके से निपटा जाना चाहिए। सभा में डाँटने के बदले अकेले में बातचीत के दौरान एक बुद्धिमानी का शब्द अकसर बेहतर होगा।

आ. सकारात्मक सदस्य

- पहल करनेवाला। उसके पास अच्छे विचार और प्रस्ताव हैं।
- उपदेश देनेवाला। लोगों के उत्तरों का समर्थन करता और उन्हें बोलने में प्रोत्साहित करता है।
- विश्लेषक: बोलने से पहले सब कुछ के विषय में ठीक-ठीक सोचता और उत्तरों का विश्लेषण करता है।
- खोज करनेवाला। नए विचारों को और पवित्रशास्त्र में से नए दृष्टिकोणों को खोजता है।
- मध्यस्थ। वह विरोधी दिखनेवाले विचारों को इकट्ठा करने और उन शर्तों को खोजने में जो सब को सहमत हों योग्यता रखता है।

सकारात्मक सदस्य उनके अपने तरीकों से अध्ययन में कुछ जोड़ते हैं। उन्हें सभा के दौरान और बाद में दोनों समय प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

बाइबल अध्ययन में बुलाए गए लोगों से निम्नलिखित लाने के लिए कहा जाना चाहिए:

- एक बाइबल
- एक कापी और एक पेन।

प्रेरक बाइबल अध्ययन

एक बाइबल के टुकड़े के अध्ययन के लिए सुझावः

1. टुकड़े को दो या तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ो।
2. टुकड़ा क्या कहता है, मुख्य विचार, विषय, आज्ञा, आदि।
3. परिच्छेद का अध्ययन करोः

   प्रेरक भाव से निम्नलिखित प्रश्न पूछोः

   अ. सामग्री की प्रकृति क्या है? वर्णनात्मक, कविता, प्रस्तावना, भविष्यद्वाणी, चेतावनी, उपदेश, संवाद, दोषारोपण, दृष्टान्त व्याख्या, वंशावली, सिद्धान्त-सम्बंधी प्रस्तुतिकरण, प्रार्थना, चमत्कार, सान्त्वना के शब्द, या क्या यह ऊपर दिए बहुतों का मिश्रण है?

   आ. क्या इस परिच्छेद में कोई महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं?

   इ. मुख्य चरित्र कौन हैं?

   ई. मुख्य विषय या घटनाएँ एक दूसरे से किस प्रकार सम्बंधित हैं?

   उ. मुख्य चरित्र कौन है और उनकी व्यक्तित्व क्या हैं?

   ऊ. क्या कोई कारण और प्रभाव हैं?

   ए. अलंकार और वाक्यांश क्या हैं?

   ऐ. समान्तरता जैसे कोई विचारों की श्रँखला?

   ओ. विरोध के कोई उदाहरण?

   औ. परिच्छेद की कोई स्वाभाविक रूपरेखा?

   अं. किसी आश्चर्यजनक तथ्य ने आपको पकड़ लिया?

   अः. कलीसिया, दूसरे लोग और अपनी उन्नति के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण आपको क्या लगा?

   क. प्रतिदिन के जीवन के लिए क्या उपयोग?

   ख. आपने क्या निष्कर्ष निकाले हैं, और परिच्छेद अपना निष्कर्ष कैसे निकालता है?

तब अपनी सारी खोजों का सारणीबद्ध करो और एक रूपरेखा के रूप में उन्हें इकट्ठा करो और यह एक संदेश, शिक्षा, आदि के लिए एक मूल सामग्री बन जाएगा।

बाइबल का सफलतापूर्वक अध्ययन करना

परिचय:

बाइबल सबसे महान पुस्तक है जो कभी लिखी गई है क्योंकि यह स्वयं परमेश्वर द्वारा प्रेरित है।

बाइबल के द्वारा ही परमेश्वर मानवजाति से बात करता है। वह जीवन की हर परिस्तिति के लिए बुद्धि और निर्देश देता है। वह दुख के समय सान्त्वना और परेशानी के समय मार्गदर्शन देता है। बाइबल के द्वारा परमेश्वर पाप प्रकट करता और उघाड़ता है परन्तु वह क्षमा करने की उसकी इच्छा और हम उस क्षमा को कैसे पा सकते हैं भी बताता है। इसमें प्रतिदिन के लिए प्रेरणाएँ और हमें सूचित और प्रेरित करने की योग्यता है, चाहे हम अपने को कैसी भी परिस्थिति में क्यों न पाएँ।

बाइबल को परिश्रम के साथ पढ़ने और अध्ययन करने के द्वारा हम जीवन के महान रहस्यों के उत्तर पा सकते हैं, जैसे कि:

- मनुष्य कहाँ से आया है ?
- हमारी सृष्टि के प्रारंभ क्या हैं ?
- जीवन का सच्चा उद्देश्य क्या है ?
- मानवजाति के लिए भविष्य में क्या रखा है ?
- हम जीवन, मृत्यु और भविष्य के बारे में सच्चाई कैसे जान सकते हैं ?
- हम कैसे जान सकते हैं परमेश्वर कैसा है ?

बाइबल:

- पाप का प्रारंभ समझाती है।
- पाप की प्रकृति परिभाषित करती है।
- पाप पर परमेश्वर के न्याय की चेतावनी देती है।
- यीशु मसीह प्रभु, उद्धारकर्त्ता का सुसमाचार देती है।
- हम पाप की क्षमा और उद्धर कैसे पा सकते हैं समझाती है।
- पाप के आगे प्रदूषण से हमें साफ रखती है।
- हमें प्रार्थना करना सिखाती है।
- हमारी आत्मा, मन और शरीर को शक्ति देती है।
- हमारे आत्मिक शत्रुओं के विरुद्ध इस्तेमाल के लिए एक तलवार है।
- परमेश्वर को प्रसन्न करनेवाला जीवन कैसे जीना है हमें सिखाती है।
- हमारे जीवन फलवन्त बनाती है।
- परमेश्वर हमारे उद्धारकर्त्ता के साथ अनन्तकाल बिताने के लिए हमें तैयार करती है।

पवित्र बाइबल संसार की सारी पुस्तकों में अनोखी है। आरम्भ से लेकर व्यक्तियों और संस्थाओं, धार्मिक और राजनीतिक दोनों, के तीव्र विरोध के बावजूद, बाइबल न केवल बची रही है, बल्कि इसने संसार की सबसे अधिक बिकनेवाली पुस्तक का स्थान बनाए रखा है। इसका अनोखापन कई तत्त्वों के कारण आता है।

1. यह असल में एक पुस्तक नहीं है – यह पुस्तकों का एक पुस्तकालय है।

बाइबल 66 पुस्तकों से बनी है, जिनमें से 39 उस भाग में हैं जिसे हम पुराना नियम कहते हैं, और 27 उसमें हैं जिसे हम नया नियम कहते हैं। इस सच्चाई के बावजूद कि कई मानवीय "लेखक" शामिल थे, पवित्र आत्मा सच्चा लेखक, संस्थापक, और व्याख्याता है। हालाँकि कई वर्षो के दौरान, विभिन्न समयों और विविध संस्कृत्तियों में असंख्य लेखकों के द्वारा लिखी गई है, फिर भी सम्पूर्ण विषय अनोखा और एक समान है। ईश्वरीय उद्धार का श्रेष्ठ विषय उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक पाया जाता है। बाकी के सारे विषय इस प्रमुख विषय को लगातार प्रमाणित करता, सहयोग देता और मेल खाता है।

2. यह एक जीवित पुस्तक है।

हालाँकि बाइबल किसी दूसरी पुस्तक के समान "दिखती" है, सामान्य तरीके से छापी और प्रकाशित की गई है, यह अनोखे तरीके से भिन्न है जिसमें एक सजीव गुण है जो किसी दूसरी पुस्तक में नहीं है। यीशु ने कहा कि उसके शब्द "आत्मा और

जीवन" हैं (यूहन्ना 6:63), जिसका अर्थ है कि वे केवल श्रव्य आवाजें नहीं हैं जिन्हें हमारी श्रवण प्रणाली के द्वारा सुना जाता है, परन्तु आत्मिक संचार हैं जो हमारे आत्मिक अस्तित्व में सुनाई देते हैं। इसलिए हमें बाइबल को केवल पढ़ना नहीं है, हमें इसे आत्मिक रूप से सोख लेना है। दाऊद ने कहा, "तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं, वे मेरे मुँह में मधु से भी मीठे हैं।" (भजन 119:103)

परमेश्वर का वचन भोजन, रोटी, मांस, दूध है के अनेक संदर्भ हैं, सब संकेत देते हैं कि हमें परमेश्वर के वचन को खाना, पीना चाहिए। यह हमारी आत्मा है जो इस प्रकार पुष्टि पाती है। हमें परमेश्वर के वचन को केवल पढ़ कर, या अध्ययन करके संतुष्ट नहीं होना है। हमें इसे खाना और पचाना है, और इस प्रकार अपनी आत्मा को पुष्टि देना और मजबूत करना है। परमेश्वर का वचन मुख्य रूप से केवल हमारी बुद्धि को सूचित करने या हमारे मन को जानकारी देने के लिए नहीं लिखा गया था, परन्तु हमारे आत्मिक भीतरी मनुष्य को तृप्त करने और मजबूत करने के लिए लिखा गया था।

3. **यह अनोखे रूप से परमेश्वर की पुस्तक है।**

बाइबल अनोखे और विशेष रूप से परमेश्वर का वचन है। हर पृष्ठ की सतह के नीचे परमेश्वर का स्वभाव और चरित्र पाया जाता है। हर अंश के द्वारा उसकी अनन्त इच्छा और उद्देश्य व्यक्त होती है। इसलिए हमें पता लगाने का प्रयत्न करना चाहिए कि बाइबल हमें परमेश्वर के विषय में क्या बता रही है। हमें उसके शब्दों के पीछे छिपे परमेश्वर के मन और हृदय का अर्थ निकालना सीखना चाहिए। इस तरीके से हम सच में परमेश्वर को जानने और उसके मार्गों को समझने लगेंगे।

यह सब कहने के बाद, बाइबल असल में हमारी आत्मा के लिए भोजन है, हमें यह भी स्वीकार करना है कि इसे खाने का अर्थ है इसे ध्यानपूर्वक पढ़ना, परिश्रम के साथ अध्ययन करना, और परमेश्वर से कहना कि वह इसके सत्य को हमारे आत्मा में प्रकट करे। हमें अपनी आत्माओं में इसे पढ़ना, अध्ययन करना और मनन करना चाहिए। हमें परमेश्वर से कहना चाहिए कि वह इसे हमारे स्वाभाविक मन से आगे ले जाकर इसे हमारी आत्मिक समझ में अन्दर डाल दे। परन्तु इसके लिए भी आवश्यक है कि हम बाइबल का ध्यानपूर्वक और विश्वासयोग्यता के साथ अध्ययन करें। इसलिए हमें कुछ सिद्धान्तों की आवश्यकता है जिन्हें हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते समय इस्तेमाल कर सकें। किसी ने कहा है कि यदि आप एक मनुष्य को एक मछली दो, तो आपने उसे एक समय का भोजन दिया है, परन्तु यदि आप उसे मछली पकड़ना सिखाते हो, तब वह हमेशा के लिए अपने भोजन की जरूरत पूरी कर सकता है।

बाइबल अध्ययन के लिए 25 मूल विचार

बाइबल का अध्ययन कैसे करना है जानने से आपको आत्मिक भोजन की एक कभी न समाप्त होने वाली सप्लाई का आनन्द लेने में सहायता मिलेगी, इसलिए मैं आपको कुछ विचार और सिद्धान्त देना चाहता हूँ जिनसे आपको बाइबल का अध्ययन करने में सहायता मिलेगी। इन में से कई सिद्धान्त प्रतिदिन इस्तेमाल किए और उपयोग में लाए जा सकते हैं जो आपको एक निरन्तर और विविध प्रकार का आहार देते रहेंगे जिससे आपको अपने आत्मिक मनुष्य को मजबूत, विश्वासयोग्य और सच्चा बनाए रखने में सहायता मिलेगी।

1. **एक ऐसा अनुवाद ले लो जिसे आप सरलता के साथ समझ सकते हो।**

आजकल बाइबल के कई अनुवाद उपलब्ध हैं, जिनमें से कुछ दूसरों से समझने में काफी आसान होते हैं। यह इसलिए है क्योंकि भाषा अधिक आधुनिक होती है और इसलिए आसानी से समझे जा सकते हैं। (मैं समझता हूँ कि आप में से बहुतों के लिए कौन सा अनुवाद चुनना है इतना आसान नहीं होगा क्योंकि वे उपलब्ध नहीं होते।) एक ऐसी बाइबल लेने का प्रयत्न करो जो समकालीन भाषा में हो और जिस भाषा को आप सरलता के साथ समझ सकते हो। ऐसा सोचने की गलती मत करो कि क्योंकि एक अनुवाद पुरानी भाषा में लिखा गया है इसलिए यह अधिक पवित्र होगा।

2. **इसे नियमित रूप से पढ़ो।**

अपनी बाइबल पढ़ना अपना खाना खाने जैसा है, आपको इसे अच्छा स्वास्थ्य और शक्ति निश्चित करने के लिए नियमित और एक समान करने की आवश्यकता है। एक नियमित समय निर्धारित करना भी अच्छा है कि आप वचन कब पढ़ोगे। यदि आप नियमित रूप से नहीं खाओगे तो आपका शरीर निर्बल हो जाएगा। यदि आप बाइबल नियमित नहीं पढ़ोगे तो आपकी आत्मा निर्बल हो जाएगी। यदि आप इसे अपने नियमित प्रतिदिन के कार्यक्रम में योजनाबद्ध नहीं करते, तो यह आपके ध्यान से निकल सकता है।

3. अपना दिन बाइबल पढ़ने के साथ आरम्भ करो।

आदर्शतः अपना दिन व्यक्तिगत बाइबल पढ़ने के साथ आरम्भ करना अच्छा है। साधारणतः मन एक अच्छी नींद के बाद ताज़ा होता है और पढ़ने और अध्ययन करने में अपने को लगा सकता है। और, जब आप अपने सुबह के पढ़ने में कुछ पाते हो तो सारे दिन भर उसके विषय में विचार कर सकते हो। जैसे आप अपने दिन भर के काम में लगोगे, उसे अपने मन में सोच-विचार कर सकते हो, और जो आपने पढ़ा है उससे सम्बंधित कई और सत्य भी पा सकते हो। इन्हें केवल अपनी स्मृति में ही मत रखो। जब आप कुछ अच्छे सत्य को पाते हो उसे एक छोटी नोट-बुक में लिख लो नहीं तो सम्भव है कि आप इन छोटे-छोटे रत्नों को भूल जाओगे।

4. अधिक सरल भागों के साथ आरम्भ करो।

बाइबल में अनेक गूढ़ और कठिन भाग हैं। इनसे तब तक नहीं निपटना बुद्धिमानी होगा जब तक बुनियादी सत्य में आपकी नींव पक्की नहीं हो जाती। पहले अधिक सरल विषयों को पढ़ने, अध्ययन करने और अधिकार प्राप्त करने में संतुष्ट रहो, और फिर कुछ अधिक गूढ़ या भविश्यसूचक भागों से निपटना आरम्भ करो। सुसमाचारों के साथ आरम्भ करना भी उचित है, फिर पत्रों में बढ़ सकते हो और इस प्रकार नए नियम पर अपनी पकड़ मजबूत कर सकते हो, और तब पुराने नियम के अधिक जटिल विषयों से निपटने का प्रयत्न किया जा सकता है। पुराने नियम की तुलना में नया नियम मसीही विश्वासी के लिए कहीं अधिक उपयुक्त है। पहले नए नियम की शिक्षाओं और सिद्धान्तों पर ध्यान लगाओ। नए नियम में है, यीशु का जीवन, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान जिनका स्पष्ट वर्णन है। यहाँ प्रारंभिक कलीसिया के जन्म का वर्णन भी है और कलीसिया का इतिहास और विकास संक्षेप में लिखा गया है।

हमारे पास पत्र भी हैं, जिन्हें कुछ प्रारंभिक कलीसियाओं को लिखा गया था और जो सब कलीसियाओं पर लागू होते हैं। इन में नए नियम की कलीसिया की शिक्षा सिखाई गई है और हालाँकि हम एक भिन्न अवधि और एक भिन्न संस्कृति में रहते हैं हम उन शिक्षाओं को हमारी अपनी स्थानीय कलीसिया की स्थिति में लागू कर सकते हैं।

5. व्यक्तिगत और पास्तरीय। (भक्तिपूर्ण और सिद्धान्त-सम्बंधी)

भक्तिपूर्ण पढ़ाई और अध्ययन से मेरा अर्थ है परमेश्वर के वचन को अपने आत्मिक भले और कल्याण के लिए, अपने प्राण को खिलाने के लिए पढ़ना। उसी रूप में, यह सबसे महत्त्वपूर्ण प्रकार का अध्ययन है क्योंकि यदि इसे अनदेखा किया जाता है तब सम्पूर्ण जीवन आत्मिक रूप से छिछला बन जाता है और कोई भी सेवकाई जिसमें लगा जाएगा छिछली और सतही होगी।

बाइबल का भक्तिपूर्ण अध्ययन करना इसे अपने लिए, यीशु की उपस्थिति में करना है, उसकी आवाज सुनना सीखना और उसके आज्ञाकारी होना है। इस प्रकार का अध्ययन भीतरी मनुष्य को पुष्ट बनाता है। इससे हम बारम्बार परमेश्वर की आवाज सुन पाते हैं जिससे हमें पता चलता है कि उसने हमारे लिए क्या करने की योजना बनाई है। इस प्रकार हम उसकी इच्छा अधिक पूर्ण रूप से पूरी कर सकते हैं और एक अधिक भरपूर और लाभप्रद मसीही जीवन जी सकते हैं।

सदा याद रखो कि परमेश्वर का वचन पढ़ने का प्रमुख उद्देश्य यह है कि वह आपसे सीधे बात करे और कि आप अपने भीतरी मनुष्य को पोषण दें। सेवकाई में एक सूक्ष्म खतरा अपनी मण्डली के लिए भोजन जुटाने की चिन्ता में इतना लगना है कि आप अपने प्राण को पोषण देने की प्रमुख आवश्यकता को अनदेखा कर जाते हो। एक सेवक "संदेशों की खोज" में इतना बंध सकता है कि वह अपने प्राण को पोषण देने की आवश्यकता को अनदेखा करता है। यह एक अत्यन्त खतरनाक रवैया है। यह व्यक्तिगत आत्मिक निर्धनता में ले जाएगा और कभी-कभी आत्मिक आत्महत्या में एक कारक रहा है। अपने आत्मिक मनुष्य को पोषण देने को सदा पहली प्राथमिकता बनाओ। परमेश्वर के लोगों के अगुवे के रूप में आपको अपनी आत्मिक दृढ़ता और खराई बनाए रखनी है। वैसे भी, "छिछली सेवा एक छिछले प्राण में से निकलती है।" आप अपने लोगों को उन आत्मिक गहराइयों में कभी नहीं ले जा सकोगे जिन्हें आप खुद अनुभव नहीं कर रहे हो। (कोई भी लोगों को उसके अपने ज्ञान और अनुभव से आगे नहीं ले जा सकता है!)

भक्तिपूर्ण अध्ययन है जब हम बाइबल का अध्ययन सेवकाई की तैयारी के उद्देश्य से करते हैं। जैसे हम पढ़ते और अध्ययन करते हैं हम विचारों और विषयों के लिए परमेश्वर की बाट जोहते हैं जिन्हें वह चाहता हो कि हम प्रचार करें या सिखाएँ।

6. इसे केवल पढ़ो ही मत, इसे खाओ और निगल जाओ।

बाइबल एक ऐसी पुस्तक नहीं है जिसे मन से अन्दर ले लिया जाए; यह खाने के लिए आत्मिक भोजन है। पवित्रशास्त्र को केवल पढ़ने या अध्ययन करने से ही संतुष्ट मत रहो। निश्चय करो कि आप अपने प्राण को खिलाने के लिए कुछ पाते हो। केवल "दिन का अपना भाग" मत पढ़ो। खुली बाइबल के साथ प्रभु के सामने बने रहो जब तक आपका प्राण पोषण नहीं पाता। पढ़ते रहो जब तक आपको कुछ मिलता नहीं जो आपके प्राण के लिए एक वचन न हो। तब उसे खाओ, पचाओ, उसे चबाओ, जब तक आपके भीतरी मनुष्य को लगता नहीं कि इसने कुछ खाया है।

7. बोलकर पढ़ो।

पवित्रशास्त्र को अपने लिए बोलकर पढ़ना एक बड़ी आशीष है। इस अभ्यास के कई लाभ हैं।

अ: यह आपके मन को सचेत और चौकन्ने रखता है; बेहतर ध्यान लगाया जा सकता है।

आ: वचन आपके कानों के द्वार और आपकी आँखों के द्वार से प्रवेश करता है।

इ: जो आपकी आत्मा में प्रवेश करता है यह उसे मजबूत करता है।

ई: इस कार्य से आपको बेहतर याद करने में सहायता मिलती है जो आपने पढ़ा है।

उ: परमेश्वर का वचन आपकी मौखिक स्वीकृति बन जाता है।

8. पवित्र आत्मा को अपना अर्थ बतानेवाला बनने को कहो।

जैसे आप पवित्रशास्त्र पढ़ते हो, पवित्र आत्मा को अपना स्थिर साथी बनाओ। जो आप पढ़ रहे हो उसके बारे में उससे बात करो। उसे प्रश्न पूछो। जैसे वह आपको प्रेरणा और प्रकाश देगा, अपनी आत्मा के अन्दर उसकी धीमी आवाज को सुनो। पवित्र आत्मा को "आपको वह आहार देने दो जो आपके लिए उपयुक्त है"। पवित्र आत्मा को पवित्रशास्त्र के अर्थ बताने के लिए बोलने के अतिरिक्त, आपको पता होना चाहिए कि जैसे आप बाइबल को समझने का प्रयत्न करते हो तो कुछ सिद्धान्त, या अर्थ निकालने के नियम होते हैं जिनकी आपको जानकारी होनी चाहिए। उनमें से कुछ यहाँ दिए गए हैं:

- निकटतम संदर्भ पर सदा ध्यान दो, अर्थात्, जिस आयत को आप पढ़ रहे हो उससे पहले और आगे की आयतें। मूलपाठ को इसके संदर्भ या स्थापन से अलग देखने से बचो।
- मूलपाठ में हर शब्द का सही अर्थ पता लगाने का प्रयत्न करो।
- वैसे ही विषय से सम्बंध रखने वाले समान्तर वचनों के प्रकाश में पवित्रशास्त्र का अर्थ निकालो।
- विशेष स्थापन और परिस्थिति पर ध्यान दो जिसमें आयत दी गई है।

9. बाइबल के मनन का अभ्यास करो।

बाइबल का मनन अत्यन्त अन्तर्दृष्टि वाला और भेदक होता है। अनेक अवसर पर इसका उल्लेख और प्रोत्साहित किया गया है।

अ: यहोशू को परमेश्वर के वचन पर दिन और रात मनन करने की आज्ञा दी गई थी जिससे कि वह अच्छी सफलता पाएगा जो परमेश्वर चाहता था वह अनुभव करे। (यहोशू 1:8)

आ: भजन 1 का "धन्य मनुष्य" भी परमेश्वर के वचन पर दिन और रात मनन करता है। (भजन 1:2)

इ: राजा दाऊद बारम्बार परमेश्वर के वचन में उसके मनन की बात करता है। (भजन 77:12; 119:15,78,99)

ई: भजन 19:14 में, दाऊद कहता है, "मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों, हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करनेवाले।"

उ: तीमुथियुस को उस सब पर जो उसे सिखाया गया था मनन करने को, और अपने आप को पूरी तरह उनके लिए दे देने को कहा गया था जिससे कि उसकी उन्नति सब पर प्रकट होगी। (1 तीमु. 4:15)

मनन करने का अर्थ है:

इसके विषय में ध्यानपूर्वक सोचना।
किसी चीज पर हर कोण से सूक्ष्म रूप से विचार करना।
किसी चीज की निकट से छानबीन करना और जाँचना।
किसी चीज पर विस्तार से और बड़े ध्यान से चिन्तन करना।

मनन करने का विचार सूचित करता है:

- तमाम बाहरी ध्यान भंग से दूर चले जाना।
- शान्त व्यक्तिगत चिन्तन में समय बिताना।
- बिना ध्यान भंग अकेले में बाइबल पढ़ना।
- आत्मिक सत्य पर गहराई से विचार करते समय अपने प्राण में शान्त रहना।
- अपनी आत्मा में परमेश्वर की आवाज शान्त रहकर सुनना सीखना।
- जो चीजें परमेश्वर आप को प्रकट करता है उनका पालन करना।
- "वचन पर चलनेवाला" बनना, और केवल सुननेवाला ही नहीं।

10. पवित्रशास्त्र पर प्रश्न करना।

केवल बाइबल पढ़ो ही नहीं, इस पर प्रश्न करो और जाँच करो।

जैसे आप एक भाग पर विचार करते हो, अपने आप से आगे ले चलनेवाले प्रश्न करो और तब उत्तरों की परीश्रम के साथ खोज करो।

अपने आप से इस प्रकार की चीजें पूछो:

कौन बोल रहा है?

उसने क्या कहा?

उसने यह कब कहा?

उसने यह किससे कहा?

क्या परिणाम हुआ?

यह मुझ पर कैसे लागू होता है?

मैं इस से क्या सीख सकता हूँ?

11. वचनों को याद करो।

वचन याद करने के बहुत से लाभ हैं।

अ: वचन आपके साथ जहाँ कहीं भी आप जाते हो जाते हैं।

आ: आप किसी भी समय इन पर मनन कर सकते हो।

इ: वे आपकी विचारों की दुनिया के भाग बन जाते हैं।

प्रभावकारी तरीके से वचन याद करने के लिए आपको:

- क. वचन को बोलकर पढ़ो।
- ख: इसे असंख्य बार पढ़ो।
- ग: अपने आप से इसे बहुत बार दोहराओ।
- घ: संदर्भ, अध्याय और आयत भी शामिल करो।

12. अपनी बाइबल पर चिन्ह लगाओ और नोट करो।

मैं जानता हूँ आपकी बाइबल आपके लिए अत्यन्त बहुमूल्य है और इसी कारण से आप इस पर कुछ लिखने से अनिच्छुक होगे। परन्तु, आप असल में अपनी बाइबल में सहायक और महत्त्वपूर्ण नोट लिखकर अपने लिए इसके मूल्य को बढ़ा सकते हो। कुछ वर्षो के बाद उन अन्तर्दृष्टियों के कारण जिन्हें आप इस में ध्यानपूर्वक लिखेंगे, आपकी बाइबल बड़ी प्रेरणा का एक सोता बन सकती है। साफ-साफ और पढ़नेयोग्य लिखने का प्रयत्न करो।

13. एक आत्मिक डायरी या दैनिकी रखो।

मैं ने पाया है, और दूसरों ने भी, कि आपकी स्मृति बाइबल का अध्ययन करते समय आनेवाले सब विचारों को याद नहीं रख पाएगी। वे अदभुत प्रकटीकरण भी जो उस समय आपको रोमांच से भर देते हैं, यदि आप उनको लिख नहीं लेते आपकी स्मृति में से निकल सकते हैं। तो जब कभी भी आप बाइबल पढ़ते हो अपने साथ एक नोटबुक रखना एक अच्छा विचार है। दिन और तिथि भी लिख लो। सब कुछ जो आपको मिलता है उन पर संक्षिप्त नोट लिख लो। फिर इनके साथ उन विचारों को भी जोड़ लो जो उन पर मनन करने से आपको मिलेंगे।

14. वचन को अपने जीवन में लगाओ।

मत्ती 7:24-29 में, यीशु बुद्धि और मूर्खता पर कुछ नाटकीय टिप्पणी करते हैं। वह अन्तर का वर्णन और परिभाषा देते हैं, और इसे मूल वाक्य में ले आते हैं। बुद्धिमान मनुष्य वह है जो परमेश्वर के वचन को सुनता और उन्हें मानता है। निर्बुद्धि मनुष्य - जो परमेश्वर का वचन सुनता, परन्तु उन पर नहीं चलता।

15. जो सीखते हो उसका पालन करो।

एक चीज को जानना और उस का पालन करना, बहुत सारी चीजों को जानना और उनका पालन न करने से बेहतर है। बाइबल मुख्य रूप से हमारी बौद्धिक सराहना के लिए नहीं है परन्तु हमारे आत्मिक विकास और प्रगति के लिए है। जिस तरीके से यीशु ने उसके चेलों को प्रशिक्षण दिया था सीखने और करने के द्वारा था और परमेश्वर चाहता है हम भी इसी तरीके से बढ़ें। यीशु ने कहा कि एक बुद्धिमान मनुष्य और एक निर्बुद्धि मनुष्य के बीच अन्तर यह है कि बुद्धिमान मनुष्य जिन चीजों को वह पढ़ता और सीखता है उनका पालन करता है परन्तु निर्बुद्धि मनुष्य, हालाँकि उसने सत्य को पढ़ा और सीखा था, उसका पालन नहीं किया।

16. एक एक अध्याय करके इसका अध्ययन करो।

वचन को खाने का सबसे अच्छा तरीका मुँह से काट सकने के आकार के टुकड़ों में है। एक अध्याय अकसर एक ऐसा उचित टुकड़ा बन सकता है। एक उपयुक्त पुस्तक चुनो और और उसका एक एक अध्याय पढ़ना शुरू करो। उस अध्याय पर ध्यान लगाओ। इसे कई बार पढ़ो। धीरे धीरे और ध्यानपूर्वक पढ़ो, और बारीकी से इसकी जाँच करो। हर शब्द में महत्त्व खोजो। यदि आपकी बाइबल में "अन्योन्य संदर्भ प्रणाली" है, तब हर महत्त्वपूर्ण शब्द के दूसरे संदर्भ भी देखो। सम्भवतः आप एक दिन में एक अध्याय पूरा कर लेते हो, या एक अध्याय एक सप्ताह या अधिक ले सकता है। चाहे जो भी हो, आप अध्ययन के इस तरीके से काफी कुछ सीख सकते हो।

17. एक पूरी पुस्तक को पढ़ो

बाइबल की कई पुस्तकें इतनी छोटी हैं कि एक बार में पढ़ी जा सकती हैं। यह पुराने नियम की कई पुस्तकों के विषय में सच है, और यह निश्चित रूप से नए नियम के पत्रों के विषय में तो सच है ही। इस तरीके से हमें पूरी पुस्तक के उद्देश्य की समझ मिल जाती है। यह शुरू से लेकर अन्त तक एक पत्र पढ़ने समान है। किसी पुस्तक का एक एक अध्याय का अध्ययन करने से पहले ऐसा कई बार कर लेने से अकसर सहायता मिलती है।

18. एक वर्ष में पूरी बाइबल पढ़ने की योजना बनाओ

बाइबल के एक गंभीर विद्यार्थी के लिए, पूरी बाइबल को एक वर्ष की अवधि में पढ़ जाना बहुत सम्भव है। इसे करने के सुझाव के रूप में कई मार्गदर्शिकाएं छापी गई हैं जो बताती हैं हर दिन कौन से अध्याय पढ़े जाने चाहिए। परन्तु, आप अपना तरीका भी बना सकते हो जिसकी आपको पूर्व योजना करनी चाहिए। (पुराने नियम के तीन पृष्ठ और नए नियम का एक पृष्ठ)। ऐसा करने में पवित्रशास्त्र के कई भागों में से हर दिन थोड़ा थोड़ा पढ़ना उचित होगा। उदा., पुराने नियम का इतिहास का एक भाग, एक भजन, और नए नियम के कई अध्याय।

19. भजन और नीतिवचन पढ़ना

आपके भक्तिपूर्ण जीवन और आत्मिक विकास के लिए, भजन संहिता और नीतिवचन में सामग्री का बहुत बड़ा भण्डार है। आप चाहे हर दिन कुछ भी क्यों न पढ़ें, मैं सुझाव देता हूँ कि आप इन में से कुछ जरूरत पढ़ें। क्योंकि 150 भजन और नीतिवचन में 31 अध्याय हैं, हर दिन 3 भजन और 1 नीतिवचन का अध्याय पढ़ना बहुत सम्भव है। पवित्रशास्त्र के ये भाग मसीही चरित्र, जीवनशैली, और भक्ति के विकास में बहुत सहायता करते हैं।

20. यीशु के वचनों को पढ़ना

एक अत्यन्त दिलचस्प और लाभकारी अभ्यास सुसमाचारों और दूसरे स्थानों में लिखे यीशु के असली शब्दों को पढ़ना है। बाइबल के कुछ अनुवादों में यीशु के शब्दों को लाल स्याही में छापा गया है। इससे काम बहुत सरल हो जाता है। इस तरीके के अनुसार करना बहुत चुनौतीपूर्ण और समझ देनेवाला हो सकता है।

21. एक प्रमुख बाइबल के चरित्र के जीवन का अध्ययन करो

बाइबल दर्जनों दिलचस्प जीवन कहानियों से भरी पड़ी है। उनमें से हर एक में अत्यावश्यक सबक हैं जिनमें से हम सीख सकते हैं। इनके अतिउत्तम जीवन-सम्बंधी अध्याय में से मण्डली को भक्त जीवन के विषय में सिखाने के लिए कुछ महान सिद्धान्त मिल सकते हैं।

कुछ उन चरित्रों को लो जो आपको सबसे अधिक प्रभावित करते हैं।

- पवित्रशास्त्र में से उनकी जीवन कहानी का अध्ययन करो।
- उनके अनुभवों से जितना सीख सकते हो सीखो।
- उन्होंने क्या किया था जिससे उनके जीवनों में आशीषें आई थीं?
- उन्होंने क्या किया था जिससे प्रभु अप्रसन्न हुआ था?

हर जीवन अपने आप में एक पुस्तक है। वे आपके लिए और उनके लिए जो सिखाने के लिए जिम्मेवार हैं मोहक और पूरी तरह दिलचस्प हैं।

22. एक विषय का अध्ययन करो

इस विषय में प्रासंगिक शब्दानुक्रमणिका एक बहुत बड़ी आशीष होगी। यह बाइबल के विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों के उचित संदर्भ खोजने में आपकी सहायता करेगी। इन विषयों की खोज करने से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। बाइबल जो महत्त्वपूर्ण विषयों के बारे में सिखाती है उनका अध्ययन करने से आप परमेश्वर के मन के विषय में बहुत कुछ सीख सकते हो।

23. बाइबल के चमत्कारों का अध्ययन करो

आरम्भ से अन्त तक, उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक, बाइबल चमत्कारों से भरी पड़ी है। यह एक निरन्तर चमत्कारों की पुस्तक है। एक चमत्कार कुछ ऐसा है जो परमेश्वर करता है जो स्वाभाविक सिद्धान्तों के परे होता है। यह एक अलौकिक कार्य है। सब वर्णित चमत्कारों का अध्ययन करके, आप परमेश्वर के विषय में बहुत कुछ सीख सकते हो। आप अपने जीवन और सेवा में अलौकिक पर विश्वास करने के लिए बहुत प्रेरणा पाओगे। आप सिद्धान्त पाओगे जिनसे चमत्कार होते हैं और आपका जीवन इन सच्चाइयों से भरपूर हो जाएगा।

24. एक शब्द अध्ययन करना

बाइबल का एक शब्द भी एक सोने की खान हो सकता है। ऐसे एक शब्द के ध्यानपूर्वक अध्ययन से बहुत सारा सत्य पाया जा सकता है। यदि आपकी पहुँच में एक अच्छा शब्दानुक्रमणिका या शब्दकोष या बाइबल शब्दकोष हो तो इस प्रकार के अध्ययन को बहुत अधिक सरल और अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है जो शब्द के प्रारंभिक भाषा के अर्थ पर प्रकाश डाल सकता है।

25. प्रतीकों और प्रतिबिम्बों का अधिययन करना

बहुत सारी बाइबल प्रतीक-कथाओं या दृष्टान्तों में लिखी गई है, जिन में से अधिकों के गुप्त आत्मिक अर्थ और महत्त्व है। अकसर हम एक ऊपरी तौर से साधारण पवित्रशास्त्र की सतह के नीचे भविष्यसूचक महत्त्व खोज सकते हैं। पुराने नियम के अनेक चरित्र मसीह के प्रतीक थे, जैसे कि:

- मूसा
- यूसुफ
- दाऊद

इन में से एक जीवन का अध्ययन करो। उनमें और मसीहा में समान्तर खोजो।

इस प्रकार का अध्ययन अत्यन्त मोहक हो सकता है परन्तु इसका इस्तेमाल कुछ सावधानी के साथ किया जाना चाहिए। हमें मानवीय कल्पना धुसने नहीं देनी चाहिए। पवित्रशास्त्र का पवित्रशास्त्र के साथ विश्वासयोग्यता के साथ तुलना की जानी चाहिए। विद्यार्थी को ध्यान देना है कि वह पवित्रशास्त्र को इसके संदर्भ में से अलग न करे, उसके अर्थ को न बिगाड़े और उससे वह कहलवाए जो उसमें नहीं है।

ऊपर बाइबल पढ़ने की आदत बनाने के कुछ विचार दिए गए हैं जिससे प्राण घनिष्ठ हो और व्यक्ति को परमेश्वर के वचन का एक योग्य व्याख्याता बनाए।

अपने लिए बाइबल का अध्ययन कैसे करें

अ. बाइबल अध्ययन का परिचय

1. बाइबल अध्ययन की आवश्यकता

हम में से बहुतों में बाइबल को बेहतर जानने और समझने की इच्छा है, परन्तु जानते नहीं हैं कैसे? इस अध्ययन को प्रभावकारी और उपयोगी बाइबल अध्ययन में लगने और उसके लिए आवश्यक निपुणताओं को विकसित करने में हमारी सहायता के लिए मार्गदर्शन के रूप में बनाया गया है।

परमेश्वर चाहता है हम बाइबल को समझ सकें क्योंकि यह मनुष्य को उसका वचन है।

परमेश्वर चुप नहीं है - परमेश्वर ने बातें की हैं (इब्रा. 1:1-3)।

सम्पर्क की प्रक्रिया - उसने कैसे बातें की हैं

जीवित वचन - यीशु मसीह

लिखित वचन - बाइबल - इस अध्ययन में हमारा इससे सम्बंध है।

बोला गया वचन - प्रचार किया गया

1 कुरिं. 2:7-13: महत्त्वपूर्ण विचार हैं जिन्हें हमें समझना चाहिए:

आयत 10 प्रकटीकरण - जिसे मनुष्य सामान्य मानवीय प्रत्यक्षज्ञान - देखना या सुनना - द्वारा नहीं समझ सका - परमेश्वर ने प्रकट किया है।

आयत 12 - प्रदीप्ति -- आत्मा हमें समझ देता है।

आयत 13 - प्रेरणा -- परमेश्वर ने सम्पर्क किया:

- शब्दों से - मानवीय शब्द
- पवित्र आत्मा द्वारा सिखाए शब्दों से।

जो परमेश्वर ने कहा है उसे मानवीय भाषा के विभिन्न प्रकारों में बाइबल में लिखा गया है - कहानियाँ, दृष्टान्त, कविता, इतिहास, भविष्यद्वाणी, आदि। इन सब में परमेश्वर अपने विषय में हमें सत्य बनाने का प्रयत्न करता है। बाइबल अध्ययन में हम उसे निर्धारित करने का प्रयत्न करते हैं जिसे परमेश्वर ने असल में कहा है।

2. बाइबल अध्ययन हमारे जीवन कैसे प्रभावित करता है

2 तीमु. 3:16-18

1. बाइबल हमें दिखाती है कैसे जीना है
   तो हमें कैसे जीना चाहिए? परमेश्वर के वचन के प्रकाश के बिना हम नहीं जानते हमें कैसे जीना है।
   बाइबल अध्ययन को हमारे जीने के तरीकों को बदलना चाहिए।
2. बाइबल अध्ययन को हम में विश्वास पैदा करना चाहिए
   इब्रा. 11:6 - परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए विश्वास आवश्यक है
   यूहन्ना 6:63 - परमेश्वर के वचन आत्मा और जीवन हैं
   रोमियों 10:17 - विश्वास परमेश्वर का वचन सुनने से आता है
3. हमें अपने अध्ययन के परिणाम दूसरों के साथ बाँटने चाहिए
   मत्ती 28:18-19 - महान नियुक्ति
   2 तीमु. 2:2 - दूसरों के साथ बाँटो

3. बाइबल अध्ययन के लिए औजार

अ. बाइबल: चीज है न कि एक औजार

1. बाइबल हमारी मुख्य पाठ्य-पुस्तक है। दूसरे सहायक सहायक होने चाहिए। टीका, पुस्तिकाएँ, आदि, को बाइबल का स्थान कभी नहीं लेना चाहिए। दो गलत रवैये हैं जो दिखते हैं:
   अ. मुझे केवल बाइबल ही चाहिए।
   आ. सहायक बाइबल से श्रेष्ठता ले लेते हैं।

2. कौन सा अनुवाद? केवल प्रारंभिक इब्रानी और यूनानी बाइबल ही प्रेरित है।
चिन्ता की दो बातें: (1) परिशुद्धता (2) पढ़ने योग्य - समझने योग्य

आ. संदर्भ-पुस्तकें

1. शब्दानुक्रमणिका:
2. बाइबल शब्दकोष / विश्वकोष: बाइबल के शब्दों, विषयों, रिवाजों और परम्पराओं की व्याख्या। ऐतिहासिक, भूगोलिक, संस्कृतिक और पुरातत्त्वीय जानकारी। बाइबल की हर पुस्तक के लिए पृष्ठभूमि की जानकारी और बाइबल के महत्त्वपूर्ण चरित्रों जीवनियाँ।
3. बाइबल टीका: बाइबल की एक विशेष पुस्तक के मूल-पाठों पर व्याख्यात्मक लेख। शब्दों, पृष्ठभूमि, अर्थ और व्याख्या का विश्लेषण।
4. बाइबल पुस्तिका: यह एक विश्वकोष और एक टीका की संक्षिप्त मिश्रण है। पृष्ठभूमि के लेख, टीका, नक्शे, चार्ट, पुरातत्त्वीय लेख।
5. बाइबल एटलस: बाइबल की घटनाओं की भूगोलिक पृष्ठभूमि देता है।
6. शब्द अध्ययन पुस्तकें:

4. बाइबल अध्ययन की ओर रवैये

अ. गलत रवैये

1. नकारात्मक रवैया: मैं कुछ नहीं समझ सकूँगा, इसलिए बाइबल का अध्ययन करने का प्रयास भी क्यों करूँ।
2. आलोचनात्मक रवैया: मैं बाइबल की हर चीज पर विश्वास नहीं करता।
-बहुत सारे परस्पर-विरोध।
-जो बाइबल पढ़ते हैं इसका पालन नहीं करते।
3. आलसी रवैया: यदि मैं कोशिश करूँ तो समझ सकता हूँ, परन्तु मैं कोशिश करना नहीं चाहता।

आ. सही रवैये

1. सकारात्मक - पवित्र आत्मा परमेश्वर का वचन समझने में मेरी सहायता करेगा। जैसे मैं उस पर चलूँगा जिसे मैं ने समझा है, परमेश्वर मुझे और बताएगा।
2. ग्रहणशील - जो कुछ परमेश्वर कहता है उसे पाने के लिए एक खुला मन और हृदय -- जो मैं सुनना चाहता हूँ उसे इसमें पढ़ूँगा नहीं।
3. प्रत्याशी - परमेश्वर उसके वचन के द्वारा मुझ से बात करना चाहता है। यदि मैं सच्चा हूँ, उसके पास मुझ से कुछ बोलने के लिए होगा।
4. अनुशासित - जब तक मैं अपने को और काम को अनुशासित करने को तैयार नहीं, मैं बाइबल अध्ययन से कुछ अधिक की अपेक्षा नहीं कर सकता।

5. पवित्र आत्मा की महत्त्वपूर्ण भूमिका

1 कुरिं. 2:12-13 - क्योंकि पवित्र आत्मा पवित्रशास्त्र का लेखक है, वह हमारे लिए इसका अर्थ बतानेवाला भी होना चाहिए। उसके मार्गदर्शन और सहायता के बिना हमारा बाइबल अध्ययन किसी लाभ का नहीं होगा।

पवित्र आत्मा के काम के छः पहलू: यूहन्ना 14:26; 16:13-15

1. सहायता करता / सलाह देता
2. सिखाता
3. याद दिलाता
4. मार्गदर्शन करता
5. भविष्य दिखाता
6. प्रकट करता

1 कुरिं. 2:12

1. कौन परमेश्वर से आया है?
2. किसने पवित्र आत्मा पाया है? (रोमियों 8:9,16)
3. वह हमारे पास क्यों आया है?

इसलिए, पवित्र आत्मा होना आवश्यक है ताकि परमेश्वर का वचन समझ सकें, और पवित्र आत्मा केवल परमेश्वर के बच्चों को दिया गया है।

आ. बाइबल को समझना

1. बाइबल अध्ययन के तरीके और पहुँचमार्ग

अ. बाइबल अध्ययन के विभिन्न तरीके:

1. भक्तिपूर्ण: बाइबल का एक छोटा भाग चुनना - इस पर प्रार्थनापूर्वक मनन करना जब तक पवित्र आत्मा इसके सत्य को आपके जीवन में लगाने का एक तरीका नहीं दिखाता।
2. पुस्तक अध्ययन: बाइबल की एक पूरी पुस्तक का इसे कई बार पढ़ने के द्वारा सर्वेक्षण करना जिससे इसके विषय-वस्तु का एक सामान्य दृश्य मिल सके। बाइबल संदर्भ पुस्तकों को पढ़कर पुस्तक की पृष्ठभूमि का अध्ययन करो। तब पूरी पुस्तक के विषय के संदेश को ध्यान में रखकर हर अध्याय और आयत पर एक गहरी दृष्टि डालो।
3. प्रासंगिक / विषयक: एक विशेष विषय या प्रसंग से सम्बंधित सब अनुच्छेद / अध्याय / आयतें खोजो और उनका अध्ययन करो, और अपने अध्ययन का निचोड़ लिख लो। आप उनको एक प्रकार की रूपरेखा में संगठित कर सकते हो।
4. जीवन-सम्बंधी: बाइबल का एक चरित्र चुनो और उस व्यक्ति के विषय में सब वचनों की जाँच करो, और उसके जीवन इतिहास और उसके चरित्र दोनों का अध्ययन करो, और सबक निकालो जिन्हें अपने जीवन में इस्तेमाल किया जा सकता है।

आ. बाइबल अध्ययन में मूल पहुँचमार्ग:

बाइबल अध्ययन के कुछ मुख्य तरीकों पर दृष्टि डालने के बाद, अब हम बाइबल अध्ययन में दो सकारात्मक पहुँचमार्गों पर विचार करेंगे।

1. निगमनिक और 2. आगमिक (प्रेरक)

1. निगमनिक - प्रक्रिया जिसमें आप सामान्यानुमानों से आरम्भ करते हो और कथन के समर्थन के लिए बाइबल इस्तेमाल करते हो।
   - अ. यह सहायक है क्योंकि यह -केवल एक मूल-पाठ में से नहीं - बल्कि सारी बाइबल में से जानकारी और अन्तर्दृष्टि लाता है। यह वचन को सन्तुलित रखने के लिए रक्षाकवच का काम करता है।
   - आ. इसके लिए बाइबल की विस्तृत और गहरी समझ की जरूरत पड़ती है।
   - इ. विषयक और सिद्धान्त-सम्बंधी अध्ययन (जीवनी के लिए भी) के लिए अधिक अनुकूल। विशेषकर नए विश्वासियों को बाइबल के सिद्धान्त सिखाने में जिनको बाइबल का थोड़ा या कोई ज्ञान नहीं है और जिन्हें मसीही विश्वास की बुनियादी बातें सिखानी होती हैं।
2. आगमिक - प्रक्रिया जिसमें आप पहले बाइबल के वचनों का अपने आप अध्ययन करते हो, इससे पहले कि आप सामान्यानुमान लगा सको।
   - अ. आगमिक बाइबल अध्ययन में हम निश्चित तथ्यों से एक सामान्य निष्कर्ष में जाते हैं।
   - आ. हम इसमें बिना पूर्वकल्पित विचारों या निष्कर्षों के जाते हैं, परन्तु एक खुले मन से जाते हैं।
   - इ. जबकि इससे एक विस्तृत और गहरी समझ पाने में सहायता मिलती है, साधारण विश्वासी भी इसे कर सकते हैं। यह सीधे पवित्र आत्मा से सीखने की स्वतंत्रता देता है।
   - ई. यह वस्तुगत और बाइबल केन्द्रित होता है। आपको संदर्भ के अनुसार पवित्रशास्त्र का अर्थ निकालने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

2. सुव्यवस्थित बाइबल अध्ययन में मूल कदम

यदि आप अपने बाइबल अध्ययन में एक सुव्यवस्थित नमूना विकसित करना चाहते हो तो काम में लाने के लिए एक निश्चित कार्यविधि है। निम्नलिखित कदम उठाना बहुत अच्छा होगा, सीढ़ी के कदमों की भावना से नहीं, परन्तु एक प्रक्रिया के रूप में जो बाइबल की सच्चाइयों को खोलेंगे। कभी-कभी ये कदम कुछ अंश तक एक दूसरे को ढक लेंगे, परन्तु क्रम तब भी वैध होगा।

कदम 1: देखो....ठीक-ठीक लेखक ने क्या लिखा है। यह बाइबल में अपने बारे में बोलने वाला पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण कदम है। यह सच्चाई और बौद्धिक खराई है। जितना अधिक पक्का और सावधान आपका देखना होगा उतना अधिक सही और अर्थपूर्ण आपकी व्याख्या और उपयोग होगा।

कदम 2: व्याख्या करो....निष्पक्ष दृष्टि से जो लेखक ने लिखा है। निर्धारित करने का प्रयत्न करो कि लेखक जिन शब्दों को उसने इस्तेमाल किया है उनसे उसका अर्थ क्या है। वह क्या देख, महसूस, सोच और अनुभव कर रहा था? अपने आप को उसकी स्थिति में डालने का प्रयत्न करो। सम्बंधो-लोगों-समय-घटनाओं-स्थान-विचारों को जाँचो।

कदम 3: वचनों में व्यक्त किए गए मुख्य विचारों का संक्षेप में....सार प्रस्तुत करो। पहले एक-एक तथ्यों का सार निकालो; फिर उनका वचनों के प्रमुख संदेश से सम्बंध लगाओ। आयतों, पैरा, अध्यायों, और पुस्तक के बीच संरचनात्मक सम्बंधों की जाँच करो। "सम्पूर्ण" के सम्बंध में भागों" को देखो।

कदम 4: जो लेखक ने लिखा है उसका उचित रूप से....मूल्याँकन करो। जब तक आपको जो लेखक ने लिखा है और जो उसका कहने का अर्थ था उसका एक स्पष्ट विचार नहीं मिलता, आप उसकी वैधता का सच्चाई से फैसला नहीं कर सकते। संदेश आज के लिए कितना वैध है? क्या सच्चाइयाँ वर्तमान स्थिति में लगाई जा सकती हैं? वचन किस से बात कर रहे हैं?

कदम 5: प्रकट हुए संदेश को स्वयं पर....लगाओ। आपको पर्याप्त अवलोकन के बिना संदेश को लगाने के खतरे और परीक्षा पर नियंत्रण करना होगा।
उपयोग एक बढ़ रही प्रक्रिया है जो कदम 1 - 4 में भी चल रही थी। उपयोग को वचनों पर लादना नहीं है परन्तु इसे वचनों में से स्वाभाविक रूप से निकलना चाहिए। इसलिए उपयोग अवलोकन और मूल्याँकन के बाद होना चाहिए।

कदम 6: बाइबल की सच्चाइयों का विशेष रूप से....एक दूसरे एक साथ सम्बंध लगाओ। यह बाइबल की सच्चाइयों का सम्बंध है। यह पवित्रशास्त्र की तुलना पवित्रशास्त्र से करना है। यह अपनी खोजों की जाँच टीकाओं और दूसरी संदर्भ पुस्तकों से करना है। यह बाइबल के आगमिक अध्ययन से निगमनिक अध्ययन में जाना है, परन्तु यह सदा एक आगमिक अध्ययन को प्रयोग में लाता है।

3. व्याख्या के सिद्धान्त

1. अपने शिक्षक - पवित्र आत्मा की सुनो (यूहन्ना 14:26)
   परमेश्वर ने हमें मानवीय शिक्षक दिए हैं (इफि. 4:11) परन्तु परमेश्वर आप हमारा शिक्षक होना चाहता है (1 यूहन्ना 2:27)। मानवीय शिक्षक पवित्र आत्मा का स्थान नहीं ले सकते हैं।
2. अक्षरक्ष: व्याख्या करो - सामान्यत: हमें सीधा-साधा अक्षरक्ष: व्याख्या स्वीकार करनी चाहिए। इन्हें छोड़कर: दृष्टान्त, उपमा, आदि। (उदा., यीशु ने कहा, "मैं दाखलता हूँ" ... "प्रकाशितवाक्य का पशु", आदि)
3. संदर्भ पर ध्यान दो - सम्भवत: बाइबल व्याख्या का सबसे महत्त्वपूर्ण नियम:
   अ. इसके निकटतम स्थापन में,
   आ. अध्याय या पुस्तक के बड़े संदर्भ में,
   इ. बाइबल के संदेश के प्रकाश में -- परमेश्वर ने एक पुस्तक लिखी है - 66 नहीं।
4. ऐतिहासिक और संस्कृतिक स्थापन से सम्बंध लगाओ
   हम सब कुछ जो पढ़ते हैं उसका अपनी 21वीं सदी की संस्कृति के विचार से व्याख्या करते हैं। हमें पहले पवित्रशास्त्र को इसके प्रारंभिक, ऐतिहासिक और संस्कृतिक स्थापन में देखना है और फिर आज के लिए सबक निकालना है।
5. साहित्यिक साँचे पर विचार करो
   हमें विभिन्न प्रकार के साहित्यिक साँचें में अन्तर पता लगाना चाहिए - इतिहास, भविष्यद्वाणी, वर्णात्मक, कविता, प्रवचन, उपदेश, आज्ञा, निर्देश, उदाहरण, दृष्टान्त, नीतिवचन, प्रतीक, आदि। इन सब की अलग-अलग तरीके से व्याख्या की जानी चाहिए।

6. पवित्रशास्त्र की पवित्रशास्त्र से तुलना करो - कभी भी एक संदर्भ के आधार पर, विशेषकर सिद्धान्तों के विषय में, निष्कर्ष मत निकालो, परन्तु एक पवित्रशास्त्र की दूसरे से तुलना करो और पवित्रशास्त्र को पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने दो। नए नियम में उद्धरण किए गए पुराने नियम के संदर्भों की जाँच करो और एक पवित्रशास्त्र को दूसरे पर प्रकाश डालने दो। अधिक सीधे और स्पष्ट कथनों को अधिक गूढ़ वचनों की व्याख्या करने दो।

7. ध्यान में रखो कि परमेश्वर मानवीय शब्दों में बात करता है
व्याख्या की अनेक समस्याओं से बचा जा सकता है यदि हम याद रखें कि परमेश्वर ने सत्य के उसके बताने को मनुष्य के स्तर पर लाया है। बाइबल - परमेश्वर के काम का मानवीय शब्दों में वर्णन किया गया है, उदा., निर्ग. 32:14 - "यहोवा पछताया"; निर्ग. 3:8 - "परमेश्वर उतर आया"; 2 इतिहास 16:9 - "यहोवा की दृष्टि...फिरती रहती है..."

8. पहली भाषाओं को इस्तेमाल करो - व्याख्या की अनेक कठिनाइयाँ हल की जा सकती हैं यदि हम बाइबल के शब्दों के अर्थ और व्याकरण का अध्ययन पहली भाषाओं में करें। व्याख्या करना - अर्थ प्रकट करना। हमारे लिए भी जो यूनानी या इब्रानी भाषा को नहीं जानते अँग्रेजी भाषा में कई सहायक औजार उपलब्ध हैं।

4. व्याख्या में प्रतीकात्मक भाषा

प्रतीकात्मक भाषा एक चीज को दूसरे शब्दों में समझाती है - व्याख्या में कुछ विशेष निपुणता की आवश्यकता होती है।
चार श्रेणियाँ हैं:

1.दृष्टान्त	3. रूपक और प्रतीक
2.भविष्यद्वाणी	4. कविता

अ. दृष्टान्त

1. परिभाषा:
   - एक संक्षिप्त कहानी जो प्रकृत्ति या सामान्य जीवन के हालातों में से ली गई है।
   - एक नैतिक या धार्मिक सबक चित्रित करती है।
   - यीशु ने दृष्टान्तों को बहुत इस्तेमाल किया था - अधिकतर सुसमाचारों में पाए जाते हैं।
2. उद्देश्यः दोगुना
   अ. उनको सिखाना जो प्रभावनीय थे।
   आ. अप्रतिक्रियाशीलों से सच्चाई को छिपा रखना। (मत्ती 13:10 देखो)
3. याद रखने के लिए तथ्यः
   अ. वे सदा एक पृथ्वी की प्रक्रिया के द्वारा चित्रित करते हैं।
   आ. उनमें सदा एक आत्मिक सबक होता है।
   इ. सादृश्य - कुछ मामलों में सांसारिक और आत्मिक के बीच समानता।
   ई. उदाहरण और सबक दोनों का ठीक-ठीक अर्थ निकाला जाना चाहिए - अकसर हर दृष्टान्त में एक मुख्य सत्य।
4. दृष्टान्तों को समझना
   अ. सुसमाचारों में दृष्टान्त मसीह और उसके राज्य के विषय में हैं -- 'इस दृष्टान्त का मसीह से क्या सम्बंध है?" मसीह और राज्य को खोजो।
   आ. दृष्टान्तों पर स्थान और समय के प्रकाश में जहाँ से वे आते हैं विचार किया जाना चाहिए -- बाइबल के रीति-रिवाजों और संस्कृति के विषय में पुस्तकों का अध्ययन करो।
   इ. यीशु की दृष्टान्तों की व्याख्या को खोजो, उदा., बीज बोनेवाले का दृष्टान्त (लूका 8:4-9)।
   ई. जो शिक्षा आपको दृष्टान्त में दिखाई देती है उसकी तुलना पवित्रशास्त्र के पूरे संदर्भ से करो। आप दृष्टान्तों में सिद्धान्त पाओगे, परन्तु पुष्टि के लिए आपको इनकी तुलना दूसरे पवित्रशास्त्र से करनी चाहिए (मत्ती 25:1-13)।

आ. भविष्यद्वाणी

1. परिभाषा

-ईश्वरीय इच्छा और सामर्थ्य की प्रेरित घोषणा।
-किस्में: अ. भविष्यद्वाणी करना
आ. बताना

2. समस्याएँ:
क्या भविष्यद्वाणी के लेखों का अक्षरक्ष: अर्थ निकाला जाना चाहिए? नहीं - क्योंकि भविष्य के विषय में भविष्यद्वाणी अकसर प्रतीकात्मक भाषा में होती है जिसके लिए अधिक अध्ययन की आवश्यकता होती है। जब इसमें प्रतीकात्मक भाषा होती है इसे अधिक अध्ययन की आवश्यकता होती है। जब यह बाइबल में ही पूरी हो गई है - कोई समस्या नहीं -- (प्रेरितों 2:25-33 और भजन 16:8-11)।
परन्तु पूरी नहीं भविष्यद्वाणी कठिन है क्योंकि:
अ. अकसर दर्शनों में होती है
आ. बहुत अधिक सामग्री - अधिक विशेषज्ञ अध्ययन की आवश्यकता होती है।
इ. समय का तत्त्व अकसर स्पष्ट नहीं होता।
उदा., लूका 4:16-21 और यशा. 61:1-2
यशा. 61:2 में 2000 वर्षो का अन्तराल है। यीशु लूका 4 में 'न्याय' को छोड़ देता है।
1 पतरस 1:11 - सब भविष्यद्वाणी को इस प्रकार देखा जाना चाहिए कि यीशु का आत्मा हमें मार्ग में 'संकेत' और 'सुराग' दे रहा है, और समझने में सहायता कर रहा है कि हम एक चल रहे कार्यक्रम में है जो इस जीवन से परे भविष्य में पूरा होगा। हालाँकि कभी-कभी अर्थ निकालने में कठिन होता है, भविष्यद्वाणी विश्वासी के लिए प्रोत्साहन और विश्वास का एक स्रोत है।

इ. प्रतीक और प्रारूप

1. परिभाषा:
अ. प्रारूप: पुराने नियम का एक व्यक्ति या चीज जो नए नियम के किसी व्यक्ति या चीज का पूर्वाभास देता है।
आ. प्रतीक: कोई चीज जो किसी तरीके से किसी का चित्रित करती है। एक प्रारूप को कभी-कभी प्रतीक कहते हैं। प्रारूप परमेश्वर के 'प्रदर्शन' हैं - नए नियम के लिए पुराने नियम की एक भविष्यद्वाणी।
उदा., पुशु बलिदान (पुराने नियम का प्रारूप) मसीह के सिद्ध बलिदान के लिए।

2. प्रारूपों की विशेषताएँ
अ. यह उस चीज के सदृश होनी चाहिए जिसका पूर्वाभास देती है।
आ. प्रारूप का पवित्रशास्त्र में सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से संकेत होना चाहिए।
सीधे - इब्रा. 3:7 - 4:11 - परमेश्वर के लोगों के लिए "विश्राम"
अप्रत्यक्ष - इब्रानियों अध्याय 8 और 9 - तम्बू के हर तात्पर्य को समझाया नहीं गया है।
इ. प्रारूपों को हर प्रकार से उनके समृश होने के लिए जिनका पूर्वाभास वे देते हैं विवश नहीं किया जा सकता है। उदा., पुराने नियम के मसीह के प्रारूप (मूसा, यहोशू, आदि) हर प्रकार से मसीह के सदृश नहीं थे।

3. प्रारूपों के इस्तेमाल
लोग - मूसा, डेविड, मलिकिसिदक
जगहें - प्रतीज्ञात प्रदेश
घटनाएँ - फसह
कर्तव्य - महा याजकीय
उद्देश्य - तम्बू

4. प्रतीक - केवल: 'के स्थान पर खड़े रहता' - 'पूर्वाभास नहीं देता'। यहूदा का सिंह (प्रकाशित. 5:5) शैतान (1पतरस 5:8), परमेश्वर का मेम्ना (यूहन्ना 1:29)।

ई. <u>कविता</u>

1. <u>कहाँ है</u> - उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक सारी बाइबल में बिखरी हुई है।
   उदा., निर्ग. 15 - मूसा और मरियम के गीत
   लूका 1 - मरियम का स्तुतिगान और जकर्याह की भविष्यद्वाणी, भजनसंहिता, आदि।
2. <u>इब्रानी कविता की विशेषताएँ</u>

अ. यह लय में नहीं होती - यह एक विचार के ईर्द-गिर्द बनती है।

आ. समान्तरता - इब्रानी कविता में हर दो पंक्तियों के बीच सम्बंध।

i. (समानार्थक)। कविता की दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति के सत्य को उपमा या शब्दों में दोहराती है, उदा., भजन 24:1।

ii. (विपरीत) वैषम्य - दूसरी पंक्ति पहले से उलटी होती है, उदा., भजन 1:6।

iii. (संयोगात्मक) बनाती है - दूसरी पंक्ति पहली में कुछ जोड़ती है। उदा., भजन 19:7।

इब्रानी कविता में भावनाएँ और विचार सबसे ऊपर हैं। यह प्रायः उत्तम पुरुष "मैं" में लिखी होती है और व्यक्तिगत अनुभव से निपटती है।

5. <u>बाइबल अध्ययन का लक्ष्य</u>

हम में बाइबल के हमारे अध्ययन का एक स्पष्ट विचार होना चाहिए (2 तीमु. 3:16)। यह कैसे होता है ?

1. <u>बाइबल अध्ययन लोगों की भाषा में है।</u>
   यह यूनानी और इब्रानी शब्दों, आदि का - शैक्षिक व्याख्या - <u>नहीं</u> है। खोज की एक भूमिका होनी चाहिए, परन्तु बाइबल अध्ययन में यह लक्ष्य नहीं है।
   समूहों में, यह "अच्छा भाषण" नहीं है - अच्छी आवाज करने वाले शब्द जिनका न कोई अर्थ है और जो सुननेवालों के सिर के ऊपर से निकल जाते हैं।

2. <u>इसे आयतों के एक निश्चित संख्या का अर्थ बताना चाहिए।</u>
   अ. दीर्घता तय की जानी चाहिए - हम एक ही सत्र में उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक सिखाने का प्रयत्न करते हैं।
   आ. लेखक के प्रारंभिक अर्थ को निकालना चाहिए।
   बाइबल अध्ययन का सार सदा अर्थ का मामला होना चाहिए - इस परिच्छेद का क्या अर्थ है ? - अर्थो के विषय में प्रश्नों का बहता प्रवाह।
   अच्छी बाइबल की शिक्षा - मूलपाठ और स्थापन के अर्थ की ओर संवेदनशीलता।
3. बाइबल अध्ययन में सुननेवालों के जीवनों और समयों के लिए मूलपाठ का उपयुक्त उपयोग होना चाहिए।

पवित्रशास्त्र का सत्यः	खिलाना	सुननेवाले लोगों की
	बाइबल	असली निश्चित
	अध्ययन	स्थिति

यदि बाइबल अध्ययन को एक अर्थपूर्ण कार्यवाही होना है तो पवित्रशास्त्र के अर्थ को मसीहियों के जीवन में एक अर्थपूर्ण तरीके से लगाया जाना चाहिए।

अ. सिद्धान्तों का महत्त्व

आ. जीवन के लिए शोधक

इ. शान्ति और प्रोत्साहन

ई. भक्तिपूर्ण तत्त्व - आराधना

एक उत्सव सभा की अगुआई / समन्वित / संचालन / "विधिनायक" कैसे करें:

- सभा में लोगों का स्वागत करके आरम्भ करो। इस प्रकार की चीजें कही जा सकती हैं: "प्रभु की स्तुति हो, आप सब का स्वागत है।" "आप सबको देख कर अच्छा लग रहा है। मुझे विश्वास है हम सब को प्रभु की स्तुति और आराधना करके बहुत आनन्द मिलेगा।" आओ हम यह समय प्रभु के हाथों में सौंप दें। (अपनी प्रार्थनाः 'प्यारे स्वर्गीय पिता...; या पिता परमेश्वर...' से आरम्भ करो।)
- (सभा के आरम्भ से पहले देख लो कि गीतों की ओएचपी-शीट्स तैयार रखी हैं, और ओएचपी स्क्रीन सही स्थान पर रखी हुई है ताकि लोग गीतों को साफ-साफ पढ़ सकें।)
- आराधना के अगुवे को कार्यवाही सम्भालने और स्तुति और आराधना में लोगों की अगुआई करने दो, जब तक यह आशीष की एक प्रार्थना और परमेश्वर की आराधना के साथ समाप्त हो। वचनों और भविष्यद्वाणी के लिए अवसर दो। यदि आवश्यकता हो तोः उनकी पुष्टि या सुधार करो, या कुछ भी मत कहो।
- विविधता रखो, परन्तु स्तुति और आराधना के समय के बाद निम्नलिखित चीजों को लेने की आवश्यकता है। हर चीज को कितना समय देना है पविआ आत्मा की ओर संवेदनशीलता और कभी-कभी असली व्यावहारिक फैसले पर निर्भर होता है ताकि सभा सामान्य समय की सीमा के बीतर समाप्त हो सके।
- स्तुति और आराधना के बाद लोगों से कुछ शान्त स्वभाव में, न कि जोर से बात करो क्योंकि वे अभी भी प्रभु की उपस्थिति का आनन्द ले रहे हैं। कभी-कभी इस प्रकार के कुछ वाक्य कहे जा सकते हैं: "हम ने आराधना की...."; आराधना हमारा अनन्त बुलावा है, हमें यहाँ तैयार करने के लिए परमेश्वर की स्तुति हो..."; आदि।
- यदि गवाहियाँ हों, तो आप आगे कुछ इस प्रकार कह सकते होः "आओ परमेश्वर की महिमा करें, और .... की गवाही सुनें" (व्यक्ति को सामने बुलाओ)। या कभी-कभी खुला निमंत्रण दो कि कोई भी आकर गवाही के द्वारा परमेश्वर की महिमा कर सकता है। (संक्षिप्त और निशाने पर)
- अब आप सूचनाएँ दे सकते हो (इससे यूनिअर कलीसिया के शिक्षकों को भी सूचनाएँ सुनने का अवसर मिल सकता है)। या तो सूचनाओं और घोषक को माइक पर लाओ, या इस प्रकार समन्वित करो कि सूचनाएं पढ़ी जाएँ।
- सूचनाओं के बाद अगले रविवार के लिए याद करने का नया बाइबल का वचन (हो सके तोः याद किया हुआ) पढ़ो। इसके बाद 5 से 15 लोगों को (जवानों को बुलाना अच्छा होगा; और उपलब्ध समय पर भी निर्भर करता है) आगे बुलाओ कि उस दिन अध्ययन किया जाने वाला वचन पढ़ें। इसे वचन की सेवा के बाद भी किया जा सकता है।
- इसके बाद दान और दशमांश भी लिया जा सकता है।
  (सभा से पहले देख लो कि दान लेने वाली थैली के साथ पर्याप्त मात्रा में दशमांश के लिए खाली लिपाफे रखे हुए हैं।)
  सब से खड़े होने की विनती करो क्योंकि हम अपनी आराधना के भाग के रूप में अपने देने के द्वारा प्रभु का आदर करनेवाले हैं। दो लोगों को नाम लेकर बुलाओ (जो योग्य हैं नीचे दिए गए हैं; दो भाइयों या दो बहनों को बुलाने का प्रयत्न करो) और उनसे दान लेने की विनती करो, जबकि लोग गीत द्वारा आराधना करेंगे।
- आगे सभा में संदेश देने वाले का स्वागत करो जो वचन की सेवा करेगा।
  इसके साथ घोषणा करो कि बच्चे उनकी अपनी सभा के लिए जा सकते हैं (या कभी-कभी वहीं बैठे रहकर वे भी संदेश सुन सकते हैं)। (इससे वक्ता को आगे आने का समय मिलता है जबकि बच्चे जा रहे होते हैं।)
- वचन के बाद लोगों को चुनौती दो कि वे संदेश पर मनन करते रहें, और प्रार्थना के साथ सभा समाप्त करो या किसी दूसरे को अन्तिम प्रार्थना करने के लिए आगे बुलाओ।
- महिने का अन्तिम रविवारः प्रभु भोज मनाने में समय बिताओ। (निश्चय करो कि रोटी और दाखरस सभा से पहले तैयार और स्थान पर रखा हुआ है)। अगुवों को प्रभु भोज के पास बुलाओ (सम्भवतः कभी-कभी आप कुछ बाइबल वचन पढ़ना चाहो, उदा., 1 कुरिं. 11:23-26; प्रकाशित. 1:5-6; इब्रा. 9:14; आदि) और स्वयं या किसी अगुवे को प्रार्थना करने को कहो। प्रार्थना के दौरान रोटी तोड़ो और दाखरस को कपों में उँडेलो। अगुवों को रोटी और दाखरस बाँटने दो और देख लो कि सब को मिल गया हो।

परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने के बाइबल के तरीके

अ. स्तुति और आराधनाः एक अन्तर है

1. धन्यवाद

स्तुति मुख्य रूप से प्रशंसा और पसंदगी की अभिव्यक्ति है। इसके पूर्ण भाव में, इसमें पाए हुए उपकारों के लिए कृतज्ञता और धन्यवाद की अभिव्यक्ति भी सम्मिलित है। इस प्रकार, स्तुति और धन्यवाद अकसर साथ में चलते हैं।

परन्तु, स्तुति इसके शुद्ध रूपों में धन्यवाद और कृतज्ञता को सम्मिलित नहीं करती। वह मूल रूप से परमेश्वर की ओर प्रशंसा और पसंदगी की अभिव्यक्ति है, चाहे उपकार प्राप्त हुए हों या नहीं। कुछ महसूस करते हैं कि स्तुति की यह ऊँची किस्म को "आराधना" कहा जाना चाहिए।

2. आराधना

इसलिए, आराधना मुख्य रूप से उसके व्यक्ति, चरित्र, गुणों और सिद्धता का गुणगान करना है। यह जो परमेश्वर है उसके लिए उसका गुणगान है, न कि जो उसने हमारे लिए किया है जिससे हमें लाभ हुआ है। "यहोवा के नाम की महिमा करो; पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो।" (भजन 29:2)

आराधना सबसे पहले योग्य/महत्त्व की भीतरी जानकारी है। उसके बाद यह उस भीतरी प्रशंसा की बाहरी अभिव्यक्ति है। यह तब तक आराधना नहीं बनती जब तक बाहरी अभिव्यक्ति नहीं पाती।

जबकि यह हृदय और मन में रहती है, यह प्रशंसा है। जब यह अभिव्यक्ति पाती है और बोली या दिखाई जाती है, तब यह आराधना है।

आ. स्तुति और आराधना मौखिक अभिव्यक्ति

बाइबल में बहुत सारे तरीके दिए गए हैं जिनके द्वारा हम परमेश्वर की हमारी स्तुति को व्यक्त कर सकते हैं। हम अब उन में से कुछ को देखेंगे।

हमारी सूची हो सकता है सम्पूर्ण न हो। आप दूसरे तरीके पा सकते हो जो उतने ही बाइबल के हों। मेरा विश्वास है कि परमेश्वर चाहता है हर विश्वासी उसकी आत्मा में इतना स्वतंत्र हो कि वह उसकी स्तुति बाइबल में पाए जानेवाले किसी भी और सब तरीकों से कर सके।

यदि आप अपने हृदय के भीतर स्तुति महसूस करते हो जिसे पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं दी गई है, तो मैं आपको सुझाव देता हूँ कि आप इन विभिन्न अभिव्यक्तियों का अध्ययन करें। दिए गए बाइबल के वचनों को पढ़ो और प्रार्थनापूर्वक संदर्भ और महत्त्व पर विचार करो, और फिर जिस अभिव्यक्ति के विषय में सोच रहे हो उसका अभ्यास करो। उदाहरण के लिए, यदि आप ऊँचे स्वर से जयजयकार करने के विषय में वचन पढ़ रहे हो, तब आप ऊँते स्वर से प्रभु की जयजयकार कर सकते हो। ऐसा करने में आप अत्यन्त स्वतंत्रता पाओगे। आपके भीतर कुछ खुल जाएगा; आनन्द का एक नया अनुभव आपके भीतर आएगा। यह इसलिए होगा, क्योंकि आप परमेश्वर की आज्ञा मान रहे हो, और आप नए तरीकों से उसकी स्तुति करने लगे हो जिन्हें उसने उसके वचन में निश्चित किया है। यदि आप दूसरों को स्तुति के यह सिद्धान्त सिखा रहे हो, तब जैसे सिखाते जाते हो हर एक को करने को भी कहो। स्तुति के इन तरीकों के विषय में केवल बात करने से ही संतुष्ट मत रहो; बल्कि जो सिखा रहे हो उसमें लोगों को भाग लेने और करने को कहो।

1. आवाज के साथ परमेश्वर की स्तुति करना

"ताकि तेरा धन्यवाद ऊँचे शब्द से करूँ, और तेरे सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करूँ" (भजन 26:7)। "...मैं कैसे भीड़ के संग जाया करता था; मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ..." (भजन 42:4)। दाऊद निरन्तर परमेश्वर की स्तुति बोलता रहता था। वह इस प्रकार की चीजें बोलता था, "यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल है; उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिलती है; इसलिए मेरा हृदय प्रफुल्लित है..." (भजन 28:7)।

हमें प्रभु और उसके अदभुत कामों के बारे में बात करने की आदत डालनी चाहिए। हर दिन परमेश्वर को स्तुति देने हुए आरम्भ करो। उसे बताओ वह कितना महान और अदभुत है, आप उसे कितना प्रेम और प्रशंसा करते हो। एक नए दिन के लिए उसे धन्यवाद करो, और उस पूरे दिन अपने साथ उसकी उपस्थिति के लिए उसकी स्तुति करने लगो।

अपनी आवाज, अपने होंठ, अपना मुँह इस्तेमाल करो। उन्हें स्तुति के वाद्य बनाओ। आपको आश्चर्य होगा आपने कितनी शीघ्रता के साथ स्तुति की आदत डाल ली है, "मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।" (भजन 34:1)। भजन 40:16; 66:8 भी देखो।

2. ऊँचे स्वर से परमेश्वर की जयजयकार करना

बोलकर स्तुति करने के लिए जिसकी हम ने अपने पिछले भाग में बात की है बातचीत की प्रबलता ही लगती है। हम बातचीत के तरीके से परमेश्वर से बातें कर रहे हैं, उसके विषय में अपने विचार उसे बता रहे और अपनी प्रशंसा व्यक्त कर रहे हैं। परन्तु, ऐसे समय होते हैं जब बाइबल के अनुसार हम अपनी आवाजें उठाकर ऊँचे स्वर से परमेश्वर की जयजयकार कर सकते हैं। "...ऊँचे स्वर से परमेश्वर के लिए जयजयकार करो" (भजन 47:1)।

अनेक रूढ़ीवादी लोग ऊँचे स्वर से जयजयकार करने या किसी प्रकार का भी शोर करने के अनिच्छुक होते हैं। वे इसे अशोभनीय मानते हैं। आनन्दपूर्वक शोर और ऊँचे स्वर से स्तुति का भी एक समय होता है, और जब वह समय आता है हमें इसे करने से डरना नहीं है।

"परन्तु जितने तुझ पर भरोसा रखते हैं वे सब आनन्द करें, वे सर्वदा ऊँचे स्वर से गाते रहें..." (भजन 5:11)। लैव्यव्यवस्था 9:23-24; 1 शमूएल 4:5; भजन 32:11; 35:2; 132:9,16; सपन्याह 3:14 भी देखो। "हे सिय्योन में बसनेवाली, तू जयजयकार कर और ऊँचे स्वर से गा, क्योंकि इस्राएल का पवित्र तुझ में महान् है" (यशा. 12:6)।

3. गीत गाना

"...जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ" (भजन 100:2) गीत गाना परमेश्वर के अचरज की ओर एक सबसे सरल और सबसे स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। यह आनन्दभरी भावना की स्वैच्छिक अभिव्यक्ति है। यह सदा से परमेश्वर के लोगों के बीच स्तुति की एक उपयुक्त अभिव्यक्ति रही है।

मिस्र में से निर्गमन के तुरन्त बाद, जब परमेश्वर उन्हें लाल समुद्र में से ले आया था, मरियम ने उनकी परमेश्वर की स्तुति करने में अगुआई की थी। उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ से एक चमत्कारी और अदभुत रूप से छुड़ाया गया था। "और मरियम उनके साथ यह टेक गाती गई: 'यहोवा का गीत गाओ; क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में फेंक दिया है।'" (निर्गमन 15:21)

सारी बाइबल में गीत गाने के अनेक संदर्भ हैं। उनमें से कुछ यहाँ हैं:

"...मैं आप यहोवा के लिए गीत गाऊँगी; इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का मैं भजन करूँगा।" (न्यायियों 5:3)

"इस कारण, हे यहोवा, मैं जाति जाति के सामने तेरा धन्यवाद करूँगा, मैं तेरे नाम का भजन गाऊँगा।" (2 शमूएल 22:50)।

"उसका गीत गाओ, उसका भजन करो, उसके सब आश्चर्यकर्मों का ध्यान करो।" (1 इतिहास 16:9)

"इस प्रकार मैं सर्वदा तेरे नाम का भजन गा गाकर, अपनी मन्नतें हर दिन पूरी किया करूँगा।" (भजन 61:8)। 2 इतिहास 29:3; भजन 7:17; 9:2; 21:13; 47:6 भी देखो।

परमेश्वर के लिए स्तुति गाने के बहुत सारे और वचन भी हैं, परन्तु ये कुछ हमें गीत गाने के महत्त्व का कुछ विचार दे सकते हैं।

गीत गाना खुशी और संतोष का एक चिन्ह है। यह आनन्द का एक चिन्ह है, दिखाता है कि व्यक्ति उसके जीवन में संतुष्ट है। यह सकारात्मक भावना की एक सही अभिव्यक्ति है जो पूरे अस्तित्व को शक्ति देता है। परमेश्वर को हम से उसकी स्तुति गाते सुनना अच्छा लगता है।

विविध प्रकार के गीत। इफिसियों 5:19 और कुलुस्सियों 3:16 में, हमें "अपने अपने मन में ... परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ" का उपदेश दिया गया है।

भजन संहिता ने गीत द्वारा आराधना के लिए बहुत सारी सामग्री दी है - पुराने पारम्पारिक भजनों से लेकर आधुनिक कोरस सीधे उन्हीं में से लिए गए हैं।

स्तुतिगान ने भी कलीसिया को प्रेरित करने के लिए बड़े बड़े विषय दिए हैं और उसे स्तुति के लिए बड़ी सामग्री दी है।

आत्मिक गीत उन दोनों वर्गों से कुछ भिन्न हैं। वे गीत हैं जिन्हें सीधे आत्मा ने दिया है और स्वेच्छा से गाए जाते हैं जैसे आत्मा बोल और लय दोनों देता है। ये गीत गीत गा रहे व्यक्ति की भाषा में हो सकते हैं, तब ये "...बुद्धि से..." गाए जाते हैं (1 कुरिं. 14:15)। दूसरे समयों में, बोल "अन्य भाषा" में हो सकते हैं, जिस मामले में व्यक्ति का मन "...काम नहीं..." करता (1 कुरिं. 14:14)। मन को पता नहीं चलता क्या गाया जा रहा है, फिर भी उसे बोध होता है कि आत्मा परमेश्वर की स्तुति और महिमा कर रहा है, जो बारम्बार "स्वर्गदूतों की बोलियाँ" बोलना होता है।

दोनों मामलों में गीत पूरी तरह स्वैच्छिक और अनायोजित होते हैं। गीत विश्वास के साथ गाए जाते हैं। गायक, अपनी आत्मा में परमेश्वर के आत्मा को सुनते हुए, शब्दों और लय को बाहर लाता है जिसे आत्मा उसे देता है।

इ. स्तुति और आराधना की शारीरिक अभिव्यक्तियाँ

स्तुति की मौखिक, श्रव्य अभिव्यक्तियों के अतिरिक्त, बाइबल अनेक उदाहरण देती है जहाँ हम परमेश्वर की आराधना में शारीरिक अभिव्यक्तियाँ इस्तेमाल कर सकते हैं।

1. खड़े होकर

सीधे खड़े होना आदर का एक चिन्ह होता है। यदि महत्त्व का एक व्यक्ति कमरे में आता है, जो पहले से वहाँ हैं खड़े हो जाएँगे और उस व्यक्ति को आदर देंगे।

पवित्र आत्मा अकसर हमें प्रभु के सामने, आराधना और आदर के रूप में, खड़े होने के लिए प्रेरित करेगा। "सारी पृथ्वी के लोग यहोवा से डरें, जगत के सब निवासी उसका भय मानें" (भजन 33:8)।

"हे यहोवा के सब सेवको, सुनो, तुम जो रात रात को यहोवा के भवन में खड़े रहते हो, यहोवा को धन्य कहो ... याह की स्तुति करो, यहोवा के नाम की स्तुति करो, हे यहोवा के सेवको, तुम स्तुति करो, तुम जो यहोवा के भवन में, अर्थात् हमारे परमेश्वर के भवन के आंगनों में खडे रहते हो" (भजन 134:1; 135:1-2)।

2. हाथ उठाना

खड़े हाथ विश्व भर में समर्पण का एक चिन्ह माना जाता है। प्रभु के सामने अपने हाथ खड़े करके, हम स्वीकार करते हैं कि हम पूर्ण रूप से उसके सामने समर्पित हैं। हम उसे बताते हैं कि हम बिना शर्त उसके हैं। हम में उसका विद्रोह करने की कोई इच्छा नहीं है, और उससे लड़ने के लिए हमारे हाथों में कोई हतियार नहीं हैं।

जो लोग पूर्ण रूप से परमेश्वर की ओर समर्पित नहीं हैं, ऐसा करने में बहुत समस्या महसूस करते हैं, हालाँकि यह इतना सरल काम है। वे आराधना के इस तरीके का दृढ़ता के साथ विरोध करते हैं। परन्तु, एक बार जब उन्होंने ऐसा किया है, एक बड़ी मुक्ति मिलती है और वे दूसरे कई तरीकों से भी स्तुति व्यक्त कर सकते हैं।

"अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर, यहोवा को धन्य कहो" (भजन 134:2)। यह परमेश्वर की बड़ी चाह की भी निशानी है। "जब मैं तेरी दोहाई दूँ, और तेरे पवित्रस्थान की भीतरी कोठरी की ओर अपने हाथ उठाऊँ, तब मेरी गिड़गिड़ाहट की बात सुन ले" (भजन 28:2)।

यह परमेश्वर के लिए आत्मिक प्यास का प्रतीक भी है। "मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाए हुए हूँ, सूखी भूमि के समान मैं तेरा प्यासा हूँ" (भजन 143:6)।

3. ताली बजाना

जब कोई कुछ करता है जो हमारी प्रशंसा और समर्थन जीतता है, और जब हम उन्हें बताना चाहते हैं कि उन्होंने ऐसा किया है, हम अकसर अपने हाथ इस्तेमाल करके ताली बजाते हैं।

जब परमेश्वर इतना अदभुत है, और उसने इतने सारे अदभुत काम किए हैं जिससे हमारी प्रशंसा और समर्थन जीता है, तो यह अनोखा नहीं होगा कि हम उसके लिए तालियाँ बजाएँगे।

हमें परमेश्वर के लिए तालियाँ बजाने की आज्ञा दी गई है। "हे देश देश के सब लोगो, तालियाँ बजाओ..." (भजन 47:1)। यह खुशी, आनन्द और पसंदगी का एक चिन्ह है।

4. झुकना या घुटनों पर होना

अकसर जब लोग परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा से अभिभूत हो जाते हैं, वे स्वेच्छा से उनके घुटनों पर या परमेश्वर के सामने झुक जाते हैं। यह भय और आदर का शारीरिक संकेत है।

"आओ हम झुककर दण्डवत् करें, और अपने कर्त्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें।" (भजन 95:6)
एक दिन हर घुटना उसके सामने झुकेगा। (फिलि. 2:10)

5. **परमेश्वर के सामने मुँह के बल गिरना**

यहाँ भक्ति और आराधना की एक और किस्म है। किसी के सामने मुँह के बल गिरना और पड़े रहना गहरे आदर का चिन्ह है। यह अपने को दीन करना है, ताकि जिसे हम अपना प्रेम और भक्ति देते हैं उसे हम अपने से ऊँचा उठाते हैं।

"मुँह के बल गिरना, "झुकना" और "आराधना करना" इन सबका पुराने नियम की इब्रानी भाषा में एक ही मूल शब्द ("shachah") और नए नियम यूनानी में ("proskuneo") है।

"...तब यहोशू ने पृथ्वी पर मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया..." (यहोशू 5:13-14)।

"तब यहोशापात भूमि की ओर मुँह करके झुका और सब यहूदियों और यरूशलेम के निवासियों ने यहोवा के सामने गिरके यहोवा को दण्डवत् किया।" (2 इतिहास 20:18)

"सब राजा उसको दण्डवत् करेंगे, जाति जाति के लोग उसके अधीन हो जाएँगे।" (भजन 72:11)

6. **नाचना**

क्योंकि नाच अत्यन्त प्रदर्शनात्मक और सम्भवतः स्तुति की कुछ भावात्मक किस्म होती है, इसलिए इसकी काफी आलोचना और विरोध, अधिकतर रूढ़ीवादी लोगों से हुआ है। इस विवाद के कारण, मैं ने इस विषय पर विचार के लिए अधिक स्थान और व्याख्या दी है।

नाच में सारा शरीर लगता है, ताकि प्रभु के सामने आनन्द, स्तुति और आराधना व्यक्त की जाए। इब्रानी और यूनानी भाषा के शब्द जिनको बाइबल में "नाचना" अनुवाद किया गया है उनके विविध प्रकार के अर्थ हैं - जिनमें शामिल हैः "छलाँग लगाना, कूदना, पैर उठाना और कूदना।"

यह ऐसे नाच के स्वैच्छिक, बिना पूर्व योजना की प्रकृत्ति प्रकट करता है। यह नाचना किसी निर्धारित और आयोजित क्रिया के अनुसार नहीं किया जाता है, परन्तु उसके विपरीत, प्रभु के सामने आनन्द की सरल, स्वैच्छिक प्रतिक्रियाएँ हैं।

ऐसी घटनाएँ जैसे कि एक जिसका प्रेरितों 3:8 में वर्णन है, जिसमें लंगड़ा व्यक्ति चंगा होने के बाद "...चलता, और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ..." को अब एक नए प्रकाश में देखा जा सकता है।

यह तब और विशेष है जब स्मरण करें कि नाच ने इस्राएल की आराधना में एक अनिवार्य भूमिका निभाई है।

"वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें..." (भजन 149:3)।

"डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो..." (भजन 150:4)

अ. बाइबल में नाटने की घटनाएँ

i) **उद्धार और छुटकारा मनाना।** "तब हारून की बहिन मरियम नाम नबिया ने हाथ में डफ लिया; और सब स्त्रियाँ डफ लिए नाचती हुई उसके पीछे हो लीं।" (निर्गमन 15:20)

"जब यिप्ताह मिस्पा को अपने घर आया, तब उसकी बेटी डफ बजाती और नाचती हुई उससे भेंट के लिए निकल आई..." (न्यायियों 11:34)। वह एक बड़ी विजय से लौट रहा था।

ii) **पुनस्थापना के कारण आनन्द।** जब वाचा का संदूक यरूशलेम लाया जा रहा था, "दाऊद ...यहोवा के सम्मुख तन मन से नाचता रहा" (2 शमूएल 6:14)।

यिर्मयाह ने आनेवाली यशस्वी पुनस्थापना की भविष्यद्वाणी की थीः "उस समय उनकी कुमारियाँ नाचती हुई हर्ष करेंगी, और जवान और बूढ़े एक संग आनन्द करेंगे। क्योंकि मैं उनके शोक को दूर करके उन्हें आनन्दित करूँगा, मैं उन्हें शान्ति दूँगा, और दुख के बदले आनन्द दूँगा।" (यिर्म. 31:13)

विलापगीत 5:15 के अनुसार, उनका नाचना विलाप में बदल गया होगा, जब उन्हें बंधुआई में ले जाया गया था। यिर्मयाह 31:13 में, देखते हैं कि जब वे बंधुआई से लौटे, वे नाचने लगे थे।

iii) **नए नियम में नाचना।** ऐसा तर्क किया गया है, उनके द्वारा जो कलीसिया में नाच का विरोध करते हैं, कि यह केवल एक पुराने नियम की घटना थी, और इसका नए नियम की कलीसिया में कोई स्थान नहीं है।

परन्तु, नया नियम पढ़ते हुए यह अभिव्यक्ति भी मिलती है।

जब लंगड़ा व्यक्ति चंगा हुआ, उसने बड़े जोश के साथ प्रतिक्रिया दिखाई: "वह उछलकर खड़ा हो गया और चलने-फिरने लगा; और चलता, और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उनके साथ मन्दिर में गया।" (प्रेरितों 3:8)

जब पौलुस ने लुस्त्रा में लंगड़े व्यक्ति को देखा, उसने "ऊँचे शब्द से कहा, 'अपने पाँवों के बल सीधा खड़ा हो।' तब वह उछलकर चलने फिरने लगा" (प्रेरितों 14:10)। उसका उछलना चंगाई के चमत्कार की ओर एक खुशी की प्रतिक्रिया थी।

आनन्द के लिए एक यूनानी शब्द जिसे नए नियम में बारम्बार इस्तेमाल किया गया है "agalliao" है, जिसका अक्षरक्षः अर्थ है: "खुशी से उछलना"। यह एक गहरा, भीतरी आनन्द नहीं है, बल्कि यह अत्यन्त बड़े आनन्द की एक गतिशील, भावात्मक अभिव्यक्ति है, जिसके कारण व्यक्ति "खुशी के मारे उछलता" है। एक जगहें हैं जहाँ नए निमय में ऐसा होता है:

यीशु ने कहा, "उस दिन आनन्दित होकर उछलना ("agalliao"), क्योंकि देखो, तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है..." (लूका 6:23)।

दारोगा "... ने सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया ("agalliao")" (प्रेरितों 16:34)।

"पर जैसे जैसे मसीह के दुखों में सहभागी होते हो, आनन्द करो, जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित और मगन ("agalliao") हो" (1 पतरस 4:13)।

नये नियम के अन्त की ओर, हमें "आओ, हम आनन्दित और मगन ("agalliao" - खुशी से उछलना) हों, और उसकी (मसीह) स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है" (प्रकाशित. 19:7) का उपदेश दिया गया है।

जब सब चीजों की पुनस्थापना जिसके विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था पूरी होगी (प्रेरितों 3:21-24), तब नाचना भी होगा, क्योंकि यह एक चीज है जिसकी बात भविष्यद्वक्ताओं ने की थी (यिर्मयाह 31:13)।

आ. बाइबल में नाचने के कुछ पहलू

- **यह शैली में स्वैच्छिक और सरल है।** कोई अत्यन्त आयोजित, कुशल और सूक्ष्म ढंग की नहीं है।
  इसे छलाँग लगाने, कूदने, फाँदने और घूमने (एक दायरे में चलना या चक्कर खाना) में व्यक्त किया जा सकता है। इसके साथ कभी-कभी वाद्यों से संगीत भी बजाया जाता था (1 इतिहास 15:29; भजन 149:3)। इसके साथ अक्सर गाना भी होता था। (निर्गमन 15:20-21)
- **इसे एक व्यक्ति अकेला या एक समूह में किया जा सकता है।** दाऊद प्रभु के सामने नाचा था। मरियम और स्त्रियाँ नाची थीं।
- **यह प्रतिजाति के साथ नाचना नहीं है।** मरियम और दूसरी स्त्रियाँ नाची थीं (निर्ग. 15:20)। जवान और बूढ़े पुरुष इकट्ठे नाचे थे। (यिर्म. 31:13)
- **इसके लिए कोई आयु सीमा नहीं है।** जवान और बूढ़े इकट्ठे।
- **गीत गाना और नाचना अकसर इकट्ठे होता था।** क्या यह वही दाऊद नहीं है, जिसके विषय में लोग नाचते और गाते हुए एक दूसरे से कहते थे, शाऊल ने हज़ारों को, पर दाऊद ने लाखों को मारा है?" (1 शमू. 29:5)।
- **नाचने का एक सही समय है।** "रोने का समय.....और नाचने का भी समय है।" (सभोपदेशक 3:4)
- **परमेश्वर ने नाचने को लौटाने की भविष्यद्वाणी की है।** ".... और आनन्द करनेवालों के बीच में नाचनी हुई निकलेगी।" (यिर्म. 31:4)।
  "उस समय उनकी कुमारियाँ नाचती हुई हर्ष करेंगी..." (यिर्म. 31:13)।

इ. चेतावनी!!!

एक सांसारिक प्रकार से नाचना विश्वास से पीछे हट जाने, मूर्तिपूजा, अनौतिकता और सांसारिकता से जुड़ा होता है। (उदाहरण के लिए, निर्गमन 32:19 देखो -- सोने के बछड़े के चारों ओर नाचना।) शैतान के पास हर चीज की नकल है। नकली केवल असली की वास्तविकता प्रकट करती है। यह बात कि शैतान किसी चीज की नकल करता है, का अर्थ नहीं कि हमें असली को काम में नहीं लाना चाहिए।

7. एक संगीत वाद्य बजाना

संगीत वाद्य स्तुति और आराधना करने के लिए बाइबल में अकसर इस्तेमाल किए गए थे। वे आज भी आराधना में एक अत्यावश्यक भूमिका निभा सकते हैं।
हमें आज्ञा दी गई है, "नरसिंगा फूँकते हुए उसकी स्तुति करो; सारंगी और वीणा बजाते हुए उसकी स्तुति करो। डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो; तारवाले बाजे और बांसुरी बजाते हुए उसकी स्तुति करो। ऊँचे शब्दवाली झाँझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो; आनन्द के महाशब्दवाली झाँझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो।" (भजन 150:3-5)

"आत्मा में" बजाना। जो संगीतकार उनके संगीत वाद्यों को बजाकर स्तुति करते हैं ऐसा कुशलता के साथ करें। वे उनके वाद्यों को "भली भाँति" बजाएँ (भजन 33:3)। इसका अर्थ जरूरी नहीं कि इसे परिशुद्धता के साथ किया जाए। यह मनुष्य की कुशलता का अर्पण नहीं है।
यह एक आत्मिक कुशलता है, न कि स्वाभाविक निपुणता। कुशलता न केवल वाद्य को बजाने में है, बल्कि आत्मा के भाव को समझना है। हम इसे "आत्मा में बजाना" कहते हैं।

- **डेविड का वीणा को कुशलता के साथ बजाने से** शाऊल में से दुष्ट आत्मा हट जाता था (1 शमू. 16:23)।
- **संगीतकार उनके बजाने के द्वारा एक वातावरण बनाते हैं** जहाँ आत्मा के वरदान काम करने लगते हैं।
- **सुलैमान के मन्दिर के समर्पण के समय** 40,000 **संगीतकार** उनके वाद्यों के द्वारा प्रभु की स्तुति कर रहे थे (1 इतिहास 23:5)।
  "और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया जो जल की बहुत धराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैं ने सुना वह ऐसा था मानो वीणा बजानेवाले वीणा बजा रहे हों। वे सिंहासन के सामने और चारों प्राणियों और प्राचीनों के सामने एक नया गीत गा रहे थे।" (प्रकाशित. 14:2-3)। इससे संकेत मिलता है कि स्वर्ग में संगीत वाद्य और संगीतकार हैं।

8. चुप्पी

गीत गाने, संगीत वाद्यों, नाचने, आदि की आवाजों के बिलकुल उलटे, चुप्पी के द्वारा स्तुति की अभिव्यक्ति होती है: "...चुप रहने का समय, और बोलने का भी समय है" (सभोपदेशक 3:7)।
चुप्पी से डरो मत। कभी-कभी पवित्र आत्मा मण्डली पर एक पवित्र सन्नाटा लाता है। इन समयों में, चुप्पी गंभीर और भावपूर्ण होती है। ऐसे समयों में अकसर भय और आदर की एक महान भावना होती है। व्यक्ति परमेश्वर के सामने चुप रहकर खड़ा (या बैठ) हो सकता, चिन्तन कर सकता, और उसकी स्तुति और आराधना कर सकता है। "चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ..." (भजन 46:10)।

9. रोना

रोना भी परमेश्वर की स्तुति की ओर एक वैध प्रतिक्रिया है। यह दुख या मनोव्यथा का नहीं है, परन्तु कृतज्ञता और धन्यवाद का रोना है। कभी-कभी, जैसे हम परमेश्वर की महानता और भलाई पर मनन करते हैं, उसकी भलाई की ओर एकमात्र उपयुक्त प्रतिक्रिया कृतज्ञता के आँसू हैं। ऐसा करने से डरो मत। यह निर्बलता का चिन्ह नहीं है। आँसू बहने दो। हम अकसर आँसू बहाने से बचना चाहते हैं।
परन्तु, रोना कभी-कभी हमारे अस्तित्व की गहरी लालसाओं को इस प्रकार व्यक्त करता है जैसे शायद कुछ नहीं करता। यह अकसर एक भारी मुक्ति और स्वतंत्रता लाता है।
व्यक्ति को बहुत अधिक रोना भी नहीं चाहिए, क्योंकि इससे लगता है कि भीतरी अस्तित्व में कुछ समस्या है, और ऐसे मामलों में भीतरी चंगाई की आवश्यकता होती है।
जब नहेम्याह परमेश्वर का वचन पढ़ने और समझाने लगा, तब लोग जब उन्होंने सुना रोने लगे। नहेम्याह ने उन्हें कुछ समय के लिए रोने दिया, परन्तु उसने उनके रोने को रोका और उनसे कहा, "जाकर चिकना चिकना भोजन करो और मीठा मीठा रस पीयो....उदास मत रहो, क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है।" (नहेम्याह 8:10)।
बहुत अधिक रोना व्यक्ति को निर्बल बना देता है, जबकि प्रभु का आनन्द सामर्थ्य का एक सोता है।

10. हँसना

"पवित्र हँसी" जैसी भी एक चीज है, जब प्रभु के लिए हँसने की एक इच्छा हम पर आ जाती है।

यह उस किसी चीज की ओर प्रतिक्रिया नहीं है जो किसी ने कुछ मजाकिया कहा है। यह प्रभु में एक बढ़े हुए आनन्द की एक अभिव्यक्ति है जिससे उसे व्यक्त करने का तरीका हँसना ही है।

"...धन्य हो तुम जो अब रोते हो, क्योंकि हँसोगे" (लूका 6:21)।

इस्राएल के लोगों ने इसे तब अनुभव किया था जब वे बंधुआई से लौटे थे। "तब हम आनन्द से हँसने और जयजयकार करने लगे..." (भजन 126:2)।

"देख, परमेश्वर न तो खरे मनुष्य को निकम्मा जानकर छोड़ देता है...वह तो तुझे हँसमुख करेगा; और तुझ से जयजयकार कराएगा" (अय्यूब 8:20-21)।

11. मार्च करना

परमेश्वर ने अपने लोगों को अकसर मार्च करने को कहा था। सम्भवत: इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण यरीहो के चारों ओर घूमना था (यहोशू 6:2-5)। इस्राएल ने परमेश्वर की आज्ञा पर मार्च किया था, और परमेश्वर ने यरीहों की दीवारों को गिरा दिया था।

कई दीवारें अभी भी गिर पड़ती हैं जब परमेश्वर के लोग उसके निर्देश में मार्च करते हैं - अभिमान. अविश्वास, आत्मिक बन्धन, आदि की दीवारें।

यहोशापात और उसकी सेना ने मार्च किया और परमेश्वर की स्तुति गाई, और परमेश्वर ने उनके शत्रुओं को उनके हाथों में कर दिया हालाँकि संख्या में वे उनसे बहुत अधिक थे। (2 इतिहास 20:20-22)

कई मण्डलियों ने आत्मा की प्रेरणा में मार्च किया है। बन्धन, अभिमान और कटुता की दीवारें ढाई गई हैं। इस प्रकार के मार्च को "यरीहो मार्च" भी कहा गया है। दूसरे इसे "महिमा मार्च" भी कहते हैं।

मसीह की दुल्हिन को एक सेना में रूप में चित्रित किया गया है जो इकट्ठे मार्च करती है (श्रेष्ठगीत 6:4,10)।

12. आनन्द मनाना

प्रभु में आनन्द मनाना परमेश्वर की स्तुति करने का एक और तरीका है। राजा के सम्मुख आने का उचित तरीका आनन्द के साथ आना है। यह संकेत देता है कि हम अपनी स्थिति से बहुत खुश हैं।

हमें राजा के सेवक होने का जो सम्मान दिया गया है, उसके लिए हम कृतज्ञ हैं। परमेश्वर के लोगों को अकसर कहा गया था, "...अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनन्द करना।" (व्यवस्था. 12:12)

परमेश्वर एक स्थान चुन रहा था जहाँ वह उसके लोगों से मिला करेगा। "जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिए चुन ले उसी में तुम...जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूँ उन सभों को वहीं ले आना ... और वहाँ तुम अपने अपने बेटे बेटियों और दास दासियों सहित अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनन्द करना..." (व्यवस्था. 12:11-12)।

ई. सारांश

स्मरण रहे कि स्तुति की ये अभिव्यक्तियाँ तब ही कोई मूल्य रखती हैं यदि वे हमारे हृदय से निकलने वाली स्तुति को अभिव्यक्ति देती हैं।

केवल कुछ करते रहने से, जैसे एक रोबोट करता है, स्तुति नहीं होती। ये सब परमेश्वर के लिए हमारे भीतर की प्रशंसा, धन्यवाद और आदर को अभिव्यक्ति देने के साधन हैं।

आराधना अगुवों के लिए आदेश

आराधना में पवित्र आत्मा का अनुकरण करो

परमेश्वर उसके लोगों के साथ हर बार जब वे इकट्ठा होते हैं मिलना चाहता है। उसके पास हर सभा में उसके बच्चों को नई नई और रचनात्मक चीजें कहने के लिए हैं।

परन्तु कभी-कभी पता लगाना कठिन होता है कि परमेश्वर से मिलने के उस स्थान में कैसे आएँ, और आराधना में "अति पवित्र स्थान" में कैसे प्रवेश करें।

बाइबल हमें आराधना में परमेश्वर के पास आने का एक नमूना देती है। यह कोई कठोर "नुस्खा" नहीं है कि हर बार जब हम इकट्ठे हों उस पर ठीक-ठीक वैसे ही चलना है। परन्तु, यह एक "निर्देशिका" है जिससे आपको और जिनकी आप अगुआई करते हो उनको परमेश्वर की आराधना करने की तैयारी करने में सहायता मिलेगी, और आपको अपने हृदय तैयार करने में सहायता मिलेगी ताकि सब कुछ जो परमेश्वर के पास है आपको मिल सके।

आराधना के लिए एक ईश्वरीय नमूना

भजन 100 हमें परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने का एक ईश्वरीय क्रम या नमूना देता है:

"यहोवा का जयजयकार करो"; "आनन्द से यहोवा की आराधना करो"; "जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ"; "उसके फाटकों से धन्यवाद करते हुए प्रवेश करो"; "उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो": "उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो।" (भजन 100:1-4 उद्धरण)

साफ है कि यह नमूना, जो मन्दिर की आराधना पर आधारित है, आनन्दपूर्वक गीतों के साथ आरम्भ होता है। केवल तब ही, भजनकार हमें बताता है, लोग मन्दिर के द्वारों में से अन्दर आँगनों में आते थे। मन्दिर, निस्संदेह, परमेश्वर की उपस्थिति को दर्शाता है।

यहूदी इस भजन के स्थान को समझते थे। वे पर्व के दिनों में आनन्दपूर्वक गाते हुए यरूशलेम जाया करते थे। असल में, भजन 120 - 134 उनकी यात्रा के दिनों में उनकी गीतों की पुस्तक होते थे। उनके गीत उनकी यात्रा के उद्देश्य को उन्हें याद दिलाते और प्रभु उनके परमेश्वर में उनके विश्वास को प्रेरित करते थे। ये भजन उनके हृदयों और मनों को प्रभु के आसपास इकट्ठा करते थे। ये भजन मनुष्य की आवश्यकताओं से आरम्भ होते हैं: "संकट के समय मैं ने यहोवा को पुकारा..." (भजन 120:1)। यह परमेश्वर के मन्दिर में मनुष्य का परमेश्वर को धन्य कहते हुए समाप्त होते हैं: "अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर, यहोवा को धन्य कहो..." (भजन 134:2)।

मनुष्य की आवश्यकताओं से परमेश्वर की उपस्थिति की ओर एक लम्बा सफर है। सम्भवतः इसी कारण से वहाँ पहुँचने के लिए पंद्रह गीत लगे हैं। परन्तु, उनकी आराधना की यात्रा हमारी आज की आराधना सभाओं में एक अतिरिक्त अर्थ लाती हैं। हमें भी दूसरों की उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं से ऊपर उठकर परमेश्वर की महिमा में आने में सहायता करनी है।

परमेश्वर के लोगों को आराधना में लाना

हम ने भजन संहिता से देखा है कि गीतों का आराधना में एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। इनका कार्य हमें जीवन के दबावों में से परमेश्वर की उपस्थिति में लाना है।

हमारी आराधना सभाओं को हमें परमेश्वर की ओर आत्मिक दिशा में ले जाने की आवश्यकता है। यदि हमारे पास वह दिशा नहीं है, तब हमारा गाना एक निरुद्देश्य कार्यवाही ही होगा - सुखद, सम्भवतः, परन्तु बिना एक आत्मिक उद्देश्य के।

लगभग कोई भी "गीतों की अगुआई" कर सकता है। परन्तु लोगों की "गीत गाते हुए" अगुआई करना अधिक कठिन है। एक अगुवे को स्वयं एक आराधक होना है, यदि वह दूसरों की आराधना में अगुआई करना चाहता है। उसे पता होना चाहिए वह कहाँ है, वह कहाँ जा रहा है, और वह कब पहुँचेगा, क्योंकि उसने परमेश्वर की आराधना में स्वयं कई घंटे बिताए हैं।

परमेश्वर के लोगों से वहाँ मिलना जहाँ वे हैं

लोगों की अगुआई सदा वहाँ से आरम्भ होती है जहाँ वे हैं। आराधना के अगुवे को लोगों की वर्तमान आत्मिक दशा को महसूस करना है। यदि वह नहीं करता, तो उन्हें पूरी तरह खो देगा।

अधिकतर कलीसिया की सभाओं में, लोगों के आत्मिक स्तर का पता लगाना कठिन नहीं होता। उनमें से अधिकतर उनके रोजाना के जीवन की सामान्य क्रियाकलापों में से आते हैं। उनके मन लोगों, स्थानों, चीजों और व्यक्तिगत आवश्यकताओं में लगे होते हैं। वे उनमें अपने में और उनके संसार में खोए होते हैं। परन्तु वे "यरूशलेम की यात्रा" में जाने के लिए इकट्ठे हुए हैं।
आराधना के अगुवे के लिए एक ऐसे गीत से आरम्भ करना जो उनकी व्यक्तिगत दशा से सम्बंधित है बुद्धिमानी होगा। ऐसे गीतों में बहुत संख्या में "मैं", "मेरा", "मुझे", "हमारा" और "अपना" जैसे शब्द होते हैं। वे लोगों की भावनाओं, आवश्यकताओं, परमेश्वर के लिए इच्छाओं से सम्बंधित होते हैं। यह, आराधना सभा के पहले भाग में, लोगों के पास पहुँचता है जहाँ वे हैं।
यह आराधना अगुवे का लक्ष्य है कि वह लोगों को एक-एक कदम करके सच्ची आराधना के पवित्र स्थान में ले आए। स्तुति के आनन्दपूर्वक गीत परमेश्वर के लोगों को संसार की भारी चिन्ताओं और दबावों से ऊपर उठाते हैं। उनके चेहरे अब यरूशलेम की ओर लगे हैं, और यात्रा आरम्भ हुई है।

परमेश्वर के लोगों को धन्यवाद में ले जाना

"उसके फाटकों से धन्यवाद करते हुए प्रवेश करो" (भजन 100:4)। धन्यवाद के गीत लोगों को मन्दिर के फाटकों में से अन्दर, बाहरी आँगन में लाते हैं। वे लोगों को उनसे और सांसारिक चीजों से परे देखने - पवित्र स्थान में उनके स्थान लेने के लिए तैयार हैं। उन्होंने उनकी आवश्यकता और परमेश्वर के लिए इच्छा के बारे में गाया है। अब वे उनके विचार और अधिक परमेश्वर की ओर लगाना - और जो उसने किया है उसके लिए उसे धन्यवाद देना चाहते हैं।
धन्यवाद के गीत आनन्द और खुशी के गीत हैं। परन्तु, लोगों का ध्यान अब उनके अपने और उनकी आवश्यकताओं से अधिक प्रभु और उसके वरदानों पर है। शीघ्र ही वे परमेश्वर की ऊँची स्तुति में प्रवेश करने के लिए तैयार होंगे। एक संवेदी आराधना का अगुवा जानता है कि कब लोग उस अगले कदम के लिए तैयार हैं।

परमेश्वर के लोगों को स्तुति में ले जाना

धन्यवाद के एक समय के बाद, परमेश्वर के लोग अब "उसके आँगनों में स्तुति करते हुए" प्रवेश करने के लिए तैयार हैं। स्तुति धन्यवाद और आराधना के बीच पुल है। यह स्तुति के भीतर आँगनों में है कि हम "अति पवित्र स्थान" में प्रवेश करने के लिए तैयार होते हैं।
इसलिए, हमारी स्तुति परमेश्वर का उसके अनेक आशीषों के लिए धन्यवाद देने से आरम्भ होती है। परन्तु, हमारी स्तुति परमेश्वर जो है -- न केवल जो उसने किया है, उसके लिए उसे धन्य कहने के साथ समाप्त होती है।
स्तुति हमें लेने से देने में ले जाती है; परमेश्वर का हमारी सेवा करने से, हमारा परमेश्वर की सेवा करने तक। स्तुति बहुत सारी गतिविधि और भावना के साथ आरम्भ होती है। हम ऊँची आवाजों, तालिया बजाकर और पवित्र नाच के साथ प्रभु में अपना आनन्द प्रकट कर सकते हैं। हम सामूहिक रूप से परमेश्वर की सामर्थ्य, भलाई और महिमा स्वीकार और व्यक्त करना चाहते हैं।
परन्तु, जैसे हम पवित्र स्थान के निकट पहुँचते हैं, हमारी स्तुति भययोग्य प्रेम और पवित्र भक्ति के निकट आती है। गतिविधि कम हो जाती है, और कभी-कभी मण्डली पर एक "पवित्र सन्नाटा" छा जाता है। हमारा ध्यान परमेश्वर की सुन्दरता, प्रताप और महान प्रेम की ओर खिंचा जाता है। ऐसा पवित्र अचरज आराधना से केवल एक कदम दूर ही है।
हम देखते हैं कि गतिविधि हमारे अपने और दूसरों से प्रभु की ओर होती जा रही थी। जितना निकट हम उसके आते हैं, उतनी अधिक गहरी और सीधी हमारी भक्ति होती जाती है। अब आराधना के लिए हमें तैयार करने के स्तुति के स्थान को हम बेहतर समझ सकते हैं।
स्तुति के गीत परमेश्वर की भलाई और उसकी महिमा पर केन्द्रित होने चाहिए। अब समय है उसके अदभुत कार्यो और उसके चरित्र की सुन्दरता को मनाने का। एक समय के बाद, पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों को सच्ची आराधना की सुन्दरता में ले चलेगा।
आराधना के अगुवे को परमेश्वर के लोगों के बीच उसके पवित्र आत्मा के घूमने की ओर संवेदनशील होना चाहिए। उन्हें कोमलता के साथ आगे ले चलना उसका कर्तव्य है। कभी-कभी लोगों को बता देना कि वे आराधना के एक स्तर से दूसरे में प्रवेश कर रहे हैं अच्छा होगा।
परन्तु शब्दों को बुद्धिमानी के साथ चुना जाना चाहिए, क्योंकि कुछ ज्यादा बोल जाना सम्भव है - या इस तरीके से बोलना जिससे परमेश्वर के आत्मा के प्रवाह को सहयोग देने के बदले बाधा पड़ सकती है। लोगों का ध्यान सदा परमेश्वर की ओर ले जाया जाना चाहिए - न कि आराधना के अगुवे की ओर।

स्तुति का "बाहरी आँगन" एक काफी बड़ा स्थान है। इसलिए, हमें जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए और न ही लोगों को आराधना सभा में से शीघ्रता के साथ ले जाना चाहिए। यह महत्त्वपूर्ण है कि उन्हें आराधना के अति पवित्र स्थान में आने के लिए ठीक से तैयार किया जाना चाहिए।

सुगंधित लोबान के एक बादल के समान

हाँ, जितना अधिक हम "अति पवित्र स्थान" के निकट आते हैं, उतना अधिक हमारे गीत प्रभु पर केन्द्रित होते जाते हैं। "उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो।" (भजन 100:1-4)

हम ने अपनी यात्रा "दीवारों से बाहर" अपने विषय में - हमारी आवश्यकताओं और परमेश्वर के लिए हमारी इच्छाओं के विषय में - गाते हुए आरम्भ किया था। यह उसकी पवित्र उपस्थिति का स्थान है। कलीसिया के कुछ पुराने गीत परमेश्वर के पवित्र चरित्र के आदर और महिमा में लिखे गए थे। वे उसकी सुन्दरता, प्रताप और सामर्थ्य - उसके अनुग्रह, भलाई और महिमा की बात करते हैं। वे गीत त्रिएक के एक या अधिक सदस्यों: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के विषय में हैं।

यदि आराधना का अगुवा लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति में लाने में सफल होता है, तब उनकी प्रतिक्रिया बढ़ेगी। उनकी आराधना में एक गहराई और भक्ति होगी जो उनके प्राण की भावनाओं से आगे जाती है।

आनन्दपूर्वक स्तुति और तालियाँ बाहरी आँगन में उचित हैं। परन्तु, अति पवित्र स्थान में, उनका स्थान उठे हुए हाथ और ऊपर की ओर चेहरे ले लेते हैं। आदर और प्रेम का एक रवैया पवित्र स्थान को सुगंधित लोबान के समान भर देता है।

लोगों को आराधना करने दो!

इस स्थान पर कुछ आराधना के अगुवे एक गंभीर भूल करते हैं। वे लोगों को तेज ताल वाले धन्यवाद के एक कोरस के साथ झटके से बाहरी आँगन में खींच लेते हैं। गति और दिशा में ऐसे अचानक परिवर्तन से आराधना का सारा रवैया नष्ट हो जाता है।

मनुष्य का मन उसकी आत्मा की तुलना में एक स्थापन से दूसरे में बड़ी तेजी से जा सकता है। लोगों के आत्माओं को परमेश्वर की उपस्थिति का आनन्द लेने दो। प्रभु की आराधना करने में समय लगता है।

लोगों के साथ जल्दबाजी मत करो। उन्हें उसी गीत या कोरस को गाने दो जब तक यह उनके हृदयों में से सच्ची आराधना की अभिव्यक्ति नहीं बन जाता। परमेश्वर की उपस्थिति में से अन्दर बाहर आने-जाने से मनुष्य या परमेश्वर का हृदय तृप्त नहीं होगा।

हाँ, लोगों को आराधना करने दो। इस समय बोलने की कोई आवश्यकता नहीं है। हल्की टिप्पणियों के लिए अभी कोई स्थान नहीं है। आराधना के लिए "दिशाओं" की अब कोई आवश्यकता नहीं है। लोगों को आराधना करने दो।

सहभागिता की एक सुन्दर भावना

एक "सक्रिय" आराधना के अगुवे के लिए चुप्पी एक खतरा है, परन्तु आराधक के लिए मधुर है। वाद्य पर एक कोमल संगीत को बजाते रहने से एक आराधना का वातावरण बना रहेगा। धीमे से गुनगुनाने या आत्मा में गाते रहने से आराधना एक उचित समय के लिए आगे चलती रहेगी। कुछ और की आवश्यकता नहीं है।

"परन्तु यह असल में गीत गाना नहीं है", आप कहेंगे। बिलकुल नहीं है: गीतों का उद्देश्य परमेश्वर के लोगों को आराधना में ले जाना है। गीत केवल गाने के लिए नहीं हैं; वे लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति में लाने का एक साधन हैं।

आराधना की आत्मा को परमेश्वर के लोगों पर उतरने दो। जल्दबाजी मत करो। आराधना एक कोमल पंडुकी के समान है जिसे अचानक गतिविधि द्वारा सरलता से भगाया जा सकता है।

प्रभु की पवित्र उपस्थिति के आश्चर्य में हमें उसकी बाट जोहनी चाहिए। प्रभु के साथ और एक दूसरे के साथ सहभागिता की एक सुन्दर भावना है जो किसी दूसरे तरीके से नहीं आती।

विश्वास में प्रतिक्रिया करना

जैसे आराधना का समय समाप्त होने लगता है, संतोष और समापन की एक मधुर भावना मिलती है। हम ने सेवा की और परमेश्वर के हृदय को प्रसन्न किया, और वह हम से मिला है।

इस स्थान पर सभा की दिशा बदल सकती है। अकसर परमेश्वर इस समय उसके आत्मा के वरदानों के द्वारा हमारी सेवा करता है। परमेश्वर के लोग एक ऐसे स्थान में हैं जहाँ वे उन पर पवित्र आत्मा के काम करने के कारण विश्वास में प्रतिक्रिया करेंगे। वे भविष्यद्वाणी के वचन, और ज्ञान और बुद्धि के शब्द, अन्य भाषाओं के अर्थ, आदि को सुनने, बोलने और मन लगाने के लिए तैयार हैं।

आराधना परमेश्वर के वचन के प्रचार के लिए हमारे हृदयों को तैयार करती है। एक बुद्धिमान और संवेदी प्रचारक सदा उसी लय या मूड के साथ आगे बढ़ेगा जिसे आराधना से बनाया था। एक आराधना सभा का हर भाग परमेश्वर के आत्मा के प्रवाह के साथ चलना चाहिए।

एक सच्चे आराधना के अगुवे का चिन्ह

हाँ, लोगों को आराधना में ले जाना होता है। उन्हें स्वाभाविक से आत्मिक में; सांसारिक से स्वर्गीय में ले जाना होता है। उन्हें उनकी आवश्यकताओं और इच्छाओं से प्रभु की पवित्र उपस्थिति में उठाना जाना होता है।

इसलिए, एक असली आराधना के अगुवे का चिन्ह केवल इतना है: वह परमेश्वर के लोगों को आराधना में सच्चाई से ले जा सकता है। उसने आराधना में, और परमेश्वर की उपस्थिति में कई घंटे बिताए हैं, और जानता है दूसरों को वहाँ कैसे ले जाना है। हाँ, यह एक सेवा है। यदि वह सफल होता है, तब वह गीतों का एक अगुवा होने से अधिक है; वह आराधकों का एक सच्चा अगुवा होगा।

आराधना में प्रभावकारी अगुआई कैसे करनी है

अध्याय 1 प्रभु के साथ एक मजबूत सम्बंध बनाए रखना

कुछ समय पहले मैं ने एक वृद्ध मनुष्य को कहते सुना था कि कैसे वर्षो के साथ उसकी प्राथमिकताएँ बदल गई थीं। जब वह जवान था उसे सिखाया गया था कि कुछ चीजें महत्त्वपूर्ण थीं। समय के साथ उसने उन में से बहुत से जीवन-मूल्यों को छोड़ दिया था और नए आदर्शों को अपना लिया था। परन्तु जैसे वह उम्र और बुद्धि में बड़ा होता गया, उसने पाया कि वह और बदल रहा है। जिन चीजों को उसने पीछे छोड़ दिया था एक बार फिर प्रथम प्राथमिकता बन रही हैं। उसे समझ आया कि जिन स्तरों को उसने छोटी उम्र में सीखा था उनका ही स्थाई मूल्य था।

मैं ने भी आराधना की अगुआई के अपने वर्षो में वैसी ही प्रक्रिया अनुभव की है। मैं पहले प्रभु की ओर एक गहरे, तीव्र कृतज्ञता के कारण आराधना की अगुआई करने लगा था। उसने मुझे छुड़ाया था। उसने मुझे, जैसे भजनकार ने कहा, "सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से ऊबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है" (भजन 40:2)। मैं अपनी प्रशंसा व्यक्त करना चाहता था। मुझे बचाने के साथ-साथ, वह मेरा मित्र और साथ रहनेवाला साथी बना था। इस दिन तक मुझे अभी भी समझने में कठिनाई हो रही है कि सारी सृष्टि का सर्वशक्तिमान परमेश्वर मुझे चाहेगा। परन्तु मैं ने उसके वचन के सत्य को स्वीकार किया था और मेरा हृदय परमेश्वर की ओर अनन्त कृतज्ञता से भर गया था।

प्रभु के साथ मेरी चाल के आरम्भ से मुझे और दूसरों को स्पष्ट था कि उसने मुझे अगुआई के लिए बुलाया है। इसलिए, यह स्वाभाविक ही था कि मेरी कृतज्ञता दूसरों को भी प्रभावित करेगी और कि मैं दूसरों को भी प्रशंसा या आराधना की उसी अभिव्यक्ति में ले चलूँगा। परन्तु दूसरों की इसमें अगुआई करने के अलावा यह अभिव्यक्ति मेरे लिए अधिक महत्त्व की थी। मैं बस परमेश्वर से प्रेम और आदर करना चाहता था।

परन्तु, जैसे समय बीतता गया, मैं समझने लगा कि आराधना की अगुआई की प्रक्रिया में दूसरी गतियाँ भी कार्य करती हैं। मेरे संगीत की योग्यताएँ और समझ का महत्त्व बढ़ता गया। मैं ने इस्तेमाल किए जाने वाले संगीत के प्रकार और शैली पर और गीतों की सेवा पर इसके प्रभाव पर दृष्टि डाली। मैं समझने लगा कि कैसे लोगों के सम्बंधों का उनकी आराधना पर प्रभाव पड़ा था। दूसरे संगीतकारों और उनकी योग्यताओं ने मेरी समझ में कि आराधना कैसे "काम" करती है पर एक अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मैं प्रभु के बदले "आराधना" की ओर लोगों की प्रतिक्रियाओं से अधिक सुराग पाने लगा। मैं ने परमेश्वर के साथ सम्बंध को जो मेरा एक बार सरल कृतज्ञता पर आधारित सम्बंध था लगभग पूरी तरह छोड़ दिया था। प्रभु से अधिक आराधना की अगुआई करने के विचार मेरा केन्द्र बन गए थे। मैं ने परमेश्वर से अधिक प्रक्रिया से सम्पर्क बना लिया था। मैं प्रभु के साथ अपना सम्बंध विकसित करने में समय नहीं बिता रहा था। असल में, परमेश्वर के साथ असली समय मैं तब ही बिता रहा ता जब मैं अगुआई करता था।

पहले तो मैं जबकि ऊपर दिए दृश्य में से गुज़रता रहा अधिकतर लोगों को धोखा दे सका था, उसका एक कारण वे शक्तिशाली वरदान थे जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया था। कोई भी ठीक से जानता नहीं था कि मैं प्रभु से अधिक तकनीक के विषय में सोच रहा था। जैसे समय बीतता गया, परमेश्वर से मेरा दूर होना अधिक स्पष्ट होने लगा जिसमें और अधिक खराब होने की सम्भावना थी। मैं तह तक पहुँच चुका था, मैं आराधना से भरे हृदय से आराधना नहीं कर रहा था; मैं केवल तरीके इस्तेमाल करके अगुआई कर रहा था। जिन साधनों को परमेश्वर ने आराधना की अगुआई करने के लिए दिया था अपने में सिमिट कर रह गए थे। लोगों की प्रतिक्रियाएँ मेरे लिए अधिक महत्त्वपूर्ण होने थीं, न कि एक हृदय जो परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता था। मैं असल में आराधना की अगुआई नहीं कर रहा था। असलियत में, मैं केवल लोगों की भावनाओं और अपनी भावनाओं के साथ भी खेल रहा था।

सौभाग्यवश, मैं ने एक बार फिर प्रभु की छुड़ानेवाली, उद्धार करनेवाली सामर्थ्य अनुभव की। उसकी अनन्त दया ने मुझे वहीं स्पर्श किया जहाँ उसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी और मैं झूठ को देख सका जो मैं कर रहा था। उसके अनुग्रह से मैं देख सका कि जिस मार्ग पर मैं चल रहा था उससे काफी दूर था जिस पर मुझे चलना था। प्रभु मुझे उस सरल कृतज्ञ सम्बंध में ले आया जो मेरा उसके साथ पहले था। न तो स्वर्ग से बिजली कड़की या पृथ्वी काँपी, केवल उसके प्रतिदिन की दया की एक सरल समझ थी। मैं एक बार फिर एक हृदय से जो सच्ची आराधना से चमक रहा था अगुआई करने लगा।

इस प्रक्रिया में से गुज़रने से, मैं ने कुछ अनन्त सिद्धान्त सीखे। सबसे स्पष्ट यह था: एक आराधना के अगुवे के रूप में लम्बे समय तक प्रभावकारी रहने के लिए प्रभु के साथ एक करीबी सम्बंध बनाए रखना अवश्य था।

यदि मैं प्रभु के साथ एक करीबी सम्बंध की खोज में नहीं रहता, यदि मैं उसे इस खाली पात्र को भरने नहीं देता, तब मेरे पास देने को कुछ नहीं होगा, मेरे पास कुछ सभाओं को किसी प्रकार ले चलने के लिए कुछ चतुर करतब होंगे, परन्तु उनसे आगे मैं खाली

हूँ। मुझे यीशु द्वारा हर दिन नई शक्ति पाने की आवश्यकता है। यदि मैं उसके साथ इस निरन्तर के सम्बंध को छोड़ देता हूँ, तब मैं ने अपने जीवन के लिए उसके बुलावे की भरपूरता को खो दिया है।
कोई भी जो एक प्रभावकारी आराधना का अगुवा बनना चाहता है उसका मुख्य ध्येय उनकी आराधना के लक्ष्य, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ सम्बंध बनाए रखना होना चाहिए। इस सारे अध्ययन में मैं दूसरे विचारों की चर्चा भी करूँगा जो एक सबसे अधिक प्रभावकारी आराधना का अगुवा जो आप बनना चाहते हैं बनने में आपकी सहायता करेंगे। परन्तु, इस सब के लिए प्रभु के साथ आपका सम्बंध बुनियादी है। आप उस व्यक्ति के करीबी मित्र होने का दावा नहीं कर सकते हैं जिसके साथ कभी समय नहीं बिताते। सम्बंध विकसित करने में समय लगता है, बहुत सारा समय। उसी प्रकार, प्रभु के साथ समय बिताना अनिवार्य है, वैसे ही जैसे आप अपने किसी मित्र के साथ समय बिताते हैं। कुछ भी-बिलकुल कुछ भी-अधिक महत्त्व का नहीं है।

अध्याय 2 आराधना का एक जीवन जीना

मुझे निश्चय है कि हम आराधना में उस प्रकार जैसे परमेश्वर चाहता है कभी भी पूरी तरह प्रवेश नहीं कर पाएँगे जब तक हम स्तुति और आराधना की एक जीवनशैली जीना नहीं सीखते। हमें यह विचार अपनी मण्डली को सिखाना है, परन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण, हमें आराधना के अगुवों को जीना चाहिए। मैं ने इसे कहते सुना है कि मन्दिर की आराधना व्यर्थ है जब तक छः दिन पहले एक जीवनशैली के रूप में इसे जीया नहीं गया है। यदि हम असल में समझते और परमेश्वर के अनुग्रह में जीते हैं यह कथन थोड़ा कठोर लगता है। फिर भी, इसमें मूल्य है। ऐसा नहीं हो सकता कि हम एक ऐसा जीवन जीएँ जैसा प्रभु चाहता है और फिर रविवार सुबह यहाँ आएँ और परमेश्वर की आराधना पूरी तरह करने की आशा करें। ऐसा नहीं हो सकता है। वास्तव में, हमारा रविवार सुबह का अनुभव हमारे सप्ताह भर के आराधना के अनुभव का उपफल है।
मैं इसे दिलचस्प पाता हूँ कि यूहन्ना 4:23 हमें बताता है कि परमेश्वर आराधकों को खोजता है। यह नहीं कहता कि वह आराधना को खोज रहा है परन्तु आराधकों को। कभी-कभार की आराधना पर्याप्त नहीं है। प्रभु ऐसे लोगों को चाहता है जिन में से आराधना निकलती है, लोग जो आराधना जीते हैं - "आराधक"।
मुझे प्रेरितों 16 में पौलुस और सिलास की कहानी बहुत पसन्द है। आयतें 22 से 24 हमें बताती हैं कि उनके कपड़े फटे हुए थे, पीटे गए थे, कैद में फेंके गए थे और बेड़ियों में जकड़े हुए थे। एक बार जब मैं ने यह विवरण पढ़ा, तो सोचने लगा कि उस स्थिति में मैं ने क्या किया होता। यह कहता है कि वे "प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे।" मेरी तात्कालिक प्रतिक्रिया थी, "प्रभु यदि ऐसे चरमबिन्दु की स्थिति मेरे सामने आती, तब मैं ने कैसी प्रतिक्रिया की होती?" मुझे पक्का विश्वास नहीं था।

कई वर्ष पहले मैं ने बहुत सारी पुस्तकें पढ़ीं जो कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर की स्तुति करने की आवश्यकता की बात कर रही थीं। मुझे स्मरण है कि उन्होंने इसे करने की आवश्यकता की बात की थी, परन्तु मुझे स्मरण नहीं कि उन में से किसी ने बताया कि कैसे करना है। एक संकट के समय में प्रभु की स्तुति करना हमारे लिए स्वाभाविक नहीं है। जब हम अपने आप को किसी प्रकार के संकट में पाते हैं तब हम दो में से एक प्रकार से प्रतिक्रिया करते हैं। हम या तो आतंकित हो जाते हैं या हम उस में से प्रतिक्रिया करते हैं जो हम में डाला गया है। उदाहरण के लिए, डाक्टर के सहायक (पॅारामेडिक) जब उनका सामना एक गंभीर कार दुर्घटना से होता है, स्थिति के लिए तैयार होते हैं। वे आतंकित नहीं होते क्योंकि उन्हें इसी के लिए तैयार किया होता है। हमारे साथ भी वैसा ही होना चाहिए। यदि हम अपने रोजाना के जीवनों में स्तुति और आराधना बनाते हैं, तब हम जब अपने आप को एक संकट की परिस्थिति में पाते हैं उचित प्रतिक्रिया दिखाएँगे - परमेश्वर की आराधना करने की। परन्तु यह तब ही होता है जब हम अपने जीवनों में स्तुति और आराधना की प्रतिदिन की आदत डालते हैं।
बाइबल हमें बारम्बार उपदेश देती है कि हमारी स्तुति और आराधना को एक चलते रहने वाला काम होना चाहिए। "मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा", (भजन 34:1)। "उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक, यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है", (भजन 113:3)। "इसलिए हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें।" (इब्रानियों 13:15)
हमें स्पष्ट अनुभव होना है कि हमारे अस्तित्व का असली कारण परमेश्वर की आराधना करना है। "पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अदभुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो" (1 पतरस 2:9)। हमें उसकी श्रेष्ठताओ को घोषित करने के लिए बनाया और छुड़ाया गया था। यह केवल गीत गाना नहीं है। यदि परमेश्वर को संगीत की आवश्यकता होती, हम उसके लिए एक

टेप बजा सकते थे। वह एक प्रकार से संगीत में रुचि नहीं रखता; उसे हमारे जीवन चाहिए। प्रभु ऐसे जीवनों की खोज में है जो उसकी क्षेष्ठताओं को घोषित करेंगे, जीवन जो पूरी तरह उसे और उसके उद्देश्यों को दिए गए हैं, उसकी आराधना के जीवन।
आराधना का जीवन सब कुछ जो हम करते हैं उसमें फैला होना चाहिए। एक सम्मानित मसीही अगुवे को एक बार पूछा गया कि आराधना का उसके लिए क्या अर्थ है। बिना हिचकाए उसने कहा कि यीशु ने हमें बताया है प्रभु को धन्य कैसे कहना है: "तुने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे साथ किया।" "छोटे से छोटे को खोजो", उसने कहा, "और उनके साथ वैसा व्यवहार करो जैसा तुम प्रभु के साथ करते।" यदि हम अपना हर दिन इस सरल, सच्ची प्रार्थना से आरम्भ करते, "प्रभु, आज सब कुछ जो मैं कहूँ और करूँ उसमें तेरी महिमा हो", तो यह हमारी जीवनशैली और फिर हमारी सामूहिक आराधना को प्रभावित करेगा। निस्संदेह।
यदि हम इस विचार को समझें और उसका पालन करें तब यह हमारे सामूहिक आराधना में अपने आप अन्तर लाएगा। एक क्षण के लिए निम्नलिखित दृश्य पर विचार करो: आप और आपकी मण्डली का एक सदस्य सोमवार से शनिवार तक आराधना का एक जीवन जीते हैं। हर एक हृदय का रवैया परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के लिए अपने आप को दे देना होता है। हर दिन स्तुति के गीत निकलते रहते हैं, एक घायल संसार में दया के काम किए जाते हैं, हृदय प्रभु के साथ सहभागिता में रहते हैं। तब, रविवाह सुबह सब प्रभु की आराधना करने को एकत्र होते हैं। उनकी आराधना में से वही प्रवाहित होने लगेगा जिसे वे पिछले छः दिनों में कर रहे थे। तो क्या आपको लगता है कि आपकी सामूहिक आराधना उससे कुछ भिन्न होगा जो आप अभी तक करते रहे हैं? निस्संदेह यह होगा। ऐसा नहीं है कि यह परमेश्वर को अधिक स्वीकार्य होगा क्योंकि आप "अच्छा" कर रहे थे, क्योंकि हम केवल यीशु के लहू के द्वारा की स्वीकार किए गए हैं। परन्तु सारा रवैया और वातावरण अलग होगा जो परमेश्वर के हृदय के अनुसार होगा।
परमेश्वर चाहता है कि सब कुछ जो हम करते और कहते हैं उसमें आराधना का एक रवैया हो। यह, बदले में, हमारी सामूहिक आराधना को बढ़ाएगा।

अध्याय 3 मण्डली की देखभाल करना

जब मैं बाइबल स्कूल में था, हमारे एक प्रोफेसर ने हम में एक कथन डाला था जो मेरी सेवा में जो मैं करता हूँ उसके अधिकाँश की निरन्तर नींव बन गया है। कथन यह है: "केवल अपनी सेवा मत करो, लोगों की सेवा करो।" हमारे लिए इस प्रतीयमानतः विचार को अपनी तथाकथित "सेवा" में भूल जाना बहुत सरल है। हम सेवा के काम की जिम्मेवारी स्वीकार करने के लिए कहीं अधिक तैयार हैं, न कि लोगों की देखभाल करने की जिम्मेवारी लेने में। काम और काम का करना महत्त्वपूर्ण हैं, परन्तु यीशु लोगों के लिए मरा था।

हम आराधना के अगुवों के लिए, लोगों की यह सेवा कभी-कभी समझने में कठिन होती है। वैसे भी, हमारी पहली प्राथमिकता प्रभु की आराधना करना है। यह सत्य है, परन्तु यदि हम केवल प्रभु की आराधना कर रहे हैं, हम अपने आधे काम को भूल गए हैं: "आराधना के अगुवे" का। हमारी लोगों की आराधना करने में अगुआई करने की जिम्मेवारी है।
इस अध्याय का शीर्षक: "मण्डली की देखभाल करना", का अर्थ उनकी आवश्यकताओं को जिनकी हम सेवा कर रहे हैं हमारी अपनी आवश्यकताओं से अधिक महत्त्व देना है। "विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो" (फिलिप्पियों 2:3)। उदाहरण के लिए, किसी रविवार को आप बड़े उल्लास के साथ उत्सव मनाना चाहें। परन्तु यह स्पष्ट हो कि मण्डली को प्रभु की उपस्थिति में घनिष्ठ आराधना में रहने की आवश्यकता है। तब आप क्या करेंगे?
दूसरों की आवश्यकताओ को अपनी आवश्यकताओं के ऊपर रखना सदा सुविधाजनक नहीं होता। आराधना के समय में ऐसे क्षण थे जब मुझे पक्का पता नहीं था किस दिशा में जाना चाहिए। उस समय मैं ने फैसला किया मेरे पास दो विकल्प थे। मैं वहाँ खड़ा रहता और ऐसे अभिनय करता कि सब मेरे नियंत्रण में है, या मैं मंच से उतरकर पास्टर और दूसरे अगुवों से सलाह करता कि किस दिशा में जाना चाहिए। यदि मैं ढोंग करता कि मैं "नियंत्रण में" हूँ, तब सम्भवतः लोग उसे अनुभव नहीं कर पाते जिसे परमेश्वर चाहता था वे करें। यदि मैं सलाह-मशवरे के लिए मंच छोड़ता, तो लोग सोचते कि में निर्बल हूँ और कुछ मेरे "नियंत्रण" में नहीं है। असल में, कोई विकल्प नहीं था। लोगो मेरे लिए इतने महत्त्वपूर्ण थे कि मैं अपनी भावनाओं या नाम की चिन्ता करता। मैं उनके लिए परमेश्वर की उत्तम चीज चाहता था।

"लोगों की देखभाल करने" का अर्थ उनको प्रेमपूर्वक प्रोत्साहित करना कि जैसे आप परमेश्वर की उपस्थिति के पर्वत पर चढ़ने लगें वे भी पीछे-पीछे आएँ। उन्हें पीटो मत। उन्हें साथ आने के लिए नम्रता के साथ आग्रह करो। वे संसार से हर दिन काफी दुख पाते हैं। आपसे उनको प्रोत्साहन चाहिए।

हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति, यदि लोग हमारी अगुआई के पीछे चलने में धीमे हैं, कुछ इस प्रकार है, "हे, क्या आप लोग सो रहे हैं ?!" यह एक या दो बार काम कर सकता है, परन्तु बाकी के समय के लिए हमें एक भिन्न तरीका अपनाना होगा। लोगों को एक प्रेमपूर्वक और परवाह करनेवाला प्रोत्साहन चाहिए। यह और किसी चीज से अधिक लम्बे समय तक आपकी अगुआई का अनुकरण करने में उनकी सहायता करेगा। उन्हें चिढ़ाने के बदले प्रोत्साहित करने का प्रयत्न करो।

"लोगों की देखभाल करने" का अर्थ लोगों की टिप्पणियों और सुझावों को सुनना और प्रतिक्रिया करना है। उदाहरण के लिए, यदि एक महिने के अन्दर 20 लोग आपसे कहें कि उन्हें लगता है, "हम आजकल बहुत सारे तेज गीत गा रहे हैं", तब, सम्भव है, कि आपको इस पर विचार करना चाहिए कि हम बहुत सारे तेज गीत गा रहे हैं। अब स्पष्ट है कि आप एक व्यक्ति या लोगों के एक छोटे समूह की पसन्द के अनुसार आराधना की अगुआई नहीं कर सकते हैं, परन्तु उनसे फीड-बैक सुनना जिनकी आप सेवा कर रहे हैं महत्त्वपूर्ण है।

इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि इस प्रकार का फीडबैक नकारात्मक होगा। मैं ने व्यक्तिगत अनुभव से सीखा है कि लोग स्थापन के बावजूद एक ही प्रकार से क्रिया और प्रतिक्रिया करते हैं। नाखुश अल्पसंख्यक वर्ग बोलता है जबकि संतुष्ट अधिसंख्यक वर्ग चुप रहता है। सामान्य आराधना का अगुवा एक सकारात्मक सुझाव के पीछे सम्भवतः परिवर्तन के लिए 20 "सुभाव" पाता है। क्या इसका अर्थ यह है कि वह खराब काम कर रहा है ? प्रायः नहीं। लोग तब ही बोलते हैं जब वे असंतुष्ट होते हैं। अपने हृदय की रक्षा के लिए, आपको समझना है कि नकारात्मक फीडबैक सामान्य है।

एक आलोचना किए जा रहे अगुवे की स्वाभाविक प्रवृत्ति उसके आलोचकों को यह बताना है कि वे गलत हैं और वह सही है। परन्तु, यह खतरनाक है। यदि आपका काम मण्डली की आराधना में अगुआई करना है, तब आपको अपने काम की ओर उनकी प्रतिक्रियाओं को सुनने की आवश्यकता है। उनकी प्रतिक्रियाओं को जाने बिना आपको निश्चय नहीं होगा कि क्या आप अगुआई की अपनी जिम्मेवारी पूरी कर रहे हैं या यह केवल आप हैं जो आराधना कर रहे हैं।

इन सब चीजों में याद रहे कि आपकी एक प्रमुख जिम्मेवारी अपनी मण्डली के सदस्यों की ओर है। कभी-कभी वे उस प्रकार प्रतिक्रिया नहीं करते जैसा आप चाहते हैं वे करें। कभी-कभी वे कुछ ऐसा करते हैं जिसे आप सुनना न चाहें। फिर भी, वे लोग हैं जिनकी आराधना में अगुआई के लिए प्रभु ने आपको बुलाया है। उन्हें प्रेम करो और प्रोत्साहित करो।

अध्ययन 4 अपने रिहर्सलों का भरपूर लाभ लेना

कई कलीसियाों ने उनके आराधना दल के रिहर्सलों / तैयारी के समयों के लिए व्यावहारिक विचारों की माँग की है। अकसर अभ्यास के समय नित्यक्रम-समान बन सकते हैं और, सच्चाई यह है, भाग लेनेवालों के लिए उबाऊ भी। इन स्थितियों से कैसे निपटना है उसके लिए मेरे पास आवश्यक नहीं कोई अन्तिम सलाह है, परन्तु मैं कुछ व्यावहारिक सुझाव देने का प्रयत्न करूँगा।

पहला, एक प्रमुख प्रश्न है, "हमें कब-कब एक दल के रूप में इकट्ठे होना चाहिए? इस प्रश्न के कोई सही और गलत उत्तर नहीं हैं क्योंकि बहुत सारी परीवर्ती चीजें सम्मिलित हैं। आपके फैसले आपकी स्थिति के अनुसार होने चाहिए। व्यावहारिक रूप से बोलने पर, अधिकतर मामलों में एक सप्ताह में एक बार अभ्यास करना अच्छा काम करता है। परन्तु यदि आप एक दूसरे की योग्यताओं और संगीत की शैलियों से जानकार नहीं हैं तब एक सभा में इकट्ठे काम करना कठिन होता है। एक दल के रूप में इकट्ठे प्रवाहित होने की योग्यता तब सम्भव होती है जब अकसर इकट्ठे काम किया जाता है। इस नियमित परस्पर व्यवहार के बिना संगीत की दृष्टि से एक साथ प्रवाहित होना कठिन होगा।

अभ्यास के सत्र की लम्बाई भी आपकी विशेष परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित की जानी चाहिए। दो संगीतकारों के एक दल के लिए सम्भवतः उतना समय नहीं लगेगा जितना एक तीस टुकड़ों वाले आर्केस्ट्रा को लगेगा। परन्तु ध्यान में रखिए कि जैसे आपका दल बढ़ता जाएगा वैसे ही आपके अभ्यास के समय भी लम्बे होते जाने चाहिए। इसे स्मरण रखना महत्त्वपूर्ण है ताकि आप इस समय एक अभ्यास की लम्बाई में अपने आप को बाँध न दें, और, जब कभी यदि आप बदलना चाहोगे, असंतुष्ट संगीतकार आपके हाथ लगेंगे। उन्हें पहले से बता दो कि ऐसा समय आ सकता है जब आपकी तैयारी के समय बदल सकते हैं।

एक और सामान्य प्रश्न है, "हम अपनी रिहर्सलों में क्या करें ?" सतह पर तो प्रश्न स्पष्ट लगता है। परन्तु, थोड़ा आगे देखने से हम कुछ अविचारित विचार पा सकते हैं। मैं ने कई एक नीचे दिए हैं, परन्तु मन में रखो कि इन में से हर एक को हर अभ्यास का भाग

होने की आवश्यकता नहीं है। उनको आवश्यक कार्यक्रम को पूरा करने के लिए आपस में मिलाया और उचित समयों पर इस्तेमाल किया जा सकता है।

1. <u>आराधना</u>: यह अभ्यास के समय का एक प्रायः अनदेखा किया गया भाग है। रविवार की सुबह आराधना की अगुआई करना कठिन होगा यदि हम एक दल के रूप में किसी दूसरे समय इकट्ठे आराधना नहीं करते। हमारा काम केवल एक संगीत की भूमिका देना ही नहीं है जिसके द्वारा दूसरे आराधना कर सकें - हमें आराधना में अगुवे होना है। यदि हमारी तैयारी के समय केवल "संगीत करना" है और वास्तव में स्वयं परमेश्वर की आराधना करना नहीं है, तब हम अपने संगीतकारों को एक गलत संदेश दे रहे हैं। हम उन्हें बता रहे हैं कि जो हृदय से आ रहा है उससे अधिक महत्त्व का संगीत का भाग है। आराधना में एक साथ समय बिताना अत्यावश्यक है।

2. <u>प्रार्थना</u>: इसे भी अभ्यास के समयों में से अनेक बार बाहर रखा जाता है। एक एक दूसरे के लिए, मण्डली के लिए, पास्टर के लिए, आदि प्रार्थना करने में समय बिताना चाहिए। एक विशेष सभा या सभाओं की श्रृँखला के लिए प्रार्थना करो और परमेश्वर की दिशा की खोज करो। दल की एकता बनाने के लिए ये सब महत्त्वपूर्ण है।
अगुवे के रूप में स्मरण रखने के लिए एक अच्छी बात यह है कि, प्रार्थना के समयों में अपने योगदान में सन्तुलन रखा जाए। प्रार्थना में आपको दूसरों के लिए एक उदाहरण होना है, और इसे अपना प्रार्थना का समय नहीं बनाना है। जोर जोर से प्रार्थना करके सारे समय पर अधिकार मत करो और दूसरों को प्रार्थना करने का समय ही न दो। दूसरों को उनके "निवेदन परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित" करने के लिए उत्साहित करो (फिलि. 4:6)।

3. <u>नए गीत</u>: आखिरकार हम वहाँ पहुँचे हैं जिसे सब सोचते हैं अभ्यास इसी के विषय में है। कृपया इसे मन में रखो कि यह सूची में तीसरे स्थान पर है।
एक नए गीत को डेक पर कुछ बार बजाओ, ताकि सब सदस्यों को स्पष्ट और उचित रूप से पता चल जाए कि गीत कैसे जाता है।
जब नए गीत सीखे जाते हैं तब सब संगीतकारों के लिए संगीत होना बहुत अच्छा होता है। दो सदस्य एक पेपर से देख सकते हैं, परन्तु बारह संगीतकारों को एक पेपर से देखने के लिए कहना कुछ ज्यादा ही हो जाएगा।
कुछ दल नए गीत सीखने के लिए गायकों और वादकों के अलग सत्र रखना पसन्द करते हैं। इससे उनको एक दूसरे में हस्तक्षेप किए बिना गायक समस्वरता और विभिन्न वादक भागों को सीखने में सहायता मिलती है। परन्तु यह आपकी विशेष स्थिति पर निर्भर करेगा।
इस के विषय में एक महत्त्वपूर्ण बातः सामूहिक रूप से इस्तेमाल करने से पहले एक गीत को अच्छी तरह सीख लो। इससे सब बहुत सारी घबराहट से बच जाएँगे। दूसरी ओर, इसे भी समझा जाना चाहिए कि सामूहिक सभा में इस्तेमाल किए बिना किसी गीत को महिनों भर अभ्यास करते रहना दल के सदस्यों के लिए बहुत परेशानी पैदा कर सकता है।

4. <u>पुराने गीत</u>: यह विशेषकर तब महत्त्वपूर्ण है जब आप अपने दल में नए लोगों को जोड़ते हो। अधिकतर लोग सोचते हैं कि नए लोगों को सब पुराने गीत आते होंगे। दुर्भाग्यवश, ऐसा कम ही होता है। गीतों की एक सूची रखना अच्छा होगा और यह निश्चित करने के लिए कभी-कभार जाँच लेना कि दल के सब सदस्यों को ये सब गीत आते हैं।
कभी-कभी एक पुराने गीत को लेना और उसके लिए एक नये संगीत का प्रबंध करना भी अच्छी बात है। यह किसी पुरानी चीज में नया पन लाने के लिए अच्छा काम करता है।

5. <u>पिछली सभा का मूल्याँकन करो</u>: यह बहुत सहायक होता है यदि आप आत्मविश्लेषी नहीं बनते। आपने संगीत के रूप में क्या किया था और मण्डली की सम्पूर्ण प्रतिक्रिया पर विचार करने से आगे लाभ मिल सकते हैं। पिछली सभाओं पर पुनःविचार करना इसलिए नहीं ताकि जिस चीज ने काम किया उसे दोहराया जाए परन्तु मूल्याँकन करना कि जो हुआ था वैसा क्यों हुआ था और कि क्या अलग किया जा सकता था। यह अति-आलोचक होने का समय नहीं है। सीखने के लिए एक साधारण दृष्टि डालना। सच्चे मूल्याँकन से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

6. <u>विशेष संगीत</u>: इन गीतों में कुछ अधिक परिश्रम लगता है जितना स्तुति और आराधना के गीतों में नहीं लगता उसका एक कारण यह है कि विशेष संगीत अकसर अधिक जटिल होता है परन्तु इसलिए भी क्योंकि मण्डली नहीं गा रही होगी। वे केवल सुनते हैं। अधिकतर कलीसियाएँ उनका अधिक समय स्तुति और आराधना के संगीत में लगाने के बदले विशेष संगीत को "चमकाने" में लगाएँगे।

इन सब चीजों में मेरा एक विचार विविधता है। अधिकतर लोग जीवन के किसी भी क्षेत्र में एक स्पष्ट नमूने में सरलता के साथ पड़ जाते हैं। यह आराधना की रिहर्सलों में भी सच है। अपने संगीतकारों की रुचि और उत्साह को एक ऊँचे स्तर पर निरन्तर बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है। इसे कुछ हद तक विविधता लाकर प्राप्त किया जा सकता है और इस प्रकार अपनी आराधना की रिहर्सलों में एक लीक में पड़ने से बचा जा सकता है।

जिन विचारों का मैं ने सुझाव दिया है वे ही सब नहीं हैं। सम्भवतः और भी बहुत सारे व्यावहारिक सुझाव हैं जिन्हें आप जानते हैं या इस्तेमाल भी कर रहे होंगे। इन्हें अपने विचारों में जोड़ लो और दूसरे लोगों के विचारों को भी जोड़ लो जिससे आपकी निहर्सलों में उचित सन्तुलन आ सके।

अध्याय 5 एक पक्का गीत रंगपटल तैयार करना

गीतों और संगीत की शैलियों के विषय में विचार आने के लिए कठिन नहीं होते। सब के पास कुछ न कुछ विचार है कि "अच्छा" संगीत क्या है और "खराब" संगीत क्या है। मैं अकसर इस प्रकार के बातें सुनता हूँ: "हम बहुत सारे तेज गीत गाते हैं" या "हम बहुत सारे धीमे गीत गाते हैं"। कुछ कहते हैं कि हम काफी हिम्स नहीं गाते तो दूसरे कहते हैं कि हम बहुत सारे हिम्स गाते हैं। ऐसे भी हैं जो कहते हैं हम बहुत सारे नए गीत गाते हैं और, निस्संदेह, दूसरों को लगता है कि हम नए गीत गाने में असफल रहे हैं। सब के पास, और मेरा मतलब है सब के पास, एक विचार है।
इस समस्या को हल करने की एक मुख्य कुंजी जिसे मैं ने पाया है एक सन्तुलन बनाना और विविध प्रकार के संगीत और गीतों की किस्मों को रंगपटल में लाना है। यदि मैं एक ही मामले की दोनों तरफों को व्यक्त होता सुनता हूँ (अर्थात्, "बहुत सारे तेज गीत" और "बहुत सारे धीमे गीत"), तो मैं पता लगा लेता हूँ कि मैं सम्भवतः वहाँ जहाँ मुझे होना चाहिए।
एक पक्का गीत रंगपटल तैयार करने में कुछ व्यावहारिक विचार नीचे दिए गए हैं:

सबसे पहली चीज जिसका मैं सुझाव देता हूँ पुराने गीतों और सम्भावित नए गीतों के बोलों की जाँच करना है। बोलों को संगीत से अलग से जाँचना अच्छा होगा क्योंकि हम संगीतकार अकसर उस गीत को पसन्द करते हैं जिसका संगीत अच्छा है चाहे बोल कैसे भी हों। यह एक अच्छा विचार नहीं है। शब्दों की जाँच करते समय, निम्नलिखित कुछ चीजें हैं जिन पर ध्यान देना चाहिए:

- क्या बोल पवित्रशास्त्र के अनुसार हैं ? (संदर्भ पर भी ध्यान दो।)
- क्या वे मण्डली के अनुभव और समझ के अनुसार हैं ? (कई 300 वर्ष पुराने गीत नहीं हैं।)
- क्या वे संगीत के साथ ताल में हैं ? (यह एक असली समस्या है क्योंकि बहुत सारे लोग जिन्हें बहुत कम अनुभव है गीत लिखते हैं।) इसके अतिरिक्त, आप संगीत की जाँच भी कर सकते हो।
- क्या संगीत अच्छे गुण का है ? (उबाऊ न हो, आदि)
- क्या संगीत मण्डली के अनुभव और समझ के अनुसार है ? (एक बार फिर, बहुत सारा 300 वर्ष पुराना संगीत नहीं है, परन्तु न ही कई अति आधुनिक गीतों का संगीत है।)
- क्या यह शब्दों को बढ़ाता है ? ("रोना और शोक करना और दाँत पीसना" जैसे शब्द जो एक गीत में गाए जाते हैं सम्भवतः अच्छे से काम नहीं करेंगे।)

  आपको अपने रंगपटल में सम्पूर्ण विविधता की जाँच भी करनी होगी।
- क्या आप अपने संगीत में पर्याप्त सुर बजाते हो ? (मण्डली बहुत आसानी से उब जाएगी यदि आप सब कुछ C कार्ड पर ही बजाते हो।)
- ताल और लय के विषय में क्या कहेंगे ? (तेज, धीमा, 4/4, 2/4, 3/4, 6/8, आदि)
- क्या आप संगीत की भिन्न शैलियाँ इस्तेमाल करते हो ? (क्या कोई देहाती संगीत इस्तेमाल करता है ? या हिम्स ?)
- क्या आप विभिन्न प्रकार के गीत लाते हो ? (बाइबल भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीतों की बात करती है। फिर प्रार्थनाएँ, स्तुतियाँ, गवाही के गीत, पुराने गीत, नए गीत, कोरस, मिश्रित गीत, आदि भी हैं।)
- क्या एक एक गीत में विविधता है ? (पुरुष गाते हैं, स्त्रियाँ गाते हैं, बच्चे गाते हैं, एकल गायक गाता है, मण्डली गाती है, वादक भाग, आरोह, अवरोह, एक भिन्न कार्ड पर काम करते हैं, आदि; हो सके तो सब एक ही गीत में नहीं होने चाहिए!)

निरन्तर नए गीतों की खोज में रहो। बाइबल हमें बारम्बार कहती है "प्रभु के लिए एक नया गीत गाओ।" मुझे पक्का विश्वास है कि यह उसके लाभ के बदले हमारे लाभ के लिए है; प्रभु हम से कहते हुए "मैं तुम से प्रेम करता हूँ" कभी भी थकता नहीं है परन्तु हम इसे उसी धुन में उसी तरीके से गाते गाते थक जाते हैं। हमें नए गीत गाने की आवश्यकता है। और इन दिनों नए गीतों के बहुत सारे स्रोत होने के कारण, हम चुनाव कर सकते हैं। किसी भी गीत को मत ले लो जो आपके सामने आता है। ध्यान दो कि सही गीतों को ही चुनो जो आपकी कलीसिया के साथ प्रभु के काम को दर्शाते हैं।

अन्त में, गीत लिखने और दूसरों के साथ बाँटने के लिए खुले रहो। आप, अपनी मण्डली के आराधना के अगुवे के रूप में, अपने लोगों की आत्मिक दशा को जानते हो। इसे जानते हुए, प्रभु हो सकता है आपको एक गीत लिखने के लिए प्रेरणा दे जिसकी उनको आवश्यकता है।

इन सब चीजों में, आपके द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाले संगीत के विषय में मण्डली के सदस्यों के विचारों पर विचार करने के लिए ध्यान दो। स्मरण रहे कि आलोचना व्यक्तिगत न लो, क्योंकि यह अकसर बहुसंख्यक वर्ग का विचार नहीं होता। परन्तु, उनके विचारों को सुनो और स्वीकार करो, क्योंकि वे लोग जिनकी आप प्रभु के सामने अगुआई करते हैं।

अध्याय 6 आपके ऊपर अधिकार-वर्ग की ओर वफादारी

हाल में मेरे पास्टर और मुझे एक प्रमुख आराधना सम्मेलन में कई एक सत्र लेने का अवसर मिला था। हम दोनों ने बिलकुल असंबद्ध विषयों पर कुछ सत्र लिए। बिना जाने, हम दोनों ने अपने सत्रों में एक दूसरे को उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया। हम ने एक दूसरे के विषय में आदर और प्रशंसा के साथ बात की।

सम्मेलन के तीन दिनों में, असंख्य लोगों ने मुझे बताया कि वे हम दोनों के सत्रों में बैठे थे। जो टिप्पणियाँ उन्होंने की थीं एक जैसी थीं: वे हमारे सम्बंध और एक दूसरे के लिए प्रशंसा से चकित थे। ये उनके शब्द थे। वे यह कह रहे थे कि कि उनमें भी उनके पास्टरों के साथ ऐसे ही सम्बंध की लालसा थी। वे समझते थे कि जो सम्बंध उनका उनके पास्टरों के साथ था सिद्ध तो नहीं था, और वे सुधार देखना चाहते थे।

पास्टर और आराधना के अगुवों का पक्का, संतोषजनक सम्बंध हो सकता है, परन्तु यह आवश्यक नहीं आसान हो। मैं ने इसकी तुलना विवाह के संम्बध से की जाती सुनी है। पास्टर, पति के समान, वह है जिसके पास अन्तिम अधिकार है। इसका अर्थ यह नहीं वह आराधना के अगुवे पर अधिकार जताता है, परन्तु अधिकार में है। उसके ऊपर लोगों की उस मण्डली के लिए अन्तिम जिम्मेवारी है। आराधना के अगुवे को, पत्नी के समान, अधीन रहना सीखना है। यह एक रचनात्मक, कलाकार प्रकार का व्यक्ति है। परन्तु परमेश्वर ने हमें कभी नहीं बताया कि सम्बंध आसान होंगे। कभी-कभी जीवन में असली महत्त्वपूर्ण चीजों के लिए असली काम करना पड़ता है।

मेरा विश्वास है कि अपने पास्टर के साथ सम्बंध में एक आराधना के अगुवे को सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता जिसकी उसे खोज में रहना चाहिए वफादारी है, केवल एक बार की मुँह से बोली गई वफादारी नहीं, परन्तु प्रतिदिन का वफादारी का जीवन। वफादारी को विकसित करना आवश्यक नहीं आसान हो। जैसे एक विवाह में प्रेम और विश्वासयोग्यता के समान, वफादारी एक फैसला है। यह यूँ ही नहीं हो जाता; आपको इस पर काम करना पड़ता है। व्यावहारिक शब्दों में, आपको अपनी योजनाएँ और कार्यक्रम एक ओर रखकर, पास्टर की योजनाओं और कार्यक्रमों को अपनाना होगा। आप पास्टर के सुधारों और रचनात्मक आलोचनाओं को अपने सम्बंध को प्रभावित होने दिए बिना स्वेच्छा से स्वीकार कर सकते हो। आप फैसला कर सकते हो कि कुछ भी जो प्रभु की ओर विद्रोह का है आपनी अगुआई में फूट डालने योग्य नहीं है। आप फैसला कर सकते हो कि चाहे कुछ भी क्यों न हो, आप वफादार रहोगे।

"अपने अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना है; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं।" (इब्रानियों 13:17)

मुझे अधिकाधिक निश्चय हुआ है कि यह हम में से बहुतों के लिए कुछ अपरिचित विचार है। हम "वफादारी" शब्द का सम्पूर्ण तात्पर्य नहीं समझते। हम वफादार होना स्वीकार करते हैं जब तक कुछ आकर उस वफादारी को परखता नहीं, तब हम संदेह करने लगते हैं कि क्या इसका कुछ लाभ है। परन्तु, हमें अपने आप को पक्का निश्चय दिला देना चाहिए कि जैसे एक विवाह के सम्बंध में होता है, अपने पास्टरों के साथ हमारे सम्बंध में वफादारी लाभ की बात है।

यदि इस रवैये को बनाए रखने के लिए आप अपने भीतर कुछ पाते हो, आप उसी समय कुछ बहुत दिलचस्प होता पाओगे। जब आपका पास्टर देखेगा कि कि आप उसकी ओर वफादार हैं, वह आपकी जिम्मेवारी के क्षेत्र में आपको अधिक स्वतंत्रता देने लगेगा। यह थोड़ा विचित्र लगे, परन्तु सत्य है। जब आपका पास्टर आपको देखेगा कि आप पूरी तरह उसकी ओर वफादार हैं, तब उसे कोई डर नहीं होगा कि आप क्या कहोगे या करोगे। वह पूरी तरह आप पर भरोसा करने लगेगा।

इसे समझने के लिए, स्थिति को एक क्षण के लिए पास्टर की दृष्टि से देखने लगो। अधिकतर मण्डलियों में आराधना का अगुवा सामूहिक सभाओं में दूसरा सबसे प्रभावशाली व्यक्ति होता है। सभा का एक तिहाई या आधा समय आपकी अगुआई में लगता है। इस विचार को पास्टर के कानों में डालो, और कुछ दिल दहला देनेवाली कहानियाँ भी कि किस प्रकार आराधना के अगुवों ने उनकी मण्डलियों में बहुत सारी उलझन और संकट पैदा किया था, और एक बहुत ही अस्थिर स्थिति पैदा हो जाएगी। परन्तु, यदि आप एक आराधना के अगुवे के रूप में, अपनी वफादारी सुस्पष्ट तरीकों से दिखा सकें, तब पास्टर को शीघ्र पता चल जाएगा कि उसे आप से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।

चेतावनी का एक शब्द इस समय उचित होगा। अधिक स्वतंत्रता पाने के लिए वफादारी दिखाना काम नहीं करेगा। यह लगभग स्पष्ट हो जाएगा कि वफादारी सच्ची, हृदय की वफादारी है, या "मैं इसे कुछ पाने के लिए दिखा रहा हूँ" प्रकार की वफादारी है। वफादारी कुछ पाने का साधन नहीं है; यह एक आवश्यकता है जिसे हमें अपने जीवनों में बनाना है। पास्टर द्वारा दी गई, सेवा में अधिक स्वतंत्रता, सच्ची और तीव्र वफादारी का उपफल है।

यहाँ एक और, सम्भवतः कुछ तरीकों से और अधिक महत्त्व का सिद्धान्त काम कर रहा है - बोने और काटने का। मैं ने इसे अपने अनुभव में बिलकुल सत्य पाया है। क्योंकि मैं ने वफादारी बोई है मैं ने वफादारी काटी है। कई स्थानों में कलीसियाओं में जाने के समय मैं ने संगीतकारों से उनके आराधना के अगुवे के विषय में, एक सार्वजनिक स्थान में भी, नकारात्मक बातें सुनी हैं। हालाँकि मैं इसे बहुत दुखद पाता हूँ, परन्तु यह मुझे कुछ सान्त्वना भी देता है, बिना किसी संदेह के, कि मेरे संगीतकार कभी भी ऐसा नहीं करेंगे। वे मेरी अगुआई की ओर 100 प्रतिशत् समर्पित हैं। वे, कम से कम एक अंश तक, मेरी ओर वफादार हैं, क्योंकि मैं जो मेरे ऊपर हैं उनकी ओर वफादार हूँ। आप जो बोओगे उसे काटोगे।

यदि आप ने पहले ही ऐसा नहीं किया है, तब आज ही फैसला कर लो कि आप अपने पास्टर की ओर वफादार होगे। मण्डली पर परमेश्वर की आशीष के अन्तिम परिणाम लाभ की बात ही होगी।

एक आराधना के अगुवे की भूमिका

1. अपने दल के सदस्यों से सबंध रखो, उनके जीवनों में रुचि लो, पास्टर के दर्शन को बताओ और उस पर बने रहो, इसे समय समय पर दोहराते रहो।
2. दल के हर सदस्य की भूमिा को निर्धारित करो।
3. सदस्यों के काम करने के लिए मार्गदर्शन स्थापित करो।
4. सदा हिम्मत बढ़ाते और प्रेरित करते रहो; एक सकारात्मक दृष्टिकोण और दृश्य बनाए रखो।
5. पर्याप्त प्रशिक्षण दो।
6. पवित्र आत्मा की ओर संवेदनशील रहो और निर्देश / अगुआई का पालन करो।
7. अपने जीवन को जाँचो; समय-समय पर अपने जीवन का मूल्याँकन करोः इससे पहले कि दूसरों की अगुआई कर सको आपको स्वयं एक आराधक बनना है।
8. चुने हुए गीतों को अपने व्यक्तिगत आराधना के समय में गाओ।
9. हर सभा के लिए परमेश्वर की दिशा खोजो।
10. की गई गलतियों को दल के सामने स्वीकार करो, खुले और सच्चे रहो।
11. किए गए फैसलों पर बने रहो और आवश्यकता होने पर आवश्यक फैसले करो।
12. नियमित अभ्यास करोः
    - निश्चित करो कि अभ्यास उत्पादक हों।
    - दल के सदस्यों में संगति के लिए समय दो।
    - समय समय पर दल में मजा करो।
13. अगुआई के समय अति उत्तेजक या बहक मत जाओ।
14. एक दीन और सेवक का आत्मा विकसित करो।

एक आराधना के अगुवे के लक्ष्यः

1. लोगों को परमेश्वर के साथ संगति में निकट लाना।
2. पवित्र आत्मा की प्रकट उपस्थिति को देखना।
3. लोगों को परमेश्वर के सामने अपने आपको को स्वतंत्रता के साथ व्यक्त करने देना।
4. परमेश्वर को हर एक से बात करने देना।
5. वचन की सेवा के लिए एक मंच तैयार करना। (हदय ग्रहणशील बनाना)

लोगों के साथ सम्पर्क बनाना सीखना, इनके द्वाराः

- ♦ आँखों का सम्पर्क
- ♦ मुस्कान
- ♦ परस्पर व्यवहार
- ♦ प्रार्थना
- ♦ लोगों की पसन्द को सुनना
- ♦ लोगों में घुल-मिल जाना
- ♦ उपदेश बोलना
    - i. उपदेश के वचन कोः (अ) अर्थपूर्ण, (आ) उपयुक्त होना चाहिए
    - ii. प्रचार नहीं iii. व्यक्तिगत हो सकता है
- ♦ हाथ / पैर / नाच की क्रियाएँ
- ♦ मूल परिवर्तन >ऊपर की ओर (याद रहेः नीचे की ओर प्रगति नहीं)
- ♦ जहाँ उचित हो, कुछ एकल गायण

6. उदाहरण द्वारा अगुआई करो (व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों)।
7. लोगों को जुड़ने के लिए बुलाना।
8. आपकी प्रतिक्रियाएं (लोगों की प्रशंसा), उत्साहित या प्रेरित करने के लिए।
9. अपनी तुलना दूसरों से मत करो। (हर एक अद्वितीय है)

एक आराधना के अगुवे का कार्य

1. लोगों के आराधना करने के लिए सबसे उत्तम जो सम्भव है अवसर प्रदान करना।
2. केन्द्र-बिन्दु और दिशा लाना।
3. एक समूह में एकता बनाए रखना।

आराधना की अगुआई में मार्गदर्शन

अ. एक आराधक बनो

- पिता आराधकों को खोजता है। "परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढता है।" (यूहन्ना 4:23)
- आराधक देनेवाले हैं।
- आराधक अपने साथ मसीह की सुगन्ध लिए फिरते हैं।
- आराधना परमेश्वर के लिए प्रेम, भक्ति और स्तुति का व्यक्ति का हृदय है जिसमें उसकी श्रेष्ठता और प्रभुत्व का स्वीकरण का रवैया है।

आ. प्रार्थना, योजना और अभ्यास

- आराधना की योजना बनाओ जैसे आप बाइबल अध्ययन की बनाते हो।
- एक केन्द्र-बिन्दु या विषय के लिए परमेश्वर को खोजो।
- उस भाव पर ध्यान दो जिसे आप पाना चाहते हो।
- विषय के अनुरूप गीत चुनो।
- गीतों के बोलों पर चिन्तन करते हुए, परमेश्वर के वचन पर मनन करो।
- सब गीतों का अभ्यास करो। गीतों के बीच कम विराम के कारण तेज गीतों को इकट्ठे लेना अकसर एक करतब का काम होता है। यदि आपको निश्चय नहीं है कि हर गीत में जाना और बाहर निकलना कैसे होगा, तब अभ्यास करते रहो जब तक ठीक से करने न लगो। यदि सम्भव हो तो संगीतकार के साथ बार-बार अभ्यास करो।
- हर गीत कितनी बार गाना चाहते हो तय कर लो, और सभा से पहले संगीतकार को बता दो।
- विराम के समय की और जो वचन या शब्द आपको लगता है लोगों के लिए बोलना चाहते हो की योजना बना लो। जान लो कि परमेश्वर आपको समय से काफी पहले लोगों की आवश्यकताओं के विषय में बता सकता है।

इ. आराधना के दौरान

- पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रेरणाओं की ओर सतर्क और संवेदनशील होकर अगुआई करो।
- सत्र के नियंत्रण में रहो। यदि आप अनिश्चित या घबराए हुए भी हो, लोगों को मत बताओ।
- परमेश्वर पर ध्यान लगाओ और उसे उसके भरोसे पर आपकी अगुआई करने दो।
- आत्मा की प्रेरणाओं की ओर संवेदनशील रहो। चाहे आपने योजना बनाई होगी, परन्तु आत्मा को एक गीत या एक बन्द दोहराने, या मुँह से स्तुति करने या एक नया गीत गाने में आपकी अगुआई करने दो।
- परमेश्वर के उपस्थिति रहने की सदा अपेक्षा करो।
- आराधना के वातावरण को पाने और बनाए रखने के लिए उपयुक्त ताल इस्तेमाल करो।
- यदि आपके पास एक संगीतकार है, तब आप आराधना के समय को बनाए रखने के लिए भूमिका संगीत बजने दो। उस समय, एक बाइबल का वचन पढ़ो या लोगों को परमेश्वर की आराधना करने के लिए प्रोत्साहित करो।

ई. आराधना की अगुआई में नहीं करनेवाली चीजें

- गीत चुनने के लिए इधर-उधर मत जाओ। अगुवे को पहले से गीत चुनने चाहिए।
- गीतों के बीच लम्बे-लम्बे परिचय और अनावश्यक स्पष्टीकरण से बचो।

- गीत को एक नए कार्ड में मत ले जाओ जब तक आपको पक्का निश्चय न हो कि उस नई लय में गीत गा सकते हो। परन्तु, कुछ गीतों के अन्तिन बन्द के लय को ऊठाने से आराधना का वातावरण बढ़ सकता है।
- उन गीतों को चुनो जिनसे आप ठीक से परिचित नहीं हो। नए तेज गीतों से जिन्हें सदस्य न जानते होंगे अच्छी तरह गाए गीत चुनना बेहतर होगा।

आराधना के सत्र की योजना बनाना और गीत चुनना

- परमेश्वर पर केन्द्र-बिन्दु लाने की योजना बनाओ।
- अपने मन की आँखों से, बिना रुके चल रही स्तुति और आराधना को देखो।
- मास्टर गीतों की सूची की सहायता लो:
    - i. कार्ड के अनुसार लगाए हुए
    - ii. ताल के अनुसार लगाए हुए
    - iii. वर्णक्रम के अनुसार लगाए हुए
    - iv. प्रभु-भोज, विवाह, आदि के अनुसार उप-सूची
- बुद्धि और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन की ओर संवेदनशीलता के लिए प्रार्थना करो।
- सभा के विषय का ध्यान दो। यदि सम्भव हो तो, उप-अगुवे के साथ मिलकर काम करो।
- ताल में अचानक या बहुत अधिक परिवर्तन मत करो।
- एक ही कार्ड, एक ही ताल और एक ही विषय के गीत चुनो।
- प्रायः स्तुति के गीत गाओ, फिर आराधना के लिए ताल को धीमा कर दो।

सम्भव ढाँचा

विषय:
मसीह को प्रभु और राजा स्वीकार करना और अपने को एक जीवित बलिदान के रूप में नए सिरे से अर्पित करना।

बाइबल का वचन (वैकल्पिक):
"इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ।" (रोमियों 12:1)

स्तुति के गीत (10 **मिनच**) कार्ड: G

आराधना के गीत (10 **मिनट**) कार्ड: A

- परमेश्वर के आने के लिए प्रार्थना करो। भविष्यद्वाणियों के लिए यह सम्भवतः उचित समय हो सकता है।
- सब लोगों उनके जीवनों में यीशु के प्रभुत्व को पक्का करने के लिए उत्साहित करो।
- सेवा को प्रोत्साहन दो, जैसे कि अपने पास के व्यक्ति के लिए प्रार्थना करना।

कलीसिया को स्तुति और आराधना का एक स्थान क्यों होना चाहिए?

(प्रभु की स्तुति और आराधना कैसे करें ?)

जब कभी और जहाँ कहीं हम परमेश्वर के लोगों को बंधुआई में से छूटता पाते हैं (पुनःस्थापना के दिन), वहाँ आराधना करने की नई स्वतंत्रता और इच्छा भी आती है।

भजन 126:1-3 कहता है, "जब यहोवा सिय्योन से लौटनेवालों को लौटा ले आया, तब हम स्वपन देखनेवाले से हो गए। तब हम आनन्द से हँसने और जयजयकार करने लगे; तब जाति जाति के बीच में कहा जाता था, 'यहोवा ने इनके साथ बड़े बड़े काम किए हैं।' यहोवा ने हमारे साथ बड़े बड़े काम किए हैं; और इससे हम आनन्दित हैं।"

एक मण्डली में पता लगाने में एक मिनट ही लगता है कि क्या वे प्रभु की उपस्थिति के नए सिरे से आने को अनुभव कर रहे हैं। एक स्वतंत्र लोग स्वतंत्रता से आराधना करेंगे। एक बन्दी लोगों के पास न कोई गाना है और न गाने की इच्छा है।

भजन 137:1-4 कहता है, "बेबीलोन की नहरों के किनारे हम लोग बैठ गए, और सिय्योन को स्मरण करके रो पड़े। उसके बीच के मजनू वृक्षों पर हम ने अपनी वीणाओं को टाँग दिया, क्योंकि जो हम को बन्दी बना कर ले गए थे, उन्होंने वहाँ हम से गीत गवाना चाहा, और हमारे रूलानेवालों ने हम से आनन्द चाहकर कहा, 'सिय्योन के गीतों में से हमारे लिए कोई गीत गाओ।' हम यहोवा के गीत को पराए देश में कैसे गाएँ ?"

दाऊद के तम्बू को समझने की कुंजी है स्तुति और आराधना के सम्बंध में जो वहाँ हुआ था उसे समझना। इससे पहले हम उस तरीके पर विचार करें जिससे वे दाऊद के तम्बू में आराधना करते थे, हमारे लिए कुछ कारण स्थापित करना महत्त्वपूर्ण है कि क्यों हम प्रभु की स्तुति और आराधना करते हैं। (ध्यान दोः इस समय हम स्तुति और आराधना पर इकट्ठे विचार करेंगे, और दोनों में अन्तर बाद में देखेंगे।)

मूसा के तम्बू (सिनै पर्वत) में स्तुति और आराधना की तुलना दाऊद के तम्बू (सिय्योन पर्वत) की स्तुति और आराधना से करोः

मूसा का तम्बू	**दाऊद का तम्बू**
1. गाना नहीं	1. गीत गानेवाले गायक (1 इतिहास 15:16)
2. संगीत नहीं	2. वाद्य और संगीत (1 इतिहास 23:5)
3. रिकार्डिंग नहीं	3. रिकार्डिंग (1 इति. 16:4; भजन 60:1)
4. धन्यवाद नहीं	4. धन्यवाद का बलिदान (1 इति. 16:4,8,41)
5. स्तुति नहीं	5. स्तुति का बलिदान (1 इति. 16:4,36)
6. तालियाँ नहीं	6. तालियों का दान (भजन 47:1)
7. ऊँचा स्वर नहीं	7. ऊँचे स्वर से स्तुति (1 इति. 15:28)
8. नाच नहीं	8. प्रभु के सामने नाचना (1 इति. 16:29)
9. हाठ उठाना नहीं (हिलाना था)	9. हाथ उठाना (भजन 134)
10. आनन्द की आज्ञा थी	10. हृदय से निकलता आनन्द और खुशी (1 इति. 16:10,27)
11. दूर से आराधना	11. मार्ग खुला है
12. केवल महायाजक संदूक के सामने सेवा करता था	12. सब लेवी संदूक के सामने सेवा करते थे
13. कुछ भजन (केवल भजन 90)	13. काफी भजन गाना (1 इति. 16:7)
14. शापों को आमीन कहते थे (व्यव. 27)	14. आशीष को आमीन कहते थे (1 इति. 16:36; भजन 106:48)

"तुम उस पहाड़ के पास नहीं आए, पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास आए हो।" (इब्रानियों 12:22)

स्तुति और आराधना बाइबल में एक सबसे महत्त्वपूर्ण विषय है। किसी भी दूसरे विषय से अधिक इसके संदर्भ हैं। यदि परमेश्वर का वचन आराधना पर इतना बल देता है, तब हमें भी देना चाहिए। कम से कम पंद्रह कारण हैं कि क्यों परमेश्वर के लोगों को

आराधना करनी और प्रभु उनके कर्त्ता के सामने झुकना चाहिए। पाँच कारण परमेश्वर के दृष्टिकोण से हैं और दस कारण मनुष्य के दृष्टिकोण से हैं।

अ) **स्तुति और आराधना परमेश्वर के लिए बलिदान के रूप में महत्त्वपूर्ण हैं।** (इब्रानियों 13:15)

1) परमेश्वर हमें उसकी स्तुति करने की आज्ञा देता है। (1 पतरस 2:9-11; भजन 67:3; 9:11)। यदि बाइबल में स्तुति के विषय में कोई और वचन न भी होता, तब भी परमेश्वर की स्तुति करने का यह पर्याप्त कारण होता।
भजन 22:23: "हे यहोवा के डरवैयो, उसकी स्तुति करो। हे याकूब के वंश, तुम सब उसकी स्तुति करो।"
1 इतिहास 16:29: "16:29 "यहोवा के नाम की महिमा ऐसी मानो जो उसके नाम के योग्य है। भेंट लेकर उसके सम्मुख आओ, पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो।"
2) परमेश्वर स्तुति के योग्य है। परमेश्वर ने उसके लोगों को भरपूर दया और प्रेमभरी भलाई दिखाई है (भजन 63:3-4)। उसने हमें बहुमूल्य प्रतिज्ञाएँ दी हैं। वह सब देवताओं के ऊपर है, इसलिए हम उसकी स्तुति करेंगे।
भजन 18:3: "मैं यहोवा को, जो स्तुति के योग्य है, पुकारूँगा; इस प्रकार मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाऊँगा।"
3) स्तुति उसकी उपस्थिति में प्रवेश करने का परमेश्वर द्वारा नियुक्त तरीका है। स्तुति वह द्वार है जो उसकी उपस्थिति में ले जाता है (यशायाह 62:10; भजन 9:14; 22:3; 24:7,9-10; 87:2; 118:19-21)।
यशायाह 60:18: "तेरे देश में फिर कभी उपद्रव और तेरी सीमाओं के भीतर उत्पात या अन्धेर की चर्चा न सुनाई पड़ेगी; परन्तु तू अपनी शहरपनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम यश रखेगा।"
भजन 100:4: "उसके फाटकों से धन्यवाद, और उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो।"
4) स्तुति और आराधना परमेश्वर की महिमा करने के तरीके हैं। हम सब परमेश्वर की महिमा करना चाहते हैं और हम सब चाहते हैं परमेश्वर की महिमा हो। परमेश्वर उसके द्वारा महिमा पाता है जो उसकी स्तुति करता है।
भजन 50:23: "धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है; और जो अपना चरित्र उत्तम रखता है उसको मैं परमेश्वर का किया हुआ उद्धार दिखाऊँगा।"
5) प्रभु की स्तुति करना दूसरों के लिए परमेश्वर की भलाई की एक अच्छी गवाही है। जब पौलुस और सीलास कैद में थे वे परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे (प्रेरितों 16:25)। यह दारोगा के लिए एक बहुत बड़ी गवाही थी जो जान गया उसे संकट के समय कहाँ जाना है। वह स्तुति करने वाले लोगों के पास गया। (देखोः यशायाह 61:11)
भजन 40:3: "उसने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहुतेरे यह देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे।"

आ) **हमें परमेश्वर की स्तुति और आराधना जितनी उसको आवश्यकता है उससे कहीं अधिक करनी चाहिए। मनुष्य के दृष्टिकोण से स्तुति बहुत लाभदायक है।**

1) स्तुति और आराधना हमें आत्म-केन्द्रित बनने के बदले परमेश्वर-केन्द्रित बनाते हैं। जैसे हम परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते हैं हम अपने ऊपर उसका प्रभुत्व और अधिकार पहचानते हैं। हम अपने आपको परमेश्वर के सामने दीन करते हैं।
2) स्तुति और आराधना अपने मन उस पर लगाने का तरीका हैं (यशायाह 26:3)। जैसे हम अपने मन परमेश्वर पर लगाते हैं हम एक सिद्ध शान्ति का जीवन पाएँगे।
3) स्तुति और आराधना परमेश्वर के साथ हमारा प्रेम का सम्बंध विकसित करने में सहायता करते हैं। स्वाभाविक में भी जैसे एक पति और पत्नी एक दूसरे की प्रशंसा करते हैं वे एक दूसरे के करीब आते हैं। काफी कुछ वैसे ही, जब हम प्रभु की स्तुति करते हैं हम उसके निकट आते हैं। हमें प्रेम के प्राणी बनाया गया है, परमेश्वर के प्रेम की ओर प्रेम की प्रतिक्रिया करने के लिए। जैसे हम परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते हैं हम इस बुलावे को पूरा करते हैं।
4) जैसे हम बोते हैं, हम काटेंगे भी (गलातियों 6:8)। जैसे हम देंगे, हमें भी दिया जाएगा (लूका 6:38)। जैसे हम अपने आप को परमेश्वर को देते हैं, वह बदले में, आशीष की बारिष हम पर करता है (अय्यूब 36:26-29)। हम नहीं चाहते कि परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने का यह हमारा अभिप्राय हो, परन्तु परमेश्वर इस सिद्धान्त पर काम करता है। परमेश्वर ने बोने और काटने का नियम स्थापित किया है।

5) स्तुति और आराधना काम कर रहा विश्वास है। स्तुति और आराधना विश्वास की भाषा है। जब हम परमेश्वर में विश्वास और भरोसा करते हैं, तब हम परिस्थितियों के बावजूद उसकी स्तुति करेंगे। विश्वास के लोगों ने अपने लिए प्रभु को खोजने का निश्चय किया है।

6) स्तुति और आराधना परमेश्वर का सामर्थ्य और उपस्थिति लाते हैं। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर उसके लोगों की स्तुतियों में विराजमान होता है। यहोशापात ने इसे अनुभव किया जब युद्ध में गीत गाता हुआ गया (2 इतिहास 20)। पौलुस और सीलास ने भी ऐसा पाया जब वे परमेश्वर की स्तुतियाँ गाने लगे वह जगह हिल गई (प्रेरितों 16:25-26)। जैसे उसके लोग स्तुति करते हैं परमेश्वर सामर्थ्य में उपस्थिति होने की प्रतिज्ञा करता है।
   भजन 22:3, "परन्तु तू तो इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है, तू तो पवित्र है।"
   2 इतिहास 5:13-14, "और जब तुरहियाँ बजानेवाले और गानेवाले एक स्वर से यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे, और तुरहियाँ, झाँझ आदि वाद्यों को बजाते हुए, यहोवा की यह स्तुति ऊँचे शब्द से करने लगे, "वह भला है और उसकी करुणा सदा की है," तब यहोवा के भवन में बादल छा गया, और बादल के कारण याजक लोग सेवा-टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था।"

7) स्तुति और आराधना सीधे एक कृतज्ञ हृदय से सम्बंधित है। ऐसे भी हैं जो परमेश्वर को जानते हैं और फिर भी उसकी महिमा नहीं करते। वे कृतध्न हैं (रोमियों 1:21)। जैसे हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं हम धन्यवाद के साथ उसकी उपस्थिति में आते हैं जो सदा परमेश्वर की आशीष पाने की एक अच्छी शर्त है (भजन 100:4)।

8) स्तुति और आराधना हमें शुद्ध करते हैं। परमेश्वर बिना धब्बा या झुर्री की एक कलीसिया चाहता है। उसने अनेक साधन दिए हैं जिनके द्वारा हम पवित्रीकरण के इस स्थान पर आ सकते हैं। उसने वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करना दिया है (इफिसियों 5:26); उसने हमें प्रार्थना दी है (1 तीमुथियुस 4:4-5) और उसने हमें स्तुति दी है (नीतिवचन 27:21)।

9) हम उसके स्वरूप में बदलते जाते हैं जिसकी हम आराधना करते हैं। यदि हम मूर्तियों और अपने हाथों की बनाई चीजों की आराधना कर रहे हैं तब हम उनके स्वरूप में हो जाएँगे। यदि हमारी आँखें हमारे विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले प्रभु यीशु मसीह पर लगी हैं, तब हम उसके स्वरूप में बदलते जाएँगे। स्तुति और आराधना हम में परमेश्वर के इस काम की कुंजी है।
   भजन 115:8, "जैसे वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले हैं; और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएँगे।"
   भजन 106:19-20, "उन्होंने होरेब में बछड़ा बनाया, और ढली हुई मूर्ति को दण्डवत् की। यों उन्होंने अपनी महिमा अर्थात् परमेश्वर को घास खानेवाले बैल की प्रतिमा में बदल डाला।"
   रोमियों 1:21-23, "इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहाँ तक कि उनका निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए, और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपाओं और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।"
   2 कुरिन्थियों 3:18, "परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।"

10. हमारे पास परमेश्वर की प्रतिज्ञा है कि जब हम प्रभु को बलिदान चढ़ाएँगे वह हम से मिलेगा और संगति करेगा (निर्गमन 29:41-42)। कई सोचते हैं कि वे परमेश्वर से क्यों नहीं सुनते। कभी-कभी यह इसलिए है क्योंकि वे बलिदान के इस सिद्धान्त को कार्य में नहीं लाते हैं।

आराधना विश्वासी के जीवन में अत्यन्त मूल्यवान् है। शैतान आराधना का मूल्य जानता है और उसने मसीह को सारे संसार की पेशकश की थी यदि वह उसे आराधना देगा (मत्ती 4:10)। परन्तु यीशु ने उसे बता दिया आराधना केवल परमेश्वर की है। जैसे हम परमेश्वर की आराधना करेंगे हम सुधार को एक तेज गति से होता देखेंगे।

हमें प्रभु की स्तुति कैसे करनी चाहिए?

पौलुस हम विश्वासियों को अपने शरीर परमेश्वर को जीवित बलिदान करके चढ़ाने का उपदेश देता है (रोमियों 12:1)। वह हम से अपने अंगों को धार्मिकता के हथियार करके सौंपने का आग्रह करता है (रोमियों 6:13)। परमेश्वर चाहता है हम अपने सारे अंगों को उसकी महिमा के लिए इस्तेमाल करें। उसने हमें स्तुति और आराधना की अभिव्यक्तियाँ दी हैं जिनमें हमारा सारा अस्तित्व लगता है।

जैसे हम अपने आप को पूरी तरह परमेश्वर की आराधना में देते हैं हमें याद रखना है कि परमेश्वर चाहता है हम उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई से करें।

हमें उसकी आराधना आत्मा से अपने आप को पूरी तरह देते हुए करनी है। परमेश्वर को बेमन के प्रयत्न नहीं चाहिए। वह चाहता है हम अपना सारी आत्मा उसे दें (भजन 111:1; 138:2)।

भजन 9:1, "हे यहोवा परमेश्वर, मैं अपने पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूँगा; मैं तेरे सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करूँगा।"

भजन 103:1, "हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे।"

परमेश्वर केवल इसमें रुचि नहीं रखता कि हमारी सारी शक्तियाँ उसकी आराधना में लगा दी जाएँ, परन्तु वह चाहता है हम उसकी आराधना सच्चाई से करें। वह चाहता है हम उसकी आराधना परमेश्वर के वचन के अनुसार करें (यूहन्ना 17:17)। जैसे हम वचन के आधार पर आराधना करेंगे हम सत्य को जानेंगे जो हमें स्वतंत्र कर सकता है (यूहन्ना 8:31-32)। यह हमें हमारी सारी पारम्पराओं से स्वतंत्र कर देगा जो हमें सच्ची बाइबल वाली आराधना में प्रवेश करने से रोकती हैं। यीशु ने कहा कि यह मनुष्यों की परम्पराएँ हैं जो परमेश्वर के वचन के लाभों को रद्द कर देती हैं। मरकुस 7:7-8, "ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं। क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो।"

जो आराधना सच्चाई से है परमेश्वर के वचन के अनुसार है। यह समझदार आराधना है जो आराधना के विषय में परमेश्वर कहता है पर आधारित है। यदि परमेश्वर ने पुराने नियम में इतने सारे अध्याय उसके लोगों को बताने के लिए कि उन्हें उसे बलिदान कैसे चढ़ाने हैं इस्तेमाल किए हैं, तब निश्चय है कि परमेश्वर हमें कलीसिया में बताएगा कि हमें उसकी आराधना कैसे करनी है। परमेश्वर ने उसके लोगों को उनके अपने हृदय की इच्छाओं के अनुसार आराधना करने की स्वतंत्रता नहीं दी। अनेक बार इस्राएल जो उनकी आँखों में सही था उसे करके संकट में फँसा था। हमें परमेश्वर के वचन के आदेशानुसार ही आराधना करनी है।

यूहन्ना 4:23-24, "परन्तु वह समय आता है, वरन् अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।"

<u>परमेश्वर ने कम से कम आराधना के नौ तरीके निर्धारित किए हैं जो हमें पूर्ण रूप से सम्मिलित करेंगे। तीन तरीके आवाज इस्तेमाल करते हैं, तीन तरीके हाथ इस्तेमाल करते हैं, और तीन तरीके शरीर इस्तेमाल करते हैं। हम इन सब तरीकों की जाँच करना और उनको कलीसिया में अपने जीवन के साथ जोड़ना चाहते हैं:</u>

अ) **मुँह** - परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी स्तुति अपनी आवाज के साथ करें (भजन 42:4; 66:8)। ऐसा करते हुए हम अपने मुँह को परमेश्वर की भलाई घोषित करने में इस्तेमाल करेंगे। यह गवाही बोलने, या गीत गाने के द्वारा हो सकता है। परमेश्वर चाहता है कि हमारे मुँह से शब्द सकारात्मक और विश्वास उत्तेजित करनेवाले हों। जब हमारे शब्द विश्वास के शब्द होते हैं, वे परमेश्वर के लिए स्तुति होते हैं (देखो: भजन 51:15; 63:5; 71:8,15; 89:1; 145:21; 149:6; रोमियों 15:6)।

भजन 109:30, "मैं यहोवा का बहुत धन्यवाद करूँगा, और बहुत से लोगों के बीच में उसकी स्तुति करूँगा।"

आ) **गीत गाना** - पवित्रशास्त्र सिखाता है कि हमें उसकी उपस्थिति में गीत गाते हुए आना है (भजन 100:4)। कहा गया है कि आप एक देश या एक व्यक्ति की दशा भी उन गीतों के द्वार बता सकते हो जो वे गाते हैं। यह बिलकुल सत्य है। गीत गाना भीतरी मनुष्य की अभिव्यक्ति है; सच्चे आत्मिक गीत गाने की कमी ऐसे लोगों की निशानी है जिनका न्याय हुआ है (यशायाह 16:9-10)। इस्राएल के लोगों को बेबिलोन में उनके मालिकों ने सिय्योन का एक गीत गाने को कहा, परन्तु उनके पास पराए देश में गाने को कोई गीत नहीं था। परन्तु जब वे बेबिलोन की बन्धुआई से छूट कर आए, उन्होंने तुरन्त मजनू वृक्षों पर से उनकी वीणाओं को उतारा और परमेश्वर के लिए एक नया गीत गाने लगे।

भजन 137:1-4, "बेबिलोन की नहरों के किनारे हम लोग बैठ गए, और सिय्योन को स्मरण करके रो पड़े। उसके बीच के मजनू वृक्षों पर हम ने अपनी वीणाओं को टाँग दिया; क्योंकि जो हम को बन्दी बना कर ले गए थे, उन्होंने वहाँ हम से गीत गवाना चाहा, और हमारे रुलानेवालों ने हम से आनन्द चाहकर कहा, 'सिय्योन के गीतों में से हमारे लिए कोई गीत गाओ।' हम यहोवा के गीत को, पराए देश में कैसे गाएँ?"

भजन 126:1-2, "जब यहोवा सिय्योन से लौटनेवालों को लौटा ले आया, तब हम स्वप्न देखनेवाले से हो गए। तब हम आनन्द से हँसने और जयजयकार करने लगे; तब जाति जाति के बीच में कहा जाता था, 'यहोवा ने इनके साथ बड़े बड़े काम किए हैं।'"

ये वे दिन हैं जब परमेश्वर बन्धुआई लौटा रहा है। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि ये आनन्द के गीत गाने के दिन हैं। पवित्र आत्मा की हर नई बेदारी के साथ बहुत सारे नए लिखे जाते हैं, आनन्द और खुशी की आवाजें सुनाई देती हैं। आज भी ऐसा ही हो रहा है। परमेश्वर के लोग प्रभु के लिए आनन्द के नए गीत गा रहे हैं (यिर्मयाह 33:11)।

इफिसियों 5:18-19, "दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ, और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।"

गीत गाना कलीसिया में एक बहुत महत्तवपूर्ण सेवकाई है। कुछ सोचते हैं कि संगीत कलीसिया में मात्र एक प्रकार का मनोरंजन का तरीका है, और, दुख की बात है, कई कलीसियाओं में ऐसा ही है।

परन्तु, गीत गाना आराघना का एक काम और मसीह की देह की एक सेवकाई है। गीत में मनोरंजन से कहीं अधिक बड़ा उद्देश्य है। असल में, भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीतों के द्वारा हमें एक दूसरे को सिखाना और चिताना है (कुलुस्सियों 3:16)। गीत गाने के द्वारा हम सिखा और चिता सकते हैं। सब संगीत कुछ न कुछ सिखाता और चिताता है। इसी कारण से यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि हमारे गीत और भजन और आत्मिक गीत बाइबल की बातों से भरे हों, क्योंकि जैसे हम गाते हैं हम सीखते और चेतावनी पाते हैं।

हम इसे देखने से चूक नहीं सकते कि कलीसिया को गीत गाने की तीन चीजों को अनुभव करना होता है: भजन, जिन्हें पहली कलीसिया ने पहले के लोगों से पाया था; स्तुतिगान, जो सम्भव है अभिषिक्त रचनाएँ थीं; और आत्मिक गीत, जो सम्भव है स्वैच्छिक प्रकृति के हैं। बाइबल वाले गीत गाने में बहुत सम्भव है शामिल होगा जिसे पुराना नियम एक "नया गीत" कहता है (भजन 33:3)। उन गीतों को गाना बड़ी अदभुत बात है जिन्हें प्रभु ने दूसरों को दिया है, परन्तु उस गीत को गाने में एक विशेष रोमांच मिलता है जिसे उसने हमारे हृदय में दिया है। नया गीत आत्मा ने दिया होता है और स्वाभाविक योग्यता का काम नहीं है।

जैसे हम गीत गाने के विषय पर विचार कर रहे हैं, हमें प्रभु के भवन में गायक-मण्डली की आवश्यकता पर भी विचार करना चाहिए। दाऊद के तम्बू में, संगीतकारों को गीत गाने की एक विशेष सेवकाई के लिए नियुक्त या अलग किया जाता था (1 इतिहास 15:16-22)। स्पष्ट है कि दाऊद ने उन्हें व्यवस्थित नियुक्त किया था जिन्हें संगीत और गीत के क्षेत्र में सेवकाई करनी थी, और इसके लिए उन पर एक भिन्न उत्तरदायित्व था। यहोशापात ने देखा कि युद्ध के समयों में गायक महत्त्वपूर्ण थे। उसने प्रभु के गायक नियुक्त किए जिन्हें "पवित्रता से शोभायमान होकर आगे आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाने और उसकी स्तुति करनी थी।" यह आराधना के दल का कार्य है, आत्मिक युद्ध में अगुआई करना।

2 इतिहास 20:21-22, "तब उसने प्रजा के साथ सम्मति करके कितनों को ठहराया, जो कि पवित्रता से शोभायमान होकर हथियारबन्दों के आगे आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएँ, और यह कहते हुए उसकी स्तुति करें, 'यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।' जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे, घातकों को बैठा दिया और वे मारे गए।"

आज भी परमेश्वर के भवन में ऐसे लोग हैं जिनकी सेवकाई आत्मिक गीतों और आराधना में अगुआई करना है। उनकी सेवकाई मण्डली को प्रभु की उपस्थिति में ले जाना है। ये गायक स्तुति के फाटकों में से अन्दर ले जाते हैं। जैसे वे यह करते हैं आत्मिक युद्ध होता है। परमेश्वर जो उसके लोगों की स्तुतियों में विराजमान होता है शत्रु को खदेड़ता है। जब युद्ध होता है और आत्मिक लड़ाई कठिन होती है, गायकों को गाना चाहिए, और परमेश्वर शत्रु पर घातकों को भेजेगा। अभिषेक जूए को तोड़ देगा। मण्डली के बीच, जब वे प्रभु के लिए गीत गाएँगे और आराधना करेंगे, महान छुटकारा आएगा।

पुनस्थापना के दिनों में, गायक विशेष महत्त्व के हैं। जब लोग जरूशलेम की शहरपनाह की मरम्मत कर रहे थे, गाहकों को गाने के लिए नियुक्त किया गया था। गीत की यह सेवकाई उतनी ही अत्यावश्यक थी जितनी कि दीवार का बनाया जाना था। गायकों और काम करनेवालों को उनका भाग दिया गया था (नहेम्याह 11:23)। गायकों ने उनके परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया (नहेम्याह 12:45), और उन्हें भी लेवियों के साथ दाखमधु और तेल का भाग मिलता था (नहेम्याह 13:5)। जिनकी संगीत की सेवकाई है उन पर भी वैसा ही अभिषेक (दाखमधु और तेल) होना चाहिए, जैसा उन से अपेक्षा की जाती है जो वचन और दूसरे आत्मिक वरदानों और सेवकाइयों की सेवा करते हैं। संगीत किसी को कलीसिया में एक "काम" देने के लिए नहीं होता है।

संगीत की सेवकाई कलीसिया में बड़े महत्त्व की है। संगीत में जो सामर्थ्य है लगभग अबोध्य है। यह पीढ़ी संगीत से भरी हुई है। समय का संगीत इसके हृदय का कोलाहल और परेशानी प्रकट करता है। कलीसिया के गीत को मसीही जीवन की शान्ति, आनन्द और संतोष को प्रकट करना चाहिए। आनन्द के गीतों से भरी कलीसिया आनन्द से भरे मसीहियों की

कलीसिया है। जैसे एक देश के गीत उसके हृदय की धड़कन प्रकट करते हैं वैसे ही कलीसिया के गीत परमेश्वर के साथ सम्बंध को प्रकट करते हैं। संगीत की सेवकाई पर अधिक बल नहीं दिया जा सकता है, और हर एक गायक की जिम्मेवारी पर अधिक बल नहीं दिया जा सकता है। गायकों को प्रभु के सामने "तन मन से" गाने के लिए समर्पित रहना चाहिए (1 इतिहास 13:8)।

इतने बड़े महत्त्व की सेवकाई बेमन से नहीं की जा सकती है। गीत में एक-स्वर की सामर्थ्य और महिमा सुलैमान के मन्दिर के अर्पण के समय देखी जा सकती है (2 इतिहास 5:13)। आज नए नियम की कलीसिया के लिए यही नमूना होना चाहिए। जैसे गायक प्रभु के भवन में अपने आप को संगीत की सेवा में देते हैं हम उसी प्रकार महिमा को उतरते देख सकते हैं।

भजन 7:17; 9:2,11; 18:49; 21:13; 27:6; 30:12; 47:6-7; 57:7; 61:8; 68:4,32; 75:9; 92:1; 96:1; 104:33; 108:1,3; 135:3; 138:1; 146:2; 147:1; इब्रानियों 2:12 भी देखो)।

इ) **ऊँचा स्वर** - यह समझ पाना आसान है कि दाऊद के तम्बू में आराधना कभी-कभी कुछ कोलाहलपूर्व होती थी। गायक उनकी सारी शक्ति के साथ गाते और संगीतकार उनके सारी शक्ति के साथ उनके वाद्य बजाते थे। यह उनके लिए काफी अशान्ति की बात होगी जो प्रभु से प्रेम नहीं करते थे। परन्तु, इस सब के अतिरिक्त, दाऊद के तम्बू में ऊँचे स्वर से गाना होता था। यदि कोई एक फुटबाल खेल में चिल्लाता है तब कोई भी बाधा महसूस नहीं करता। असल में, वे इसकी अपेक्षा करते हैं; परन्तु कुछ लोग इसे बहुत अजीब समझते हैं कि कलीसिया में ऊँचे स्वर से गीत गाए जाते हैं। फुटबाल के सबसे बड़े खेल के परिणाम एक वर्ष से अधिक तक दिखाई नहीं देंगे, जबकि जो परमेश्वर ने किया है उसके प्रभाव अनन्तकाल तक बने रहेंगे। यह कुछ चिल्लाने योग्य है। सब जो प्रभु में भरोसा रखते हैं आनन्द के साथ ऊँचे स्वर से गाएँगे (भजन 5:11)। सब जो सीधे मनवाले हैं, आनन्द से जयजयकार करेंगे (भजन 32:11)। जो धर्म से प्रसन्न रहते हैं, जयजयकार और आनन्द करेंगे (भजन 35:27), क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें धार्मिकता के वस्त्र पहनाए हैं, इसलिए वे ऊँचे स्वर से जयजयकार करेंगे (भजन 132:9,16)।

यशायाह 12:6, "हे सिय्योन में बसनेवाली, तू जयजयकार कर और ऊँचे स्वर से गा, क्योंकि इस्राएल का पवित्र तुझ में महान है।"

इन दिनों परमेश्वर प्रभु की उपस्थिति को लौटा रहा है। जब दाऊद वाचा के सन्दूक को यरूशलेम ला रहा था, बहुत जयजयकार हो रही थी (2 शमूएल 6:15)। हम आज भी इसी प्रकार की जयजयकार की अपेक्षा कर सकते हैं।

ई) **तालियाँ बजाना** - यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम ऊँचे स्वर से जयजयकार के चिन्ह के रूप में तालियाँ बजाएँ (भजन 47:1)। यह गाते समय हो सकता है, परन्तु यह एक अलग भेंट भी हो सकती हैं। लोग ओपेरा सितारों, मनोरंजकों और खिलाड़ियों की प्रशंसा खुल कर दिखाते हैं। तो परमेश्वर कितना अधिक हमारी प्रशंसा के योग्य है? हम उसकी उपस्थिति में तालियाँ बजाकर उसमें अपने आनन्द को प्रकट कर सकते हैं (देखो: भजन 98:8; यशायाह 55:12)।

उ) **अपने हाथ उठाना** - एक कृतज्ञ हृदय की स्वाभाविक प्रतिक्रिया प्रभु के सामने अपने हाथ उठाना है (विलापगीत 3:41)। यह दिलचस्प है कि एक उठा हुआ हाथ परमेश्वर के साथ वादा या वाचा बाँधने का एक चिन्ह भी है (उत्पत्ति 14:22)। हम ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के साथ वाचा के सम्बंध में रहते हैं और हमारी ओर प्रभु की करुणा के लिए कृतज्ञ हैं (भजन 63:3-4)। इसलिए हम अपने पवित्र हाथों को बिना क्रोध और विवाद के उठाया करेंगे (1 तीमुथियुस 2:8)।

भजन 134, "हे यहोवा के सब सेवको, सुनो, तुम जो रात रात को यहोवा के भवन में खड़े रहते हो। अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर, यहोवा को धन्य कहो। यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है, वह सिय्योन में से तुझे आशीष दे।"

भजन 28:2; 88:9; 119:48; 141:2; 143:6; इब्रानियों 12:12 भी देखो।

ऊ) **वाद्य बजाना** - कई लोग सोचते हैं कि कलीसिय में संगीत वाद्यों का इस्तेमाल नए नियम की बात नहीं है। जब हम समझते हैं परमेश्वर का क्या अर्थ है जब वह कहता है कि वह दाऊद के तम्बू को फिर बनाएगा, हमें इस क्षेत्र में कोई समस्या नहीं है। पौलुस कम से कम दो अवसरों पर विश्वासियों को भजन इस्तेमाल करने का उपदेश देता है (इफिसियों 5:18-19; कुलिस्सियों 3:16)। "भजन" शब्द की परिभाषा है : "गानेवाली कविता या स्तुति का गीत जिसके साथ वीणा या संगीत वाद्य बजता है।" इस शब्द की परिभाषा में ही हमें संगीत वाद्य इस्तेमाल करने का उपदेश मिलता है।

दाऊद के तम्बू में आराधना को बढ़ाने के लिए कई वाद्य इस्तेमाल किए जाते थे। मन्दिर की आराधना में जो इसके बाद आई थी गीत और वाद्यों का इस्तेमाल था। उदाहरणार्थ, जब हिजकिय्याह को पता चला कि परमेश्वर ने उसे चंगा किया और उसके दिन बढ़ाए हैं, तब उसने गीत लिखे और कहा कि "हम जीवन भर यहोवा के भवन में तारवाले बाजों पर अपने रचे हुए गीत गाते रहेंगे" (यशायाह 38:20)।

भजन 150, "याह की स्तुति करो। परमेश्वर के पवित्रस्थान में उसकी स्तुति करो; उसकी सामर्थ्य से भरे हुए आकाशमण्डल में उसी की स्तुति करो। उसके पराक्रम के कामों के कारण उसकी स्तुति करो। उसकी अत्यन्त बड़ाई के अनुसार उसकी स्तुति करो। नरसिंगा फूँकते हुए उसकी स्तुति करो; सारंगी और वीणा बजाते हुए उसकी स्तुति करो। डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो; तारवाले बाजे और बांसुली बजाते हुए उसकी स्तुति करो। ऊँचे शब्दवाली झाँझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो; आनन्द के महाशब्दवाली झाँझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो। जितने प्राणी हैं सब के सब याह की स्तुति करो। याह की स्तुति करो।"

जिनकी संगीत की एक सेवकाई है उन्हें उनकी सेवकाई में बाट जोहनी चाहिए। तम्बू की आराधना में लोगों को नियुक्त किया गया था कि "वे वीणा, सारंगी और झाँझ बजा-बजाकर नबूबत करें" (1 इतिहास 25:1)। स्पष्ट रूप से भविष्यद्वाणी की आत्मा इन सेवकों पर आती थी और वे बजाते हुए भविष्यद्वाणी करते थे। जो वाद्य बजाते हैं उन्हें परमेश्वर पर विश्वास करना है कि जैसे वे उनके वाद्य बजाएँगे भविष्यद्वाणी का स्पर्श उन पर आएगा। ऐसे अवसर हुए हैं जब एक पियानो या आरगन ने आराधना का एक संगीत शुरू किया था और बाकी सब वाद्यों ने साथ दिया और अभिषेक में बजाया, किसी को भी पता नहीं था कौन सा संगीत बज रहा था। वे पवित्र आत्मा के अभिषेक में स्वेच्छा से बजा रहे थे प्रभु की स्तुति में बजा रहे थे। ऐसी आराधना से स्वर्ग भरना चाहिए।

कभी-कभी हम देख सकते हैं कि यह एक गवैया था जिसने भविष्यसूचक अभिषेक के लिए भाव या वातावरण बनाया था (2 राजाओं 3:15)। हम ने पाया है कि जिन कलीसियाओं में संगीत पर एक शक्तिशाली बल दिया जाता है एक भारी अभिषेक बनाए रखने और देह की सेवकाई के निरन्तर होते रहने में कोई समस्या नहीं होती। संगीत एक वातावरण बनाता है। संसार इसे जानता है और इसका दुरूपयोग करता है, परन्तु हम संगीत को लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति में लाने के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं।

पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से व्यक्ति से एक कठोर अपेक्षा करती है जो प्रभु के भवन में उसके वाद्य के द्वारा सेवा करना चाहता है। जो बजाता है निपुणता के साथ बजाए (भजन 33:3; यहेजकेल 33:32)। परमेश्वर की चीजों में अज्ञानता पर कोई पुरस्कार नहीं है। प्रभु के भवन में आराधना के लिए एक वाद्य का कड़ा प्रशिक्षण एक बड़ा गुण है। परमेश्वर का भवन अभ्यास का स्थान नहीं है। जब अप्रशिक्षित संगीतकार आराधना की अगुआई करते हैं, यह सामूहिक अभिव्यक्ति में केवल अव्यवस्था लाता है। परन्तु, जब निपुणता परमेश्वर के अभिषेक के साथ मिलती है, आराधना के क्षेत्र में अदभुत काम होते हैं। दाऊद की वीणा के साथ निपुणता के कारण, शाऊल में से दुष्टात्मा निकल गई थी (1 शमूएल 16:17)। परन्तु यह केवल उसकी निपुणता ही नहीं थी, बल्कि यह उसकी निपुणता और परमेश्वर का अभिषेक था।

ए) **खड़े रहना** - प्रभु की स्थुति में उसके सामने खड़े रहने का एक स्थान है (भजन 134:1)। केवल एक ही अवस्थिति जिसका भजनसंहिता में आराधना को लेकर कोई वर्णन नहीं है बैठना है। एक बैठी हुई अवस्थिति में प्रभु की आराधना में लगना कठिन है। जैसे हम उसकी उपस्थिति में खड़े होते हैं हम उसे महिमा, आदर और भय देते हैं। जब अदालत में एक न्यायाधीश प्रवेश करता है सब खड़े हो जाते हैं। हम न्यायी की उपस्थिति में हैं। उसके सामने खड़े होना काफी उचित है।
भजन 135:1-2, "याह की स्तुति करो, यहोवा के नाम की स्तुति करो, हे यहोवा के सेवको, तुम उसकी स्तुति करो, तुम जो यहोवा के भवन में, अर्थात् हमारे परमेश्वर के भवन के आंगनों में खड़े रहते हो।"

ऐ) **झुकना या घुटने टेकना** - जब सुलैमान ने अपने आपको प्रतीक के रूप में लोगों की उपस्थिति में एक जीवित बलिदान करके प्रस्तुत किया, उसने घुटने टेके, स्वर्ग की ओर अपने हाथों को फैलाया और परमेश्वर से प्रार्थना की (2 इतिहास 6:13-14)। झुकना या घुटने टेकना हमारी ओर से दीनता दिखाता है। जब हम उसके प्रताप को पूरी तरह पहचानते हैं जिसके सामने हम हैं, तब घुटने टेकना कोई बड़ी बात नहीं है।
भजन 95:6, "आओ हम झुककर दण्डवत् करें, और अपने कर्त्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें।"

ओ) **नाचना** - कोई बहुत अधिक लोग इन्कार नहीं करते कि हमें परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होना चाहिए, परन्तु खड़े होना का जिक्र बाइबल में केवल दो बार ही है। कोई बहुत अधिक लोग परमेश्वर के भवन में झुकने को गलत नहीं मानेंगे, हालाँकि घटने टेकने का भजनों में केवल एक बार जिक्र है। परन्तु जब नाचने की बात होती है, जिसका जिक्र भजनों में तीन बार है, लाल झंडी खड़ी हो जाती है। कभी-कभी हमारा ध्यान इस चीज में इतना होता है कि कैसे शैतान ने एक चीज को भ्रष्ट किया है कि हम उस चीज की सही अभिव्यक्ति की इच्छा खो देते हैं। जब नाचने के बारे में सोचते हैं, हम अपने आप नाचने की उस सांसारिक अभिव्यक्ति के बारे में सोचने लगते हैं जिसे संसार में देखते हैं। परन्तु बाइबल कहती है हमें

नाचने के द्वारा प्रभु की स्तुति करनी है। यदि यह सच है, तो हमें जानना चाहिए हम इसे परमेश्वर के वचन के अनुसार कैसे कर सकते हैं।
भजन 149:3, "वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें, और डफ और वीणा बजाते हुए उसका भजन गाएँ।"
भजन 150:4, "डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो, तारवाले बाजे और बांसुली बजाते हुए उसकी स्तुति करो।"

आराधना में हर विश्वास का कार्य आराधक की ओर से एक बलिदान की माँग करता है। हाथ उठाना, ताली बजाना, गाना और ऊँचे स्वर से जयजयकार करना ऐसी चीजें हैं जिन्हें परमेश्वर के वचन की समझ और इसकी आज्ञाओं का पालन करने की एक इच्छा के आधार पर किया जाता है। प्रभु के सामने नाचना कोई अलग चीज नहीं है। आपको गाने के लिए कोई विशेष प्रेरणा की आवश्यकता नहीं, और आपको नाचने के लिए कोई विशेष प्रेरणा की आवश्यकता नहीं है।
"प्रभु के सामने नाचना" या "आत्मिक नाचना" एक ऊँचे स्तर की आराधना है और इसके विषय में सदा इसी प्रकार सोचा और समझा जाना चाहिए। यह मात्र एक भावात्मक रिहाई नहीं है, जैसे कुछ ने कहा है। सच है परमेश्वर उसके लोगों की भावात्मक आवश्यकताओं को तृप्त करता है और करने के लिए सदा आएगा, परन्तु आराधना के इस पहलू का प्रमुख उद्देश्य हमारी आराधना में परमेश्वर की आज्ञा जिसे हम जानते हैं मानना है।
इसे ध्यान में रखना चाहिए कि नाचना सदियों से हर समाज और संस्कृति की आराधना के नमूने का एक मूल भाग रहा है। कोई आश्चर्य नहीं कि इस अन्तिम पीढ़ी में यह कुछ इतना भ्रष्ट और गंदा बन गया है, क्योंकि जैसे पाप ऊँचाइयों पर जाएगा, शैतान उसे लेगा जो सच्ची आराधना का एक भाग है और उसे सबसे निचले भागों में ले जाएगा। इसी कारण से परमेश्वर नाच को अन्तिम दिनों की कलीसिया में लौटा रहा है। एक विश्वासी के जीवन में आराधना की एक अन्तिम अभिव्यक्ति उसकी शक्ति को पूरी तरह समर्पित कर देना है, जब परमेश्वर हमारे आत्मा, प्राण और शरीर पर अपना अधिकार कर लेता है। अविश्वासी चाहे कैसे भी देवताओं की आराधना करते हों, उस आराधना में कहीं न कहीं नाच की अभिव्यक्ति पाई जाती है। इससे पता चलता है कि हर मनुष्य के हृदय में अपने आप को उसके देवता की भक्ति में पूरी तरह दे देने की इच्छा होती है। तो हमें अपने जीवित परमेश्वर की आराधना में अपने आप को कितना अधिक नहीं दे देना चाहिए?
परमेश्वर कलीसिया में आनन्द लौटा रहा है - एक आनन्द जिसे पहले कभी भी देखा नहीं गया है। वह चाहता है हम आनन्द की एक पूर्णता में आएँ जिसे "फसल के आनन्द" में पाया जाता है। नाचना इस आनन्द की एक आवश्यक अभिव्यक्ति है। फिर भी, परमेश्वर के लौटाने में एक क्रम है जो इस क्षेत्र में रक्षा प्रदान करता है।
यिर्मयाह 31:12-13, "इसलिए वे सिय्योन की चोटी पर आकर जयजयकार करेंगे, और यहोवा से अनाज, नया दाखमधु, टटका तेल, भेड़-बकरियाँ और गाय-बैलों के बच्चे आदि उत्तम उत्तम दान पाने के लिए ताँता बाँधकर चलेंगे; और उनका प्राण सींची हुई बारी के समान होगा, और वे फिर कभी उदास न होंगे।"
यिर्मयाह हमें तीन संघटक देता है जो हमें सन्तुलन में रख सकते हैं। पहले परमेश्वर वचन (गेहूँ) लौटाएगा, क्योंकि सब कुछ परमेश्वर के वचन पर आधारित होना चाहिए। दूसरा, परमेश्वर प्रभु का आनन्द (दाखरस) लौटाता है। जब परमेश्वर का वचन और प्रभु का आनन्द तीसरे संधटक, अभिषेक (तेल) के साथ मिल जाते हैं, तब कलीसिया (कुँवारी) आनन्द के साथ नाचती है। जब परमेश्वर के वचन पर नींव उचित रूप से डाली गई है, तब नाच में अभिव्यक्ति व्यक्त हो सकती है।
प्रभु की उपस्थिति होने और छुटकारे के समयों में अकसर नाचने की अभिव्यक्ति होती है। जब इस्राएल मिस्र की गुलामी से छुटकारा पाया था, मरियम ने इस्राएल की स्त्रियों की नाचने में अगुआई की थी (निर्गमन 15:21)। जब दाऊद वाचा के सन्दूक को लाया था, उसने अपने राजकीय वस्त्रों को उतार दिया, एक सनी के एपोद को पहन लिया जो याजक का वस्त्र था और प्रभु के सामने नाचा (2 शमूएल 6:14)। जब परमेश्वर एक लोगों को पुनःजाग्रत करता है जैसे वह कलीसिया के साथ कर रहा है लोग नाचने लगते हैं (यिर्मयाह 31:4)। तब भी जब परमेश्वर व्यक्ति की उदासी और शोक के बन्धन को छुड़ाता है, प्रभु के सामने आनन्द के मारे नाचना या कूदना एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है।
भजन 30:11, "तू ने मेरे लिए विलाप को नृत्य में बदल डाला; तू ने मेरा टाट उतरवाकर मेरी कमर में आनन्द का पटुका बाँधा है।"
नए नियम में, हम बन्धुआई से लौटा लाने के समय भी ऐसी ही प्रतिक्रिया पाते हैं। यशायाह में, भविष्यद्वाणी की गई थी कि लंगड़ा हरिण के समान कूदेगा, और प्रेरितों में यह वैसा ही हआ था (यशायाह 35:6; प्रेरितों 3)। उस दिन काफी होहल्ला हुआ होगा जब एक व्यक्ति जो एक ही स्थान पर वर्षो से बैठा था, भीख माँगता था, टाँगों से अपंग था, अपने समय के धार्मिक अगुवों को परमेश्वर के भवन में आते-जाते देखता था जिनके पास उसकी जरूरत के लिए कोई उत्तर नहीं था, अचानक परमेश्वर की स्तुति करता हुआ मन्दिर में प्रवेश करता है। सम्भवतः वहाँ बहुत सारे लोग थे जिन्होंने इसे थोड़ा

अशोभनीय पाया होगा, परन्तु लंगड़े व्यक्ति ने इसे काफी उपयुक्त पाया होगा। बहुत लोग सोचते हैं कि, पवित्र आत्मा के इस काम में, हम अपनी आराधना के विषय में इतने उत्साही क्यों हैं। उत्तर इस विवरण में पाया जाता है। वर्षो भर हम ने अपनी कलीसिया में सेवकों को आते और सेवा करके जाते देखा है। वर्षो भर हम ने संदेशों को सुना है और हमारी आवश्यकताएं पूरी नहीं हुई यहाँ तक कि जो परमेश्वर कर रहा है उसमें हम शामिल होकर उसका एक भाग बन जाते। वर्षो भर हमारे हृदयों में से पुकार उठती रही, "हे परमेश्वर, क्या हमारे लिए बस इतना ही है?" तब, उसकी दया में, परमेश्वर हमारे लिए सेवकाई लाया जिसने हमें हमारे माँगने से अधिक दिया, और हमें वहाँ शक्ति मिली जहाँ हम ने सोचा था नहीं मिलेगी। असल में, परमेश्वर ने हमारे माँगने से कहीं अधिक किया है जिसके कारण हम आनन्द के मारे नाच रहे और परमेश्वर की स्तुतियाँ गा रहे हैं।

इससे पहले हम इस विषय को समाप्त करें, सावधानी की कुछ चीजों के विषय में बताना आवश्यक है जब आत्मिक नाचने की बात होती है।

1. इस अभिव्यक्ति को अगुआई द्वारा आरम्भ किया जाना चाहिए। जैसे मरियम ने स्त्रियों की अगुआई की थी और दाऊद ने देश की अगुआई की थी, उसी प्रकार अगुआई को आराधना में लोगों की अगुआई करनी चाहिए। "जिसको जो ठीक जान पड़ता है, वही करना" सही नहीं है। आनन्द के समयों में परमेश्वर के लोगों के लिए अगुआई होनी चाहिए। अगुआई की कमी काफी निन्दा लाई है जो आज भी परमेश्वर के इस काम की ओर बनी हुई है। सत्य के साथ कुछ भी गलत नहीं है, परन्तु सत्य को लागू करने के लिए अगुआई के बिना और बुद्धि की कमी काफी निन्दा लाती और ला सकती है। परमेश्वर के लोगों को सतानेवाले की छड़ी के नीचे से छुड़ाया गया है, और इसी कारण से तम्बू में बहुत आनन्द मनाया जा रहा है।
2. आत्मिक नाचना कोई व्यक्तिगत अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह देह का कार्य है। आत्मिक नाचना नया नहीं है। पेन्टेकोस्टल बेदारी ने इसके प्रारंभिक वर्षो में नाच के द्वारा स्तुति की अभिव्यक्ति को काफी देखा था। इस सत्य का "नया" पहलू परमेश्वर के वचन की शिक्षा की समझ है और ज्ञान कि यह केवल एक व्यक्तिगत अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि, कि जब आत्मा मण्डली पर आनन्द और खुशी के साथ कार्य करता है, परमेश्वर का सबसे ऊँचा स्तर यह है कि सारी मण्डली एक देह के रूप में आराधना में चले। मसीह की देह और देह की आराधना की सच्चाइयों के प्रकटीकरण के साथ यह समझ मिली है कि परमेश्वर चाहता है हर पूरी देह आराधना करे। जब ताली बजाएँ तो हम सब ताली बजाएँ; जब हाथ उठाने होते हैं तब हम इकट्ठे हाथ उठाएँ; और जब नाचना होता है, परमेश्वर चाहता है कि सारी देह इस प्रकार आराधना करे।
3. हमें एक अभिव्यक्ति को सब पर लागू करने के लिए जोर नहीं देना चाहिए। सदा ध्यान में रखो कि परमेश्वर हर व्यक्ति के द्वारा एक भिन्न तरीके से व्यक्त करता है। जैसे हमारा व्यक्तित्व भिन्न है, वैसे ही हर व्यक्ति के द्वारा परमेश्वर की अभिव्यक्तियाँ भिन्न होंगी। इसलिए, सबसे एक ही प्रकार का नाच करने की अपेक्षा करना गलत होगी। कुछ शायद, डेविड के समान "तेजी से घूमेंगे" जैसे वह सम्दूक के सामने नाचा था। दूसरे शायद, लंगडे व्यक्ति के समान जिसे चंगाई मिली थी "उछलेंगे या कूदेंगे।" दूसरे शायद, "कुछ कदम उठा उठाकर" नाचेंगे जैसे मूल शब्द का अर्थ है। चाहे कैसा भी हो आराधना में अपने आप को पूरी तरह दे देना है, और पवित्रशास्त्र संकेत देता है कि परमेश्वर को प्रसन्न करता है।
4. जैसे परमेश्वर की सब चीजों के साथ है, नाचने को केवल एक बाहरी रूप नहीं ले लेना चाहिए। नाचना आराधना का एक चरम तरीका है। ध्यान दिया जाना चाहिए कि न तो इसे अधिक किया जाए और न ही जो पवित्र और शुद्ध है उसे आम बात बना दी जाए। यह, एक भाव से, एक खतरनाक सत्य है, क्योंकि शरीर ऐसी एक चीज को बड़ी सरलता के साथ लेकर अप्रिय बना देता है, विश्वासियों के लिए और उनके लिए जो कलीसिया में पहली बार आ रहे हैं।
5. हमारे लिए यह आवश्यक है कि जिसे परमेश्वर ने ठहराया है उसे तुच्छ न समझें। बड़ा बेटा खोए हुए बेटे के लौटने के लिए हो रहे नाच से नाराज़ हुआ (लूका 15:25)। शाऊल की बेटी, मीकल (शरीर) ने दाऊद को उसके खुलेआम आराधना के लिए तुच्छ जाना। प्रभु ने मीकल का उसके रवैये के लिए कड़ाई से न्याय किया। उसे बाँझ बना दिया गया। इसे परमेश्वर के लोगों के लिए आज एक चेतावनी होना चाहिए। दण्ड उन पर आता है जो अभिषेक को तुच्छ मानते हैं, परन्तु आशीष उन पर आती है जो उसे जिसे परमेश्वर ने ठहराया है लेते और अपना बनाते हैं। मीकल की आत्मा आज भी कलीसिया में है, परन्तु जिन्होंने याजकपद के वस्त्र पहने हैं गाएँगे और प्रभु में आनन्द मनाएँगे क्योंकि सन्दूक आ रहा है (1 इतिहास 15:10, 27-28)।

हम परमेश्वर की स्तुति और आराधना कब करें?

भजन हमें सिखाते हैं कि हमें हर दिन (भजन 145:2), दिन में सात बार (भजन 119:164) परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमें उसकी स्तुति सब समय करनी चाहिए (भजन 34:1)। इसे सदा के लिए या जब तक हमारा अस्तित्व है होते रहना है (भजन 45:17; 104:33; 146:1:3)। यह एक चीज है जिसे सारे अनन्तकाल भर करने की अपेक्षा हम कर सकते हैं।
भजन 34:1, "मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।"
भजन 113:1-3, "याह की स्तुति करो। हे यहोवा के दासो, स्तुति करो, यहोवा के नाम की स्तुति करो। यहोवा का नाम अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहा जाए। उदयाचल से अस्ताचल तक, यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है।"

हम प्रभु की स्तुति और आराधना कहाँ करें?

हमें परमेश्वर की स्तुति जहाँ कहीं हम अपने आप को अपने रोजाना के मसीही जीवन में पाते हैं अवशय करनी है, परन्तु ऐसे समय भी होते हैं जब हमारे लिए इकट्ठे होना और सामूहिक रूप से परमेश्वर की स्तुति करना आवश्यक है (भजन 22:25; 108:3; 134:2; 138:1-2)।
भजन 35:18, "मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद करूँगा, बहुतेरे लोगों के बीच मैं तेरी स्तुति करूँगा।"
भजन 111:1, "याह की स्तुति करो। मैं सीधे लोगों की गोष्टी में और मण्डली में भी सम्पूर्ण मन से यहोवा का धन्यवाद करूँगा।"

किसे प्रभु की स्तुति और आराधना करनी चाहिए?

पवित्रशास्त्र विविध प्रकार के लोगों के विषय में बताती है जिन्हें प्रभु की स्तुति करनी चाहिए। पूर्ण सूची में सब आ जाते हैं।

अ) स्वर्ग और पृथ्वी को प्रभु की स्तुति करनी है (भजन 69:34; 89:5)। सारी सृष्टि इस श्रेणी में आ जाती है।

आ) सब देशों और सब लोगों को परमेश्वर की स्तुति करनी है (भजन 117:1)।

इ) दीन और दरिद्रों को परमेश्वर की स्तुति करनी है (भजन 74:21)। हमें परिस्थितियों को हम से स्तुति चुराने नहीं देना है।

ई) प्रभु के सब सेवकों को परमेश्वर की स्तुति करनी है (भजन 134:1; 113:1; 103:21)। इसमें वे सब सम्मिलित हैं जो प्रभु का भय मानते हैं (भजन 22:23,26)। यदि हम सच में प्रभु का भय मानते हैं तब हम में अपनी स्तुति के द्वारा उसका आदर करने की इच्छा होगी। सन्तों की विशेषता यह है कि वे आनन्द के मारे जयजयकार करते हैं (भजन 132:9; 145:10)।

उ) असल में, जितने प्राणी हैं वे प्रभु की स्तुति करें (भजन 150:6)। यह सत्य कि हम स्तुति करते हैं जीवन का चिन्ह है। यह जीवते हैं जो प्रभु की स्तुति करते हैं (यशायाह 38:19), परन्तु जो मृत्य हैं, या जो मिट्टी में मिल चुके हैं प्रभु की स्तुति नहीं करते (भजन 115:17; 30:9; 88:10-11; यशायाह 38:18)।

जैसे हम देख सकते हैं कि स्तुति सब के लिए है। आराधना के लिए सारी देह (स्थानीय कलीसिया) की आवश्यकता होती है। यह पाँच या दस प्रतिशत् मण्डली का कार्य नहीं है (मरकुस 12:30)। स्तुति और आराधना पूरी देह का कार्य है।
भजन 117, "हे जाति जाति के सब लोगो, यहोवा की स्तुति करो। हे राज्य राज्य के सब लोगो, उसकी प्रशंसा करो। क्योंकि उसकी करुणा हमारे ऊपर प्रबल हुई है; और यहोवा की सच्चाई सदा की है। याह की स्तुति करो।"

स्तुति और आराधना में हम क्या भिन्नता देख सकते हैं?

इन दो विचारों के बीच भेद पता लगाने का सबसे उत्तम तरीका शब्दों के इतिहास (प्रारंभ और विकास का पता लगाना) का अध्ययन करना है जिन्हें इन दोनों शब्दों के लिए पुराने और नए नियमों में इस्तेमाल किया गया है। हम निम्नलिखित रूपरेखा दे रहे हैं।

आराधना

1) पुराने नियम में दो मूल शब्द इस्तेमाल किए गए हैं।
   - अ) "Abodah अबोदाह" - यह एक सामान्य शब्द है जिसका अनुवाद किया गया है "परिश्रम, काम, परमेश्वर की सेवकाई या सेवा।"
   - आ) "Shachah शचाह" - इस शब्द को आराधना के निश्चित कार्य का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया है। इसका अर्थ झुकना, सम्मान में दणडवत करना या नम्रता के साथ आगे बढ़ना है।

2) नए नियम में वही भिन्नता बनी हुई है।

अ) "Latruo लटरुओ" - यह सामान्य शब्द है जिसका अर्थ पराधीनता है - भो़ के मजदूर या दास की स्थिति, और इसलिए परमेश्वर की सेवा - ईश्वरीय आराधना।

आ) "Proskuneo प्रासकूनियो" - यह इब्रानी शब्द से मेल खाता है जो आराधना के निश्चित कार्य का वर्णन करता है। इसका अर्थ दण्डवत करना, अत्यधिक प्रेम दिखाना, झुकना या आराधना करना है।

"आराधना" शब्द का दो-तरफा अर्थ देखना हमारे लिए कठिन नहीं है। सामान्य भाव में, सब कुछ जो हम परमेश्वर की आराधना में करते हैं, सब कुछ जो हम प्रभु के नाम में करते हैं, सब कुछ जो हम उसकी ओर अपने समर्पण के कारण करते हैं आराधना कहा जा सकता है। यह शुद्ध भक्ति है जिसकी बात याकूब करता है (1:27)। परन्तु, दूसरी ओर, आराधना की एक निश्चित क्रिया भी है जहाँ हम अपने आप को परमेश्वर के सामने दीन करते हैं। हम उसकी महानता के सामने आदर और भय में दण्डवत करने हैं। आराधना उसके हृदय में से निकलती है जो प्रभु का भय मानता है। यीशु जानता था कि आराधना के दोनों पहलू महत्त्वपूर्ण हैं। वह जानता था कि हमारा सम्पूर्ण जीवन आराधना की एक अभिव्यक्ति होनी चाहिए, और फिर भी, हमारे पास निश्चित समय होने चाहिए जब हम अपना पूरा ध्यान उसे दे सकते हैं। जैसे मसीह की परीक्षा हो रही थी, उसने शैतान को याद दिलाया, "तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर ("proskuneo"), और उसी की उपासना कर ("latruo")।" (लूका 4:8)

स्तुति

1) पुराने नियम में तीन मूल शब्द हैं जिनको "स्तुति" अनुवाद किया गया है।

अ) "Yadah यादाह" - यह शब्द मूल है जिसका अर्थ फेंकना या डालना है। इसका अर्थ आराधना में धन्यवाद देना बन गया मुख्य रूप से परमेश्वर की स्तुति में हाथों के इस्तेमाल के कारण। इसलिए मूल शब्द का अर्थ है हाथ बढ़ाकर परमेश्वर की स्तुति करना।

आ) "Halal हलाल" - इस शब्द के कुछ प्रारंभिक अर्थ हैं: आनन्द के कारण जयजयकार करना, खुश होना, ऊँची आवाज में चिल्लाना, और याचना करना। इसका अर्थ हो गया है गर्व करना, दिखावा करना, अत्यधिक प्रशंसा करते रहना या मनाना। इसका अर्थ है कि हमें बोलकर प्रभु में गर्व करना है।

इ) "Shaback शबाक" - इस शब्द का अर्थ प्रशंसा करना, स्तुति करना या एक ऊँची आवाज में सम्भोदित करना है। यह देखना कठिन नहीं है कि क्यों स्तुति से भरा हुआ तम्बू एक शोर वाला स्थान था।

हमें कहना होगा कि स्तुति एक सामान्य भाव में आराधना है। परन्तु स्तुति विशेष रूप से आराधना या परमेश्वर की सेवा का वह कार्य है जिसमें हम अपने हाथ उठाकर बोलते हुए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं। आराधना में विशेष रूप से सम्मिलित है एक नम्र श्रद्धा, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने आत्मा को झुकाना। परमेश्वर दोनों चाहता है। वह स्तुतियों, गौरव करने, उसके लोगों के मनाने में आनन्द लेता है, परन्तु वह चाहता है कि हम उसके सामने झुकें भी।

कलीसिया को एक आराधना करनेवाला समुदाय होना है, परन्तु इसे स्तुति का एक स्थान भी होना है। परमेश्वर इस समय कलीसिया में स्तुति लौटा रहा है। वह कलीसिया को मसीह के पुनरागमन के लिए तैयार कर रहा है। इससे पहले मसीह आ जाए, स्तुति को पूरी तरह लौटा लाना है जैसे भविष्यद्वक्ताओं ने कहा है (प्रेरितों 3:21; यिर्मयाह 3:11)। अन्तिम दिनों में परमेश्वर हमें स्तुति के वस्त्र देगा (यशायाह 61:3)। इससे पता चलता है कि स्तुति कभी-कभार होने वाला अनुभव नहीं है, परन्तु यह एक वस्त्र है जिसे अन्तिम दिनों की कलीसिया को पहनना है। यह वस्त्र उदासी के सिद्ध उत्तर है जो इस पीढ़ी में कितना आम है। कोई भी मानसिक दशा या उदासी उसकी उपस्थिति में टिक नहीं सकती जो स्तुति के वस्त्र पहनता है। अपने मुँह में परमेश्वर की स्तुति लिए हुए हम अपने सारे शत्रुओं को और, अन्तिम शत्रु - मृत्यु को भी जीत लेंगे (इब्रानियों 9:27) भजन 149:6-9 भी देखो।

सिय्योन के फाटकों (कलीसिया) का स्तुति के रूप में अनेक बार जिक्र किया गया है (यशायाह 60:18)। हमें प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिए स्तुति के फाटकों में से निकलने को कहा गया है (यशायाह 62:10-12)। स्तुति के द्वारा हम परमेश्वर की उपस्थिति के फाटक में से गुज़रते हैं। स्तुति के द्वारा हम जय के जीवन में प्रवेश करते हैं। स्तुति के द्वारा हम प्रभु की सेवा में प्रवेश करते हैं। इसी कारण से "यहोवा सिय्योन के फाटकों से याकूब के सारे निवासियों से बढ़कर प्रीति रखता है" (भजन 87:2)। हमारा प्रभु यीशु मसीह यहूदा के वंश का सिंह है। "यहूदा" का अर्थ है: स्तुति। मसीह लोगों की एक सेना पर कप्तान है जो स्तुति के महत्त्व को पहचानते हैं। आओ हम आराधना के इस महत्त्वपूर्ण पहलू की परिश्रम के साथ खोज करें। हम अपने पुरानी परम्पराओं को परमेश्वर के वचन को व्यर्थ न करने दें।

बाइबल की स्तुति और आराधना

अध्याय 1 नया याजकपद

पुराने नियम में, परमेश्वर ने एक याजकपद को उसके लोगों का उसके सामने प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त किया था। उनकी सेवा में विधियों और धर्मक्रियाओं की एक जटिल प्रणाली सम्मिलित थी। ये धर्मक्रियाएं आनेवाली आत्मिक वास्तविकताओं का प्रतीक थीं। वे उन चीजों की परछाई थीं, परन्तु वास्तविकता नहीं थीं।

मसीह की याजकीय सेवा ने पुराने नियम के याजकपद में छिपे हर प्रतीक को पूरा कर दिया। उसने इसके सब प्रतीकार्थ को पूरा कर दिया है। वह इसके सारे प्रतीकों की पूर्ति है।

लेवीय और हारून के याजकपद के स्थान पर अब एक नया याजकपद है। नई वाचा की शर्तों में, हर विश्वासी परमेश्वर का एक याजक है। हम, पुराने नियम के याजकों के समान, पशुओं के बलिदान नहीं चढ़ाते। हमें कहा गया है "...याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं" (1 पतरस 2:5)।

एक आत्मिक बलिदान जिसे चढ़ाने के लिए हमें आदेश दिया गया है "होठों का फल" है। "इसलिए हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें।" (इब्रानियों 13:15)।

"चढ़ाने" के लिए यूनानी शब्द "anaphero" है, जिसका अर्थ है: लाना, उठाना , या चढ़ाना है। यह निर्गमन 24:5 में इस्तेमाल किया गया शब्द है जहाँ उन्होंने "यहोवा के लिए होमबलि और बैलों के मेलबलि चढ़ाए।"

"याजक" शब्द का अर्थ है: "निकट आना"। व्यवस्था में, यह उसके लिए इस्तेमाल किया गया है जो ईश्वरीय उपस्थिति के निकट आता है (निर्ग. 19:22; 30:20)। यह हारून के पुत्रों के लिए अकसर इस्तेमाल किया गया है, परन्तु इसका कहीं बड़ा उपयोग भी है। यह मलिकिसिदिक (उत्प. 14:18), यित्रो (निर्ग. 3:1), निर्गमन 19:22 में जिक्र किए गए याजकों के लिए भी इस्तेमाल किया है, जिन्होंने हारून के याजकपद के नियुक्त किए जाने से पहले याजकों का काम किया था।

गिनती 16:5 में, हम तीन चीजें देखते हैं जिनका सम्बंध पुराने नियम के याजकपद से है, "...यहोवा दिखला देगा कि उसका कौन है, और पवित्र कौन है, और उसको अपने समीप बुला लेगा; जिसको वह आप चुन लेगा उसी को अपने समीप बुला भी लेगा।"

- अ. यहोवा के लिए अलग किए थे, "उसका कौन है।"
- आ. पवित्र, "... और पवित्र कौन है..."
- इ. परमेश्वर के समीप आने के लिए चुना गया, "... उसको अपने समीप बुला लेगा।"

इनमें से पहला याजक की स्थिति प्रकट करता है। वह पवित्र किया गया है: संसार से और परमेश्वर के लिए अलग किया गया है।

दूसरा उसकी दशा प्रकट करता है। वह पवित्र है - प्रभु के लिए समर्पित है। परमेश्वर को चढ़ाया गया हर पात्र प्रभु के लिए पवित्र हो जाता था। (लैव्य. 27:28)

तीसरा उसकी सेवा और कार्य प्रकट करता है - परमेश्वर के समीप आना। यह हर कार्य की बात करता है जिसे याजक करता था। क्योंकि याजकपद लोगों का प्रतिनिधित्व करता था, उनका कार्य भी आवस्यक तत्त्व दिखाते थे जिन पर सारा वाचा का समाज आधारित था। उन्हें होना था:

- अ. एक बुलाए गए, अलग किए गए लोग
- आ. एक पवित्र देश, एक विशेष लोग
- इ. राज-पदधारी याजकों का समाज (निर्ग. 19:5-6)।

नया नियम भूमिका का वर्णन करता है जिसे परमेश्वर ने उसके नई वाचा के लोगों के लिए ठहराया है

1. हम "इकलीसिया" हैं - बुलाई गई मण्डली। पाप के मिस्र, और शैतान के राज्य में से बुलाए गए; परमेश्वर और उसके प्रिय पुत्र के राज्य के लिए अलग किए गए। (कुलु. 1:13)
2. हमें एक पवित्र लोग होना है। परमेश्वर के साथ संगति और सहभागिता के लिए पवित्रता आवश्यक है। "पवित्रता के...बिना कोई प्रभु को कदापि नहीं देखेगा।" (इब्रा. 12:14)
3. परमेश्वर के निकट आना और आत्मिक बलिदान चढ़ाना। "...याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं।" (1 पतरस 2:5)
   "...हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल ... परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें।" (इब्रा. 13:15)

याजकपद के कुछ अतिरिक्त पहलुओं पर भी विचार करो

1. पुत्रत्व। परमेश्वर ने हारून के पुत्रों को याजक होने के लिए चुना था (निर्ग. 6:18-20; 28:1)। हारून पहला महा याजक था। हम परमेश्वर के पुत्र, और हमारे महा याजक - यीशु मसीह के वंशज हैं।

2. अभिषेक। हारून के पुत्रों को मूसा ने याजक होने के लिए अभिषेक किया था। हमें भी, यीशु मसीह ने, परमेश्वर के राजा और याजक होने के लिए अभिषेक किया है। (प्रकाशित. 5:10)

3. सम्पूर्णता। लैव्य. 21:17-21। "...जिस किसी के कोई भी दोष हो वह अपने परमेश्वर का भोजन चढ़ाने के लिए समीप न आए...।"

4. शुद्धीकरण। याजकों को तम्बू में प्रवेश करने के पहले उनके हाथ और पैर धोने होते थे। निर्ग. 30:17-21; 40:30-32

5. वस्त्र। जब तम्बू में काम न भी कर रहे होते थे, याजक एक विशेष वस्त्र पहनते थे। वे सदा प्रभु के याजकों के रूप में पहचाने जाते थे। परन्तु, जब वे मन्दिर में सेवा करते थे, उन्हें उनके औपचारिक वस्त्र पहनने होते थे, जिसके चार टुकड़े होते थे। (चार परमेश्वर के राज्य का अंक है।) इस प्रकार, वे राज्य के सेवक हैं दिखते थे।

   अ. सनी के कपड़े की जाँघिया। (निर्ग. 28:42)
   आ. अंगरखा। एक टुकड़े का और बिना सीवन के।
   इ. एक रंगबिरंगा कमरबन्द, वही चार रंग जो उस परदे में थे जो पवित्र स्थान के सामने लटका होता था।
   ई. सनी के कपड़े की पगड़ी।

6. अभिषेक। याजकपद के लिए व्यक्ति को तम्बू के द्वार पर लाया जाता था।

   अ. उसके शरीर को पानी से धोया जाता था।
   आ. उसे औपचारिक वस्त्र पहनाए जाते थे।
   इ. उसे पवित्र तेल के साथ अभिषेक किया जाता था (पवित्र आत्मा का प्रतीक) (निर्ग. 30:30)।

7. याजकीय सेवा। (तम्बू में - प्रभु की)

   अ. आँगन में
   बलिदान की वेदी पर आग लगातार जलती रहे, कभी बुझने न पाए। (लैव्य. 6:9,13)
   वेदी पर से राख को हटाना। (लैव्य. 6:10-11)
   सुबह और शाम के बलिदान चढ़ाना। (निर्ग. 29:38-44)
   प्रतिदिन के बलिदान के बाद, लोगों को आशीर्वाद देना। (लैव्य. 9:22; गिनती 6:23-27)
   वेदी पर बलिदान चढ़ाना।
   चाँदी की तुरही, या जुबली सींग बजाना।

   आ. पवित्र स्थान में
   सोने की धूपवेदी पर सुबह और शाम धूप जलाना।
   हर शाम दीवट साफ करने और जलाने।
   हर सब्त को मेज पर भेंट की रोटियाँ रखना।

यह याजकीय कामों की एक संक्षिप्त रूपरेखा है, परन्तु इससे हमें हमारे परमेश्वर के लिए "याजकों का राज्य" के रूप में सेवा करने का मार्गदर्शन मिलता है।

हमें यह भी होना है:

1. **परमेश्वर के पुत्र**। केवल सच्चे नया जन्म पाए परमेश्वर के पुत्र ही राज-पदधारी याजकों का समाज हैं। नए जन्म के द्वारा ही मनुष्य का आत्मा परमेश्वर के लिए जीवित होता है। जब तक यह नहीं होता, हम उस आत्मिक आराधना को देने के योग्य नहीं हैं जिसे पिता खोजता है (यूहन्ना 4:24)। आत्मिक आराधना है परमेश्वर के आत्मा का हमारे उद्धार पाए, नए किए आत्मा के द्वारा आराधना करना।

2. **अपने परमेश्वर के लिए याजक**। परमेश्वर के दोबारा जन्मे बच्चों के रूप में, हम "...राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा..." हैं (1 पतरस 2:9)। मसीह ने हमें "हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया" है (प्रका. 5:10)।

3. **सम्पूर्ण**। जिन शारीरिक दोषों और कमियों की लैव्य. 21:17-21 में बात की गई है और पुरानी वाचा के याजकपद पर लागू होते हैं प्रतीकात्मक हैं, और प्रतीकात्मक भाव से, आज के आराधकों पर लागू होते हैं। यह शारीरिक कमियाँ नहीं हैं जो हमें एक याजक का काम करने से रोकती हैं, ये आत्मिक कमियाँ हैं जिनका प्रतीक शारीरिक कमियाँ हैं। परमेश्वर सम्पूर्ण व्यक्ति की स्तुतियाँ चाहता है। हमारे मसीही जीवन वैसे ही होने चाहिए जैसा हम परमेश्वर की अपनी आराधना में कहते हैं। एक झरना एक ही समय में मीठा और कड़वा पानी नहीं दे सकता है। न ही एक मुँह आशीष और शाप दोनों दे सकता है (याकूब 3:9-11)। ऐसा नहीं हो सकता कि हम परमेश्वर की स्तुति करें और उसी मुँह से मनुष्य को शाप दें। ऐसा नहीं होना चाहिए। (आ. 10)

4. **शुद्ध किया गया**। याकूब ने उसके घराने से कहा, "तुम्हारे बीच में से जो पराए देवता हैं, उन्हें निकाल फेंको; और अपने अपने को शुद्ध करो, और वस्त्र बदल डालो।" (उत्प. 35:2)। इससे पहले वे बेतेल को गए, प्रभु की वेदी बनाने के लिए, कि वे उसकी आराधना करें जिसने "संकट के दिन मेरी सुन ली"।

   मूसा ने भी आग्रह किया कि इस्राएल, तीसरे दिन प्रभु के प्रदर्शन की तैयार के लिए, अपने आपको पवित्र करो और उनके वस्त्र धो ले (निर्ग. 19:10)।
   परमेश्वर ने भी आज्ञा दी कि याजक तम्बू में प्रवेश करने से पहले उनके हाथ और पैरों को हौदी में धो लिया करें। (निर्ग. 3:18-31; 40:12-16)
   नदाब और अबीहू परमेश्वर की मागों के अनुसार करने में असफल रहने के कारण जिन्हें परमेश्वर ने याजकों के लिए ठहराया था जो उसके सामने सेवा करने वाले थे, प्रभु के सामने मर गए (लैव्य. 10:1-3)। परमेश्वर ने कहा, "जो मेरे समीप आए, अवश्य है कि वह मुझे पवित्र जाने, और सारी जनता के सामने मेरी महिमा करे।"
   हमें इससे चेतावनी लेनी है। प्रभु के सामने आना कोई हल्की बात नहीं है। पुराने नियम में एक याजक का काम करना एक भारी जिम्मेवारी था। आज भी कोई कम नहीं है। असल में, यह अब एक विशेषाधिकार है। हमारी वाचा की शर्ते पुरानी वाचा से कहीं श्रेष्ठ है। यह महत्त्वपूर्ण है कि हम आराधना की अपनी तैयारी में लापरवाह न हों।
   अनेक मण्डलियों की याजकीय सेवकाई बंद हो गई है क्योंकि वे आराधकों की शर्तो को रखने में सावधान नहीं थे जिन्हें परमेश्वर ने चाहा है।

   लहू, वचन, और आत्मा से शुद्ध होने के पाँच परिणामों पर ध्यान दो:

   अ. <u>शुद्ध विवेक।</u> इब्रा. 10:22। परमेश्वर के सामने आने के लिए हमें अब पशुओं के लहू को अपने ऊपर नहीं छिड़कना है। मसीह के बलिदान ने सब कुछ पूरा कर दिया है जो पुराने में प्रतीक था। अब यह मसीह का लहू है जो हम पर छिड़का गया है। जैसे हम, विश्वास से, इसके सामर्थ्य को लेते हैं, हमारे हृदय "विवेक का दोष दूर करने के लिए हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप आएँ।" (इब्रा. 10:22)। केवल इसी तरीके से हम विश्वास के पूरे आश्वासन के साथ परमेश्वर के समीप आ सकते हैं।

आ. <u>एक मन।</u> भजन 86:11। "...मुझ को एक चित कर कि मैं तेरे नाम का भय मानूँ।" "परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगो, अपने हृदय को पवित्र करो। प्रभु के सामने दीन बनो तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा।" (याकूब 4:8,10)
यहाँ हमारे पास नई वाचा में पुरानी वाचा का तुल्य है, प्रभु की सेवा करने से पहले हाथों को धोना। हमें दुचित्तेपन से अपने हृदयों को शुद्ध करना है। हमें आराधना चढ़ाने की कोशिश नहीं करनी है जब तक हमारा मन पूरी तरह प्रभु पर लगा नहीं है। जब हमारे मन दूसरी चीजों पर लगे हुए हैं स्तुति चढ़ाना परमेश्वर के व्यक्ति और चरित्र का भारी अपमान है।

इ. <u>एक शुद्ध हृदय।</u> भजन 24:3-4। "यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है? और उसके पवित्र स्थान में कौन खड़ा हो सकता है? जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है, जिसने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया, और न कपट से शपथ खाई है।" एक शुद्ध हृदय सही अभिप्रायों का संकेत देता है। हम परमेश्वर की स्तुति क्यों कर रहे हैं? क्या हमारे अभिप्राय सही हैं, या क्या हमारे गुप्त बाहरी अभिप्राय हैं?

ई. <u>एक दीन हृदय और आत्मा।</u> भजन 51:17। "टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता।" "टूटा मन" जिसकी यहाँ दाऊद बात कर रहा है एक टूटा हुआ दिल वाला व्यक्ति नहीं है जो उदास है। एक टूटा मन एक आत्मा है जो परमेश्वर के काम के द्वारा टूटा हुआ है, जैसे एक घोड़े को वश में किया होता है - एक आत्मा जिसने अनुशासन सीखा है और मसीह की प्रभुता के अधीन है। एक टूटा मन एक पश्चातापी और दीन हृदय है। दाऊद के हृदय की दशा ऐसी ही थी जब बतशीबा के साथ पाप के बाद प्रभु ने उसका कड़ाई से न्याय किया था।

उ. <u>आदर और भक्तिपूर्ण भय।</u> भजन 89:7। "परमेश्वर पवित्र लोगों की गोष्टी में अत्यन्त प्रतिष्ठा के योग्य, और अपने चारों ओर सब रहनेवालों से अधिक भययोग्य है।"

5. **वस्त्र पहने हुए**। हमें, पुराने नियम के याजकों के समान, विशेष वस्त्र पहनने के लिए नहीं बुलाया गया है, परन्तु आत्मिक रूप से, एक असली भावना है जिसमें हमें वस्त्र पहनने हैं।

अ. उद्धार के वस्त्र पहनना

भजन 132:16 में, परमेश्वर ने कहा था "... याजकों को मैं उद्धार का वस्त्र पहनाऊँगा...।" याजकों के सनी के वस्त्र दो चीजों के प्रतीक थे।

i. शरीर को ढाँपाना, "ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न करने पाए।"
ii. परमेश्वर ने ऊन के वस्त्रों के बदले सनी के वस्त्र ठहराए थे क्योंकि सनी के वस्त्रों से पसीना नहीं आता है - पसीना शाप और अपनी कोशिशों का प्रतीक है। (उत्प. 3:19)। और सनी के वस्त्रों को अच्छी तरह धोया जा सकता है। ऊन इतना साफ नहीं होता है।

आ. दीनता के वस्त्र पहनना

1 पतरस 5:5 में, हमें उपदेश दिया गया है, "...दीनता से कमर बाँधे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है...।" शारीरिक घमण्ड का परमेश्वर की उपस्थिति में कोई स्थान नहीं है।

इ. धार्मिकता के वस्त्र पहनना

"... एक ऐसी बड़ी भीड़ ... श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिए हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है।" (प्रका. 7:9)
हमें प्रका. 19:8 में बताया गया है कि महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं।

ई. सामर्थ्य के वस्त्र पहनना

लूका 24:49 में, यीशु ने उसके चेलों को आज्ञा दी थी कि जब तक वे स्वर्ग से सामर्थ्य न पा लेते, यरूशलेम में ही रहें।

जैसे पुराने नियम के याजकों को तेल से अभिषेक दिया जाता था, उनकी सेवाओं के शुरू करने से पहले, उसी प्रकार हमें भी याजकों के रूप में अपना काम उचित रूप से करने के लिए आत्मा के सामर्थ्य को पहन लेना है।
यीशु ने भी अपनी सेवा तब तक आरम्भ नहीं की थी जब तक वह यरदन पर आत्मा के सामर्थ्य से भर न गया था। (मत्ती 3:16)

6. **नई वाचा के याजकों के रूप में सेवक परमेश्वर को चढ़ाते हैं:**

अ. अपने आप को। रोमियों 12:1, "इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।"
अपने सारे अस्तित्व को, पूरा और अनन्तकाल के लिए उसका होने के लिए चढ़ाना। सब कुछ जो मुझ में है, उसके साथ प्रभु को धन्य कहना (भजन 103:1)।
1 थिस्स. 5:23, "तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।"
हम तीन भाग हैं: आत्मा, प्राण और देह। दाऊद कहता है "जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे।" (भजन 103:1)

i. आत्मा - "मेरी आत्मा मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर से आनन्दित हुई," (लूका 1:47)।
ii. प्राण - हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह..." (भजन 103:1)।
iii. देह - "... सारे प्राणी उसके पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहते रहें" (भजन 145:21)।

आ. स्तुतिरूपी बलिदान। इब्रा. 13:15:16.
"स्तुतिरूपी बलिदान" यह संकेत देता है कि ऐसा करना सदा आसान या सुविधाजनक नहीं होता। परन्तु हमें प्रभु की स्तुति हर समय और न कि जब करना आसान हो करनी है। हमारा स्तुतिरूपी बलिदान हमारे "होठों का फल" है - स्तुति जो बोली जाती है - शब्दों के साथ बोली जाती है।

इ. स्तुति का प्रदर्शन। "इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो।" (1 पत. 2:9)

ई. भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाना। इफि. 5:19; कुलु. 3:16.

उ. आत्मिक वरदान। 1 कुरिं. अध्याय 12, 13, 14.

ऊ. सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए है। (1 कुरिं. 10:31).

ए. हमारी चीजें। "अपनी सम्पत्ति के द्वारा, और अपनी भूमि की सारी पहली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना; इस प्रकार तेरे खत्ते भरे पूरे रहेंगे, और तेरे रसकुण्डों से नया दाखमधु उमण्डता रहेगा।" (नीति. 3:9-10)
पुरानी वाचा में, परमेश्वर ने आज्ञा दी थी कि जब याजक उसके सामने आएँ, उन्हें कभी भी "खाली हाथ" नहीं आना है। उनके पास सदा एक भेंट होनी चाहिए। (1 इति. 16:29; निर्ग. 23:15; 34:20; व्यवस्था. 16:17)
हमें उसके सामने कभी भी खाली हाथ नहीं आना है। हमें स्तुति, आराधना, भक्ति और धन्यवाद लेकर आना, और अपनी स्तुति को गीतों, आनन्द, और अपनी चीजों के साथ लेकर आना है।

अध्याय 2 स्तुति की आत्मा

यदि हम स्तुति का विश्लेषण करें, तो हम उसके गूदे में क्या पाएँगे ? स्तुति का सत्त्व, तत्त्व, और प्रकृति क्या है ? सच्ची स्तुति कैसी होती है ? इसमें क्या आवश्यक तत्त्व शामिल होते हैं ?

आओ सबसे पहले हम पुराने नियम में इस्तेमाल किए गए शब्दों पर जिन्हें "स्तुति" अनुवाद किया गया है एक दृष्टि डालें, जिससे उनका कुछ अर्थ और महत्त्व का पता लगा सकें जो अर्थ होने के लिए उन्हें इस्तेमाल किया गया है।

1. **हलाल** (Hallal), स्तुति के लिए पुराने नियम में सबसे बराम्बार इस्तेमाल होने वाला शब्द है। यह 88 बार पाया जाता है। इसका मूल अर्थ है: "एक स्पष्ट आवाज पैदा करना।" इस का आगे अर्थ है: "घमण्ड करना, उत्सव मनाना, अत्यधिक प्रशंसा करना, गर्व करना...।" इसलिए, सच्ची स्तुति में एक स्पष्ट और भिन्न आवाज होती है। किसी प्रकार की उलझन नहीं होनी चाहिए कि क्या इरादा किया गया था। यह कया है साफ-साफ पहचाना जाना चाहिए। यह एक उत्सव का स्वर है, प्रभु का उत्सव।

2. **हिल्लुवी** (Hilluwi, हलाल से निकलता है), "फसल के समापन के लिए धन्यवाद का उत्सव मनाना" है। ऐसी स्तुति को आमोद-प्रमोद में व्यक्त किया जाता है। किसी भी कृषीय देश में फसल के बाद का दृश्य इस शब्द के सार को प्रकट करेगा। बेचैनी के साथ महिनों की प्रतीक्षा आखिरकार समाप्त हो गई है। फसल को सुरक्षित इकट्ठा कर लिया गया है। कठिन परिश्रम समाप्त हो गया है, औजारों को रख दिया गया है, फसल को सुरक्षित रखा गया है। यह फसल के समापन को सफलतापूर्वक मनाने का समय है। यह आमोद-प्रमोद और मनाने का समय है। गीत गाना और नाचना होता है। आनन्द मनाना धन्यवाद और स्तुति की अभिव्यक्ति है।

3. **तेहिल्ला** (Tehilla, हलाल से निकला एक दूसरा शब्द है), इस समय बल गीत गाने पर है। इस प्रकार, हम अपना हलाल, अपना उत्सव गाते हैं। हम परमेश्वर की स्तुति का एक स्पष्ट गीत गाते हैं। हम गीत में उसे मनाते हैं। हमारे बहुत सारे गीत और भजन अस्पष्ट हैं। वे दोनों स्पष्ट और अचूक परमेश्वर की स्तुति के गीत होने चाहिए। हमें, शब्दों और संगीत दोनों में, उसके विषय में घमण्ड करना है।

4. **शबाच** (shabach), इसका अर्थ है: "ऊँची आवाज में जयजयकार करना, विजय की एक पुकार, जय में घमण्ड करना।"
   स्तुति को सदा कोलाहलपूर्ण नहीं होना है। हमें सदा चिल्लाना नहीं है। परन्तु ऐसे अवसर होते हैं जब एक जय की जयजयकार ही सही तरीका होता है जिसमें हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं। भजन 47:1, "... ऊँचे शब्द से परमेश्वर के लिए जयजयकार करो।"
   जब ऐसे अवसर आते हैं, बेमन से मत करो, आपकी स्तुति की जयजयकार जोर से हो।

5. **ज़ामार** Zamar, अर्थ है: "तारों को छूना या बजाना।" यहाँ संगीत वाद्यों के साथ परमेश्वर की स्तुति करने का एक स्पष्ट संदर्भ है। इसमें "संगीत वाद्यों के साथ स्तुति गाने" का भाव भी है। सब प्रकार के वाद्यों के साथ प्रभु के लिए बजाना, परमेश्वर के लिए स्तुति का एक गीत गाना कितना अद्भुत है।

6. **यादाह** Yadah, जिसका मूल अर्थ है: "धन्यवाद बोलना।" परन्तु, इसमें "हाथ बढ़ाने" का विचार भी है, हाथ बढ़ाते और परमेश्वर की ओर उठाते हुए धन्यवाद देना।

7. **तोदाह**, Towdah, यह शब्द उसी मूल शब्द से आता है जैसे यादाह है, और स्पष्ट है बहुत समान अर्थ है, परन्तु थोड़ा अधिक निश्चित है। इसका अर्थ है: "भक्ति और धन्यवाद में हाथ बढ़ाना।"

8. **बाराक**, Barak, जिसका अर्थ है: "आदर में घुटने टेकना।" यहाँ, सारे शरीर की मुद्रा स्तुति के विषय में बहुत कुछ कहती है। किसी के सामने झुकना दीनता दिखाता और उसकी श्रेष्ठ मूल्य और स्थिति प्रदर्शित करता है।

<u>आओ हम उन कुछ संघटकों के विषय में एक क्षण के लिए सोचें जिन्हें हम स्तुति की इन किस्मों में देखते हैं:</u>

अ. वे आत्मिक रवैयों की शारीरिक अभिव्यक्तियाँ हैं। वे आत्मिक प्रत्यक्षज्ञान का शारीरिक अभिनय और प्रदर्शन हैं। स्तुति और आराधना परमेश्वर और उसकी महानता के प्रकटीकरण की ओर एक हृदय की भीतरी प्रतिक्रिया है। इसे एक सच्ची स्तुति बनने के लिए इसे प्रकट होना अवश्य है।

आ. अधिकतर स्तुति में आवाज सम्मिलित होती है। (सम्भव अपवाद बाराक हो सकता है - आदर में घुटने टेकना)। आराधना की ऐसी मुद्रा चुप रहकर दिखाई जा सकती है। परन्तु, हम घुटने टेककर भी गीत गा या जयजयकार कर सकते हैं।

इ. शारीरिक क्रिया होती है। स्तुति में सक्रिय शारीरिक योगदान लगता है। यह सदा खामोश और निष्क्रिय नहीं हो सकती है। स्तुति कुछ ऐसा है जिसे हम करते हैं।

ई. भावात्मक रिहाई हो सकती है। परमेश्वर की स्तुति करना एक भावात्मक क्रिया नहीं है। यह एक आत्मिक क्रिया है। परन्तु, यह भावात्मक रिहाई को अनिवार्य बना देता है। बहुत सारे मसीही भावात्मक अभिव्यक्ति से डरते हैं। वे सदा इसे दबाने का प्रयत्न करते हैं, सोचते हैं यह शारीरिक और सांसारिक है। स्तुति की बाइबल की अभिव्यक्तियों में एक सकारात्मक, नियंत्रित भावात्मक रिहाई जरूरी है। परमेश्वर ने हमें हमारी भावनाएँ दी हैं, और वे उसकी महिमा के लिए हैं। दाऊद कहता है "जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे" (भजन 103:1)। इसमें हमारी भावनाएँ सम्मिलित हैं। मानवीय भावनाओं को अभिव्यक्ति चाहिए। यदि हम एक सकारात्मक और सही रिहाई नहीं देते, तब एक नकारात्मक गलत रिहाई होगी। परमेश्वर की स्तुति करना आपकी भावनाओं को रिहाई देने का सबसे सही तरीका है। यह परमेश्वर द्वारा नियुक्त तरीका है।

उ. आदर का एक रवैया। स्तुति की हर सच्ची अभिव्यक्ति आदरपूर्ण होनी चाहिए। आदर है किसी को उचित रूप से सम्मान और महत्त्व देना। स्तुति की क्रियाओं को कभी भी अनादरकारी उल्लंघन नहीं होने देना है। परमेश्वर की स्तुति करना आनन्द लेने का एक साधन नहीं है।
स्तुति मूल रूप से मनुष्य के आनन्द के लिए नहीं है, हालाँकि इसे करते हुए हमें आनन्द मिलता है। इसे परमेश्वर के आदर की एक अभिव्यक्ति होना है, और हमेशा होना चाहिए। स्तुति में हमारी भावनाओं की रिहाई में, जो बाइबल की और उचित दोनों है, हमें असंयम होने और मात्र शारीरिक प्रदर्शन से बचना चाहिए। सच्चा आदर स्तुति का एक अनिवार्य संघटक है।

अध्याय 3 हम प्रभु की स्तुति क्यों करें?

भजन 47:7 कहता है "... समझ बूझकर बुद्धि से भजन गाओ।"
<u>हमें पता होना चाहिए हम परमेश्वर को स्तुति क्यों चढ़ा रहे हैं। यहाँ कुछ बाइबल के कारण दिए गए हैं कि हमें ऐसा क्यों करना चाहिए:</u>

अ. वह जो है उसके कारण। "याह की स्तुति करो..." (भजन 149:1)। दूसरे शब्दों में, उसकी स्तुति करो क्योंकि वह प्रभु है। वह अन्तिम अधिकार है। सबसे ऊँचा सामर्थ्य। सब राजाओं का राजा और सब प्रभुओं का प्रभु। वह सब चीजों से पहले था और सब चीजों का सृजनहार है। इसलिए, वह सब चीजों से महान है। "यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है।" (भजन 48:1; 96:4)

आ. स्तुति परमेश्वर की महिमा करती है। "धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है..." (भजन 50:23)। निश्चय ही, इसे परमेश्वर के सब लोगों की सबसे बड़ी इच्छा होनी चाहिए, उसकी महिमा करना।

इ. क्योंकि परमेश्वर हमें करने की आज्ञा देता है। "प्रभु की स्तुति करो" एक सुझाव या विनती नहीं है। यह एक आज्ञा है।

ई. उसके सारे उपकारों के लिए प्रभु को धन्य कहो। (भजन 103:1-3)

उ. उसकी भलाई के लिए उसकी स्तुति करो। (भजन 107:21)

ऊ. उसके पराक्रम के कामों के लिए उसकी स्तुति करो। (भजन 150:2)

ए. यहोवा का धन्यवाद करना भला है। (भजन 92:1-2; 147:1)

ऐ. प्रभु स्तुति के योग्य है। (2 शमूएल 22:4; भजन 18:3)

ओ. स्तुति परमेश्वर की बड़ाई करती है। (भजन 69:30)

औ. धर्मी लोगों को स्तुति करना शोभा देता है। (भजन 33:1)। शोभा देता है। परन्तु दुर्भाग्यवश, कुछ मसीहियों को लगता है कि परमेश्वर की स्तुति करना अशोभनीय और अनुचित है। वे सोचते हैं कहीं वे अशोभनीय न लगें। कुछ कारणों से, वे सोचते हैं कि यह तथाकथित प्रतिष्ठा मसीहियों के लिए उचित रवैया है। परन्तु, बाइबल उलटा दृश्य देती है। परमेश्वर कहता है स्तुति के वस्त्र उनके ऊपर शोभा देते हैं। परमेश्वर में आनन्द मनाना और प्रभु की स्तुति करना परमेश्वर की सन्तान के लिए उचित हैं। मैं तो मनुष्यों के समर्थन से परमेश्वर के समर्थन को अधिक महत्त्व दूँगा।

अं. परमेश्वर उसके लोगों की स्तुति में विराजमान होता है। (भजन 22:3)। इस्राएल का पवित्र परमेश्वर हमारी स्तुतियों में विराजमान होता है। यदि हमारा हृदय स्तुति से भरा है तब यह परमेश्वर से भरा है, क्योंकि वह हमारी स्तुतियों में विराजमान होता है। यह हमारे घर या कलीसिया के विषय में भी सत्य है। उन्हें स्तुतियों से भर दो, और वे परमेश्वर की उपस्थिति से भरे होंगे। हम स्तुति का रवैया बनाकर अपने आपको परमेश्वर की उपस्थिति से घेरे रख सकते हैं। तब हम अपनी समस्याओं, कठिनाइयों और हानिकर परिस्थितियों के बदले उसकी उपस्थिति की अधिक जानकारी रखेंगे। परमेश्वर की स्तुति करने के फलस्वरूप अनेक आशीषें अनुभव की जा सकती हैं।

अः. स्तुति सामर्थ्य पैदा करती है। भजन 84 में दाऊद कहता है, "क्या ही धन्य हैं वे, जो तेरे भवन में रहते हैं; वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे... क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता है... वे बल पे बल पाते जाते हैं...।" जो मनुष्य परमेश्वर की स्तुति करता है उसकी शक्ति के लिए प्रभु है। वह स्तुति के द्वारा प्रभु के आनन्द को जानता है, और प्रभु का आनन्द उसका सामर्थ्य है। (नहे. 8:10)

क. स्तुति करनेवाला मनुष्य प्रभु को उसके सुख का मूल जानता है, और परमेश्वर उसके मनोरथों को पूरा करता है। (भजन 37:4)। परन्तु कई लोग कहते हैं, "यदि परमेश्वर मेरे हृदय की इच्छाओं को पूरा कर दे, तो मैं इसके लिए उसकी स्तुति करूँगा।" ईश्वरीय क्रम इसका उलटा है। हम उसकी स्तुति करते, उसमें आनन्दित होते हैं, और तब वह हमारे हृदय की इच्छाओं को पूरा करता है। क्योंकि स्तुति करनेवाले हृदय में सही इच्छाएं होती हैं। उसकी प्राथमिकताएं व्यवस्थित हैं, और फिर परमेश्वर उन इच्छाओं को पूरा करने में आनन्दित होता है।

ख. स्तुति जय से पहले आती है। 2 इतिहास 20 में, राजा यहोशापात ने परमेश्वर के लोगों की उनके शत्रुओं के साथ युद्ध में अगुआई की। परमेश्वर ने उसे निर्देश दिया कि वह प्रभु के लिए गवैयों को नियुक्त करे। वे सेना के आगे परमेश्वर की स्तुति करते और कहते हुए चले, "यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है। जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों, सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे, घातकों को बैठा दिया और वे मारे गए।"
कल्पना करो कि एक सेना की अगुआई एक गायक-मण्डली कर रही है। इस तरीके से युद्ध में जाना स्वाभाविक मन के लिए कितना अजीब है। परन्तु हमारे युद्ध के हथियार शारीरिक नहीं हैं। वे गढ़ों को ढा देने के लिए सामर्थी हैं। (2 कुरिं. 10:3-4)। इन दिनों जैसे हम अपने शत्रु का सामना करते हैं, हमें स्तुति के सामर्थ्य को पहचानने की आवश्यकता है और अपने मुँह में परमेश्वर की स्तुतियों को लिए युद्ध में जाना है। तब हम परमेश्वर के उद्धार को देखने की अपेक्षा कर सकते हैं। जो लोग प्रभु की स्तुति करना सीखते हैं वही लोग हैं जो उसकी उपस्थिति और सामर्थ्य को प्रकट करेंगे।

किसे प्रभु की स्तुति करनी चाहिए?

अ. सब मनुष्यों को सब जगह। (भजन 145:21; 148:11,13; 150:6)
आ. सब प्राणियों को। (145:21)

इ. सब कुछ जिसमें में प्राण है। (भजन 150:6)
ई. परमेश्वर के लोगों को। (भजन 67:3,5; 78:4; 79:13)
उ. धर्मियों को। (भजन 140:13)
ऊ. सन्तों को। (145:10)
ए. उद्धार पाए हुओं को। (भजन 107:1-2)
ऐ. जो प्रभु का भय मानते हैं। (भजन 22:23)
ओ. जो सत्य को जानते और विश्वास करते हैं। (1 तीमु. 4:3
औ. परमेश्वर के सेवकों को। (भजन 113:1; 134:1; 135:1)
अं. उसके सारे स्वर्गदूत। (भजन 148:2)
अः. सब देश। (भजन 148:3-10)

<u>हम कब प्रभु की स्तुति करें?</u>

अ. सुबह से रात तक। "उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक, यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है।" (भजन 113:3)
आ. दिन भर। (भजन 71:8) "मेरे मुँह से तेरे गुणानुवाद, और दिन भर तेरी शोभा का वर्णन बहुत हुआ करे।"
इ. जब तक हम जीवित हैं। (भजन 146:2) "मैं जीवन भर यहोवा की स्तुति करता रहूँगा, जब तक मैं बना रहूँगा तब तक मैं, अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूँगा।"
ई. हर समय। (भजन 34:1) "मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।"
उ. उदासी के समयों में। (भजन 42:11) "हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा।"
ऊ. हर बात में। (इफि. 5:20) "सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।"

<u>हम कहाँ प्रभु की स्तुति करें?</u>

अ. भजन 22:22, "...सभा के बीच मैं तेरी प्रशंसा करूँगा।"
आ. भजन 22:25, "बड़ी सभा में मेरा स्तुति करना तेरी ही ओर से होता है।"
इ. भजन 57:9, "हे प्रभु, मैं देश देश के लोगों के बीच तेरा धन्यवाद करूँगा; मैं राज्य राज्य के लोगों के बीच में तेरा भजन गाऊँगा।"
ई. भजन 104:4, "उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो।"
उ. भजन 107:32, "और सभा में उसको सराहें, और पुरनियों की बैठक में उसकी स्तुति करें।"
ऊ. भजन 108:3, "हे यहोवा, मैं देश देश के लोगों के मध्य में तेरा धन्यवाद करूँगा, और राज्य राज्य के लोगों के मध्य में तेरा भजन गाऊँगा।"
ए. भजन 109:30, "मैं....बहुत से लोगों के बीच में उसकी स्तुति करूँगा।"
ऐ. भजन 149:1, "...भक्तों की सभा में...।"
ओ. भजन 150:1, "...पवित्रस्थान में...।"

अध्याय 4 स्तुति परमेश्वर की आशीष कैसे लाती है

प्रकृति में एक चक्र है जो पृथ्वी पर बड़ी आशीष लाता है। यह जल-विज्ञान चक्र कहलाता है। इस प्रक्रिया में वाष्पीकरण के द्वारा बादल बनते हैं और पृथ्वी को सींचते हैं, और इसे फलदायक और उपजाऊ बनाते हैं।
बाइबल इसके विषय में बहुत कुछ कहती है। इसे आत्मिक सिद्धान्त चित्रित करने के लिए इस्तेमाल किया गया है जो हमें सिखाता है कि हमारी स्तुतियों की मात्रा के अनुसार जो स्वर्ग को जाती हैं, परमेश्वर हम पर अपनी आशीषों को बहुतायत से उँडेलेगा।

अय्यूब 36:29, "फिर क्या कोई बादलों का फैसला और उसके मण्डल में का गरजना समझ सकता है?" आ. 30, "देख, वह अपने उजियाले को चारों ओर फैलाता है, और समुद्र की थाह को ढाँपता है।" परमेश्वर सूर्य को समुद्र पर चमकाता है। गर्मी से पानी भाप बनता है। गर्म भाप के रूप में, यह स्वर्ग की ओर उठता है जहाँ भाप बादल बनते हैं। जब भाप ठण्डी होती है, वे आसवन होती है और पानी की बूँदें बनती हैं। इससे बारिश बनती है जो आसवन होकर भरपूरता के साथ मनुष्य पर गिरती है (आ. 29)।

यह प्राकृतिक प्रक्रिया आत्मिक सच्चाई चित्रित करती है:

अ. जैसे सूर्य समुद्र पर चमकता है वैसे ही परमेश्वर उसकी आशीषें मानवजाति पर चमकाता है।

आ. उन आशीषों के उत्तर में जिन्हें उसने हम पर चमकाया है, मनुष्य का हृदय परमेश्वर की ओर होना चाहिए।

इ. जैसे समुद्र पर सूर्य के चमकने से भाप बनती है वैसे ही मनुष्य की स्तुति परमेश्वर की ओर जानी चाहिए।

ई. वो स्तुतियाँ आशीषों के बादल बनते हैं।

उ. परमेश्वर उनको बारिश में आसवन होने देता है जो पृथ्वी पर गिरती है।

ऊ. बारिश की आशीष पृथ्वी को फलदायी और उपजाऊ बनाती है जिससे बोने के लिए बीज और खाने के लिए रोटी मिलती है।

ए. अतिरिक्त बारिश से नदियाँ बनती हैं जो समुद्र में चली जाती हैं, जहाँ से वे शुरू में आई थीं और सारी प्रक्रिया दोबारा आरम्भ होती है।

निम्नलिखित पवित्रशास्त्रों पर विचार करो जो इस प्रक्रिया को चित्रित करते हैं।

अ. आमोस 5:8; 9:6, "वो...समुद्र का जल धरती पर बहा देता है, उसी का नाम यहोवा है।"
आमोस एक किसान था, और उस प्रक्रिया को अच्छी तरह समझता था जिससे बारिश बनती है। यहाँ वह वाष्पीकरण की प्रक्रिया का वर्णन करता है। परमेश्वर समुद्र के पानी को भाप में बदलता है, और इस भाप से ही पृथ्वी पर बारिश होती है।

आ. भजन 147:7-8, "धन्यवाद करते हुए यहोवा का गीत गाओ; वीणा बजाते हुए हमारे परमेश्वर का भजन गाओ। वह आकाश को मेघों से छा देता है, और पृथ्वी के लिए मेंह की तैयारी करता है, और पहाड़ों पर घास उगाता है।"

इ. नीतिवचन 11:25, "उदार प्राणी हृष्ट पुष्ट हो जाता है, और जो दूसरों की खेती सींचता है, उसकी भी सींची जाएगी।" जैसे हम परमेश्वर की स्तुति गाते हैं, वह हमारी स्तुतियों में से आशीष के बादल बनाता है जिसमें से वह पृथ्वी पर बारिश उँडेलता है। आशीष की मात्रा स्तुति की मात्रा से निर्धारित होती है जिसे हम ने परमेश्वर को भेजा है। हमारी उदारता परमेश्वर के उदार प्रतिक्रिया को प्रेरित करती है। पृथ्वी पर मसीह के भावी सहस्त्राब्दि राज्य के दौरान, पृथ्वी के सारे राजाओं को यहोवा की उपासना करने को प्रतिवर्ष यरूशलेम जाना पड़ा करेगा। यदि वे ऐसा करने से चूकेंगे, परमेश्वर उनके देश से बारिस रोक देगा। (जकर्याह 14:17)। आराधना नहीं - बारिश नहीं।

ई. सभोपदेशक 1:7, "सब नदियाँ समुद्र में जा मिलती हैं, तौभी समुद्र भर नहीं जाता; जिस स्थान से नदियाँ निकलती हैं, उधर ही को वे फिर जाती हैं।"

उ. सभो. 11:3, "यदि बादल जल भरे हैं, तब उसको भूमि पर उण्डेल देते हैं...।"

ऊ. होशे 6:3, "... वह (प्रभु) वर्षा के समान हमारे ऊपर आएगा, वरन् बरसात के अन्त की वर्षा के समान जिस से भूमि सिंचती है।"

ए. यशायाह 45:8, "हे आकाश, ऊपर से धर्म बरसा, आकाशमण्डल से धर्म की वर्षा हो; पृथ्वी खुले कि उद्धार उत्पन्न हो; और धर्म भी उसके संग उगाए...।"

ऐ. जकर्याह 10:1, बरसात के अन्त में यहोवा से वर्षा माँगो, यहोवा से जो बिजली चमकाता है, और वह उनको वर्षा देगा और हर एक के खेत में हरियाली उपजाएगा।"

ओ. यशायाह 55:10, "जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहाँ यों ही लौट नहीं जाते, वरन् भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोनेवाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है।"

औ. याकूब 5:7, "इसलिए हे भाइयो, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो। देखो, किसान पृथ्वी की बहुमूल्य फसल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है।"

ये पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि प्रभु के आगमन से पहले अन्तिम दिनों में परमेश्वर का आत्मा उँडेला जाएगा। उस समय को "बरसात के अन्त में" का समय कहा जाएगा (जक. 10:1)। आत्मा स्वर्ग से बाढ़ के समान गिरेगा। योएल एक अपूर्व उद्गार की

भविष्यद्वाणी करता है, "बरसात की पहली वर्षा बहुतायत से देगा, और पहले के समान अगली और पिछली वर्षा को भी बरसाएगा।" (योएल *2:23*)
सामान्यतः इस्राएल में बारिश के दो मौसम होते थे। एक जिसके समय में बीज बोया जाता था। दूसरा, कई सूखे और झुलसे महिनों के बाद कटनी के लिए फसल को चपटा करने के लिए। इन्हें पहली और अन्तिम वर्षा कहा जाता था। परन्तु अन्त के दिनों में परमेश्वर के आत्मा का उँडेला जाना ऐसा होगा जैसे कि दोनों बारिशें एक ही समय में हुई हैं। स्वर्गीय किसान धीरज के साथ इस भरपूर वर्षा की प्रतीक्षा कर रहा है ताकि वह आखिरकार महान फसल को इकट्ठा कर सके।
क्या इस महान वर्षा को लाएगा? परमेश्वर के जाग्रत लोगों की भरपूर स्तुतियाँ।
वह इन अन्तिम दिनों में ऐसे एक स्तुति करनेवाले लोगों को खड़ा करेगा, वे एक सामर्थी सेना के रूप में खड़े होंगे, और पृथ्वी पर कूच करेंगे। परमेश्वर की स्तुति उनके मुँह में होगी, और उनके हाथों में दोधारी तलवारे रहेंगी। उनकी स्तुतियाँ आशीष के भरपूर बादल बनाएँगी। परमेश्वर उनको आसवन करेगा और आशीष की बारिश भेजेगा जो आज तक पहले कभी नहीं हुई है। वह पृथ्वी की महान अन्तिम फसल को पकाएगी और परमेश्वर के लोग प्रभु का तम्बूओं का पर्व मनाएंगे।

अध्याय 5 स्तुति में बाधाएँ

जब एक लोगों को राजी कर भी लिया जाए कि स्तुति बाइबल की, सही और उचित है, फिर भी उनके लिए परमेश्वर की स्तुति करना आरम्भ करना आसान नहीं होता। इस विषय में अनेक बहाने दिए गए हैं। लोग समझाने का प्रयत्न करते हैं कि क्यों वे परमेश्वर की स्तुति नहीं कर सकते हैं। कुछ उनकी मनोवृत्ति या स्वभाव के कारण क्षमा माँग लेते हैं। वे कहते हैं वे शर्मीले हैं, या कि वे "खुशमिजाज" या भावप्रदर्शक नहीं हैं।
सच्चाई यह है कि बाइबल इन किसी भी आदार पर किसी को भी छोड़ती नहीं है। दाऊद कहता है, "जितने प्राणी हैं सब के सब याह की स्तुति करें। याह की स्तुति करो।" (भजन 150:6)। यदि आप साँस लेते हैं, तब आपको परमेश्वर की स्तुति करनी है।
"मृत्क जितने चुपचाप पड़े हैं, वे तो याह की स्तुति नहीं कर सकते।" (भजन 115:17)
स्तुति में कुछ निश्चित बाधाएं होती हैं, जिनके विषय में परमेश्वर चाहता है निपटा और जय पाई जाए। वह उनमें से किसी को भी उसकी स्तुति नहीं करने के वैध कारण के रूप में स्वीकार नहीं करेगा।

1. **पाप**। पाप स्तुति में पहली बाधा है। यह मूल कारण है कि क्यों अविश्वासी परमेश्वर की स्तुति नहीं करते हैं। यही एक कारण है कि क्यों कुछ मसीही नहीं करते। नहीं माना हुआ पाप हमें परमेश्वर की उपस्थिति में रोकता है। यदि हम जानते हैं हमारे जीवन में कोई पाप है तब हम, परमेश्वर की उपस्थिति में, स्वतंत्र, या चैन महसूस नहीं करेंगे।
   दाऊद ने कहा, "यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता, तो प्रभु मेरी न सुनता।" भजन 66:18। पाप और अपराध हमें परमेश्वर से दूर करते हैं (यशा. 59:2), और जो भी सम्पर्क हमारा पहले होगा उसे खो देंगे। हमारे जीवन में पाप की जानकारी प्रभु के सामने हमारी जीभ को बाँध देती है। और इन परिस्थितियों में केवल एक ही चीज है जिसकी हम बात कर सकते हैं वह है हमारा पाप।
   इस बाधा का एक स्पष्ट उत्तर है। पाप को परमेश्वर के सामने मान लो और उसकी क्षमा और शुद्धीकरण को सच्चाई से स्वीकार करो ताकि सही सम्बंध फिर से आरम्भ हो सके और स्तुति फूट पड़े। (1 यूहन्ना 1:9)

2. **दण्डाज्ञा**। जब हमें प्रभु ने क्षमा कर भी दिया होता है, तब भी उस क्षमा को पूरी तरह लेना और अपने आप को क्षमा करना सदा आसान नहीं होता है। बहुत सारे मसीही दण्डाज्ञा में रहते हैं। हालाँकि परमेश्वर ने उन्हें मुक्त भाव से क्षमा कर दिया है, वे अपने आप को क्षमा नहीं कर पाते हैं।
   इससे अकसर अयोग्यता की एक भावना आती है। आराधना करने की स्वतंत्रा में रुकावट आती है। वे परमेश्वर की उपस्थिति में "उनके सिर लटकाए" रहते हैं। परमेश्वर की उपस्थिति की भावना, न कि परमेश्वर की दया और अनुग्रह जिसे उसने उनको दिया है, उन्हें उनकी अयोग्यता से जानकार कराती है ।
   इस प्रकार का रवैया परमेश्वर की चेतना के बदले अधिक आत्म-चेतना से आता है। यदि हम एक नकारात्मक रवैये के साथ अपने हृदय की जाँच लगातार करते रहते हैं, सदा दोषों और कमियों को खोजते रहते हैं, तब स्वाभाविक है कि हम उन्हें

पाएंगे। कोई भी सिद्ध नहीं है। यह अपनी अतिछिन्द्रान्वेषी जाँच सही नहीं है। यह यीशु पर अपना ध्यान लगाने के बदले सब समय अपने ऊपर लगाता है।

बाइबल हम से आग्रह करती है कि हम "विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें" (इब्रा. 12:2)। इससे कम से कम दो चीजें होती हैं। पहली, यह हमारे विचार और ध्यान हमारे ऊपर से निकाल कर यीशु पर लगाता है। दूसरा, जितना अधिक हम यीशु को देखते, उसके विषय में सोचते, उस पर मनन करते, अपने विचार उस पर बनाए रखते हैं, उतना अधिक हम उसकी स्तुति करने की इच्छा करते हैं। इस प्रकार स्तुति आरम्भ होती है - यीशु को ताकने से। जैसे हम यह करते रहेंगे उसके लिए हमारी प्रशंसा बढ़ती रहेगी। उसकी योग्यता की हमारी जानकारी बढ़ेगी और इससे उसकी स्तुति और आराधना के विचार बढ़ेंगे।

3. **सांसारिकता**। किसी ने "सांसारिकता" की परिभाषा इस प्रकार दी है, "सब कुछ जो यीशु के लिए मेरे प्रेम को ठंडा कर देता है।" सांसारिकता आध्यात्मिकता का उलटा है। यह वह दशा है जब हमारे मन और विचार इस संसार की चीजों पर लगे होते हैं, न कि परमेश्वर और उसके राज्य की चीजों पर।

   संसार से प्रेम करनेवाले लोग परमेश्वर की स्तुति करना अत्यन्त व्याकुल करनेवाली बात पाते हैं। यह शारीरिक प्रतिष्ठा को चोट पहुँचाता है। इस समस्या का इलाज अधिकाधिक मसीह केन्द्रित बनना है। जैसे उसके विषय में हमारी जानकारी और प्रशंसा बढ़ेगी, सांसारिकता घटती जाएगी।

   सासांरिकता का एक लक्षण प्रतिष्ठा और शिष्टाचार को बनाए रखने की धुन है - "लोग क्या कहेंगे" की अतिचेतना - लोगों की प्रतिक्रियाएँ क्या होंगी के विषय में बहुत अधिक चिन्ता। हम मसीहियों की पहली चिन्ता प्रभु को प्रसन्न करना होना चाहिए। यह हमेशा शरीर को अच्छा नहीं लगेगा। यदि हम मनुष्यों को प्रसन्न करने और उनके समर्थन को पाने के विषय में अधिक सोचेंगे, तो हम परमेश्वर को अप्रसन्न करने का खतरा मोल लेंगे।

4. **परमेश्वर का एक गलत विचार** प्रायः स्तुति में एक शक्तिशाली बाधा होती है। बहुतों का परमेश्वर के विषय में एक नकारात्मक दृश्य होता है। वे उसको ऐसे देखते हैं जैसे कि वह कोई ऐसा है जो उनको किसी असफलता में पकड़ने की कोशिश कर रहा है ताकि उनको दण्ड दे सके, कोई जो सब कुछ जो वे करते हैं उसका विरोध करता है। उनको लगता है उसे प्रसन्न करने और उसका समर्थन पाने की कम ही आशा है। वे परमेश्वर को एक राक्षस के रूप में देखते हैं जो लोगों को मजा करने से रोकता है। कोई ऐसे एक परमेश्वर की स्तुति कैसे कर सकता है?

   स्तुति हमारे हृदय में तब ही उठने लगती है जब हम परमेश्वर के विषय में एक सही विचार पाते हैं। पवित्र आत्मा को जैसा वह असल में है वैसा ही हमें दिखाना है। परमेश्वर के गलत विचार का इलाज परमेश्वर के वचन को पढ़ना है, परन्तु केवल तब ही जब हम खुले हैं और पवित्र आत्मा को सत्य प्रकट करने देंगे। बहुत सारे जो बाइबल पढ़ते हैं उनके मन सत्य के लिए बंद होते हैं। परमेश्वर की सही जानकारी, वह कौन और क्या है, निश्चित रूप से हमें स्तुति और आराधना में ले जाएगी।

5. **धार्मिक परम्पराएँ**। मसीह के समय में, बहुत सारे उनकी परम्पराओं से परमेश्वर के वचन को व्यर्थ कर रहे थे। (मत्ती 15:6)। दुर्भाग्यवश, आज भी बहुत सारे ऐसा ही कर रहे हैं। बहुत सारे मसीही तथाकथित मसीही परम्पराओं के साथ बड़े हुए हैं और वे बाइबल की स्तुति आराधना पर अप्रसन्नता प्रकट करते हैं। ऐसी परम्पराएँ स्तुति की यह कहकर निन्दा करती हैं कि यह मात्र भावुकता है। पवित्रशास्त्र के आदेशों का पालन करने के बदले, वे मनुष्यों की परम्पराओं को मानते हैं। दुर्भाग्यवश, कलीसिया की रूढ़िवादी परम्पराओं को मजबूती के साथ अपनाया गया है और इनमें से बहुत सारी परम्पराएँ बाइबल के विरुद्ध हैं। ऐसे मामलों में हमें मनुष्यों के बदले परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहिए। (गला. 1:10)

   याद रहे कि "धर्म दमन करता है, परन्तु उद्धार रिहाई लाता है।" मनुष्यों की परम्पराओं में फँसे लोगों में प्रायः परमेश्वर के गलत विचार भी होते हैं। उनके विचारों में परमेश्वर एक अत्यन्त नकारात्मक प्राणी है। वह एक पूर्ण रूप से भावरहित, कठोर और मना करनेवाला है। जो ऐसे एक परमेश्वर में विश्वास रखते हैं, अपने आप भी वैसे ही बन जाते हैं। इस दशा का इलाज, एक खुले हृदय और मन के साथ, अपनी परम्पराओं को परमेश्वर के वचन के सामने लाना है। जब कभी पवित्र आत्मा आपकी परम्पराओं का भ्रम प्रकट करता है, उसे छोड़ने और परमेश्वर के वचन को अपनाने के लिए तैयार रहो।

6. **अभिमान** स्तुति में एक और बाधा है। यह निपटने के लिए एक कठिन समस्या है क्योंकि हम अपने हृदय के अभिमान को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होते। हमारा अह्म (स्वार्थीपन) हमें ऐसा करने नहीं देगा। परमेश्वर ऐसे अभिमान को तोड़कर कैदी को छुड़ा सकता है।

अभिमान आत्म-चित्र की बहुत चिन्ता करता है; हमेशा चाहता है उसके विषय में अच्छा सोचा जाए; हमेशा चाहता है उसे जो सही और उचित समझा जाता है करता हुआ देखा जाए।

7. **मनुष्य का डर**। नीतिवचन 29:25 हमें बताता है, "मनुष्य का भय खाना फँदा हो जाता है।" मनुष्य का डर, उसके विचार और राय, एक असली फँदा बनाता है जिसमें बहुत सारे फँसे हुए हैं। "यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है..." (नीति. 9:10)। यदि हम सच में प्रभु का आदर करते हैं, हमें कभी भी मनुष्य से डरने की आवश्यकता नहीं है।
हमें सदा सब चीजों में प्रभु को प्रसन्न करने का प्रयत्न करा चाहिए और ऐसा करने के लिए हमें निश्चित रूप से उसकी स्तुति करनी चाहिए। यदि मनुष्य इसे प्रसन्द नहीं करते, तो यह उनकी समस्या है। उनके विचार आपको रोके नहीं और न ही परमेश्वर को स्तुति देने की आपकी इच्छा और इरादे में बाधा डालें।

8. **शैतानी दमन**। अन्त में, हम सब बाधाओं में से सबसे गंभीर बाधा में आते हैं, जो स्तुति का शैतानी दमन है। शैतान में परमेश्वर के लिए गहरी घृणा, और कैसे वह लोगों को परमेश्वर की स्तुति करते सुनते घृणा करता है, को हमारे लिए समझना कठिन है।
यह शैतान की गहरी परमेश्वर की ईर्ष्या थी जिसके कारण उसका पतन हुआ था। उसके अभिमान में, वह अपने आपको परमेश्वर से बड़ा समझता है। वह अनुचित ईर्ष्या से भर जाता है जब कभी वह परमेश्वर की स्तुति और उसका नाम ऊँचा होते सुनता है। इसलिए वह सब ऐसी स्तुति को हतोत्साह करता और दमन करता है।
जब एक व्यक्ति शैतान या उसके एक दुष्टात्मा के सीधे वश में होता है, पाया गया है कि ऐसा व्यक्ति यीशु का नाम भी नहीं ले पाता है। जब ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है उनका गला बंद हो जाता है। शब्द मुँह से निकलते ही नहीं हैं। यह भी देखा गया है कि जब ऐसे लोगों के सामने यीशु का नाम लिया जाता है, उनके भीतर की दुष्टात्माएँ उबलने लगती हैं। शैतान इस नाम के सामने जोरदार प्रतिक्रिया करता है। उसका शिकार कभी-कभी मुँह से झाग निकालता, उसे दौरा पड़ता, गालियाँ बकता और ईशनिन्दा करता है, परमेश्वर या यीशु की स्तुति के विरुद्ध इतनी उग्र प्रतिक्रिया होती है।

टिप्पणी और निष्कर्ष

जब कभी एक मसीही स्तुति की ओर एक अरुचि पाता है, हृदय को सच्चाई और ईमानदारी के साथ जाँचा जाना चाहिए। उसे प्रार्थनापूर्वक परमेश्वर से माँगना चाहिए कि उसकी समस्या की प्रकृति प्रकट करे, और कि क्या है जो स्तुति के प्रवाह में बाधा डाल रहा या रोक रहा है। जब इसका पता लगा लिया गया है, मन फिराना और बाधा से फिरना होना चाहिए। व्यक्ति को उसका हृदय परमेश्वर के आज्ञापालन और उसे स्तुति देने पर लगना चाहिए।
यदि फिर भी स्तुति करना असम्भव जान पड़ता है, तब किसी परिपक्व और आत्मिक रूप से संवेदी व्यक्ति की सहायता ली जानी चाहिए। सम्भव है कि जीवन पर एक शैतानी दमन है जिसे तोड़ा जाना अवश्य है। जब तक यह नहीं हो जाता, व्यक्ति परमेश्वर की सेवा उपयुक्त रूप से नहीं कर सकेगा।
परमेश्वर की स्तुति और आराधना कर सकने की अयोग्यता कहीं किसी विद्रोह का संकेत देता है। एक मूल समस्या है जिससे निपटा जाना अवश्य है। परमेश्वर को खोजते रहो जब तक जय मिल नहीं जाती और स्तुति की नदियाँ हृदय में से बहने नहीं लगतीं।

अध्याय 6 प्रभु की स्तुति करने के बाइबल के तरीके

स्तुति मुख्य रूप से प्रशंसा और पसंदगी की अभिव्यक्ति है। इसके पूर्ण भाव में, इसमें उपकारों के लिए कृतज्ञता और धन्यवाद सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार, स्तुति और धन्यवाद अकसर इकट्ठे पाए जाते हैं।
परन्तु, स्तुति की शुद्ध किस्मों में धन्यवाद और कृतज्ञता सम्मिलित नहीं होते। वे मूल रूप से अपने स्तुति के लक्ष्य की ओर प्रशंसा और पसंदगी की अभिव्यक्ति हैं, चाहे उपकार मिले हैं या नहीं मिले हैं।

इसलिए, परमेश्वर की स्तुति करना मुख्य रूप से उसके व्यक्ति, चरित्र, गुणों और सिद्धता का गुणगान करना है। यह परमेश्वर की प्रशंसा है, वह कौन और क्या है, न कि वह जो उसने हमारे लाभ के लिए किया है। "यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है..." (भजन 145:3)।

स्तुति सबसे पहले गुण की भातरी जानकारी है। उसके बाद यह भीतरी प्रशंसा की एक बाहरी अभिव्यक्ति है। यह तब तक स्तुति नहीं बनती जब तक बाहरी अभिव्यक्ति नहीं पाती। जब तक यह हृदय और मन में रहती है, यह एक प्रशंसा है। जब यह अभिव्यक्ति पाती और वाचिक या दृश्य बनती है, तब यह स्तुति है।

स्तुति की बाइबल-संबंधी अभिव्यक्तियाँ

बहुत सारे बाइबल-संबंधी तरीके हैं जिसके द्वारा हम परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं। हम इन में से कुछ को अब देखने वाले हैं। हमारी सूची शायद सम्पूर्ण न हो। आप दूसरे तरीके भी पा सकते हैं जो उतने ही बाइबल-संबंधी हों। मेरा विश्वास है परमेश्वर चाहता है हर विश्वासी उसके आत्मा में इतना स्वतंत्र हो जिससे वह बाइबल में पाए जाने वाले किसी भी और सब तरीकों से उसकी स्तुति कर सके।

याद रहे कि स्तुति की ये अभिव्यक्तियाँ तब ही वैध और स्वीकार्य हैं जब वे उस स्तुति को जो हमारे हृदय में है और जिन्हें रिहा करने की आवश्यकता है सच्ची अभिव्यक्ति दे रही हैं। दूसरे शब्दों में, कुछ करते रहना, या इन विभिन्न "चीजों" को यन्त्र के समान करते रहना, स्तुति नहीं बनता। वे मात्र एक साधन हैं जो हमारे हृदय की प्रशंसा, धन्यवाद और आदर को अभिव्यक्ति देते हैं।

यदि आप जानते हैं आपके हृदय के अन्दर स्तुति है जिसे कभी भी पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं दी गई है, तो मेरा सुझाव है आप इन विभिन्न अभिव्यक्तियों का अध्ययन करें। दिए गए वचनों को देखें और प्रार्थनापूर्वक संदर्भ और महत्त्व पर विचार करें और फिर जिस किसी अभिव्यक्ति के विषय में सोच रहे हो करो।

उदाहरणार्थ, यदि आप ऊँचे स्वर में जयजयकार करने के वचनों का अध्ययन कर रहे हो, तब प्रभु का ऊँचे स्वर से जयजयकार करो। आप इसे करने में एक बहुत बड़ी रिहाई पाएँगे। कुछ आपके अन्दर स्वतंत्रता पाएगा। आपके अन्दर आनन्द एक नए प्रकार से फूट पड़ेगा, क्योंकि आप परमेश्वर का कहना मान रहे हो, और नए तरीकों से उसकी स्तुति करने लगे हो जिन्हें उसने उसके वचन में निर्धारित किया है।

यदि आप दूसरों को ये सिद्धान्त सिखा रहे हो तब जैसे सिखाते हो उन्हें करने को भी कहो। केवल स्तुति के इन तरीकों के विषय में बोलने से ही संतुष्ट न रहो, लोगों को भाग लेने और जो आप सिखा रहे हो करने दो।

1. आवाज के साथ परमेश्वर की स्तुति करना। "जब मैं तेरा भजन गाऊँगा, तब अपने मुँह से और अपने प्राण से भी, जो तू ने बचा लिया है, जयजयकार करूँगा। मैं तेरे धर्म की चर्चा दिन भर करता रहूँगा..." (भजन 71:23-24)। "ताकि तेरा धन्यवाद ऊँचे स्वर से करूँ, और तेरे सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करूँ" (भजन 26:7)।

   दाऊद लगातार परमेश्वर की स्तुति करता रहता था। वह इस प्रकार की चीजें कहता था, "यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल है; उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है; इसलिए मेरा हृदय प्रफुल्लित है; और मैं गीत गाकर उसका धन्यवाद करूँगा।" (भजन 26:7)

   हमें भी प्रभु के विषय में बात करने और उसके आश्चर्यकर्मों का गुणानुवाद करने की आदत डालनी है। हर दिन परमेश्वर की स्तुति के साथ आरम्भ करो। उसे बताओ वह कितना महान और अदभुत है, आप उससे कितना प्रेम करते और प्रशंसा करते हो। एक नए दिन के लिए उसका धन्यवाद करो और उस सारे दिन उसकी उपस्थिति अपने साथ रहने के लिए उसकी स्तुति करने लगो। परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद का एक गीत गाओ। अपनी आवाज, अपने होंठ और अपना मुँह इस्तेमाल करो। उन्हें स्तुति के वाद्य बनाओ। आपको आश्चर्य होगा कि कितनी सरता के साथ आपको स्तुति की आदत पड़ रही है।

   "मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।" (भजन 34:1)

   "परन्तु जितने तुझे ढूँढते हैं, वे सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों; जो तेरा किया हुआ उद्धार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते रहें, 'यहोवा की बड़ाई हो।'" (भजन 40:16)

2. ऊँचे स्वर से परमेश्वर की जयजयकार करना। मौखिक स्तुति जिसकी हम ने पिछले भाग में बात की है उसमें केवल बातचीत की प्रबलता लगती है। हम बातचीत के तरीके से परमेश्वर से बात कर रहे हैं, उसके विषय में अपनी राय बता रहे हैं और अपनी प्रशंसा व्यक्त कर रहे हैं। परन्तु, ऐसे समय होते हैं जब अपनी आवाजें उठाकर ऊँचे स्वर से परमेश्वर की जयजयकार

करना उचित और बाइबल-संबंधी होता है। "... ऊँचे शब्द से परमेश्वर के लिए जयजयकार करो" दाऊद भजन 47:1 में कहता है।

बहुत से रूढ़ीवादी लोग ऊँचे स्वर से जयजयकार करने या किसी प्रकार की ऊँची आवाज करने के विरुद्ध होते हैं। वे इसे प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझते हैं। कुछ ने यह भी कहा है, "चिल्लाने की कोई जरूरत नहीं, परमेश्वर बहरा नहीं है।" जिसके लिए हम कह सकते हैं, "परमेश्वर घबराता भी नहीं है।"

आनन्द के साथ आवाज करने और ऊँचे स्वर से स्तुति करने का एक समय और स्थान होता है और जब समय आता है तब हमें करने से चूकना नहीं है।

"परन्तु जितने तुझ पर भरोसा रखते हैं वे सब आनन्द करें, वे सर्वदा ऊँचे स्वर से गाते रहें..." (भजन 5:11)।

"हे धर्मियो, यहोवा के कारण आनन्दित और मगन हो, और हे सब सीधे मनवालो, आनन्द से जयजयकार करो।" (भजन 32:11)

"जो मेरे धर्म से प्रसन्न होते हैं, वे जयजयकार और आनन्द करें..." (भजन 35:27)।

"तेरे याजक धर्म के वस्त्र पहिने रहें, और तेरे भक्त लोग जयजयकार करें... और इसके भक्त लोग ऊँचे स्वर से जयजयकार करें।" (भजन 132:9,16)

"हे सिय्योन में बसनेवाली, तू जयजयकार कर और ऊँचे स्वर से गा, क्योंकि इस्राएल का पवित्र तुझ में महान है।" (यशा. 12:6)

"हे सिय्योन, ऊँचे स्वर से गा; हे इस्राएल, जयजयकार कर। हे यरूशलेम, अपने सम्पूर्ण मन से आनन्द कर, और प्रसन्न हो।" (सपन्याह 3:14)

"तब यहोवा का तेज सारी जनता को दिखाई दिया....इसे देखकर जनता ने जय जयकार का नारा लगाया और अपने अपने मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया।" (लैव्य. 9:23-24)

"जब यहोवा की वाचा का सन्दूक छावनी में पहुँचा, तब सारे इस्राएली इतने बल से ललकार उठे कि भूमि गूँज उठी।" (1 शमू. 4:5)

3. गीत गाना। "...जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ" (भजन 100:2)। गीत गाना परमेश्वर के आश्चर्य की ओर एक सबसे साधारण और सबसे स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। यह आनन्द की भावना की एक स्वैच्छिक अभिव्यक्ति है। यह परमेश्वर के लोगों में सदा से स्तुति की एक वैध अभिव्यक्ति रही है। मिस्र से निकलने के तुरन्त बाद, जब परमेश्वर उन्हें लाल समुद्र में से निकाल लाया, मरियम इस्राएल की स्त्रियों को परमेश्वर की स्तुति गाने में ले चली। परमेश्वर ने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ से जो छुड़ाया था। "और मरियम उनके साथ यह टेक गाती गई: 'यहोवा का गीत गाओ, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में फेंक दिया है।" (निर्ग. 15:21)

   सारे पवित्रशास्त्र में गीत गाने के बहुत सारे वचन हैं। उनमें से कुछ यहाँ दिए हैं:

   "...मैं आप यहोवा के लिए गीत गाऊँगी, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा का मैं भजन करूँगी।" (न्यायियों 5:3)

   "इस कारण, हे यहोवा, मैं जाति जाति के सामने तेरा धन्यवाद करूँगा, और तेरे नाम का भजन गाऊँगा।" (2 शमू. 22:50)

   "उसका गीत गाओ, उसका भजन करो, उसके सब आश्चर्यकर्मो का ध्यान करो।" (1 इतिहास 16:9)

   "राजा हिजकिय्याह और हाकिमों ने लेवियों को आज्ञा दी, दाऊद और आसाप दर्शी के भजन गाकर यहोवा की स्तुति करें। अतः उन्होंने आनन्द के साथ स्तुति की और सिर झुकाकर दण्डवत् किया।" (2 इतिहास 29:30)

   "मैं यहोवा के धर्म के अनुसार उसका धन्यवाद करूँगा, और परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊँगा।" (भजन 7:17)

   "मैं तेरे कारण आनन्दित और प्रफुल्लित होऊँगा, हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम का भजन गाऊँगा।" (भजन 9:2)

   "यहोवा जो सिय्योन में विराजमान है, उसका भजन गाओ...।" (भजन 9:11)

   "मैं परमेश्वर के नाम का भजन गाऊँगा, क्योंकि उसने मेरी भलाई की है।" (भजन 13:6)

   "हे यहोवा, अपनी सामर्थ्य में महान हो। हम गा गाकर तेरे पराक्रम का भजन सुनाएँगे।" (भजन 21:13)

   "...मैं यहोवा के तम्बू में जयजयकार के साथ बलिदान चढ़ाऊँगा; मैं उसका भजन गाऊँगा।" (भजन 27:6)

   "हे यहोवा के भक्तो, उसका भजन गाओ, और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है, उसका धन्यवाद करो।" (भजन 30:4)

   "परमेश्वर का भजन गाओ, भजन गाओ। हमारे महाराजा का भजन गाओ, भजन गाओ। क्योंकि परमेश्वर सारी पृथ्वी पर महाराजा है, समझ बूझकर बुद्धि से भजन गाओ।" (भजन 47:6-7)

   "हे परमेश्वर, मेरा मन स्थिर है, मेरा मन स्थिर है, मैं गाऊँगा, वरन् भजन कीर्तन करूँगा।" (भजन 57:7)

"परन्तु मैं तेरी सामर्थ्य का यश गाऊँगा, और भोर को तेरी करुणा का जयजयकार करूँगा। क्योंकि तू ऊँचा गढ़ है, और संकट के समय मेरा शरणस्थान ठहरा है। हे मेरे बल, मैं तेरा भजन गाऊँगा, क्योंकि हे परमेश्वर, तू मेरा ऊँचा गढ़ और मेरा करुणामय परमेश्वर है।" (भजन 59:16-17)

"इस प्रकार मैं सर्वदा तेरे नाम का भजन गा गाकर अपनी मन्नतें हर दिन पूरी किया करूँगा।" (भजन 61:8)

परमेश्वर की स्तुति गाने के बहुत सारे और भी वचन हैं, परन्तु ये गीत गाने के महत्त्व का कुछ विचार देने के लिए पर्याप्त हैं। गीत गाना खुशी और संतोष का चिन्ह है। यह आनन्द का लक्षण है, जिसमें जीवन में अपने भाग पर संतोष भी सम्मिलित भी है। यह सकारात्मक भावना की एक सही अभिव्यक्ति है जो सम्पूर्ण अस्तित्व की सेवा करती है। परमेश्वर को हमारा उसकी स्तुतियाँ गाना सुनना अच्छा लगता है।

विविध प्रकार के गीत

इफि. 5:19 और कुलु. 3:16 में, हमें प्रभु के....भजन, स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाने का उपदेश दिया गया है।

भजनों ने गीत में आराधना के लिए बहुत सारी सामग्री दी है - पुराने गीतों से लेकर आज के कोरसों तक सीधे उनमें से लिए गए हैं।

स्तुतिगानों ने कलीसिया को प्रेरित करने और स्तुति के गीत देने के लिए बहुत सारे विषय दिए हैं।

आत्मिक गीत इन दोनों श्रेणियों से थोड़ा भिन्न हैं। वे सीधे पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए हैं और आत्मा द्वारा दिए शब्दों और लय में गाए जाते हैं। ये गीत गा रहे व्यक्ति की भाषा में हो सकते हैं, जब वे "...बुद्धि से..." गाए जाते हैं (1 कुरिं. 14:15)। दूसरे समयों में, बोल "अन्य भाषा" में हो सकते हैं जब, व्यक्ति की बुद्धि "...काम नहीं देती" (1 कुरिं. 14:14)। मन को पता नहीं चलता क्या गाया जा रहा है, परन्तु फिर भी जानता है कि आत्मा परमेश्वर की स्तुति कर रहा और नाम ऊँचा कर रहा है, अकसर "स्वर्गदूतों की बोलियों" के साथ। दोनों मामलों में, गीत पूरी तरह स्वैच्छिक और बिना योजना के होते हैं। गीत विश्वास से गाए जाते हैं। गायक, उसकी आत्मा में परमेश्वर के आत्मा को सुनकर, लय और शब्दों को विश्वासयोग्यता के साथ इस्तेमाल करता है।

स्तुति की शारीरिक अभिव्यक्तियाँ

स्तुति की मौखिक, श्रव्य अभिव्यक्तियों के अतिरिक्त, बाइबल बहुत सारे तरीके बताती है जिनमें हम परमेश्वर की आराधना करने के लिए शारीरिक अभिव्यक्तियाँ इस्तेमाल कर सकते हैं।

1. <u>खड़े होकर</u>। सीधे खड़े होना सदा आदर का चिन्ह है। यदि कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति कमरे के अन्दर आता है, तब कमरे में पहले से उपस्थित लोग उस व्यक्ति को आदर और सम्मान दिखाने के लिए खड़े हो जाएँगे। बारम्बार पवित्र आत्मा हमें आराधना और आदर के रूप में प्रभु के सामने खड़े होने की प्रेरणा देगा। "सारी पृथ्वी के लोग यहोवा से डरें, जगत के सब निवासी उसका भय मानें।" (भजन 33:8)

2. <u>हाथ उठाना</u>। खड़े हाथ सारे विश्व में समर्पण का चिन्ह हैं। प्रभु के सामने अपने हाथ खड़े करने से हम स्वीकार करते हैं कि हम उसके सामने पूरी तरह समर्पित हैं। हम उसे बताते हैं कि हम बिना शर्त उसके हैं। हमारी उसके विरुद्ध विद्रोह करने की कोई इच्छा नहीं है, हमारे पास उसके साथ युद्ध करने के कोई हथियार नहीं हैं। जो लोग पूरी तरह उसकी ओर समर्पित नहीं हैं उनके लिए ऐसा करना बड़ी समस्या होता है, हालाँकि यह इतनी आसान चीज लगती है। वे आराधना के इस तरीका का जमकर विरोध करते हैं। परन्तु, एक बार ऐसा कर लेने से, बड़ी मुक्ति मिलती है और फिर वे आराधना के दूसरे तरीके भी इस्तेमाल कर पाते हैं। "अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर, यहोवा को धन्य कहो" (134:2)। यह परमेश्वर के लिए गहरी लालसा का चिन्ह भी है। "जब मैं तेरी दोहाई दूँ, और तेरे पवित्रस्थान की भीतरी कोठरी की ओर अपने हाथ उठाऊँ, तब मेरी गिड़गिड़ाहट की बात सुन ले। (भजन 28:2)

   यह परमेश्वर के लिए आत्मिक प्यास का प्रतीक भी है। "मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाए हुए हूँ; सूखी भूमि के समान मैं तेरा प्यासा हूँ।" (भजन 143:6)

3. <u>ताली बजाना</u>। जब कोई कुछ करता है जो हमारी प्रशंसा और समर्थन जीतता है और हम उन्हें बताना चाहते हैं कि उन्होंने ऐसा किया है, तब हम अकसर ताली बजाते हैं। सम्भवतः एक संगीत-समारोह में पियानो बजानेवाला एक संगीत बहुत अच्छी

तरह बजाता है जो श्रोताओं को अच्छा लगता है, वे अकसर तालियाँ बजाने लगेंगे। यदि वे उनका समर्थन अधिक प्रकट रूप से दिखाना चाहेंगे, तब वे अकसर उनके पैरों पर खड़े होकर तालियाँ बजाएँगे। जब परमेश्वर इतना अद्भुत है, और इतने सारे यशस्वी काम किए हैं जिन्होंने हमारी प्रशंसा और समर्थन जीत लिया है, तो क्या यह कुछ अजीब है कि हम उसके लिए तालियाँ बजाएँ ?

हमें परमेश्वर के लिए तालियाँ बजाने को कहा गया है (भजन 47:1)। यह खुशी, आनन्द और मंजूरी का एक चिन्ह है।

4. <u>झुकना या घुटने टेकना</u>। जब लोग परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा की भावना से अभिभूत हो जाते हैं, वे स्वेच्छा से परमेश्वर के सामने उनके घुटनों पर हो जाएंगे या झुक जाएँगे। यह आदर और भय का कार्य है। "आओ हम झुककर दण्डवत् करें, और अपने कर्त्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें।" (भजन 95:6)
   एक दिन हर घुटना यीशु मसीह के सामने झुकेगा। (फिलि. 2:10)

5. <u>परमेश्वर के सामने गिरना</u>। यहाँ एक और चरम प्रकार का आदर और आराधना है। किसी के सामने गिरकर लेटना गहरे आदर का एक चिन्ह है। जिसके सामने हम लेट रहे हैं उसके ऊँचे स्थान की भावना को बढ़ाने के लिए अपने आप को दीन करना।

6. <u>नाचना</u>। क्योंकि नाचना एक अत्यन्त प्रदर्शनात्मक और शायद कुछ भावात्मक प्रकार की स्तुति है, इसकी काफी आलोचना और विरोध किया गया है, बहुत बार रूढ़ीवादी लोगों से। इस विवाद के कारण, मैं ने स्तुति के इस पहलू पर विचार के लिए अधिक स्थान दिया है।
   नाचने में प्रभु के सामने आनन्द, स्तुति और आराधना को व्यक्त करने के लिए सारे शरीर का इस्तेमाल होता है। बाइबल में "नाचने" के लिए अनुवाद किए गए इब्रानी और यूनानी शब्दों के विभिन्न प्रकार के अर्थ हैं: "छलाँग लगाना", "कूदना", "पैर उठाना", "फाँदना"। ये अनुवाद स्वैच्छिक, बिना योजना के ऐसे नाच का संकेत देते हैं। यह नाचना अकसर किसी निर्धारित और योजनाबद्ध तरीके का नहीं होता है, परन्तु प्रभु के सामने आनन्द के साधारण, स्वैच्छिक प्रतिक्रियाएँ हैं।
   ऐसी घटनाएं जिनका प्रेरितों 3:8 में वर्णन है जिसमें चंगा हुआ लंगड़ा व्यक्ति "चलता, और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता" गया, अब एक भिन्न प्रकाश में देखा जा सकता है। यह और भी निश्चित है जब हम याद करते हैं कि नाच ने इस्राएल के लोगों की आराधना में सदा से एक अभिन्न भूमिका निभाई है। "वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें..." (भजन 149:3)। "डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो..." (भजन 150:4)

उद्धार और छुटकारे को मनाने के लिए नाचने के बाइबल में कुछ उदाहरण

"तब हारून की बहिन मरियम नामक नबिया ने हाथ में डफ लिया; और सब स्त्रियाँ डफ लिए नाचती हुई उसके पीछे हो लीं।" (निर्गमन 15:20)

"जब यिप्तह मिस्पा को अपने घर आया, तब उसकी बेटी डफ बजाती और नाचती हुई उससे भेंट के लिए निकल आई...।" (न्यायियों 11:34)

"...मीकाल ने...दाऊद राजा को कूदते और खेलते हुए देखा...।" (1 इतिहास 15:29)

यिर्मयाह ने आने वाले यशस्वी पुनःस्थापना के विषय में भविष्यद्वाणी की थी: "उस समय उनकी कुमारियाँ नाचती हुई हर्ष करेंगी, और जवान और बूढ़े एक संग आनन्द करेंगे। क्योंकि मैं उनके शोक को दूर करके उन्हें आनन्दित करूँगा, मैं उन्हें शान्ति दूँगा, और दुख के बदले आनन्द दूँगा।" (यिर्मयाह 31:13)

विलापगीत 5:15 के अनुसार, जब उनको बन्धुआई में ले जाया गया उनका नाचना विलाप में बदल गया। यिर्मयाह 31:13 में जब उन्हें बन्धुआई से वापस लाया गया तब हम देखते हैं कि नाच पुनःस्थापित किया गया था।

योएल 1:12 में, हम देखते हैं कि जब परमेश्वर के लोगों पर सूखा और बाँझपन आता है, "मनुष्यों का हर्ष" चला जाता है।

आनन्द और हँसी जो बन्धुआई से लौटने के साथ-साथ आते हैं अविश्वासियों के लिए एक गवाही हैं, कि, "यहोवा ने हमारे साथ बड़े बड़े काम किए हैं, और इससे हम आनन्दित हैं।" (भजन 126:3)

नए नियम में नाचना

उन लोगों ने तर्क प्रस्तुत किया है, जो आज कलीसिया में नाच का विरोध करते हैं कि यह केवल पुराने नियम की घटना ही था, और इसका नए नियम की कलीसिया में कोई स्थान नहीं है। परन्तु, नया नियम पढ़ते समय स्पष्ट होता है कि यह अभिव्यक्ति वहाँ भी है। यीशु ने कहा, "उस दिन आनन्दित होकर उछलना, क्योंकि देखो, तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है...।" (लूका 6:23)
आनन्द के लिए एक यूनानी शब्द जो नए नियम में बारम्बार मिलता है: "अगालिआओ agalliao" है, जिसका शाब्दिक अर्थ है: "आनन्द से उछलना।" यह एक गहरा, भीतरी प्रकार का आनन्द नहीं है, बल्कि यह बहुत बड़े आनन्द की एक गतिशील, भावोत्तेजक अभिव्यक्ति है जिसके कारण व्यक्ति "खुशी से उछलता" है। नए नियम में यह कुछ स्थानों पर पाया जाता है:
"उसी घड़ी वह पवित्र आत्मा में होकर आनन्द से भर गया (अगालिआओ) ..." (लूका 10:21)।
मरियम ने कहा, "मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर से आनन्दित हुई (अगालिआओ)।" (लूका 1:46-47)
दारोगा, "...सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया (अगालिआओ)।" (प्रेरितों 16:34)
विश्वासी उद्धार के लिए परमेश्वर के सामर्थ्य के कारण और महिमा से भरी हुई मीरास के कारण जो उनके लिए स्वर्ग में सुरक्षित है मगन होते (अगालिआओ) हैं। (1 पतरस 1:3-7)
नए नियम के बिलकुल अन्त में हमें एक उपदेश दिया गया है, "आओ, हम आनन्दित और मगन हों (अगालिआओ - आनन्द से कूदें), और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है।" (प्रकाशित. 19:7)
जब उड़ाऊ पुत्र पिता के पास लौट आया, नाच-गाना होने लगा था (लूका 15:25)। जब सब चीजों का लौटाया जाना होगा जिनकी बात भविष्यद्वक्ताओं ने की है, नाचना भी होगा, क्योंकि इसके विषय में भी भविष्यद्वक्ताओं ने कहा है। (यिर्म. 31:13)

बाइबल–संबंधी नाच के कुछ पहलू

अ. इसकी शैली स्वाभाविक, पुरानी, और अक्रत्रिम है। यह कोई योजनाबद्ध, अभ्यास किया हुआ और सूक्ष्म ढंग का नहीं है। इसे उछलने, कूदने, फाँदने और चक्कर खाने में व्यक्त किया जाता है। इसके साथ कभी-कभी वाद्यों से संगीत बजाया जाता था (1 इति. 15:29; भजन 149:3)।

आ. अकेला व्यक्ति या एक समूह कर सकता है।
दाऊद प्रभु के सामने नाचा था। मरियम और सारी स्त्रियाँ नाची थीं।

इ. यह प्रतिजाति के सदस्य के साथ नाचना नहीं है।
मरियम और स्त्रियाँ नाची थीं। (निर्ग. 15:21)
जवान और बूढ़े एक संग। (यिर्म. 31:13)

ई. इसमें कोई आयु सीमा नहीं है। जवान और बूढ़े एक संग।

उ. गाना और नाचना अकसर एक साथ होता था। "क्या यह वही दाऊद नहीं है, जिसके विषय में लोग नाचते और गाते हुए एक दूसरे से कहते थे, शाऊल ने हज़ारों को, पर दाऊद ने लाखों को मारा है।" (1 शमू. 29:5)

ऊ. नाचने का एक सही समय है। "रोने का समय....और नाचने का भी समय है" (सभो. 3:4)।

ए. परमेश्वर ने नाचने को लौटाने की भविष्यद्वाणी की है।
"...आनन्द करनेवालों के बीच में नाचती हुई निकलेगी।" (यिर्म. 31:4)। "उस समय उनकी कुमारियाँ नाचती हुई हर्ष करेंगी..." (यिर्म. 31:13)।

चेतावनी!!!

एक शारीरिक प्रकार का नाच, विश्वास से मुड़ जाने, मूर्तिपूजा, अनैतिकता और सांसारिकता से जुड़ा हुआ भी है, उदा., निर्ग. 32:19, सोने के बछड़े के चारों ओर नाचना।
शैतान के पास हर चीज की नकल है। नकल केवल वास्तविक और असली को प्रमाणित करती है। शैतान किसी चीज की नकल करेगा इसका अर्थ यह नहीं कि हमें असली को नहीं करना चाहिए।

7. <u>संगीत वाद्य</u> स्तुति और आराधना के लिए पवित्रशास्त्र में अकसर इस्तेमाल किए जाते थे। वे आज भी आराधना में एक अत्यावश्यक भूमिका निभा सकते हैं। हमें आज्ञा दी गई है, "नरसिंगा फूँकते हुए उसकी स्तुति करो; सारंगी और वीणा बजाते

हुए उसकी स्तुति करो। डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो; तारवाले बाजे और बांसुली बजाते हुए उसकी स्तुति करो। ऊँचे शब्दवाली झाँझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो।" (भजन 150:3-5)

जो संगीतकार उनके वाद्यों से स्तुति करते हैं, ऐसा निपुणता से करें। उन्हें उनके वाद्य "भली भाँती" बजाने चाहिए (भजन 33:3)। इसका तात्पर्य जरूरी नहीं परिशुद्धता की निपुणता है। यह मनुष्य की कलाकारी की भेंट नहीं है। यह आत्मिक निपुणता है, न कि स्वाभाविक योग्यता। निपुणता न केवल वाद्य को बजाना है बल्कि आत्मा के भाव को समझना भी है। हम इसे "आत्मा में बजाना" कहते हैं।

अ. दाऊद का निपुणता के साथ वीणा बजाने से शाऊल में से दुष्टात्मा निकल जाती थी (1 शमू. 16:23)।

आ. संगीतकार एक वातावरण बना सकते हैं जिसमें जिसमें आत्मिक वरदान काम करते हैं।

इ. सुलैमान के मन्दिर के अर्पण के समय 4000 संगीतकार उनके वाद्यों को बजा रहे थे (1 इति. 23:5)। "और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया जो जल की बहुत धाराओं और बड़े गर्जन का सा शब्द था, और जो शब्द मैं ने सुना वह ऐसा था मानो वीणा बजानेवाले वीणा बजा रहे हों" (प्रकाशित. 14:2-3)।

8. चुप्पी। गीत गाने, संगीत वाद्यों, नाचने आदि की आवाज के बिलकुल उलटा चुप्प रहकर भी स्तुति की अभिव्यक्ति होती है - "...चुप रहने का समय, और बोलने का भी समय है।" (सभो. 3:7)। चुप्पी से डरो मत। कभी-कभी पवित्र आत्मा मण्डली पर एक पवित्र सन्नाटा लाएगा। ऐसे समयों में चुप्पी गंभीर और अर्थपूर्ण होती है। ऐसे समयों में अकसर आदर और भय की एक बड़ी भावना होती है। हम परमेश्वर के सामने शान्त खड़े रह सकते हैं, मनन करते, भक्ति करते उसकी आराधना करते हुए। "चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ..." (भजन 46:10)।

9. रोना भी परमेश्वर की स्तुति की ओर एक वैध प्रतिक्रिया है। यह दुख या सरदर्द का रोना नहीं है, परन्तु कृतज्ञता और धन्यवाद का है। कभी-कभी जब हम परमेश्वर की महानता और भलाई पर मनन करते हैं, उसकी महानता की ओर उचित प्रतिक्रिया कृतज्ञता के आँसू होते हैं।

ऐसा करने से डरो मत। यह कमजोरी का चिन्ह नहीं है। आँसू बहने दो। हमारी मानवीय प्रतिक्रिया अकसर आँसुओं को रोकना होता है। परन्तु, रोना कभी-कभी हमारी गहरी भावनाओं को इस प्रकार व्यक्त करता है जैसे कुछ नहीं कर सकता। यह अकसर गहरी रिहाई और स्वतंत्रता लाता है।

व्यक्ति को बहुत अधिक रोना भी नहीं चाहिए क्योंकि यह एक चिन्ह हो सकता है कि अन्दर कुछ समस्या है, और ऐसे मामलों में भीतरी चंगाई की आवश्यकता होती है। जब नहेम्याह परमेश्वर का वचन पढ़ने और समझाने लगा, लोग रोने लगे। नहेम्याह ने उन्हें कुछ समय रोने दिया, परन्तु तब उसने उन्हें टोका और कहा, "...जाकर चिकना चिकना भोजन करो, और मीठा मीठा रस पीयो, ... उदास मत रहो, क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है।" (नहे. 8:10)। बहुत अधिक रोना भी व्यक्ति को कमजोर कर देता है, जबकि प्रभु का आनन्द सामर्थ्य का एक सोता है।

10. हँसना। पवित्र हँसी जैसी एक चीज भी है, जब प्रभु के लिए हँसने की इच्छा व्यक्ति पर आती है। यह किसी मजाक की ओर प्रतिक्रिया नहीं है जो किसी ने किया है। यह प्रभु में आनन्द की एक ऐसी अभिव्यक्ति है कि उसे व्यक्त करने का सिर्फ एक ही तरीका है जो हँसने का है।

इस्राएल के लोगों ने जब वे बन्धुआई से लौटे थे इसे अनुभव किया था। "तब हम आनन्द से हँसने और जयजयकार करने लगे..." (भजन 126:2)।

"देख, परमेश्वर न तो खरे मनुष्य को निकम्मा जानकर छोड़ देता है... वह तो तुझे हँसमुख करेगा; और तुझ से जयजयकार कराएगा।" (अय्यूब 8:20-21)

11. कूच करना। परमेश्वर ने उसके लोगों को अकसर चलने को कहा था। सम्भवत: इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण यरीहो के चारों ओर चलना था (यहो. 6:2-5)। इस्राएल परमेश्वर की आज्ञानुसार चलते रहे और परमेश्वर ने यरीहो की दीवारों को गिरा दिया। बहुत सारी दीवारें आज भी गिरती हैं जब परमेश्वर के लोग उसके निर्देश में चलते हैं। अभिमान, अविश्वास, आत्मिक बन्धन आदि की दीवारें।

यहोशापात और उसकी सेना चलते हुए और परमेश्वर की स्तुति करते गई, और परमेश्वर ने उनके शत्रुओं को उनके हाथ में कर दिया दिया हालाँकि शत्रु उनसे बहुत अधिक संख्या में था (2 इति. 20:22)।

बहुत सारी मण्डलियों ने आत्मा से प्रेरणा पाकर चारों ओर चक्कर लगाए हैं। एक कलीसिया की इमारत के चारों ओर चक्कर लगाना, स्वाभाविक मन को उतना ही बेकार लगा होगा, जितना यरीहो के चक्कर लगाना था। परन्तु परिणाम लगभग नाटकीय रहे हैं। बन्धन, अभिमान और कटुता की दीवारें टूट पड़ी हैं। इस प्रकार के कूच को कभी-कभी "यरीहो मार्च" भी कहा गया है। दूसरे इसे "महिमा मार्च" कहते हैं।

मसीह की दुल्हन को एक आगे बढ़ रही सेना के रूप में चित्रित किया गया है (श्रेष्ठगीत 6:4,10)।

12. प्रभु में आनन्दित होना परमेश्वर की स्तुति करने का एक और तरीका है। जब नहेम्याह राजा की उपस्थिति में मुँह लटकाए हुए आया, राजा ने तुरन्त भाँप लिया कि कुछ गड़बड़ है (नहे. 2:1)। नहेम्याह कहता है, "इससे पहले मैं उसके सामने कभी उदास न हुआ था। तब राजा ने मुझ से पूछा, 'तू तो रोगी नहीं है, फिर तेरा मुँह क्यों उतरा हुआ है? यह तो मन ही की उदासी होगी?'"

नहेम्याह बहुत डरा हुआ था। राजा के सामने उदास चेहरा लिए आने का अर्थ था कि वह राजा की सेवा से प्रसन्न नहीं है। यह राजा का अपमान होगा और वह इसे सहन न करेगा, जिससे नहेम्याह डरा हुआ था। वह अपने उदास चेहरे की बात को तुरन्त समझाने लगा और कि इसका उसकी राजा की सेवा के साथ कोई सम्बंध नहीं था।

कोई भी एक राजा के सामने उदास चेहरे के साथ आने का साहस नहीं कर सकता था, फिर भी बहुत सारे मसीही राजाओं के राजा के सामने उदास और शोकित स्वभाव के साथ आते हैं। ऐसा करना परमेश्वर का अपमान है। यह संकेत देता है कि हम उसके शासन में अपने भाग से संतुष्ट नहीं हैं।

राजा के सामने आने का सही तरीका आनन्द मनाते हुए आना है - जो संकेत देता है कि हम अपनी स्थिति से प्रसन्न हैं और राजा के सेवक होने के सम्मान के लिए हम कृतज्ञ हैं। परमेश्वर के लोगों को अकसर कहा गया था, "और अपने प्रभु परमेश्वर के सामने आनन्द करना।"

इनमें से एक जगह व्यवस्था. 12:11 में है। परमेश्वर एक स्थान स्थापित कर रहा था जहाँ वह उनसे मिला करेगा। "तब जो स्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास ठहराने के लिए चुन ले उसी में तुम अपने होमबलि, और मेलबलि, और दशमांश, और उठाई हुई भेंटे; और मन्नतों की सब उत्तम उत्तम वस्तुएँ जो तुम यहोवा के लिए संकल्प करोगे, अर्थात् जितनी वस्तुओं की आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूँ उन सभों को वहीं ले जाया करना। और वहाँ तुम अपने बेटे बेटियाँ, और दास दासियों सहित अपने परमेश्वर यहोवा के सामने आनन्द करना...।"

इस प्रकार परमेश्वर ने आदेश दिया है कि जब हम उस स्थान में उससे मिलने आते हैं जिसे उसने निर्धारित किया है, हमें आनन्द करते हुए आना है। दाऊद इसे समझ गया जब उसने कहा, "उसके फाटकों में धन्यवाद, और उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो..." (भजन 100:4)।

जब इस्राएल के लोग प्रभु के पर्व मनाते थे, उन्हें ऐसा उसके सामने आनन्द करते हुए करना था (लैव्य. 23:40)। "... अपने परमेश्वर यहोवा के सामने सात दिन तक आनन्द करना।" धन्यवाद और स्तुति व्यक्त करते हुए आनन्द करना। जब हम किसी को एक भेंट देते हैं, उनका आनन्द उनका सुख और प्रशंसा व्यक्त करता है।

तो फिर, जब हम प्रभु के सामने आनन्द मनाते हैं, हम उसमें अपना सुख और उसकी प्रशंसा व्यक्त करते हैं। बड़े दुख की बात है कि कितनी सारी कलीसियाओं ने इस विचार को अपना लिया है कि आदर केवल औपचारिकता, शान्ति और गंभीरता है। उनको लगता है कि आनन्द और खुशी व्यक्त करना अनादर है। कुछ भी इतना असत्य नहीं हो सकता।

मसीहियों को समाज में सबसे आनन्दित लोग होना चाहिए और उनका आनन्द सब पर प्रकट होना चाहिए। कलीसिया, इसकी सभाओं में, एक उत्सव होना चाहिए। तब यह बहुत सारे और लोगों को भी आकर्षित करेगी, क्योंकि यह परमेश्वर के सच्चे स्वभाव को अधिक विश्वासयोग्यता के साथ प्रकट करेगा। इसके उलटे, आज की बहुत सारी कलीसियाएँ उनके उदासीन और निरानन्द रवैये से लोगों को दूर रखती हैं। वे इतने औपचारिक और गंभीर हैं। वातावरण कितना निष्ठुर और औपचारिक होता है। लोग अपना एक ऐसे झूठे, धार्मिक और अस्वाभाविक तरीके से आचरण करते हैं।

बहुत सारे तरीके हैं जिनमें हमारा आनन्द व्यक्त किया जा सकता है। शोक भरे गीतों के बदले आनन्द से भरे गीतों को गाना, एक तरीका है। अपने हाथ उठाना, तालियाँ बजाना और नाचना कुछ दूसरे तरीके हैं। प्रभु में आनन्द करने से हम परमेश्वर की उपस्थिति में अधिक विश्राम पाएँगे। हमें कम औपचारिकता और अधिक वास्तविकता चाहिए। यह संसार पहले ही काफी दुखी स्थान है इसे हमारे दुख की आवश्यकता नहीं है। आओ हम इसे चमकाने का प्रयत्न करें, क्योंकि हम जगत की ज्योति हैं।

नए नियम में, यूनानी शब्द "agalliao अगालिआओ" (इसकी पहले चर्चा की गई है) का अनुवाद है: 'आनन्द।' इसका शाब्दिक अर्थ है: "आनन्द से उछलना", "बहुत आनन्दित होना", "अत्यन्त आनन्द के साथ खुश होना"। यह आनन्द की एक अभिव्यक्ति

है जो मुफ्त और बिना रोक-टोक के, स्वैच्छिक और व्यंजक है - इतना मुफ्त कि इससे हम आनन्द के मारे उछल और कूद सकते हैं, बच्चों के समान।

अध्याय 7 स्तुति का बलिदान चढ़ाना

"इसलिए हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें।" (इब्रा. 13:15)

परमेश्वर की स्तुति करने और "स्तुतिरूपी बलिदान" चढ़ाने में बहुत अन्तर है। परमेश्वर के एक सन्तान के लिए, जो परमेश्वर के साथ सही सम्बंध में है, स्तुति प्रायः ऐसी है जो आसानी से निकलती रहती है। हमारे पास परमेश्वर की स्तुति करने के लिए इतना कुछ है कि जो कुछ भी हम उसके विषय में सोचें हमारे हृदय में से उसी समय स्तुति निकलनी चाहिए। हमारी स्तुति में अकसर धन्यवाद भी शामिल होता है और हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं उन सब आशीषों और उपकारों के लिए जो उसने हमारे जीवन पर किए हैं।

"स्तुतिरूपी बलिदान" कुछ भिन्न है। यह आसानी से और स्वैच्छा से नहीं निकलती है। यह वह स्तुति नहीं है जो हम देते हैं क्योंकि सब कुछ अच्छा चल रहा है और हम सुखी और धन्य हैं। स्तुतिरूपी बलिदान कुछ ऐसा है जिसे हम परमेश्वर को देते हैं जब उसकी स्तुति करने को मन नहीं करता है।

सब कुछ गलत होता लग रहा है। हमारा संसार टूटता लग रहा है। इन परिस्थितियों में, हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं, हमारी परिस्थितियों के कारण नहीं, परन्तु उनके अलावा। हमारी स्तुति इसलिए नहीं निकल रही क्योंकि हम बहुत अच्छे से हैं और अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति देना चाहते हैं। इस दशा में, हम विश्वास से परमेश्वर की स्तुति कर रहे हैं। हम आज्ञापालन में उसकी स्तुति कर रहे हैं। वह जो है उसके लिए न कि जो उसने किया है उसके लिए हम उसकी स्तुति कर रहे हैं। इस प्रकार की स्तुति आसानी से नहीं आती। यह कोई सस्ती चीज नहीं है। यह कीमती है। परन्तु यह पिता के हृदय को विशेष आनन्द लाती है और उसे स्तुतिरूपी बलिदान पाना अच्छा लगता है।

1. **यह लगातार स्तुति है।** दाऊद ने इस का रहस्य सीखा था। उसने कहा, "मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।" (भजन 34:1)

   यह स्तुति अनियमित और तरंगी नहीं है। यह अच्छे मौसम वाली स्तुति नहीं है। यह सस्ती, आसान स्तुति नहीं है जिसमें कोई कीमत नहीं लगती। यह भावुक स्तुति नहीं है। यह अक्रत्रिम और खोखली नहीं है। यह नियमित है। यह लगातार परमेश्वर को चढ़ाई जाती है। अच्छे समयों में, बुरे समयों में। जब सब कुछ अच्छा है, और जब कुछ भी ठीक नहीं हो रहा होता। उन समयों में जब 'यहोवा ने दिया'। और उन समयों में जब 'यहोवा ही ने लिया'। और हम फिर भी कहते हैं 'यहोवा का नाम धन्य हो।' (अय्यूब 1:21)

   यह तब भी स्तुति करना है जब बच्चा मर जाता है और हम नहीं समझते क्यों। यह परमेश्वर की स्तुति करना है जब बीमारी लगती है और डाक्टर कहते हैं कोई आशा नहीं है। यह परमेश्वर की स्तुति करना है जब नौकरी छूट जाती है। जब आप मिलों दूर हैं, आपकी कार का टायर पन्कचर हो गया है, और आपके पास जैक भी नहीं है। यह विशेषकर उन समयों में है जब स्वर्ग पीतल के समान लगता है, और लगता है परमेश्वर लाखों मील दूर है। आपकी प्रार्थनाएँ सुनी नहीं जा रही हैं, उनका उत्तर तो दूर की बात है।

   जब आप को तुरन्त कुछ मिलता नहीं जिसके लिए परमेश्वर की स्तुति कर सको, परन्तु फिर भी आप वैसे ही उसकी स्तुति करते हो। यह स्तुति का बलिदान है।

   यह स्तुति है जिसे आप परमेश्वर को चढ़ाते हो जिसे करने में आपको कीमत लगती है। आपकी स्वाभाविक भावनाएं इसका विरोध करती हैं। आपके मित्र आपको हतोत्साहित करते हैं। आपका हृदय भारी है, आपकी चाल में जोश नहीं है। शैतान कहता है, "तुम्हें किस चीज के लिए परमेश्वर की स्तुति करनी है?" वह कहता है, "इस प्रकार की स्थिति में कोई भी परमेश्वर की स्तुति नहीं कर सकता है। परमेश्वर भी नहीं चाहेगा तुम स्तुति करो। यह तो कट्टरपन हुआ।"

   फिर भी, आप, अपने हृदय की गहराई में जानते हो, कि परमेश्वर स्तुति के योग्य है। आप जानते हो कि वह सिंहासन पर विराजमान है। वह अभी भी सर्वशक्तिमान्, सारी सृष्टि का परमेश्वर है। वह किसी भी प्रकार से बदला नहीं है। वह कल, आज, हमेशा के लिए एक समान है। उसके अद्भुत नाम की स्तुति करो।

2. **<u>यह श्रव्य स्तुति है।</u>** यह हमारे होठों का फल है। हमारे होंठ शब्द पैदा करते हैं। वे हमारे विचारों को बोलने में सहायता करते हैं। तो स्तुति का बलिदान कुछ ऐसा है जिसे हम कहते हैं। जिसे हम बोलते हैं। शैतान इसे सुन सकता है। लोग इसे सुन सकते हैं। हम भी इसे सुन सकते हैं। और, सबसे महत्त्वपूर्ण, परमेश्वर इसे सुन सकता है।

   यह स्तुति का बलिदान था जिसे पौलुस और सीलास ने आधी रात को परमेश्वर को चढ़ाया था, जिस समय वे कैद में थे। उन्हें यीशु का प्रचार करने के कारण जेल में फेंक दिया गया था। वे अपराधी नहीं थे। उन्होंने कोई घोर अपराध नहीं किया था। वे राज्य का सुसमाचार सुना रहे थे और इसलिए उनको जेल में डाल दिया गया था। उन्हें बेंत मारे गए थे। उनके घाव खुले और लहू बह रहा था। उनके शरीर दुख रहे थे। उनके घाव कच्चे थे। उनके शरीरों की हर नस चिल्ला रही थी। उनके पीठ की हर जगह दुख रही थी। उनके हाथ और पैर बेड़ियों में थे। वे आराम नहीं पा रहे थे, चाहे वे कितनी भी कोशिश करते।

   अब आधी रात का समय था। ऐसा समय जब मनुष्य की आत्मा उतार में होती है; जब उनकी आत्माएँ उदासी और निराशा की गहराइयों में हो सकती थीं। उस समय सम्भवतः स्तुति करने की उनकी कोई भी इच्छा न हो। परन्तु आधी रात को, वे परमेश्वर की स्तुति करने लगे। उन्होंने उनके मुँह खोले और प्रभु की स्तुति के गीत गाने लगे। इससे परमेश्वर का हृदय कितना प्रसन्न हुआ होगा। यहाँ उसके दो सेवक, लज्जा में, दर्द में और निराशा में, उसके नाम के लिए, थे। वे जेल में थे क्योंकि उन्होंने वह किया था जो परमेश्वर ने चाहा था वे करें। क्या वे उसे शाप देंगे? क्या वे उसका इन्कार करेंगे? क्या वे कहेंगे, "हम क्या सोच रहे थे, कैसे ऐसी गड़बड़ी में पड़ गए?" क्या वे उसे दोष देंगे, और कहेंगे, "परमेश्वर के कारण ही, हम इस संकट में हैं।"

   नहीं। हज़ार बार नहीं। वे उसकी स्तुति करने लगे। आधी रात को। सबसे बुरे समय में। जब सब कुछ बुरा और निराशाजनक लग रहा था। अचानक जेल की दीवारें हिलने लगीं। उनकी जंजीरें खुल गई। मैं सोचना चाहूँगा कि जब प्रभु ने उनकी आधी रात की सभा को देखा, तो वह इतना प्रफुल्लित हो गया कि वह भी उनके साथ मिलकर "हालेलुया" चिल्ला उठा, इतनी जोर से कि जेल की दीवारें गूँज उठीं। वे मनुष्य स्तुति के बलिदान चढ़ा रहे थे। वे विपत्ति के बावजूद परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे। वे उनके परिस्थितियों के ऊपर चढ़कर, चिल्ला रहे थे, "परमेश्वर की महिमा हो।"

   संसार भर में परमेश्वर के सन्त इसी प्रकार के स्तुति के बलिदान चढ़ा रहे हैं। संसार की बहुत सारी जेलों में से, जहाँ परमेश्वर के सन्त यीशु की गवाही के कारण कैद हैं, परमेश्वर को उनके स्तुति के बलिदान चढ़ा रहे हैं।

3. **<u>इसे यीशु के द्वारा ही किया जा सकता है।</u>** "इसलिए हम उसके द्वारा...।" केवल यीशु ही इस प्रकार के बलिदान को सम्भव कर सकता है। इसी कारण से मसीह इसमें इतने अद्भुत तरीके से महिमा पाता है। पिता अच्छी तरह जानता है कि कोई भी मनुष्य इस प्रकार की स्थिति में से स्तुति और धन्यवाद नहीं चढ़ा सकता है जब तक प्रभु उसकी सहायता न करे। तो पिता इस बलिदान में उसके पुत्र के अचरज को देखता है। उसके पुत्र के अनुग्रह के द्वारा ही यह चमत्कार होता है। यहाँ एक व्यक्ति है जिसने कभी पहले ऐसी ही स्तुति में परमेश्वर को कोसा होगा, परन्तु अब, उसके जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह के कारण, वह परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति कर रहा है। वह कह रहा है, "मुझे पता नहीं यह क्यों हो रहा है, परन्तु मैं फिर भी तेरी स्तुति कर रहा हूँ।" "मुझे समझ नहीं आ रही कि यह मेरे परिवार और मेरे साथ क्यों हो रहा है, मैं इसका कोई कारण नहीं देख पा रहा हूँ, परन्तु मैं फिर भी तेरी स्तुति करता हूँ।" हर बार जब स्तुति का बलिदान चढ़ाया जाता है, यीशु मसीह महिमा पाता है।

4. **<u>यह उसके नाम को धन्यवाद देना है।</u>** परमेश्वर हमें एक ऐसे स्थान में लाना चाहता है जहाँ हम सच्चाई से इस आज्ञा का पालन कर सकें "सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो" (इफि. 5:20)। ध्यान दीजिए कि यह सब बातों के लिए पिता को धन्यवाद देना नहीं है। यह बहुत अधिक कठिन है। पहले, परमेश्वर हमें सिखाता है कि हम सब चीजों में उसे धन्यवाद दें। हम यह तब ही कर सकते हैं जब हम परमेश्वर के प्रभुत्व पर भरोसा रखते हैं। जब हम "जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए गए हैं" (रोमियों 8:28)।

स्तुतिरूपी बलिदान कैसे चढ़ाना है

1. पहले से निश्चय कर लो कि आप सब समय और हर परिस्थिति में परमेश्वर की स्तुति करोगे।

2. इसी समय करने लगो। हर दिन और सब दिन परमेश्वर की स्तुति करो। आपके दिन में चाहे कुछ भी हो, इसमें परमेश्वर की स्तुति करो। लगातार परमेश्वर की स्तुति करते रहने की आदत डालो।
3. यदि कोई समस्या आती है, या आप अपने आप को कठिनाई में पाते हो, अपने आपको परमेश्वर की स्तुति करने को कहो। भजनकार कहता है, "धन्यवाद का बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है; और जो अपना चरित्र उत्तम रखता है उसको मैं परमेश्वर का किया हुआ उद्धार दिखाऊँगा।" (भजन 50:23)। उस कठिन परिस्थिति में परमेश्वर की स्तुति करने की अपने को आज्ञा दो और परमेश्वर आपके लिए छुटकारे का मार्ग बनाएगा।
4. ऐसा विश्वास से करने लगो। स्तुति के शब्द बोलो। विश्वास से बोलकर परमेश्वर को धन्यवाद करो, चाहे आपको पता न हो आप किस लिए परमेश्वर का धन्यवाद कर रहे हो। आपके लिए छुटकारे का मार्ग बनाने के लिए उसका धन्यवाद करो। आप अभी मार्ग देख नहीं सकोगे। आपको पता नहीं है परमेश्वर कैसे छुड़ाएगा, परन्तु फिर भी आप उसे धन्यवाद दे रहे और उसकी स्तुति कर रहे हो। आप पहले ही जयवन्त हो।
5. एक बार आरम्भ करने के बाद, उसकी स्तुति करते रहो। आपकी स्तुतियाँ ऊँची और ऊँची उठती रहें। स्तुति की आत्मा आप पर छा जाए। परमेश्वर की स्तुति ऊँचे स्वर से करो। उसके लिए गाओ। उसके सामने नाचो। उसकी महिमा करो और उसका नाम ऊँचा करो। वह आपके लिए उद्धार का मार्ग बनाएगा।

अध्याय 8 स्तुति और आराधना

<u>स्तुति है:</u> अच्छा बोलना, प्रशंसा व्यक्त करना, सम्मान करना, प्रशंसा करना, बधाई देना, तालियाँ बजाना, गुणगान करना।
<u>आराधना है:</u> आदर व्यक्त करना, आदर की भावना होना, आराधना के पात्र के सामने झुकना, प्रणाम करना।
आराधना स्तुति की उत्तम प्रकार है। हम सामान्यतः स्तुति से आरम्भ करके आराधना में जाते हैं। आराधना का अर्थ होता है: किसी का मूल्य जानना, और उस मूल्य की ओर उचित प्रतिक्रिया दिखाना। <u>आराधना सबसे पहले हृदय का एक रवैया है।</u> यह मनुष्य के हृदय का सृजनहार के साथ आदरपूर्ण व्यस्त होना है। यह हृदय के भीतरी चिन्तन से आरम्भ होता है। परमेश्वर की महानता और योग्यता पर मनन। यह परमेश्वर की प्रशंसा का रस लेना है। यह सर्वशक्तिमान के लिए आदर और भय की एक भावना है।
दूसरा, यह उन विचारों और भावनाओं का भरकर बहना है। वे स्वेच्छा से निकलते हैं। उन्हें बलपूर्वक निकालना नहीं पड़ता है। दाऊद ने कहा, मेरा कटोरा उमड़ रहा है।
तीसरा, यह प्राण की आदर, भय, अचरज और प्रशंसा की गहरी अभिव्यक्तियाँ हैं।

आराधना के बाइबल में पहले संदर्भ

बाइबल की व्याख्या का एक सिद्धान्त "**पहले उल्लेख का नियम**" है, जिसका अर्थ है कि किसी भी विषय का बाइबल में पहला वर्णन इसके अर्थ और महत्त्व का एक स्पष्ट संकेत देता है, चाहे यह बाइबल में कहीं भी हो। यह उस बाइबल में शब्द या विषय के महत्त्व की समझ की कुंजी है।
आराधना शब्द का पहला उल्लेख उत्पत्ति 22:5 में है। अब्राहम, उसके सेवकों और इसहाक से बात करते समय कहता है, "...यह लड़का और मैं वहाँ जाकर, और दण्डवत् करके...।" यहाँ इस्तेमाल किया गया शब्द है: "shachah शचाह" अर्थ है: गिरकर दण्डवत् करना, झुकना, दीन आदर, भय और प्रणाम में सामने गिरना।
<u>आओ हम आराधना के इस पहले उल्लेख के कुछ अर्थ देखें:</u>

1. परमेश्वर ने अब्राहम को जाने और आराधना करने की आज्ञा दी। स्तुति और आराधना कोई विकल्प नहीं जिसे हम अपनी सनक के अनुसार करने या नहीं करने का फैसला करें। यह परमेश्वर की आज्ञा है। जब बाइबल कहती है, "याह की स्तुति करो," तो यह एक सुझाव या विनती नहीं है, यह एक आज्ञा है। कोई भी अपवाद नहीं है। परमेश्वर के हर बच्चे को परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने की आज्ञा दी गई है।

2. अब्राहम की प्रतिक्रिया आज्ञापालन की थी। यह आज्ञापालन परमेश्वर के साथ उसके वाचा के सम्बंध के लिए आवश्यक था। परमेश्वर और अब्राहम ने एक बाँधी थी जिसमें परमेश्वर की ओर से उसका सम्पूर्ण आज्ञापालन और समर्पण आवश्यक था। परमेश्वर अब्राहम के समर्पण की सच्चाई और खराई को परखने वाला था। परमेश्वर ने अब्राहम से उसी चीज का बलिदान माँगा जिसे वह सबसे मूल्यवान् मानता था, अर्थात् इसहाक, प्रतिज्ञा का पुत्र।

3. आराधना का कार्य कीमती है। आराधना के इस कार्य में अब्राहम को उसका सबसे उत्तम भेंट की कीमत देनी थी। इसे एक "स्तुतिरूपी बलिदान" होना था (इब्रा. 13:15)। आराधना का जीवन सब कुछ जो हम हैं और हमारा है की माँग करता है। (रोमि. 12:1-2)। एक सच्चा आराधक बनने के लिए, अपने सम्पूर्ण जीवन का एक पूर्ण बलिदान होना चाहिए। दाऊद इस सिद्धान्त को समझता था, जब उसने कहा, "मैं अपने परमेश्वर को सेंतमेंत के होमबलि नहीं चढ़ाने का।" (2 शमू. 24:24)

4. आराधना का कार्य एक विश्वास का कार्य है। हर कदम जो अब्राहम ने उस दिन लिया था विश्वास का कदम था। जैसे वह मोरिय्याह पर्वत पर चढ़ रहा था, वह जानता था कि परमेश्वर ने उससे उसके प्रिय पुत्र का बलिदान माँगा था, और यह भी विश्वास से जानता था, कि किसी प्रकार वह और इसहाक इकट्ठे लौटेंगे। (उत्प. 22:5)

5. स्वयं का समर्पण। न केवल अब्राहम को इसहाक को चढ़ाना था, उसे भविष्य के लिए अपनी योजनाएँ, इच्छाएँ, अभिलाषाएँ और चाहतें भी चढ़ानी थीं। उसका भविष्य, अनिवार्य रूप से, उसके पुत्र से जुड़ा था। यह वही पुत्र था जिसकी परमेश्वर ने उससे प्रतिज्ञा की थी - जिसके द्वारा वाचा की सारी प्रतिज्ञाएँ पूरी होंगी। उसे समर्पित करने का अर्थ था सब कुछ जिसे वह पूरा होता देखना चाहता था समर्पित करना। उसने अपने आप को समर्पित किया।
हम तब तक सच्ची आराधना में प्रवेश नहीं कर सकेंगे जब तक "स्वयं" का सम्पूर्ण समर्पण नहीं है। स्वयं या आत्म सदा आराधना के रास्ते में आता है। इसलिए हमें इसे परमेश्वर को समर्पित करना चाहिए।

6. स्तुति परमेश्वर की महिमा करती है। अब्राहम के बहुमूल्य आराधना के कार्य से परमेश्वर की महिमा हुई। एक सामान्य प्रतिक्रिया होगी, "वह कितना महान और यशस्वी होगा जिसके लिए अब्राहम उसके प्रिय पुत्र को बलिदान करने के लिए तैयार था, ताकि आज्ञापालन और विश्वास की आराधना दे सकता।" परमेश्वर कहता है, "धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है।" (भजन 50:23)। आराधना का हर सच्चा कार्य परमेश्वर की महिमा करता है।

7. आराधक भी आशीष पाता है। अब्राहम के आराधना के कार्य की ओर परमेश्वर की प्रतिक्रिया उसकी महान प्रसन्नता और हर आराधक को आशीष देने की उसकी इच्छा का संकेत देती है। "...कि तू ने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा; इस कारण मैं तुझे निश्चय आशीष दूँगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनत करूँगा, और तेरा वंश शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा....क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।" (उत्प. 22:16-18)
मरियम की कहानी, (यूहन्ना 12:3) जिसमें वह बहुमूल्य इत्र यीशु के पाँवों पर डालती है, आराधना का एक सुन्दर कार्य है। यूहन्ना हमें बताता है कि बाद में उसने "अपने बालों से उसके पाँव पोंछे।" उस इत्र की सुगन्ध की कल्पना करो जिसे वह अपने बालों में लिए फिरती होगी। सब जगह जहाँ वह गई होगी लोगों को उस मीठी सुगन्ध की याद आई होगी। ऐसा ही आराधकों के साथ है। उनके जीवन जहाँ कहीं भी वे जाएं मीठी सुगन्ध ले जाते हैं। यह प्रभु की उपस्थिति की सुगन्ध है।

तम्बू में चित्रित आराधना

बाइबल व्याख्या का एक और सिद्धान्त "बहुत उल्लेख का नियम" है। यह सिद्धान्त कहता है कि एक विषय को दिए गए निरुपम और जगह से इसके महत्त्व का संकेत मिलता है। जब हम देखते हैं कि तम्बू के वर्णन को कितनी जगह दी गई है - सारी बाइबल में इक्यावन अध्याय, तो हमें अनुभव होता है कि यह विषय कितना महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि तम्बू का प्रमुख उद्देश्य परमेश्वर की आराधना था, हम देख सकते हैं कि परमेश्वर हमें आराधना की अत्यावश्यक प्रकृति के विषय में बता रहा है, और कि वह इसे कितना महत्त्व देता है।

तम्बू का पहला सामान जिसका परमेश्वर वर्णन करता है (निर्ग. 25-22), वाचा का सन्दूक है जिस पर प्रायश्चित का ढकना बना था। परमेश्वर ने कहा, "मैं उसके ऊपर रहकर तुझ से मिला करूँगा...तुझ से वार्तालाप किया करूँगा।" परमपवित्रस्थान, जिसमें सन्दूक था, वह स्थान था जहाँ परमेश्वर मनुष्य से मिलेगा और आमने-सामने बार्तालाप करेगा। यह आराधना का स्थान था।

पुरानी वाचा के प्रबंध में, यह विस्मयकारी सौभाग्य केवल महा याजक को ही दिया गया था, और वह भी केवल प्रायश्चित के दिन, वर्ष में एक बार ही। नए नियम के प्रबंध में, हम कितने सौभाग्यशाली हैं जिन्हें यीशु के लहू के द्वारा निरन्तर पहुँच है।

तम्बू में हम मसीहियों के लिए मूल शिक्षा जो शामिल है आराधना की है। परमेश्वर उसके लोगों को मिस्र से सामर्थी हाथ द्वारा निकाल लाया है (निर्ग. 32:11)। एक बार जब उनका मिस्र से छुटकारा पूरा हुआ, उसने मूसा को तम्बू बनाने का आदेश दिया। हमारे भी मिस्र (पाप और इसके बन्धन) से छुटकारे के बाद, परमेश्वर की पहली इच्छा है कि हम आराधना की सेवकाई में लग जाएँ।

तम्बू हमें आराधना का क्रम और प्रगति सिखाता है। तम्बू के बाहरी आँगन में आने पर, हम पहली चीज जो देखते हैं बलिदान की पीतल की वेदी है। यहीं पर हमारे पापों और अपराधों से निपटा जाता है और हम परमेश्वर की क्षमा पाते हैं।

उसके बाद पीतल की हौदी है, जो वचन के पानी से धोए जाने का प्रतीक है। आराधक को पवित्रस्थान के परदों के पास पहुँचने के पहले इन दो अनुभवों में से गुज़रना होता था।

पवित्रस्थान के भीतर रोटी के लिए मेज, सात टहनियों वाला दीवट और धूप के लिए सोने की वेदी थी। इन सब का आराधना की शिक्षा में बड़ा महत्त्व है।

अन्त में, परमपवित्रस्थान था, वह पवित्र और समारोही मिलने का स्थान जो स्तुति और आराधना के सबसे ऊँचे और शुद्ध किस्म को दर्शाता है। इसी स्थान पर आत्मा हमें ले जाना चाहता है। आराधना की निपुणताओं को सीखने में एक निश्चित प्रगति है। परमेश्वर हमें विभिन्न अवस्थाओं में से ले जाना चाहता है, ताकि, आखिरकार, हम पवित्र आराधना के अन्तिम स्थान में प्रवेश कर सकें, उसके साथ परदे के पीछे उस स्थान में।

अध्याय 9 स्तुति और आराधना में संगीत

संगीत ने परमेश्वर की आराधना में सदा से एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सृष्टि के उदय के समय से "भोर के तारे एक संग गाते थे और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करते थे" (अय्यूब 38:7)।

इब्री संगीत मुख्य रूप से कंठसंगीत था। उनके इतिहास के प्रारंभिक दिनों में बहुत कम वाद्य थे। मनुष्य की आवाज सबसे आसानी से उपलब्ध और लोकप्रिय वाद्य था जिससे संगीत बनाया जा सकता था।

बाइबल में संगीत और गीत का पहला उल्लेख उत्पत्ति 31:27 में है, और हँसीविनोद की अभिव्यक्ति से जुड़ा है। गीत में आराधना सबसे पहले निर्गमन 15:1 में पाया जाता है। तब मूसा और इस्राएलियों ने प्रभु के लिए यह गीत गाया; आयत 20, मरियम और सब स्त्रियाँ, हाथों में डफ लिए और नाचती हुई उसके पीछे हो लीं।

बैर में कुआँ खोदने को गीत गाकर मनाया गया था (गिनती 21:17-18)।

दबोरा और बाराक ने उनकी विजय को गीत के साथ मनाया (न्यायियों 5:1-31)। इस्राएल की स्त्रियों ने गोलियत पर दाऊद की जय को गीत में मनाया (1 शमू. 18:6-7)।

4,000 लेवियों ने वाद्यों के साथ प्रभु की स्तुति गाई (1 इति. 23:5), जब सुलैमान इस्राएल का राजा बना था।

"जो इस्राएली यरूशलेम में उपस्थित थे, वे सात दिन तक अखमीरी रोटी का पर्व बड़े आनन्द से मनाते रहे; और प्रतिदिन लेवीय और याजक ऊँचे शब्द के बाजे यहोवा के लिए बजाकर यहोवा की स्तुति करते रहे।" (2 इति. 30:21)

"तब दाऊद ने प्रधान लेवियों को आज्ञा दी कि वे अपने भाई गवैयों को बाजे अर्थात् सरंगी, वीणा और झाँझ देकर बजाने और आनन्द के साथ ऊँचे स्वर से गाने के लिए नियुक्त करें।" (1 इति. 15:16)

स्पष्ट है कि संगीत और गाना परमेश्वर की स्तुति और आराधना में असल में अनिवार्य हैं। यह सारी बाइबल में, उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक चित्रित किया गया है। और आज भी वैसा ही है। यह परमेश्वर की स्तुति की एक अनिवार्य, यशस्वी, सकारात्मक अभिव्यक्ति है।

शैतान और संगीत

यह भी सत्य है कि शैतान उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए संगीत इस्तेमाल करता है। उसके पतन से पहले, लूसिफर एक प्रधान संगीतकार था। यहेजकेल 28:13 हमें बताता है कि "तेरे डफ और बाँसुलियाँ तुझी में बनाई गई थीं; जिस दिन तू सिरजा गया था, उस दिन वे भी तैयार की गई थीं।" लूसिफर एक विशेषज्ञ संगीतकार था। उसे वरदान को परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल करना था, परन्तु जब उसने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और उसे स्वर्ग से निकालना पड़ा, उसने उसके वरदान का दुरूपयोग किया और भले के बदले बुराई के लिए इस्तेमाल करने लगा। वह ऐसा आज तक बड़े प्रभावशाली तरीके से कर रहा है।
ये कैन के वंशज थे जिन्होंने संगीत के वाद्य और युद्ध के हथियार इस्तेमाल किए थे। (उत्प. 4:21-22)
जब मूसा पर्वत पर परमेश्वर से मिलने के बाद लौटा, उसने देखा कि इस्राएल के लोग जीवित परमेश्वर को छोड़कर मूरतों की आराधना करने लगे थे। वे सोने के बछड़े के चारों ओर नाच और गा रहे थे। उनके संगीत की आवाजें इतनी भ्रम पैदा करने वाली थीं कि वह पहले तो आवाजों के महत्त्व का पता नहीं लगा सका।
ऐसा भ्रम से भरा संगीत शैतान की छाप है - वह उलझन में डालता है। कितना सारा आधुनिक संगीत भ्रम से भरा हुआ है। यह लोगों को घबराता और पागल बनाता है।
भक्त संगीत का बिलकुल उलटा प्रभाव होता है। यह घबराने के बदले शान्त करता है। यह हमें उत्तेजित कर सकता है, परन्तु यह कभी भी हमारी भावनाओं को नियंत्रण के बाहर नहीं करता। यह हमें शक्ति देता है, निकालता नहीं है।
बेबिलोन का राजा, नबूकदनेस्सर ने अपनी बनाई हुई मूरत की उपासना करवाने के लिए विभिन्न प्रकार के संगीत वाद्य इस्तेमाल किए थे। (दानिय्येल 3:5-7)
हेरोदेस ने सिलोमी के मोहक संगीत और नाच के वश में आकर मूर्खतापूर्वक यूहन्ना बपतिस्मादाता का सिर कटवा दिया। (मत्ती 14:6)
शैतान द्वारा प्रेरित बेबिलोन का संगीत आखिरकार नष्ट कर दिया जाएगा जब बेबिलोन के नगर का नाश होगा। उसके संगीत का स्वर फिर कभी सुनाई न देगा। (प्रका. 18:22)

संगीत परमेश्वर की आराधना को प्रेरित कर सकता है

पवित्र आत्मा भी संगीत को परमेश्वर की महिमा और लोगों की उन्नति के लिए इस्तेमाल कर सकता है।
अभिषिक्त संगीत का शाऊल पर जो आरोग्यकर प्रभाव पड़ा था उस पर ध्यान दो (1 शमू. 16:23)। दाऊद को परमेश्वर ने अभिषिक्त किया था। (आयत 13)। वह एक कुशल संगीतकार, एक गुणी रचयिता और एक मधुर गायक था। जब वह आत्मा के अभिषक में बजाता और गाता था, दुष्ट आत्मा शाऊल से निकल जाती थी। वह ताज़ा हो जाता था। वह चंगा हो जाता।
जब यहोशापात को देश में संकट के कारण एक भविष्यद्वक्ता की आवश्यकता थी, उसने एलीशा को बुलाया। भविष्यद्वक्ता ने एक बजानेवाले को बुलाया, "...जब बजानेवाला बजाने लगा, तब यहोवा की शक्ति एलीशा पर हुई। और उसने कहा, "...यहोवा यों कहता है...." (2 राजाओं 3:11,15-16)। प्रकट है कि संगीत ने भविष्यद्वाणी के वरदान के कार्य के लिए वातावरण और मनोदशा बनाने में सहायता की।
राजा दाऊद ने 4,000 पुरुषों को नियुक्त किया कि वे वीणा, सारंगी और झाँझ बजा-बजाकर नबूबत करें। (1 इति. 25:1)
केवल बेबिलोन की बन्धुआई में ही उन्होंने गीत गाना और बजाना बंद किया था। उनका अभिषिक्त संगीत बंद हो गया और उन्होंने अपनी वीणाओं को मजनू वृक्षों पर टाँग दिया। (भजन 137)
जब उनके बेबिलोन के बन्धिकर्त्ताओं ने उन पर जोर डाला कि वे गाएँ, उन्होंने उत्तर दिया, "हम यहोवा के गीत को पराए देश में कैसे गाएँ?" जब उनकी बन्धुआई 70 वर्षों के बाद समाप्त हुई, वे आनन्द के गीतों के साथ हँसते हुए अपने देश लौट आए। उनके होठों पर स्तुति थी। (भजन 126-1-2)। जब कलीसिया आत्मिक बन्धुआई में होती है तब उसका अभिषिक्त संगीत बंद हो जाता है। जब बन्धुआई टूटती है और लोग स्वतंत्रता में आते हैं, तब एक बार फिर संगीत, गाना, स्तुति, नाचना और हँसना भी लौट आता है।

नए नियम में संगीत और गाना

1. चेलों ने मिलकर भजन गाए थे। (मत्ती 26:30; मरकुस 14:26)
2. पौलुस और सीलास ने जेल में परमेश्वर की स्तुति के गीत गाए। (प्रेरितों 16:25)
3. प्रेरित पौलुस कलीसिया को अभिषिक्त गाने का निर्देश देता है।

उन्हें गाने चाहिए:

क. भजन, संगीत के साथ भजन।

ख. स्तुतिगान, परमेश्वर की स्तुति का गीत।

ग. आत्मिक गीत, उसी समय आत्मा द्वारा दिए गए गीत। पुरानी कलीसिया के गीत प्रभु की स्तुतियाँ हुआ करते थे। उनका गीत गाने का प्रमुख उद्देश्य परमेश्वर की स्तुति और नाम ऊँचा करना था। वे प्रभाव डालने या मनोरंजन के लिए नहीं गाते थे। उनके गीत मनुष्य केन्द्रित नहीं थे। वे परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए होते थे।

इस प्रकार का अभिषिक्त गाना और संगीत, जो स्तुति और आराधना में परमेश्वर के लिए है, आज कलीसिया में कम ही पाया जाता है। परन्तु परमेश्वर यह सेवा उसके लोगों को लौटा रहा है। यहाँ कुझ सुझाव दिए गए हैं जिनके द्वारा आप अपनी मण्डली को अभिषिक्त संगीत और स्तुति की सेवकाई में ले जा सकते हैं।

1. हर सभा धन्यवाद और स्तुति के गीत के साथ आरम्भ करो। (भजन 100:4)। "उसके फाटकों से धन्यवाद, और उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो।"

2. प्रार्थनापूर्वक पवित्र आत्मा से सही गीत या स्तुतिगान पूछो। परमेश्वर के पास हर सभा के लिए एक विषय और एक संदेश है। प्रायः सही गीत उस विषय के लिए सुर पैदा करेगा।

3. एक गीत को या गीत के एक भाग को एक से अधिक बार गाने से, जो विशेषकर अभिषिक्त और आशीषित लगता है डरो मत।

4. लोगों को "प्रभु के लिए गाने" के लिए प्रेरित करो। स्तुतिगान अकसर गाए जाते हैं क्योंकि गाना हमारी परम्परा और रिवाज है। हमारे पास इससे कहीं अधिक योग्य उद्देश्य है। यह प्रभु के लिए गाना है - गीत में अपना ध्यान स्वर्ग की ओर लगाना है।

5. स्तुति और धन्यवाद के गीत से आरम्भ करो। लोगों को उनके द्वारा सच्चाई से उनकी स्तुति व्यक्त करने दो। गीत अपने में स्तुतियाँ नहीं हैं। वे मात्र साधन हैं जिनके द्वारा हम अपनी स्तुति व्यक्त कर सकते हैं। बिना कोई सच्ची स्तुति व्यक्त किए बहुत सारे स्तुतिगान और गीत गाना सम्भव है।

6. स्तुति के गीत लोगों को आराधना करने के लिए प्रेरित करेंगे। हम अकसर स्तुति से आरम्भ करते हैं और फिर स्तुति के विभिन्न चरणों में से गुज़रते हुए आराधना में प्रवेश करते हैं, जो स्तुति का सबसे ऊँचा स्तर है।

7. गीत की सभा को जल्दबाजी के साथ मत समाप्त करो। बहुत सारे सेवक सभा के इस भाग को प्रारंभिक तैयारी के रूप में देखते हैं, जिसे करना पड़ता है, पारम्पारिक आवश्यकता है। गीत गाने, स्तुति और आराधना करने में समय लगाओ। यह हमारे इकट्ठे होने का एक बहुत महत्त्वपूर्ण भाग है।

8. लोगों को भाग लेने के लिए अवसर दो। स्वैच्छिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन दो। सम्भव है कोई प्रार्थना करे, जिससे सभा को सुर मिल जाए। दूसरा भविष्यद्वाणी करो, और उपदेश बाकी की सभा के लिए एक विषय देदे।

9. आत्मा के प्रदर्शन (1 कुरिं. 12:8-11) को विश्वासियों की सभा में अभिव्यक्ति मिलनी चाहिए। आत्मा को मत बुझाओ (1 थिस्स. 5:19)। इन आत्मिक साधनों के द्वारा लोगों को भाग लेने और व्यक्त करने के लिए उत्साहित करो। परन्तु, नियुक्त और अभिषिक्त अगुवे को सब समय सभा पर आत्मिक अधिकार बनाए रखना है।

10. सब कुछ परस्पर उन्नति के लिए किया जाना चाहिए। हर बाइबल संबंधी प्रदर्शन वैध और उचित है, परन्तु सब कुछ जो किया जाता है, और जिस तरीके से किया जाता है, सब की उन्नति के लिए किया जाए। (1 कुरिं. 14:26)

11. उलझन पैदा करने वाली चीजों से बचो। "परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का परमेश्वर है" (1 कुरिं. 14:33)। यदि सभा में गड़बड़ी होने लगती है, अधिकार लो, और सभा को इस गड़बड़ी में से बाहर ले आओ। यदि आवश्यक हो तो रुको, और लोगों को बताओ क्या हो रहा है, इस प्रकार लोगों को स्पष्टीकरण दो। ऐसे समयों को चीजों को करने के सही और गलत तरीके सिखाओ।

12. सब कुछ प्रभु के लिए, और परमेश्वर की महिमा के लिए किया जाए। याद रहे हर सभा का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना और विश्वासियों की उन्नति करना है।

13. गीतों की पुस्तक या प्राजेक्टर इस्तेमाल करो जिससे लोग आपके साथ मिलकर गा सकें। कभी-कभी गीतों की पुस्तक को या शब्दों को छोड़ने और हृदय से परमेश्वर की आराधना करने से डरो मत।

14. स्पष्ट है गीतों की एक सभा या आराधना की एक सभा की अगुआई करने की कुछ प्रक्रिया होती है, परन्तु आपको मशीनी या अति औपचारिक बनने से बचने पर ध्यान देना है। परन्तु एक आधारीय स्वतंत्रता होनी चाहिए। लचीले बनो। कार्यक्रम के अनुसार चलने पर जोर मत दो। आत्मा की प्रेरणाओं की ओर निरन्तर संवेदनशील बनो और उनके अनुसार चलने के लिए तैयार रहो। गीतों की अच्छी अगुआई में हाथों को हिलाने से कुछ अधिक लगता है। आत्मा की स्वतंत्रता और सहजता तकनीकी परिशुद्धता से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

15. छिपे रहने का प्रयत्न करो, जिससे लोग "...यीशु को छोड़ और किसी को न..." देखें। (मत्ती 17:8)। मुझे याद है एक कलीसिया जिसकी मैं ने कई वर्षों तक अगुआई की थी। पहली बार जब मैं प्रवचन-मंच पर आया, मैं ने प्रवचन-मंज पर बहुत सारे वचन खुदे हुए देखे। वे हर उस व्यक्ति का सामना करते थे जो उस मंच पर बोलने या सेवा करने के लिए आता था। शब्द थे, "श्रीमान्, हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं" (यूहन्ना 12:21)। हमें इसे सदा मन में रखना है। लोग आपको देखने या सुनने नहीं आए हैं। वे यीशु को देखने और सुनने आए हैं। हमारा काम, आत्मा की मदद से, परदे को हटाना है, ताकि सब प्रभु को देख और उसकी आराधना कर सकें। यही हर मसीह के सेवक का लक्ष्य होना चाहिए जो एक आराधना की सभा की अगुआई करता है।

अध्याय 10 एक आराधना सभा की अगुआई करना

सामूहिक आराधना नई नियम की कलीसिया का एक अत्यन् महत्त्वपूण तत्त्व है। नए नियम के मसीहियों का प्रमुख बुलावा परमेश्वर की आराधना करना है।

अ. ऊपरः परमेश्वर की आराधना करना।
आ. तिरछाः देह की सेवा -- सन्तों की उन्नति
संसार की सेवा -- सुसमाचार प्रचार

हर कलीसिया को एक आराधना करनेवाला समाज होना चाहिए। सामूहिक आराधना के विकास में, काफी कुछ सभा के अगुवे पर निर्भर करता है।

अगुवों के गुण

1. आराधना की अगुआई एक विशेष सेवकाई है। यह सब की सेवकाई नहीं है। अकसर पास्टर की यह सेवकाई नहीं होती। ऐसा हुआ तो, उसे मण्डली में से किसी को खोजना चाहिए जिसके पास यह वरदान है और इस क्षेत्र में अगुआई करने का इच्छुक है।

2. अगुवा एक आराधक होना चाहिए। यह आवश्यक है कि जिसे आराधना में दूसरों की अगुआई करने के लिए बुलाया गया है वह आप परमेश्वर की आराधना में निपुण है। दूसरों की इसमें अगुआई करना तब तक सम्भव नहीं जब तक अगुवे ने

आराधना की आवश्यकताओं और निपुणताओं को पहले ही सीखा है। यह व्यक्ति उसकी अपनी आत्मा में स्वतंत्र और उसके अपने व्यक्तिगत जीवन में परमेश्वर की स्तुति और आराधना मुक्त भाव से करने योग्य होना चाहिए।

3. आत्मिक परिपक्वता। आराधना के अगुवे को आत्मा की चीजों में अनुभवी और परिपक्व होना चाहिए। उसका आत्मिक विकास मण्डली के बराबर (हो सके तो उनसे बेहतर) होना चाहिए जिनकी वह अगुआई करना चाहता है। ऐसी परिपक्वता अगुवे को एक भरोसा देता है और मण्डली में सुरक्षा की एक भावना आती है।
   उसे अपनी आत्मा को नियंत्रण में रखने योग्य होना चाहिए जिससे उसके व्यक्तिगत विचार और भावनाएँ सभा में नहीं घुस आएँ। उसे विश्वास का एक मनुष्य होना चाहिए, न केवल पवित्र आत्मा की अगुआई का पता लगाने के लिए, बल्कि जो पवित्र आत्मा सन्तों से कह रहा होगा उसे लागू करने के लिए भी। उसे एक उपदेशक होना चाहिए जो विश्वासियों को प्रेरित करने और प्रोत्साहित करने योग्य हो।

4. आत्मिक संवेदनशीलता। आदर्श अगुवे ने पवित्र आत्मा की ओर एक संवेदनशील कान विकसित किया हुआ है। आत्मा आप सभा की अगुआई करेगा यदि अगुवा उन प्रेरणाओं पर ध्यान लगाएगा जिन्हें आत्मा उसे देगा। आराधना सभाओं की अगुआई पवित्र आत्मा को करनी चाहिए। परन्तु, वह सदा मानवीय माध्यमों को इस्तेमाल करेगा, इसलिए अगुवे में गहरी आत्मिक जानकारी होनी चाहिए। यह मण्डली को भी पता चलेगा। वे पवित्र आत्मा की प्रेरणाओं को सुनने की योग्यता विकसित करने लगेंगे और शान्ति और भरोसे के साथ उनमें चले जाएँगे।

5. सच्ची दीनता। एक अच्छा अगुवा सदा "मसीह के पीछे छिपने" का प्रयत्न करेगा। कुछ भी एक सभा का आत्मिक वातावरण इतनी शीघ्रता के साथ नष्ट नहीं करेगा जितना एक अहंकारी अगुवा करेगा जो सभा में अपने आपको आगे रखने का प्रयत्न करता है। पवित्र आत्मा मसीह को महिमा लाना चाहता है, और अपना केन्द्र के मनुष्य को कभी नहीं बनाएगा। कोई मनुष्य परमेश्वर के सामने घमण्ड न करे। मण्डली का ध्यान अपने ऊपर लाने के बदले, अगुवे को सदा लोगों का ध्यान मसीह की ओर ले जाने का प्रयत्न करना चाहिए।

6. प्रार्थनापूर्वक तैयारी। सभा से पहले, अगुवे को कुछ समय अकेले प्रार्थना में बिताना चाहिए। इस प्रकार एक सभा का विषय पहले से पता लगाया जा सकता है। अगुवे का आत्मा परमेश्वर के आत्मा की लय पर हो जाता है और इस प्रकार सभा शुरू से ही परमेश्वर के उद्देश्य में जा सकती है। आराधना सभा में सूचनाओं जैसी कोई चीज नहीं होनी चीहिए। सारी सभा, पहले क्षण से ही, परमेश्वर की स्तुति और महिमा के लिए अर्पित है। बहुत सारे प्रचारक उनके संदेश से पहले की सब चीजों को प्रारंभिक बातें/सूचनाएं मानते हैं - आवश्यक, परन्तु महत्त्वहीन। सच्चाई यह है कि संदेश से पहले जो होता है अकसर अधिक महत्त्व का है, क्योंकि संदेश लोगों के लिए है, परन्तु आराधना परमेश्वर के लिए है।

7. आराधना के लिए पर्याप्त समय दें। जिस तरीके से बहुत सारी आराधना की सभाएँ शीघ्रता के साथ समाप्त की जाती हैं परमेश्वर के प्रताप का अपमान हैं। हमें सामूहिक आराधना के महत्त्व को पहचानना और उसे पर्याप्त समय देना चाहिए। आराधना के समय को अगुवा बेकार की बातें कर करके व्यर्थ न गँवा दे। उसका असली काम मण्डली को परमेश्वर के आत्मा के लय में लाना है, जितनी शीघ्रता और मधुरता के साथ हो सके। अनावश्यक बातें और टिप्पणियाँ इस उद्देश्य से ध्यान भंग कर सकती हैं। जब लोग परमेश्वर की आराधना करने आए हैं और वे अपने आपको उसकी स्तुति, आराधना और प्रशंसा में देना चाहते हैं, तब दुख की बात है जब वही व्यक्ति जिसे उन्हें ऐसी आराधना में ले जाना चाहिए उन्हें देर करता और रोकता है।

8. पवित्र आत्मा के लिए खुले रहें। एक सभा को आराधना में ले जाने में विश्वास लगता है क्योंकि ऐसी आराधना पहले निर्धारित या योजनाबद्ध नहीं की जा सकती है। बहुत सारे अगुवे महसूस करते हैं कि उनके पास एक निश्चित कार्यक्रम होना चाहिए। वे ठीक-ठीक जानना चाहते हैं कि एक सभा में क्या क्या होने वाला है और कब होने वाला है। आत्मिक आराधना में इससे अधिक लचीलेपन की आवश्यकता है।
   एक बार जब सभा आरम्भ हो गई है, तब आत्मा कैसे अगुआई कर रहा है उसकी जानकारी शान्ति के साथ रखी जानी चाहिए। उसकी अगुआई के पीछे एक-एक कदम करके जाना चाहिए। वह आपको निर्देश देगा कि कब आराधना होनी चाहिए। हर सभा एक समान नहीं होगी। परमेश्वर विविधता का परमेश्वर है। उसे हर बार एक ही चीज नहीं करनी है। उसके पास हर सभा के लिए विशेष उद्देश्य है।

अगुवे को पता लगाना है कि उद्देश्य क्या है और उसके साथ साथ कैसे चलना है, जैसे आत्मा उसे एक-एक कदम करके दिखाएगा। परमेश्वर सभा का, जैसे यह चल रही है, क्रम और दिशा भी बदल सकता है। एक अच्छा अगुवा पता लगा पाएगा कौन से गीत गाए जाने चाहिए; कितनी बार गाए जाने चाहिए; और किस बल के साथ गाए जाने चाहिए।
कभी-कभी एक सभा चमकीली और आनन्द से भरी होगी। दूसरे समय आत्मा एक शान्त तरीके से ले जाएगा, जिसमें चुप्पी के समय भी होंगे जो अत्यन्त गूढ़ और अर्थपूर्ण होंगे।

9. सब कुछ जो हो रहा है उसकी जानकारी रखो। अगुवे को उसकी आँखें बंद करके, "आराधना में खो जाने" से सावधान रहना चाहिए। आराधना में पूरी तरह लगना और फिर भी लोगों की जानकारी रखना और संवेदनशील रहना सम्भव है। अगुवे को आत्मा की ओर संवेदनशीलता बनाए रखनी और उसी समय, सभा पर एक नम्र परन्तु निश्चित प्रभाव बनाए रखना चाहिए।

आराधना की अगुआई के कुछ साधारण निर्देश

1. लोग जहाँ हैं वहाँ से आरम्भ करो। मण्डली के साथ, जहाँ वे हैं सम्पर्क बनाओ। उनके साथ अपनी अगुआई स्थापित करो। उनकी पहचानने में सहायता करो कि परमेश्वर ने आपको इस सभा की अगुआई करने के लिए नियुक्त किया है और कि यदि वे सहयोग देंगे और आपके साथ चलेंगे, वे परमपवित्रस्थान में पहुँचेंगे और आराधना का एक यशस्वी अनुभव पाएँगे।

2. गाने की अगुआई अवश्य नहीं आराधना की अगुआई है। बहुत सारे अच्छे गानों के अगुवे हैं जिनमें आराधना की अगुआई करने की योग्यता नहीं है। परन्तु, आराधना के अगुवे को गीतों की अगुआई और फिर आराधना में अगुआई करनी चाहिए। बहुत बार एक आराधना की सभा गीतों के साथ आरम्भ होती है। उपयुक्त गीत जो परमेश्वर की बड़ाई करते और उसकी महानता, सामर्थ्य और प्रताप की बात करते हैं, लोगों के मनों को उनके अपने ऊपर से और उनकी समस्याओं पर से निकालने और प्रभु पर लाने में सहायता करेंगे। स्तुति और धन्यवाद के गीत प्रायः उपयुक्त और उचित होते हैं। सामूहिक गीत भी लोगों को एकता में लाने का एक अच्छा तरीका हैं। जैसे उनकी आवाजें एक होती जाएँगी, उनके मन और आत्माएँ भी एक होते जाएँगे। एक बार जब एकता प्राप्त कर ली गई है, लोगों को आराधना के क्षेत्र में ले जाया जा सकता है। हम स्तुति से आरम्भ करके आराधना में जाते हैं।

3. पवित्र आत्मा को दिशा देने दो। यह किसी भी एक तरीके से हो सकता है। यह पहले गीत से ही निकल सकता है जो गाया जा रहा है। यह सारी सभा के लिए विषय ला सकता है। अकसर आत्मा एक गीत से दूसरे गीत में ले जाएगा, सब गीत एक ही या एक समान विषयों पर हो सकते हैं। यदि सभा में आत्मा के वरदान पाए लोग हैं, तो पवित्र आत्मा उन्हें सभा को क्या दिशा लेनी चाहिए बताने के लिए इस्तेमाल कर सकता है। इसे भविष्यद्वाणी या किसी प्रकटीकरण के द्वारा बताया जा सकता है। कभी-कभी आत्मा का मन एक बहुत शान्त और गैर-रचनात्मक तरीके से बताया जा सकता है। सभा के बाद ही, जब विचार किया जाता है, तब पता चलता है कि आत्मा ने कितनी सुन्दरता के साथ अगुआई की थी, और सभा में किस प्रकार की एकता और समन्वय आया था।

4. अनुचित हस्तक्षेप और बहुत से विचारों से बचो। यहीं पर अगुवे की आत्मिक परिपक्वता बहुत आवश्यक है। उसे एक नया बल जिसे लाया गया है और जो आत्मा का नहीं है का पता लगा सकने योग्य होना चाहिए। उसे ऐसे अभिप्राय को पहचानने के लिए आत्मिक रूप से सर्तक होना चाहिए। यदि व्यक्ति सावधान और सर्तक नहीं है तो सभा दूसरी दिशा में बहुत सूक्ष्मता के साथ ले जाई जा सकती है। एक बार जब आत्मा ने दिशा और मार्ग निर्धारित कर दिया है, तब बल को बदलने के लिए आने वाले किसी भी अनुचित हस्तक्षेप पर ध्यान रखो। हस्तक्षेप बड़ा अहानिकर लग सकता है। यह एक सुन्दर गीत के द्वारा जो बाइबल की बातों से भरा है आ सकता है और फिर भी यह उस दिशा को पूरी तरह बदल सकता है जहाँ परमेश्वर लोगों को ले जाना चाहता है। अगुवे को आराधना को लक्ष्य पर बनाए रखने के लिए प्रेमी परन्तु दृढ़ होना चाहिए।
बहुत सारे तरीके हैं जिनके द्वारा वह सभा को वापस मार्ग पर ला सकता है। वह सीधे कह सकता है, "देखो, मित्रो, आओ हम इसी दिशा में चलते रहें जहाँ आत्मा ले जा रहा है, और दूसरी ओर न मुड़ें।" वह एक नया गीत शुरू कर सकता है जो आत्मा के पहले विषय पर बल देता है। एक और भविष्यद्वाणी का वचन आ सकता है जो पहले विषय पर दोबारा ध्यान ला सकता है। इसके लिए अगुवे की ओर से विश्वास और साहस लगता है। उसे विवेक और चतुराई इस्तेमाल करनी चाहिए। उसे उस अवसर के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के साथ समझौता नहीं करना चाहिए, जिसके लिए बड़ी बुद्धि और अनुग्रह चाहिए होता है। यदि हम पवित्र आत्मा पर भरोसा रखेंगे वह इन्हें देगा।

5. परिवर्तन को पहचानो। आत्मा सभा को किसी भी दिशा में ले जा सकता है जहाँ वह चाहता है। इस का अर्थ यह है कि सभा के दौरान भी दिशा में परिवर्तन हो सकता है। असल में, यह अनेक बार हो सकता है। ये परिवर्तन के समय बहुत महत्त्व के हैं। अगुवा लोगों से पहले पूर्वानुमान लगा सकता है कि आत्मा क्या करना चाहता है। उसे इन परिवर्तन के समयों में स्पष्ट और दृढ़ अगुआई देनी चाहिए, जिससे कि सभा लक्ष्यहीन न चलती रहे। यदि अनिश्चितता का समय बढ़ता जाएगा, तब कोई दूसरा दिशा देने का प्रयत्न कर सकता है जिससे गलत लय बन सकती है। अगुवे को सदा याद रखना है कि परमेश्वर ने उसे लोगों की अगुआई करने के लिए अभिषिक्त और नियुक्त किया है और इसलिए वह करने के लिए जिम्मेवार है। सभा पर कठोरता के साथ शासन मत करो। लोगों पर अपनी इच्छा थोपने का प्रयत्न मत करो। आराधना की दिशा और प्रगति पर एक दृढ़ परन्तु नम्र पकड़ बनाए रखो।

6. उद्देश्य मन में रखो। सभा के लक्ष्य और उद्देश्य को कभी मत भूलो। यह सबसे पहले प्रभु की स्तुति और महिमा करना है। दूसरा, लोगों की उन्नति और आशीष के लिए है। सभा को कभी भी इन दो मूल लक्ष्यों के नीचे मत जाने दो।

7. सुरीलापन बनाओ। यूनानी शब्द "symphoneo" जिसमें से हमें हमारा शब्द सुरीलापन मिलता है, का अर्थ हैः सहमत होना। यीशु ने कहा, "यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे माँगें...।" उसने यहाँ symphoneo शब्द इस्तेमाल किया है, आवाज का सुरीलापन पैदा करना। एक आराधना सभा में एक सुरीलापन होना चाहिए। सब कुछ बड़े समन्वय के साथ मिलना चाहिए। आवाजों को एक स्वर में होना चाहिए, वाद्यों को एक स्वर में होना चाहिए, सभा के विभिन्न भागों को एक स्वर में होना चाहिए। यह एक उद्देश्य है जिसे परमेश्वर हमारे सामूहिक आराधना के दौरान प्राप्त करना चाहता है, हम सबको एक यशस्वी समन्वय में एक स्वर करना। ऐसा करने में, वह हमारे अस्तित्व के गहरे स्तरों में एकता लाता और प्रोत्साहित करता है। एक प्रसिद्ध विश्वासी ने कहा, "जो परिवार इकट्ठे प्रार्थना करता है, इकट्ठे रहता है।" और हम कह सकते हैं, "जो मण्डली इकट्ठे आराधना करना सीखती है, इकट्ठी रहेगी।"

8. भाग लेने को प्रोत्साहित करो। आजकल अकसर, मण्डली भाग लेने के बदले मात्र दर्शक बन जाती है। प्रायः हम सेवक को सब कुछ करते और मण्डली को केवल देखते और सुनते पाते हैं। नया नियम हर सदस्य के योगदान पर बल देता है। परन्तु, पहले इस विषय पर एक अच्छी शिक्षा दी जानी चाहिए। परमेश्वर के लोगों को सिखाया जाना चाहिए कि परमेश्वर आराधना में उनकी आवाजों को सुनना चाहता है। उन्हें भाग लेना सिखाया जाना चाहिए, और सिखने के बाद, करने का अवसर भी दिया जाना चाहिए। बोलकर लोगों को भाग लेने के लिए कहो। उनके उनकी आवाजें स्तुति में उठाने के लिए कहो। उनके उनकी स्तुति व्यक्त करने के लिए अवसर दो।

9. सब कुछ शालीनता और व्यवस्थित रूप से किया जाए। बहुत सारी कलीसियाएं यह वचन इस्तेमाल करती हैं (1 कुरिं. 14:40), मण्डली को भाग नहीं लेने देने के लिए बहाने के रूप में। वे शालीनता और व्यवस्था बनाए रखने पर इतना ध्यान देते हैं कि वे कुछ भी करने नहीं देते। बाइबल ऐसा नहीं कहती। यह नहीं कहती, "कुछ भी, शालीनता और व्यवस्थित, नहीं किया जाए।" कहती है, "सब कुछ किया जाए।" लोगों को भाग लेने दो। भविष्यद्वाणियाँ, प्रकटीकरण, भजन, स्तुतिगान, आत्मिक गीत हों। परन्तु वे इस प्रकार किए जाएं कि कोई उलझन न हो, क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है (1 कुरिं. 14:33)।

10. उत्तम काम करो। जैसे हम परमेश्वर की स्तुति और आराधना करना सीख रहे हैं, तो हमारा लक्ष्य, इन चीजों को अति उत्तम तरीके से करना होना चाहिए। हमें इन अत्यावश्यक क्षेत्रों में प्रगति और विकास को लक्ष्य बनाना चाहिए। ऐसी उत्तमता मानवीय उत्तमता नहीं होगी। यह मनुष्य की निपुणताओं और योग्यताओं का विकास नहीं होगा। यह पेशावरों का, परिशुद्धता और सूक्ष्मता के साथ, इस्तेमाल करना नहीं है। यह आत्मिक जीवन की गहराई में जाना है। यह आत्मिक संवेदनशीलता को तेज करना, आत्मिक जानकारी को बढ़ाना और परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणाओं की ओर आत्मिक प्रतिक्रिया दिखाने की योग्यता है।

हमारी आराधना का अन्तिम लक्ष्य परमेश्वर को ऊँचा करना और महिमा देना है। जितने प्रभावशाली तरीके से हम इसे कर सकेंगे, उतनी स्वीकार्य हमारी स्तुति होगी।

अध्याय 11 स्तुति का भविष्यसूचक महत्त्व

स्तुति के महत्त्व पर पूरी बाइबल में बल दिया गया है। स्तुति सदा से महत्त्वपूर्ण रही है। परन्तु, इस युग के अन्तिम दिनों में, स्तुति और आराधना विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं, और परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने में एक विशेष भूमिका निभाती है। इसी कारण से परमेश्वर आज उसके लोगों में स्तुति लौटा रहा है। हम पृथ्वी पर मसीह के राज्य की ओर शीघ्रता के साथ बढ़ रहे हैं। उस युग की एक महान विशेषता स्तुति और आराधना होगी। तो परमेश्वर उस समय के लिए उसके लोगों को तैयार कर रहा है। हम पहले ही राज्य में प्रवेश कर रहे हैं और हमारी तैयारी का भाग स्तुति और आराधना में श्रेष्ठ होना है।

परमेश्वर की स्तुति (भजन 149:6)

भजन 149 के पहले भाग में प्रभु की स्तुति करने के उपदेश और आज्ञाएँ पाई जाती हैं। विविध तरीकों से परमेश्वर की स्तुति करने की कम से कम दस स्पष्ट आज्ञाएँ हैं। हमें उसकी स्तुति करने; उसके कारण आनन्दित होने; अपने राजा के कारण मगन होने; उसके सामने नाचने; संगीत वाद्यों के साथ उसकी स्तुति करने, आदि को कहा गया है।
आयत 6 में हम स्तुति की सबसे ऊँची अभिव्यक्ति में पहुँचते हैं। शुद्ध स्तुति का सबसे ऊँचा स्तर। परमेश्वर की अन्तिम दिन की सेना का अन्तिम हथियार है: "उनके कण्ठ से परमेश्वर की प्रशंसा हो, और उनके हाथों में दोधारी तलवारें रहें।" ऐसे हथियारों के साथ हम शत्रु के विरुद्ध जयवन्त युद्ध लड़ सकते और अन्तिम जय पा सकते हैं, अपने परमेश्वर के नाम में।
परमेश्वर हमें स्तुति के बारे में बहुत सारी चीजें सिखाना चाह रहा है। वह हमें एक सत्य से दूसरे में प्रगतिशील तरीके से ले जा रहा है। हमारी स्तुतियों को और शुद्ध करना चाह रहा है।

वह कर रहा है:

अ. स्तुति की हमारी समझ को बढ़ा रहा।
आ. स्तुति के हमारे अभिप्रायों को शुद्ध कर रहा।
इ. स्तुति की हमारी अभिव्यक्तियों को परिशुद्ध कर रहा।
ई. उन पर अपना सिंहासन बना रहा। (भजन 22:3)
उ. उनके द्वारा अपना अधिकार प्रकट कर रहा।

आयत 8 में, परमेश्वर हमें बताता है वह क्या करने लगेगा जब हम उसकी स्तुति करते रहेंगे। वह "उनके राजाओं को साँकलों से, और उनके प्रतिष्ठित पुरुषों को लोहे की बेड़ियों से जकड़" रखेगा। ये कोई पृथ्वी के मानवीय राजा और शासक नहीं हैं। वे प्रधान और अधिकार हैं जो पृथ्वी के देशों पर आत्मिक शासन करते हैं। उसके लोगों की प्रशंसा के उत्तर में, परमेश्वर इन शैतानी प्रधानों को बाँधेगा और जिन लोगों को इन्होंने बन्धन में रखा है उन्हें मुक्त करेगा ताकि वे राज्य के सुसमाचार की आशीषों को पा सकें। इससे सबसे बड़ी आत्मिक जाग्रती के लिए द्वार खुलेगा जिसे संसार ने अभी नहीं देखा है। पृथ्वी के बड़े बड़े अन्यजाति देश परमेश्वर के राज्य के लिए खुल जाएँगे। जिस भीड़ को योएल ने "निबटारे की तराई" में देखा था, सदियों के बन्धन से और परमेश्वर के यशस्वी राज्य की आशीषें पाने के लिए मुक्त किए जाएँगे।

भजन 67 – सब देशों के लिए परमेश्वर का उद्धार रूपी स्वास्थ्य

यह भविष्यसूचक भजन परमेश्वर की दया और आशीष सब देशों पर प्रकट होने के लिए प्रार्थना के साथ आरम्भ होता है। यह इस भविष्यद्वाणी के साथ कि परमेश्वर हमें आशीष देगा, भूमि अपनी उपज देगी, और "पृथ्वी के दूर दूर देशों के सब लोग उसका भय मानेंगे" के साथ समाप्त होता है। इस विश्वव्यापी आशीष को लाने की कुंजी परमेश्वर के लोगों की स्तुतियाँ हैं। (आयत 3 और 5)

स्तुति की प्रगति पर ध्यान दो

1. "परमेश्वर के लोग तेरी स्तुति करें, हे परमेश्वर।" यह परमेश्वर के लोगों की बात कर रहा है - उसके उद्धार पाए लोग। उन्हें स्तुति कर रहे लोगों की एक सेना के अगुवे होना है। जो चीज परमेश्वर की महान आशीषों को सारी पृथ्वी पर लाने में तेजी करेगा उसके उद्धार पाए समाज की स्तुतियाँ हैं।

2. "देश देश के लोग तेरा धन्यवाद करें" - एक ऐसे समय की बात कर रहा है जब स्तुति केवल परमेश्वर के उद्धार पाए लोगों तक ही सीमित नहीं रहेगी, बल्कि उनसे काफी परे जाएगी। नया जन्म न पाए लोग भी परमेश्वर की स्तुति करने लगेंगे। वे उसे एकमात्र सच्चे परमेश्वर और केवल वह ही स्तुति, आराधना और प्रशंसा के योग्य है के रूप में पहचानने लगेंगे।

3. "राज्य राज्य के लोग आनन्द करें और जयजयकार करें।" इस समय तक, सारे देश परमेश्वर की प्रशंसा और स्तुति करने लगेंगे। वे पहचानने लगेंगे कि उनकी हल न हो सकने वाली समस्याओं का समाधान केवल परमेश्वर की सरकार के हस्तक्षेप में है।
जब इस प्रकार स्तुति का सिलसिला परमेश्वर के लोगों द्वारा आरम्भ होगा, यह परमेश्वर की सरकार और न्याय को पृथ्वी पर स्थापित करेगा (आयत 4)। केवल इससे ही "जिससे तेरी गति पृथ्वी पर, और तेरा किया हुआ उद्धार सारी जातियों में जाना जाए" पूरा होगा। (आयत 2)
यहाँ "उद्धार" के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द है: "YESHAH", जिसका अर्थ है, उद्धार, छुटकारा, जय, समृद्धि, कल्याण, आदि। ये सब आशीषें एक व्यक्ति में हैं और उसका नाम है यीशु। केवल वह ही संसार की बहुगुणा समस्याओं का समाधान है। हम केवल उसकी ओर ही देखते हैं। जैसे हम परमेश्वर की स्तुति करते रहेंगे उसका आना शीघ्र होगा।

भजन 72 राज्य का शासन

भजन 72 एक यशस्वी, भविष्यसूचक, मसीहा-संबंधि भजन है जो हमारे मसीहा, यीशु के राज्य के आगमन के अनेक अद्‌भुत पहलुओं की रूपरेखा प्रस्तुत करता है। पूरा भजन राज्य के बारे में आश्चर्यजनक तथ्यों से भरा हुआ है। परन्तु, हम केवल दो की ही बात करेंगे, जो हमारे वर्तमान विषय से संबंधित हैं।
आयत 15ब, "...दिन भर उसको धन्य कहते रहेंगे।"
आयत 17, "उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा; जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक उसका नाम नित्य नया होता रहेगा, और लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी।"
पृथ्वी पर परमेश्वर के अनन्त, विश्वव्यापी राज्य का एक मूलभूत तत्त्व परमेश्वर की आराधना होगी। परमेश्वर का सिंहासन यरूशलेम में स्थापित होगा। मसीह उस पर विराजमान होगा। राजा दाऊद प्रतिशासक होगा (यिम. 30:9; यहेज. 37:24-25)।
सब देश प्रति वर्ष राजा को दण्डवत् करने और झोपिड़यों का पर्व मनाने यरूशलेम जाया करेंगे। (जक. 14:16)
प्रभु का भवन पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा और सब देशों के लोग आएँगे ताकि प्रभु उन्हें सिखा सके। (यशा. 2:2-3)
वे आपस में कहेंगे, "आओ हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएँ; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे।"
जो लोग यरूशलेम में राजा, अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने के लिए न जाएँगे, उनके यहाँ वर्षा न होगी। (जक. 14:17)
उस दिन नारा होगा, "यहोवा के लिए पवित्र।" (जक. 14:20)

आओ, उसकी प्रशंसा करें! आमीन!

पुराने नियम की पुस्तकों की संक्षिप्त रूपरेखा

A. पंचग्रंथ, पाँच पुस्तकें

1. **उत्पत्ति**। उत्पत्ति की पुस्तक। सृष्टि, मनुष्यजाति, आदि की उत्पत्ति। मुख्य रूप से चुने हुए लोगों के प्रारंभिक इतिहास का विवरण।

2. **निर्गमन**। बन्धन, छुटकारा, और मूसा की अगुआई में, कनान जाने के इस्राएल के प्रारंभ का इतिहास।

3. **लैव्यव्यवस्था**। नैतिक-शास्त्र, शुद्धीकरण, भोजन, आदि के विषय में नियमों की पुस्तक। यह बलिदानों के द्वारा परमेश्वर तक पहुँच के बारे में सिखाती है।

4. **गिनती**। इस्राएल की यात्रा की पुस्तक, जंगल में चालीस वर्षो का भ्रमण।

5. **व्यवस्थाविवरण**। इस्राएल का कनान में प्रवेश करने के पहले व्यवस्था का दोहराया जाना।

B. ऐतिहासिक पुस्तकें। बारह।

(1) **यहोशू**। यहोशू की अगुआई के अधीन कनान पर विजय और प्रदेश का बारह गोत्रों में बाँटे जाने का विवरण।

(2) **न्यायियों**। इस्राएल के छः बार दमन किए जाने और पंद्रह न्यायियों द्वारा उनके विभिन्न छुटकारे का विवरण।

(3) **रूत**। रूत, दाऊद और यीशु मसीह की पूर्वज की एक सुन्दर कहानी।

(4,5) 1,2 **शमूएल**। शमूएल का इतिहास, शाऊद और दाऊद के शासनों के साथ इस्राएल में राजा के शासन का प्रारंभ और आरम्भ के वर्ष।

(6,7) 1,2 **राजाओं**। इस्राएक के राज्य का प्रारंभिक और बाद में विभाजित राज्य का इतिहास। एलिय्याह और एलीशा के वीरोचित व्यक्तित्व।

(8,9) 1,2 **इतिहास**। मुख्य रूप से दाऊद, सुलैमान, और यहूदा के राजाओं का बन्धुआई तक का इतिहास।

(10) **एज्रा**। बन्धुआई से यहूदियों की वापसी और मन्दिर के पुनःनुर्माण का विवरण।

(11) **नहेम्याह**। यरूशलेम की शहरपनाह का पुनःनिर्माण और पवित्र विधियों का पुनःस्थापित किए जाने का विवरण।

(12) **एस्तेर**। हामान के षड्यंत्र से रानी एस्तेर की यहूदियों के छुटकारे, और पूरीम के पर्व की स्थापना की कहानी।

C. कविता की पुस्तकें। पाँच।

(1) **अय्यूब**। दुख की समस्या, शैतान के दुर्भाव को दिखाना, अय्यूब का धीरज, मानवीय दर्शन की व्यर्थता, ईश्वरीय बुद्धि की आवश्यकता, और कष्ट पानेवाले का अन्तिम छुटकारा।

(2) **भजनसंहिता**। एक सौ पच्चास आत्मिक गीतों, कविताओं और प्रार्थनाओं का संग्रह, जिन्हें यहूदियों ने अपने इतिहास में इस्तेमाल किया था और कलीसिया आराधना और भक्ति में करती है।

(3) **नीतिवचन**। बुद्धि, संयम, न्याय, आदि पर नैतिक और धार्मिक नीतिवचनों और प्रवचनों का संग्रह।

(4) **सभोपदेशक**। जीवन की व्यर्थता पर और परमेश्वर की ओर कर्तव्य और दायित्व पर प्रतिक्रिया।

D. भविष्यद्वाणी की पुस्तकें। सत्रह।

(1) **यशायाह**। उद्धार का महान भविष्यद्वक्ता। मसीहा की भविष्यद्वाणियों से भरी एक पुस्तक। इसमें पापी देशों पर धिक्कार घोषित की गई है।

(2) **यिर्मयाह**। रोता हुआ भविष्यद्वक्ता। योशिय्याह से बन्धुआई तक जीवित रहा। मुख्य विषय - यहूदियों का पतित होना, बन्धन, और पुनःस्थापना।

(3) **विलपगीत**। इस्राएल के दुखों के विलाप में यिर्मयाह द्वारा लिखी शोकगीतों की एक श्रृँखला।

(4) **यहेजकेल**। असाधारण अलंकारों की एक पुस्तक, परमेश्वर के लोगों की दुखद हालत और भावी महिमा के मार्ग को बड़ी स्पष्टता के साथ चित्रित किया गया है।

(5) **दानिय्येल**। व्यक्तिगत जीवनी और भविष्यसूचक दर्शनों की एक पुस्तक, जिन घटनाओं का सम्बंध सांसारिक और पवित्र इतिहास दोनों में।

E. छोटे भविष्यद्वक्ता। बारह।

(6) **होशे**। यशायाह और मीका का एक समकालीन व्यक्ति। केन्द्रीय विचार - इस्राएल का धर्मत्याग, जिसे आत्मिक व्यभिचार कहा गया है। पुस्तक असाधारण अलंकारों से भरी हुई है जो लोगों के पापों को दर्शाते हैं।

(7) **जोएल**। यहूदा का भविष्यद्वक्ता। प्रमुख विषय - राष्ट्रीय पश्चाताप और इसकी आशीषें। "प्रभु का दिन", ईश्वरीय न्याय का एक समय, आशीषों के समय में बदल सकता है।

(8) **आमोस**। पशुपालक भविष्यद्वक्ता, एक साहसी सुधारक, स्वार्थीपन और पाप की निन्दा करता है। पुस्तक में पाँच दर्शनों की एक श्रृँखला है।

(9) **ओबद्याह**। प्रमुख विषय - एदोम का सर्वनाश और इस्राएल का अन्तिम छुटकारा।

(10) **योना**। "अनिच्छुक मिशनरी" की कहानी, जिसे कटु अनुभव के द्वारा आज्ञापालन और ईश्वरीय दया की गहराई सिखाई गई।

(11) **मीका**। इस्राएल और यहूदा की नैतिक स्थिति की काली तस्वीर, परन्तु मसीही के राज्य के स्थापना की भविष्यद्वाणी करता है जिसमें धार्मिकता जीतेगी।

(12) **नहूम**। मुख्य विषय - नीनवे का विनाश। यहूदा को अश्शूर से छुटकारे की प्रतिज्ञा।

(13) **हबक्कूक**। बेबिलोन के समय में लिखी गई। मुख्य विषय - पूर्वप्रबंध के रहस्य। एक न्यायी परमेश्वर एक दुष्ट देश को इस्राएल को कैसे सताने दे सकता है ?

(14) **सपन्याह**। आवाज में गंभीर, धमकियों से भरी, परन्तु इस्राएल की भावी महिमा के एक दर्शन के साथ समाप्त होती है।

(15) **हाग्गै**। जकर्याह का सहकर्मी। उसने दूसरे मन्दिर के निर्माण में लापरवाही के लिए लोगों को फटकार लगाई, परन्तु इसके पूरे होने पर परमेश्वर की महिमा के लौटने की प्रतिज्ञा की।

(16) **जकर्याह**। हाग्गै का समकालीन व्यक्ति। उसने यहूदियों को मन्दिर के पुनःनिर्माण के लिए प्रेरित किया। उसने आठ दर्शनों की एक श्रृँखला देखी और परमेश्वर के राज्य के अन्तिम विजय को देखा।

(17) **मलाकी**। पुराने नियम के इतिहास के समापन का एक रखाचित्र, मसीहा के आगमन के पहले सुधारों की आवश्यकता को दिखाती है।

नए नियम की पुस्तकों की संक्षिप्त रूपरेखा

A. जीवन-सम्बंधी पुस्तकें। चार।

(1) **मत्ती**। लेखक, बारह में से एक प्रेरित। कहानी विशेषकर यहूदियों के लिए लिखी गई थी, दिखाने के लिए कि यीशु यहूदी भविष्यद्वाणी का राजा मसीहा था।

(2) **मरकुस**। लेखक, यूहन्ना मरकुस। एक संक्षिप्त, चित्रोपम ब्योरा, मसीह का प्रकृति, रोग, और दुष्टात्माओं पर अलौकिक सामर्थ्य पर बल देते हुए। यह सब ईश्वरीय सामर्थ्य मनुष्य के भले के लिए इस्तेमाल किया गया।

(3) **लूका**। लेखक, "प्रिय वैद्य।" यीशु की सबसे पूर्ण जीवनी, यह उसे मनुष्य के पुत्र के रूप में दर्शाती है, पापियों और गरीबों के लिए दया से भरा हुआ।

(4) **यूहन्ना**। लेखक, "प्रिय चेला।" यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रकट किया है और उसकी शिक्षाओं का वर्णन है। दो शब्द, "विश्वास" और "अनन्त जीवन", सारी पुस्तक में पाये जाते हैं।

B. ऐतिहासिक पुस्तकें। एक।

प्रेरितों के काम। लेखक, लूका। लूका के सुसमाचार का शेष। मुख्य विषय - प्रारंभिक कलीसिया का आरम्भ और वृद्धि, मसीह के स्वर्गारोहण से पौलुस की रोम में कैद तक।

C. पोलुस के पत्र। तेरह।

(1) **रोमियों**। रोम के मसीहियों को सम्भोदित। भाग (1) अध्याय 1-11। उद्धार की आवश्यकता, और की प्रकृति, योजना की प्रभावशाली व्याख्या। भाग (2) अध्याय 12-16। मुख्य रूप से आत्मिक, सामाजिक, और नागरिक कर्तव्यों से सम्बंधित उपदेश।

(2) 1 **कुरिन्थियों**। कुरिन्थुस की कलीसिया को सम्भोदित। प्रमुख विषय - विविध प्रकार की बुराइयों से कलीसिया को शुद्ध करना, सैद्धान्तीय शिक्षाओं के साथ।

(3) 2 **कुरिन्थियों**। प्रमुख विषय - एक प्रेरिताई सेवा की विशेषताएँ और पौलुस की प्रेरिताई रक्षण।

(4) **गलातियों**। गलातियों में कलीसिया को सम्भोदित। प्रमुख विषय - पौलुस की प्रेरिताई अधिकार और विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त की रक्षा, झूठे शिक्षकों और यहूदा मत में पलटने के विरुद्ध चेतावनी।

(5) **इफिसियों**। इफिसुस की कलीसिया को सम्भोदित। उद्धार की यशस्वी योजना की एक व्याख्या। विशेष बल इस बात पर दिया गया है कि यहूदियों और अन्यजातियों के बीच सब बाधाएँ तोड़ दी गई हैं।

(6) **फिलिप्पियों**। फिलिप्पियों की कलीसिया को एक प्रेम भरा पत्र। इसमें प्रेरित की मसीह की ओर तीव्र भक्ति, कैद में उसका आनन्दपूर्वक अनुभव, और उसकी गहरी चिन्ता कि कलीसिया खरी शिक्षा में दृढ़ रहनी चाहिए प्रकट किए गए हैं।

(7) **कुलुस्सियों**। कुलुस्से की कलीसिया को लिखा पत्र। प्रमुख विषय - कलीसिया के सिर के रूप में मसीह की श्रेष्ठ महिमा, सब सांसारिक तत्त्व-ज्ञान और पाप को त्यागने का बुलावा।

(8) 1 **थिस्सलुनीकियों**। थिस्सलुनीके की कलीसिया को लिखा गया। इसमें प्रेरिताई प्रशंसा, संस्मृतियाँ, परामर्श, और उपदेश शामिल हैं। मसीह के भावी आगमन की शान्ति देनेवाली आशा पर विशेष बल दिया गया है।

(9) 2 **थिस्सलुनीकियों**। पहले पत्र का शेष। मसीह के दूसरे आगमन के सिद्धान्त के विषय में कलीसिया को ज्ञान देना और विश्वासियों को अशान्ति और सामाजिक अव्यवस्था के बारे में चेतावनी देना।
(10) 1 **तीमुथियुस**। एक पास्टर को उसके आचरण और सेवकाई के काम के विषय में परामर्श।

(11) 2 **तीमुथियुस**। पौलुस का अन्तिम पत्र, उसकी मृत्यु के कुछ देर पहले लिखा, "विश्वास में मेरा प्रिय पुत्र" को निर्देश और परामर्श दिए हैं।

(12) **तीतुस**। एक प्रेरिताई पत्र, एक विश्वसनीय मित्र को परामर्श और उपदेश, जो एक कठिन क्षेत्र में पास्टर है। भले कामों के सिद्धान्त पर विशेष बल दिया गया है।

(13) **फिलेमोन**। फिलेमोन को लिखा एक व्यक्तिगत पत्र, एक भागे हुए दास, उनेसिमुश को स्वीकार करने और क्षमा करने के लिए उससे आग्रह।

D. सामान्य पत्र। आठ।

(1) **इब्रानियों**। लेखक अनिश्चित। प्रमुख विषय - मसीह की श्रेष्ठ महिमा और, पुराने नियम की तुलना में, नए युग की आशीषें।

(2) **याकूब**। लेखक सम्भवतः याकूब है, प्रभु का भाई। तितर-बितर हुए यहूदी विश्वासियों को सम्भोदित। मुख्य विषय - व्यावहारिक विश्वास, जो भलो कामों में प्रकट होता है, जिसकी तुलना मात्र स्वीकरण से की गई है।

(3) 1 **पतरस**। प्रेरित पतरस द्वारा आसिया माइनर में बिखरे सन्तों को लिखा एक प्रतोसाहन का पत्र। प्रमुख विषय - विश्वासियों का विशेषाधिकार, मसीह के उदाहरण का अनुकरण करना, परीक्षाओं के मध्य विजय पाना और एक अपवित्र संसार में पवित्र जीवन जीना।

(4) 2 **पतरस**। मुख्य रूप से झूठे शिक्षकों और ठट्ठा करनेवालों के प्रति चेतावनी।

(5) 1 **यूहन्ना**। प्रेरित यूहन्ना द्वारा कलीसिया के विभिन्न श्रेणी के विश्वासियों को लिखा एक गहरा आत्मिक संदेश। यह आत्मिक ज्ञान, सहभागिता का कर्तव्य और भाईचारे के प्रेम के विश्वासी के विशेषाधिकार पर बहुत बल देता है।

(6) 2 **यूहन्ना**। ईश्वरीय सत्य और सांसारिक भ्रम के बारे में यूहन्ना का संक्षिप्त संदेश। "चुनी हुई महिला और उसके बच्चो" को सम्भोदित। विधर्म और झूठे शिक्षकों के प्रति चेतावनी।

(7) 3 **यूहन्ना**। प्रशंसा का प्रेरिताई पत्र, गयुस को सम्भोदित, इसमें कलीसिया में कुछ व्यक्तियों के चरित्र की रूपरेखा है।

(8) **यहूदा**। लेखक सम्भवतः याकूब का भाई है। प्रमुख विषय - धर्मत्याग और पापियों पर ईश्वरीय न्याय के ऐतिहासिक उदाहरण, अनैतिक शिक्षकों के प्रति चेतावनियों के साथ।

E. भविष्यसूचक पुस्तकें। एक।

प्रकाशितवाक्य। लेखक, प्रेरित यूहन्ना। प्रमुख विषय - अन्तिम दिनों के दर्शनों की एक श्रँखला, जो धार्मिक इतिहास से निपटते हैं। ईश्वरीय सामर्थ्य और शैतानी शक्तियों के बीच एक महान नैतिक संघर्ष चित्रित किया गया है, जिसमें मेम्ने की विजय होती है।

बाइबल के इतिहास की अवधियाँ

पुराने नियम का इतिहास			सांसारिक इतिहास
नोटः बाइबल के कालक्रम का कोई सामान्य स्वीकृत सिस्टम नहीं है। दी गई तिथियाँ ऊशेर (Ussher) के अनुसार हैं, परन्तु उन्हें कार्य करने के लिए इस्तेमाल किया गया है और वे बिलकुल सही नहीं हैं।			
	मुख्य घटनाएँ		पूर्वी साम्राज्य
ई.पू. 4004-2234 उत्पत्ति की अवधियाँ	ई.पू. 4004 पतन 2248 बाढ़ 2234 जातियों का बिखराव		इस अवधि के रिकार्ड और तिथियाँ बिलकुल अपूर्ण हैं और अधिकतर भरोसेमंद नहीं हैं
2348-1706 कुलपतियों की अवधि	1921 अब्राहम का बुलावा 1760 याकूब एसाव से भागता है 1715 यूसुफ मिस्र का गवर्नर बनता है 1706 याकूब का परिवार मिस्र जाता है		2200 ई.पू. (?) पहले पिरामिड का निर्माण
1706-1451 मिस्र में आने से लेकर प्रतिज्ञात प्रदेश में जाने तक का समय	1635 यूसुफ की मृत्यु 1571 मूसा का जन्म 1491 निर्गमन 1452 यहोशू अगुवा बनता है 1451 यरदन पार करना 1451-1444 कनान की विजय		
1394-1095 न्यायियों का समय	1394-1354 ओत्नीएल 1249-1209 गिदोन 1157-1117 एली 1117-1095 शमूएल न्यायियों की पूरी सूची के लिए बाइबल सूचीपृष्ठ देखो		
1095-975 संयुक्त राज्य का समय	1095-1055 शाऊल 1055-1015 दाऊद 1015-975 सुलैमान	मन्दिर का अर्पण, 1004	1100-625 (?) अश्शूर का राज्य 970 सीरियाई राज्य की स्थापना 753 रोम की स्थापना 740 बाद का अश्शूरी राज्य

	इस्राएल का राज्य	यहूदा का राज्य	भविष्यद्वक्ता	
975-587 विभाजित राज्य का समय	975 यारोबाम से 730 होशे 721 इस्राएल की बन्धुआई	975 रहूबियाम से 598 सिदकिय्याह 587 यहूदा की बन्धुआई	एलिय्याह एलीशा योना, आमोस मीका, होशे, योएल, यशायाह, नहूम, हबक्कूक, सपन्याह, ओबद्याह, यिर्मयाह, यहेजकेल	625-536 बेबिलोन का राज्य 536 बेबिलोन पर कुस्रू का राज्य

587-400 बन्धुआई के बाद	535 यहूदियों का ज़रूब्बाबेल के साथ लौटना 516 मन्दिर का अर्पण 458 एज्रा कुछ यहूदियों के साथ लौटता है 445 नहेम्याह यरूशलेम लौटता है और शहरपनाह की मरम्मत आरम्भ करता है	जकर्याह, दानिय्येल, हाग्गै, मलाकी	536-330 फारस का राज्य

पुराने और नए नियमों के बीच अन्तराल			
400 - 4 ई.पू.			
I फारसी, यूनान, और मिस्री शासन का समय	फारस का राज्य 535-330		नोटः- बाइबल के अधिकाँश इतिहास में सही तिथियों के विषय में काफी अनिश्चितता है। चार्ट पर, बहुत सारे मामलों में, केवल लगभग तिथियाँ दी गई हैं।
	330 सिकन्दर महान की विजयें		यूनान की विजय ने पुराने नियम के यूनान में अनुवाद के लिए मार्ग खोला

	330-166 सिकन्दर के उत्तराधिकारियों के राज्य	320 यहूदा मिस्र में मिला लिया जाता है	लगभग 250 ई.पू. में, यूनानी अनुवाद पूरा हुआ 300-4 ई.पू. के बीच अप्रमाणिक ग्रन्थ (ॲपॉक्रिफा) लिखे गए
II 166 ई.पू.-सन् मकेबियन और हेरोडियन समय	166-63 इस अवधि के भाग में मकबीस के अधीन यहूदी स्वाधीनता	168 एंटियोकस मन्दिर को भ्रष्ट करता है 165 मन्दिर पुनः अर्पित किया जाता है	167 मकैबियन विद्रोह का आरम्भ
रोमी श्रेष्ठता का समय	नए नियम का इतिहास 63 ई.पू. में, रोमी जनरल पोंपी ने यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लिया, और उस समय से लेकर पलिश्तीन के प्रान्त रोम के करद राज्य बन गए। स्थानीय सरकार कुछ भाग के लिए राजकुमारों के अधीन होती थी जिनका रोम में राजनैतिक प्रभाव होता था और दूसरे समय राज्यपालों की ओर जिन्हें मालिक नियुक्त करते थे।		

रोमी शहरशाह	निम्नलिखित रेखाचित्र प्रान्तों, शासकों और उनके शासन की लगभग तिथियाँ देता है, और कुछ विशिष्ठ घटनाएँ भी। 37-4 ई.पू. से,। हेरोदेस महान यहूदा का राजा। अगस्तुस के समय में, उसके क्षेत्र को बढ़ाकर उसमें यरदन के पूर्व का काफी क्षेत्र जोड़ दिया गया था। मसीह के जन्म के समय, वह सारे पलिश्तीन का शासक था। वह सम्भवतः उसी वर्ष मर जब मसीह का जन्म हुआ था, और उसका प्रान्त उसके बेटों में बाँट दिया गया था।			
27 ई.पू. से सन् 14 तक औगुस्तुस कैसर	यहूदा का प्रान्त (यहूदा और सामरिया) 4 ई.पू. - सन् 6 अरखिलाउस एथलार्च	गलीली और पेरिया 4 ई.पू. - सन् 39 हेरोदेस एँटिपस टेटार्च	पाँचवाँ प्रान्त (गलीली के पूर्व का देश) 4 ई.पू. - सन् 33 फिलिप्पुस	4 ई.पू. मसीह का जन्म 2 ई.पू. (?) पौलुस का जन्म सन् 25 - 27 (?) मसीह का बपतिस्मा
सन् 14-37 तिबिरियुस कैसर	सन् 26-36 गवर्नर पुन्तियुस पिलातुस			29-30 (?) मसीह को क्रूस पर चढ़ाया जाना 31-37 (?) पौलुस का परिवर्तन

37-41 कैलीगुला	सन् 39-44 हेरोदेस अग्रिप्पा I, सारे देश का राजा		
41-54 क्लौदियुस	52-58 फेलिक्स हाकिम	50-53 हेरोदेस अग्रिप्पा II	45-58 (?) पौलुस की मिश्नरी यात्राएँ
54-68 नेरो	58-61 (?) फेस्तुस	कैलसिस और दूसरे निकटवर्ती क्षेत्रों का राजा	61-68 (?) पौलुस का रोम में एक या दो कैद
68-69 गलाबा, ओथो, विटेलियुस	70, तीतुस जनरल द्वारा यरूशलेम का सर्वनाश		70, यहूदी राज्य का अन्त, यरूशलेम नष्ट हुआ
69-79 वेस्पॉशियन			
79-81 तीतुस 81-96 डोमीशियन			90-100 डोमीशियन द्वारा मसीहियों का सताव यूहन्ना की मृत्यु और प्रेरितों के युग का समापन

पुराने नियम और नए नियम में विरोध

पुराना नियम	नया नियम
लालसा, अय्यूब 23:3	अनुभूति, यूहन्ना 1:45
सृजनहार, उत्प. 1:1	उद्धारकर्त्ता, गला. 3:13
प्रतापी परमेश्वर, निर्ग. 19:18	हमारा पिता, मत्ती 6:9
पहली चीजें, उत्प. 1:1	आखिरी चीजें, 2 पत. 3:10
आत्मिक अन्धकार, भजन 82:5	जगत की ज्योति, यूहन्ना 8:12
शैतान की विजय, उत्प. 3:6	शैतान की हार, प्रका. 20:10
पाप का शाप, उत्प. 3:17-19	पाप का इलाज, यूहन्ना 3:16
मृत्यु का शासन, उत्प. 3:19	अनन्त जीवन, यूहन्ना 3:16
खूनी बलिदान, निर्ग. 12:3-7,	मेम्ना, मसीह, यूहन्ना 1:29
बन्धन, नीति. 5:22	स्वतंत्रता, रोमि. 8:2
व्यवस्था, निर्ग. 20:1-17	सुसमाचार, रोमि. 1:16
प्रतीक और परछाइयाँ, इब्रा. 8:5	तत्त्व, इब्रा. 10:34
बाहरी धर्मविधियाँ, इब्रा. 9:10	भीतरी अनुभव, लूका 24:32
लिखित रीति, रोमि. 7:6	आत्मा, गला. 5:5
भविष्यद्वाणी, यशा. 11:2	पूर्ति, प्रेरितों 3:18-19
अपेक्षित मसीही, मला. 3:1	हमारा उद्धारकर्त्ता, लूका 2:11
स्वर्ग खो गया, उत्प. 3:23	स्वर्ग दोबारा पा लिया, प्रका. 22:14

बाइबल की पुस्तकों का विश्लेषण

निम्नलिखित पृष्ठ पुराने और नए नियम की हर पुस्तक के एक संक्षिप्त परन्तु विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। स्रोत, लेख के ऐतिहासिक अवसर, मुख्य विषय, और विशेष रुचि की दूसरी बातें प्रस्तुत की गई हैं। लक्ष्य, जब कभी सम्भव हुआ है, पुस्तक के मूल-भाव का पता लगाना और गहरा आत्मिक अर्थ खोलना रहा है।

उत्पत्ति की पुस्तक

लेखक, मूसा, सामान्यतः स्वीकार किया गया है।

प्रारंभों की पुस्तक।

हमारी सृष्टि, मानवजाति, पाप, उद्धार, परिवारिक जीवन, समाज की भ्रष्टता, देश, विभिन्न भाषाएँ, इब्री जाति, आदि के प्रारंभों का विवरण।

पुस्तक के प्रारंभिक अध्यायों पर आधुनिक आलोचकों द्वारा निरन्तर आक्रमण होता रहा है, परन्तु जो तथ्य वे प्रस्तुत करते हैं, जब उनका सही सही अर्थ निकाला और समझा जाता है, कभी भी खण्डन नहीं किया गया है।

उत्पत्ति के लेखक का सृष्टि का एक विस्तृत विवरण देना नहीं है। विषय को केवल एक ही अध्याय दिया गया है (केवल एक सादी रूपरेखा जिसमें कुछ मूल तथ्य हैं), जबकि अड़तीस अध्याय चुने हुए लोगों के इतिहास को दिए गए हैं।

मुख्य विषय। मनुष्य का पाप, और एक चुनी हुई जाति के साथ बाँधी एक ईश्वरीय वाचा के द्वारा उसके उद्धार के लिए उठाए प्रारंभिक कदम, जिनका प्रारंभिक इतिहास यहाँ चित्रित किया गया है।

मूल शब्द। आदि।

पहली मसीही प्रतिज्ञा। 3:15

सारांश

I. सृष्टि का इतिहास।
- (1) सृष्टि का, 1:1-25
- (2) मनुष्य का, 1:26-31; 2:18-24

II. आदियुगीन मनुष्य का इतिहास।
- (1) परीक्षा और पतन, परखनेवाले का व्यक्तित्व और चरित्र, पाप का दण्ड, और आनेवाले उद्धारकर्त्ता की प्रतिज्ञा, अध्याय 3।
- (2) कैन और हाबिल की कहानी, अध्याय 4।
- (3) कुलपतियों की वंशावली और मृत्यु, अध्याय 5।
- (4) बाड़ से संबंधित घटनाएँ, अध्याय 6-8।
- (5) मेघधनुष की वाचा और नूह का पाप, अध्याय 9।
- (6) मूह के वंशज, अध्याय 10।
- (7) बाबेल में भाषाओं में गड़बड़ी, अध्याय 11।

III. चुने हुए लोगों का इतिहास।
- (1) अब्राहम का जीवन,
  - (अ) उसका ईश्वरीय बुलावा, अध्याय 12।
  - (आ) अब्राहम और लूत की कहानी, अध्याय 13-14।
  - (इ) अब्राहम के लिए ईश्वरीय प्रकटीकरण और प्रतिज्ञाएँ, विशेषकर एक पुत्र की, पवित्र देश के अधिकार की, और एक बड़ी जाति की प्रतिज्ञा। अध्याय 15-17।
  - (ई) तराई के शहरों की उसकी मध्यस्थता और उनका विनाश, अध्याय 18-19।
  - (उ) गरार में उसका जीवन, और इसहाक के जन्म पर एक पुत्र की प्रतिज्ञा का पूरा होना, अध्याय 20-21।
  - (ऊ) इसहाक के बलिदान करने के ईश्वरीय आज्ञा द्वारा उसके आज्ञापालन की परीक्षा, अध्याय 22।
- (2) इसहाक का जीवन।
  - (अ) उसका जन्म, 21:3।
  - (आ) उसका विवाह, अध्याय 24।

(इ) उसके पुत्रों याकूब और एसाव का जन्म, 25:20-26।

(ई) उसके बाद के वर्ष, अध्याय 26-27।

(3) याकूब का जीवन।

(अ) पहिलौठे के हक को हथियाने की उसकी युक्ति, 27:1-29।

(आ) ईश्वरीय सीढ़ी का उसका दर्शन, 28:10-22।

(इ) उसके विवाह से संबंधित घटनाएँ, और पद्दनराम में जीवन, अध्याय 29-31।

(4) अत्पत्ति में वर्णित एसाव का जीवन, अध्याय 36।

(5) यूसुफ का जीवन, याकूब के बाद के वर्ष, और चुने हुए परिवार का मिस्र जाना, अध्याय 37-50।

प्रमुख नाम जो एक साथ पाए जाते हैं

आदम और हव्वा, कैन और हाबिल।

अब्राहम और लूत, इसहाक और इश्माएल।

एसाव और याकूब, यूसुफ और उसके भाई।

पाँच महान आत्मिक चरित्र

(1) हनोक, जो "परमेश्वर के साथ चलता था।"

(2) नूह, जहाज बनानेवाला।

(3) अब्राहम, विश्वासियों का पिता।

(4) याकूब, जिसका जीवन प्रार्थना द्वारा बदल गया।

(5) यूसुफ, याकूब का पुत्र, जो दासता से उदय होकर मिस्र का प्रधान मंत्री बना।

युगों की शिक्षा

बाइबल के आरम्भ में मानवजाति के विनाश का दृश्य है। स्वर्ग खो गया, अद्याय 3।

उद्धार की योजना स्थापित, 3:15।

प्रतिज्ञा पाने के साथ बाइबल समाप्त होती है, स्वर्ग मिल गया, प्रका. 21-22।

निर्गमन की पुस्तक

लेखक और प्रमुख चरित्र। मूसा, सामान्यतः स्वीकार किया गया है।

मुख्य विषय। यूसुफ की मृत्यु से लेकर तम्बू के निर्माण तक इस्राएल का इतिहास।

मूल विचार। छुटकारा।

सारांश। इस्राएल के इतिहास में चार अवधियाँ।

I. दासत्व की अवधि।

(1) मिस्र में सताव, 17:22।

(2) मूसा के प्रारंभिक जीवन की घटनाएँ।

(अ) उसका जन्म और गोद लिया जाना, 2:1-10।

(आ) उसके भाइयों की सहायता करने की उसका प्रयास, 2:11-14।

(इ) उसका मिद्यान को भाग जाना, 2:15।

(ई) उसका विवाह, 2:21।

II. छुटकारे की अवधि।

(1) जलती झाड़ी के पास मूसा का बुलावा, 3:1-10।

(2) उसकी ईश्वरीय नियुक्ति और अधिकार पाना, 3:12-22; 4:1-9।

(3) उसके बहाने, 3:11; 4:10-13।

(4) हारून ने मूसा के साथ मिलकर फिरौन को इस्राएल को मुक्त करने को कहा, 4:27-31; 5:1-3।

(5) दासत्व कड़ा कर दिया गया, 5:5-23।

(6) मूसा और हारून को ईश्वरीय निर्देश, अध्याय 6-7।

(7) फिरौन के साथ संघर्ष और दस विपत्तियाँ, अध्याय 7-11।

(8) फसह, अध्याय 12।

III. अनुशासन की अवधि।

(1) निर्गमन, 12:31-51।

(2) सीनै पर्वत तक जाते समय के अनुभव, अध्याय 13-18, (आगे "प्रतीकों" के वचनों को देखिए।)

IV. विधि-निर्माण और संघठन की अवधि।

(1) सीनै के पास पहुँचना, 19:1-2।

(2) पर्वत पर प्रभु का प्रकट होना, अध्याय 19।

(3) दस आज्ञाओं का दिया जाना, अध्याय 20।

(4) दूसरे नियम दिए गए, अध्याय 21-24।

(5) तम्बू के निर्माण के सम्बंध में निर्देश, अध्याय 25-37।

(6) महा याजक की नियुक्ति, अध्याय 28।

(7) सोने के बछड़े की आराधना, अध्याय 32।

(8) तम्बू के निर्माण की तैयारी और खड़ा करना, अध्याय 35-40।

इस्राएल की यात्रा, मसीही जीवन का नमूना (1 कुरिं. 10:1-11)।

- मिस्री दासत्व। पाप के दासत्व का एक नमूना। मूसा एक छुड़ानेवाला। मसीह का प्रतीक (मसीह और मूसा में समान्तर देखो)।
- फसह का मेम्ना। मसीह, परमेश्वर के मेम्ने का प्रतीक।
- फिरौन इस्राएल का पीछा करता है, 14:8-9। विश्वासियों का पीछा कर रही बुरी चीजें।
- लाल समुद्र का खुलना, 14:21। बाधाओं को हटाने का एक नमूना।
- बादल और आग का खम्बा, 14:19-20। विश्वासियों के साथ ईश्वरीय उपस्थिति का नमूना।
- मूसा का गीत, 15:1-19, आत्मिक विजय के गीतों का एक नमूना।
- मिली-जुली भीड़, 12:38। कलीसिया में सांसारिक लोगों का एक नमूना।
- मारा और एलीम, 15:23-27। आत्मिक जीवन के कड़वे और मीठे अनुभवों का एक नमूना।
- मांस के बरतन, 16:3। पुराने जीवन के ऐँद्रिय सुखों का एक नमूना।
- मन्ना, 16:4। मसीह, जीवन की रोटी का एक नमूना।
- चट्टान में से पानी, 17:6। मसीह, जीवित जल का एक नमूना, 1 करिं. 10:4।
- मूसा के हाथों का ऊपर उठाया जाना, 17:12। अगुवों में सहयोग और मध्यस्थता की आवश्यकता का एक नमूना।
- तम्बू के ढाँचे में, इसके साजो-सामान में, याजकों के वस्त्रों में, वाचा के सन्दूक आदि में मसीह और कलीसिया के बहुत सारे प्रकीक पाए जाते हैं।

लैव्यव्यवस्था की पुस्तक

नामः लेवी के गोत्र से लिया गया।

लेखकः मूसा, सामान्यतः स्वीकार किया जाता है।

मूल शब्दः पहुँच और पवित्रता।

विषय वस्तुः ईश्वरीय नियमों सार-संग्रह।

प्रमुख व्यक्तिः महा याजक।

प्रमुख विषयः पापी व्यक्ति एक पवित्र परमेश्वर के सामने कैसे आ सकता है? "पवित्र" शब्द पुस्तक में लगभग अस्सी बार पाया जाता है।

साथी पुस्तकः इब्रानियों।

विश्लेषण

I. परमेश्वर तक पहुँच का एक तरीका।

(1) बलिदानों और भेटों के द्वारा।

अ. होमबलियाँ, प्रायश्चित और समर्पण व्यक्ति करती हैं, 1:2-9।

आ. अन्नबलियाँ, धन्यवाद व्यक्त करती हैं, 2:1-2।

इ. पापबलियाँ, मेलमिलाप व्यक्त करती हैं, अध्याय 4।

ई. अपराध के लिए बलियाँ, दोष से शुद्धीकरण व्यक्त करती हैं, 6:2-7।

(2) याजकीय मध्यस्थता के द्वारा।

मानवीय याजकपदः बुलावा, 8:1-5; शुद्धीकरण, 8:6; वस्त्र, 8:7-13; प्रायश्चित, 8:14; पापीपन का उदाहरण, अध्याय 10।

II. इस्राएल के शासन के लिए विशेष नियम।

(1) खाने के सम्बंध में, अध्याय 11।

(2) शुद्धिकरण, साफ-सफाई, रीति-रिवाज, नैतिक-शास्त्र, आदि के सम्बंध में, जो सब जीवन की शुद्धता पर बल देते हैं जिससे कि ईश्वरीय कृपा मिल सके, अध्याय 12-20।

(3) याजकों का शुद्धिकरण और भेंट, अध्याय 21-22।

III. पाँच वार्षिक पर्व।

(1) फसह का पर्व, अप्रेल 14 को आरम्भ होता है, 23:5। निर्गमन का स्मरणोत्सव मनाना।

(2) पिन्तेकुस्त (सप्ताहों) का पर्व, जून का छटवाँ दिन, व्यवस्था के दिए जाने का स्मरणोत्सव मनाना, 23:15।

(3) नरसिंगों का पर्व, अक्टूबर के पहले दिन, 23:23-25।

(4) प्रायश्चित का दिन, अक्टूबर के दसवें दिन, महा याजक लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिए परमपवित्रस्थान में जाता है, अध्याय 16, और 23:26-32।

(5) झोपड़ियों का पर्व, अक्टूबर के पंद्रहवें दिन आरम्भ होता है, जंगल के जीवन का स्मरणोत्सव मनाने, और फसल के लिए धन्यवाद देने के लिए, 23:39-43।

IV. सामान्य नियम और निर्देश।

(1) विश्राम वर्ष; सात वर्ष में एक बार भूमि बिना हल चलाए छोड़ी जाती थी, 25:2-7।

(2) जुबली वर्ष; पचास वर्ष में एक बार दासों को स्वतंत्र किया जाता, कर्जदारों को मुक्त किया जाता, और सामान्य वापसी होती थी, 25:8-16।

(3) आशीषों के लिए शर्तें और ताड़ना के विषय में चेतावनियाँ, अध्याय 26।

(4) विशेष संकल्प की विधियाँ, अध्याय 27।

गिनती की पुस्तक

इस्राएल की यात्राओं की पुस्तक।

नामः इस्राएल की जनगणना से लिया गया।

लेखकः मूसा, सामान्यतः माना जाता है।

प्रमुख सबकः अविश्वास बहुतायत के जीवन में जाने से रोकता है, इब्रा. 3:7-19।

प्रमुख विषय और घटनाएँ।

(1) संगठन और विधि-निर्माण, अध्याय 1-9।

(2) सीनै पर्वत से कूच, 10:11-12।

(3) लोग मन्ना को तुच्छ जानते हैं, 11:4-6।

(4) मूसा की निराशा, 11:10-15।

(5) सत्तर प्राचीनों का नियुक्त किया जाना, 11:16-25।

(6) बटेरों का भेजा जाना, 11:30-34।

(7) मरियम और हारून की ईर्ष्या, अध्याय 12।

कादेश की असफलता। घर के पास पहुँचते ही खो गए।

(8) भेदियों का भेजा जाना, और उनका ब्योरा, अध्याय 13।

(9) लोगों का विद्रोह, उन पर शाप घोषित, अध्याय 14। सारी पीढ़ी का सर्वनाश, आयत 29।

(10) जंगल में चालीस वर्ष भ्रमण से संबंधित घटनाएँ, अध्याय 15-19।

(11) कादेश को लौटना, मूसा का पाप, और हारून की मृत्यु, अध्याय 20।

(12) पीतल का साँप, अध्याय 21।

(13) बिलाम, लालची नबी और इस्राएल की भ्रष्टता, अध्याय 22-25।
(14) नई पीढ़ी की जनगणना, अध्याय 26।
(15) उत्तराधिकार, भेंटों, पर्वों, मन्नतों, आदि के विषय में विभिन्न नियम, अध्याय 27-30।
(16) मिद्यान का न्याय, अध्याय 31; यरदन के पूर्व की भूमि का बँटवारा, अध्याय 32।
(17) शरणनगर, अध्याय 35।

मसीहा के प्रतीक

लाठी जिससे चट्टान पर मारा था, 20:7-11; 1 कुरिं. 10:4 देखो।

पीतल का साँप, 21:6-9; यूहन्ना 3:14 देखो।

शरणनगर, अध्याय 35; इब्रा. 6:18 देखो।

सात शिकायतें

(1) मार्ग के विषय में, 11:1-3।
(2) भोजन के बारे में, 11:4-6।
(3) बड़े डील डौल वाले मनुष्यों के विषय में, 13:33-14:2।
(4) उनके अगुवों के विषय में, 16:3।
(5) ईश्वरीय न्याय के विषय में, 16:16:41।
(6) जंगल के विषय में, 20:2-5।
(7) मन्ना के विषय में दूसरी बार, 21:5।

व्यवस्थाविवरण की पुस्तक

नामः दो यूनानी शब्दों, "deuteros", अर्थ है "दूसरा", और "nomos", अर्थ है "व्यवस्था" ले लिया गया।

लेखकः मूसा, सामान्यतः माना जाता है।

ऐतिहासिक अवसरः इस्राएल की पिछली पीढ़ी जंगल में ही मर गई थी; इसलिए अवश्य था कि उनके प्रतिज्ञात प्रदेश में जाने से पहले व्यवस्था को दोहराया जाता और नई पीढ़ी को समझाया जाता।

विषय वस्तुः यरदन पार करने से पहले मोआब की भूमि पर मूसा द्वारा दिए गए प्रवचनों और उपदेशों की एक श्रँखला, 1:1।

मुख्य विषयः सीनै पर दी गई व्यवस्था का दोहराया जाना, आज्ञापालन के लिए बुलावा, बीच बीच में पुरानी पीढ़ी के अनुभवों की बात भी की गई है।

मूल विचारः आज्ञापालन की ईश्वरीय माँग, 10:12-13।

सारांश

(1) पूर्व में इस्राएल के साथ परमेश्वर का बरताव, अध्याय 1-4।
(2) दस आज्ञाओं का दोहराया जाना और इस्राएल के चुने हुए लोग होने के चुनाव का उल्लेख, ईश्वरीय आज्ञाओं का आज्ञापालन, अध्याय 5-11।
(3) कनान में पालन करने के लिए नियम, अध्याय 12-26।
(4) आज्ञापालन के लिए आशीषें और आज्ञोल्लंघन के लिए शाप। लोगों के सामने मृत्यु और जीवन रखे गए, अध्याय 27-30।
(5) मूसा के अन्तिम शब्द, उसका गीत, आशीर्वाद, आदि, अध्याय 31-33।
(6) अन्तिम दर्शन का पूरक विवरण और मूसा की मृत्यु, अध्याय 34।

मूल शब्द। स्मरण रखना। सारी पुस्तक में इसे बारम्बार दोहराया गया है।

स्मरण रखनाः

(1) व्यवस्था का दिया जाना, 4:9-10।
(2) वाचा, 4:23।
(3) पूर्व दासता, 5:15।
(4) महान छुटकारा, 7:18।
(5) ईश्वरीय अगुआई और प्रबंध, 8:2-6।
(6) अतीत में किए पाप, 9:7।

(7) ईश्वरीय न्याय, 24:9।
(8) पिछले दिन, 32:7।

महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद

(1) महान आज्ञा और परमेश्वर के वचन को स्मरण रखने का महत्त्व, 6:4-12।
(2) ईश्वरीय प्रबंध का धन और भूल जाने और मूर्तिपूजा का खतरा, अध्याय 8।
(3) आज्ञापालन की आशीष और पाप का शाप, अध्याय 28।

यहोशू की पुस्तक

लेखकः अनिश्चित; सम्भवतः यहोशू।
प्रमुख विषयः कनान के देश की विजय और बँटवाराष
मूल विचारः जीवन के युद्ध में कैसे सफल हों, 1:8-9।
ऐतिहासिक विश्लेषणः

(1) देश पर आक्रमण, अध्याय 1-5।
(2) यरीहो का गिरना, अध्याय 6।
(3) ऐ का युद्ध, एबाल और गिरिज्जीम पर इस्राएल, अध्याय 7-8।
(4) दक्षिण की विजय, अध्याय 10।
(5) उत्तर की विजय, और घात किए राजाओं की सूची, अध्याय 11-12।
(6) देश का विभाजन, शगणनगरों की नियुक्ति, आदि, अध्याय 13-22।
(7) विदाई का भाषण और यहोशू की मृत्यु, अध्याय 23-24।

प्रस्तावित सबक। ईश्वरीय उद्देश्यों की पूर्ति की निश्चितता।
इसे देखा गया

(1) कनानियों पर उनके भयानक पापों के कारण आ रहे न्याय में।
(2) अब्राहम के वंशज को परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार प्रतिज्ञात प्रदेश का अधिकार देने में, अत्प. 12:7।

प्रतीक

- एक सामान्य विचारधारा के अनुसार, यरदन पाप करना मृत्यु और स्वर्ग दर्शाता है। एक बेहतर सादृश्य नीचे दिया गया है।
- कनान, ऊँचे मसीही जीवन का एक नमूना, जिसे आत्मिक युद्ध द्वारा जीता जाना चाहिए, रोमियों 7:23।
- कनानी, हमारे आत्मिक शत्रुओं का एक नमूना, इफि. 6:12।
- इस्राएल के युद्ध, विश्वास की लड़ाई का एक नमूना, 1 तीमु. 6:12।
- विजय के बाद इस्राएल का विश्राम (यहोशू 11:23), प्राण के विश्राम का एक नमूना, इब्रा. 4:9।
- कनानी कुछ हद तक अधीन किए गए, नहीं जीते गए पापों की एक नमूना, इब्रा. 12:1।

चुनिन्दा चयन

(1) परमेश्वर का यहोशू को प्रोत्साहित करना, 1:1-9।
(2) यहोशू का विदाई भाषण, 23:1-16; 24:1-27।

न्यायियों की पुस्तक

लेखकः अज्ञात; परम्परा के अनुसार शमूएल माना जाता है।
मुख्य विषयः चौदह न्यायियों के समय के दौरान इस्राएल का इतिहास।
पुस्तक परमेश्वर के लोगों का मूर्तिपूजा में लौटते रहने, जिसके बाद देश पर आक्रमण, उनके शत्रुओं द्वारा सताव को चित्रित करती है।
कहानी न्यायियों के व्यक्तित्व के ईर्द-गिर्द घूमती है, जिन्हें इस्राएल के छुड़ानेवालों के रूप में खड़ा किया गया था। कहानी में चित्र के काले पहलुओं पर विशेषकर बल दिया गया है।

तिथियों के अध्ययन से पता चलता है कि लोगों ने प्रभु के साथ अधिकतर समय एक बाहरी वफादारी बनाई हुई थी जो पुस्तक को सरसरी तौर पर पढ़ने से नहीं पता चलता है।

सारांश: तीन अवधियों में पुस्तक को बाँटा जा सकता है।

I. यहोशू की मृत्यु के तुरन्त बाद का समय, 1:1-2:10।

II. सात धर्म-त्यागों, छः दासताओं, और ग्रह युद्ध का समय, अध्याय 3-16।
   पहली दासता, अरम्नहरैम के अधीन--न्यायी, ओत्नीएल, 3:5-9।
   दूसरी दासता, मोआब के अधीन--न्यायी, एहूद और शमगर, 3:12-31।
   तीसरी दासता, याबीन और सीसरा के अधीन--न्यायी, दबोरा और बाराक, 4:1-23।
   चौथी दासता, मिद्यानियों के अधीन--न्यायी, गिदोन, अध्याय 6-7।
   ग्रह युद्ध--न्यायियों, अबीमेलेक, तोला, और याईर, 8:33-10:5।
   पाँचवीं दासता, पलिश्तियों और अम्मोनियों के अधीन--न्यायी, यिप्तह, इबसान, एलोन, और अब्दोन, अध्याय 10-12।
   छटवीं दासता, पलिश्तियों के अधीन--न्यायी, शिमशोन, अध्याय 13-16।

III. उलझन और अव्यवस्था का समय, अध्याय 17-21।

आत्मिक संदेश:

(1) मानवीय असफलता, ईश्वरीय कृपा और छुटकारा।

(2) आपात के समय प्रार्थना का सामर्थ्य जब दिल से परमेश्वर की दोहाई दी जाती है। पुस्तक में इस कथन को बारम्बार पाया जाता है कि इस्राएल ने परमेश्वर की दोहाई दी।

साथी पुस्तक, गलातियों। इस्राएल का पूर्तिपूजा में चले जाने की तुलना गलातियों के विश्वासियों को धर्मविधियों में चले जाने से तुलना करो।

चरित्रों का अध्ययन:

- दबोरा, देशभक्त स्त्री।
- गिदोन, शूरवीर सूरमा।
- यिप्तह, लापरवाह मन्नत वाला मनुष्य।
- शिमशोन, निर्बल शक्तिशाली मनुष्य।

रूत की पुस्तक

एक सुन्दर कहानी, एक साहित्यिक हीरा मानी जाती है।

बाइबल की दो में से एक पुस्तक जिसमें एक स्त्री प्रमुख चरित्र है - रूत, एक मोआबी जिसने एक इब्री पति से विवाह किया; एस्तेर, एक यहूदी जिसने एक अन्जाति राजा से विवाह किया।

लेखक: अज्ञात, सम्भवत: शमूएल।

अवधि: न्यायियों का समय।

विषय: कैसे एक जवान मोआबी स्त्री का जीवन सम्पन्न हो गया:

(1) सुन्दर स्थिरता और बुद्धिमान फैसलों के द्वारा, 1:16।
(2) दीन परिश्रम के द्वारा, 2:2-3।
(3) एक अनुभवी व्यक्ति से सलाह स्वीकार करके, 3:1-5।
(4) एक ईश्वरीय विवाह के द्वारा, 4:10-11।
(5) एक राजकीय वंश में प्रतिष्ठा पाकर, 4:13-17।

मुख्य उद्देश्य: एक अन्यजाति स्त्री कैसे मसीह की पूर्वज बन गई दिखाना।

ऐतिहासिक विश्लेषण:

(1) मोआब में ठहराव, 1:1-5।
(2) दुख के साथ घर लौटना, 1:6-22।
(3) रूत बोअज़ के खेत में बीनती है, अध्याय 2।
(4) उसका बोअज़ से विवाह, 4:13।

(5) उसके पुत्र, दाऊद के परदादा का जन्म, 4:13-16।
(6) दाऊद की वंशावली, 4:18-22।

---

1 **शमूएल की पुस्तक**

लेखकः अज्ञात।
इतिहास तीन चरित्रों के ईर्द-गिर्द घूमता है।
(1) शमूएल, अन्तिम न्यायी।
(2) शाऊल, इस्राएल का पहला राजा।
(3) दाऊद, इस्राएल का आदर्श राजा।
अवधिः परिवर्तन का समय - न्यायियों के शासन का अन्त, राज्य स्थापित होता है।
(1) शमूएल का जन्म और समर्पण, अध्याय 1।
(2) एली की न्यायी और पिता के रूप में असफलता, 2:12-36।
(3) शमूएल का बुलावा और असाधारण लड़कपन, अध्याय 3।
(4) वाचा के सन्दूक का छीना जाना और लौटना, अध्याय 4-6।
(5) शमूएल की प्रार्थना द्वारा पलिश्तियों की हार, अध्याय 7।
(6) एक राजा के लिए इस्राएल की दुहाई, अध्याय 8।
(7) शाऊल को राजा चुना और अभिषेक किया गया, अध्याय 9-10।
(8) शऊल का पहला युद्ध, अध्याय 11।
(9) शमूएल राज्य की घोषणा करता है और एक राजा की माँग करने की दपराशा पर लोगों को चेतावनी देता है, अध्याय 12।
(10) शाऊल का हठ, और शमूएल की भविष्यद्वाणी, अध्याय 13।
(11) योनातान इस्राएल को बचाता है, 14-1-16।
(12) आज्ञापालन बलिदान से बेहतर है, 15:1-23।
(13) दाऊद को राजा का अभिषेक, अध्याय 16।
(14) दाऊद गोलियत का वध करता है, अध्याय 17।
(15) दाऊद और योनातान की मित्रता, अध्याय 18।
(16) शाऊल का दाऊद को सताना, 19:9-27:4।
(17) शाऊल के शासन के अन्तिम वर्ष और उसकी आत्महत्या, अध्याय 26-31।
आत्मिक संदेशः प्रार्थना, शमूएल के जीवन में प्रमुख तत्त्व।
(अ) प्रार्थना के उत्तर में जन्म, 1:10-28।
(आ) नाम का अर्थ, "परमेश्वर से माँगा", 1:20।
(इ) उसकी प्रार्थना मिस्पा में छुटकारा लाती है, 7:2-13।
(ई) इस्राएल के राजा के लिए आग्रह करने पर उसकी प्रार्थना, 8:21।
(उ) उसके लोगों के लिए उसकी निरन्तर प्रार्थना, 12:23।
ईश्वरीय नियम से पाँच विचलन जिसके कारण संकट आया।
(1) बहुविवाह, 1:6।
(2) माता-पिता का डण्डमोचन, 2:22-25; 8:1-5।
(3) पवित्र चीजों में भरोसा, 4:3।
(5) अधीरता, 13:8-9।
(6) आंशिक आज्ञापालन, अध्याय 15।

---

2 **शमूएल की पुस्तक**

लेखकः अज्ञात।
मुख्य विषयः दाऊद का शासन।
पहली अवधिः शासन के प्रारंभिक वर्ष। इस अवधि के दौरान, राजा ने, हालाँकि उस समय के अनुसार सैनिक आक्रमणों में लगा हुआ था, एक आत्मिक मन दिखाया।

(1) प्रारंभिक घटनाएँ।
  - (अ) अमालेकी का घात किया जाना जिसने राजा शाऊल को मारा था, 1:2-26।
  - (आ) दाऊद का शाऊल और योनातान के लिए शोकगीत, 1:17-27।

(2) दाऊद को यहूदा का राजा अभिषेक किया जाना, 2:4।

(3) दाऊद के अनुयायियों और ईशबोशेत के सेवकों के बीच युद्ध, 2:8-32।

(4) तथ्य जो राजा की भक्ति का संकेत देते हैं।
  - (अ) उसका ईश्वरीय मार्गदर्शन खोजना, 2:1।
  - (आ) उसका उनको दण्ड देना जिन्होंने उसका अनुग्रह जीतने के लिए उसके विरोधियों का वध किया, 4:5-12।
  - (इ) इस्राएल के राजा के रूप में बैठने के बाद, स्वीकार करने में उसका विवेक कि उसकी पदोन्नति परमेश्वर से आई है, 5:1-12।
  - (ई) उसकी सैनिक सफलता का श्रेय परमेश्वर के सामर्थ्य को देने में उसकी दीनता, 5:20।
  - (उ) वाचा के सन्दूक का यरूशलेम में लौटने के लिए उसका उत्साह, 6:1-5।
  - (ऊ) प्रभु के लिए एक मन्दिर बनाने की उसकी इच्छा और इसके निर्माण के लिए विशाल धन समर्पित करना, अध्याय 7-8।
  - (ए) योनातान के पुत्र पर उसकी कृपा, अध्याय 9।

मध्य अवधिः

(1) राजा की महान सैनिक सफलताएँ, अध्याय 10।

(2) उसका पतन और दण्ड।
  - (अ) परीक्षा, 11:1-2।
  - (आ) उसकी भ्रष्टता और ऊरिय्याह का कत्ल, अध्याय 11।
  - (इ) ईश्वरीय न्यायः
    - -नबी नातान की भर्त्सना में, 12:1-14।
    - -बेबी की मृत्यु में, 12:15-19।
    - -उसके पुत्र अम्नोन की भ्रष्टता में, 13:1-20।
    - -उसके पुत्र अबशालोम के विद्रोह में, अध्याय 15-18।

अन्तिम अवधिः दाऊद के अन्तिम वर्ष, अध्याय 20-24।
उत्तम चुनावः
  - -दाऊद की मपीबोशेत पर उदारता, अध्याय 9।
  - -नातान का दृष्टांत, 12:1-6।
  - -दाऊद का धन्यवाद का भजन, अध्याय 22।

---

1 **राजाओं की पुस्तक**

लेखकः अज्ञात।
शीर्षकः इब्रानी पाठ में, 1 और 2 राजाओं एक पुस्तक है। विभाजन यूनानी पाठकों की सुविधा के लिए की गई होगी।
सारांशः पुस्तक को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

I. सुलैमान के शासन का इतिहास।

(1) प्रारंभिक घटनाएँ। दाऊद की मृत्यु, और उसके पुत्र सुलैमान का पदग्रहण, अध्ययन 1-2।

(2) सुलैमान के शासन के प्रारंभिक वर्ष, इस्राएल का सुनहरा युग, प्रसिद्ध हुआः
  - (अ) राजा का बुद्धिमान चुनाव, 3:5-14।

(आ) उसका विवेकी न्याय, 3:16-28।
(इ) उसकी अद्वीतीय बुद्धि, 4:29-34।
(ई) उसके राज्य की वृद्धि, 4:21।
(उ) उसके दरबार और महलों का वैभव, 4:22-28, 7:1-12।
(ऊ) मन्दिर का निर्माण, अध्याय 5-6।
(ए) दूसरे निर्माण और विशाल धन, 9:17-23, 10:14-29।
(ऐ) शीबा की रानी का आना, 10:1-13।

(3) उसके शासन के बाद के वर्ष। उसके राज्य का पतन के कारण थे:
(अ) उसका अत्यधिक ऐशो-आराम, 10:14-29।
(आ) उसकी कुख्यात कामुकता, 11:1-3।
(इ) उसका परमेश्वर से दूर हो जाना, 11:4-8।
(ई) शत्रु जिन्हें परमेश्वर ने उसके विरुद्ध खड़ा किया, 11:14-40।

II. यहूदा और इस्राएल के राज्यों की इतिहास।

यहूदा में, सुलैमान की मृत्यु से लेकर यहोराम के पदग्रहण तक। इस्राएल में, यारोबाम के पदग्रहण से लेकर अहज्याह के शासन तक।

(1) सुलैमान के पुत्र, रहूबियाम की मूर्खता के कारण राज्य का विच्छेद, 11:43-12:19।
(2) दस गोत्र विद्रोह करते हैं और यारोबाम को इस्राएल का राजा बनाते हैं, 12:20।
(3) दो राज्यों का तुलनात्मक इतिहास।
(अ) यहूदा में रबूबियाम, अबिय्याम, आसा, और यहोशापात के शासन, 12:1-22:50।
(आ) इस्राएल में यारोबाम, नादाब, बाशा, एला, जिम्री, ओम्री, अहाब, और अहज्याह के दुष्ट शासन, 12:20-22:53।

वीरोचित चरित्र: नबी एलिय्याह: उसकी भविष्यद्वाणियाँ, और उसके द्वारा किए गए चमत्कार।

उत्तम चुनाव:

-सुलैमान का बुद्धिमान चुनाव, 3:5-14।
-मन्दिर के समर्पण के समय सुलैमान की प्रार्थना, 8:22-53।
-एलिय्याह की सेवकाई, अध्याय 17-19,21।
-एलीशा का बुलावा, 19:19-21।

---

2 राजाओं की पुस्तक

1 राजाओं का शेष

लेखक: अज्ञात।

मुख्य विषय: इस्राएल और यहूदा के राज्यों का इतिहास, इस्राएल में अहज्याह के शासन के बाद के भाग से, और यहूदा में यहोराम से लेकर बन्धुआई तक का समय।

जहाँ तक इस्राएल के इतिहास का प्रश्न है, यह भ्रष्ट शासकों और पापी लोगों की काली तस्वीर है जो दासता में अन्त होती है। यहूदा का राज्य भी ढाल की ओर था, परन्तु कुछ अच्छे राजाओं के कारण उस पर न्याय उतनी शीघ्रता के साथ नहीं आया; 2 इतिहास के विश्लेषण को देखो।

पुस्तक मुख्य रूप से दो नबियों के जीवनों के ईर्द-गिर्द धूमती है: एलिय्याह और एलीशा।

आत्मिक संदेश: शासकों का एक देश पर शक्तिशाली प्रभाव।

सारांश: पुस्तक को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

I. एलिय्याह के जीवन के अन्तिम दिनों का इतिहास।
(1) अपने शत्रुओं को नष्ट करने के लिए उसका स्वर्ग से आग बुलाना, 1:9-12।
(2) यरदन नदी के दो भाग करना, 2:8।
(3) उसका रूपान्तरण, 2:11।

II. एलीशा का इतिहास।

(1) वह अनुग्रह के दुगुने भाग की माँग करता है, 2:9।
(2) वह यरदन के दो भाग करता है, 2:14।
(3) वह पानी को चंगा करता है, 2:19-22।
(4) वह ताना मारनेवाले बच्चों को शाप देता है, 2:23-24।
(5) वह सेना के लिए पानी का प्रबंध करता है, 3:15-20।
(6) वह विधवा के तेल को बढ़ाता है, 4:1-7।
(7) वह मृत बच्चे को जीवित करता है, 4:18-37।
(8) वह घातक भोजन को शुद्ध करता है, 4:38-41।
(9) वह भीड़ को खिलाता है, 4:42-44।
(10) वह नामान कोढ़ी को चंगा करता है, 5:5-15।
(11) वह गेहजी को कोढ़ लगा देता है, 5:20-27।
(12) वह वह कुल्हाड़ी को तैराता है, 6:1-7।
(13) वह सीरिया के राजा की योजनाओं को प्रकट करता है, अध्याय 6।
(14) वह सीरिया सेना को अंधा कर देता है, 6:18-20।
(15) वह अकाल से पीड़ित शहर के लिए बहुतायत की भविष्यद्वाणी करता है, 7:1-8।
(16) वह शूनेमिन स्त्री की भूमि उसे वापस लौटाने में सहायता करता है, 8:3-6।
(17) वह हजाएल की पदोन्नति की भविष्यद्वाणी करता है, 8:7-15।
(18) वह राजा के रूप में जेहू पर अभिषेक करता है, 9:1-6।
(19) वह अपनी मृत्युशय्या पर भी अपनी भविष्यद्वाणी की सामर्थ्य बनाए रखता है, 13:14-19।
(20) उसकी कब्र में भी ईश्वरीय सामर्थ्य, 13:20-21।

उसके सामर्थ्य का रहस्य - अनुग्रह के दुगुने भाग की उसकी इच्छा के कारण वह निरन्तर जय में जी सका था।

III. यहूदा और इस्राएल के इतिहास में दूसरी उल्लेखनीय घटनाएँ।

(1) जेहू योराम, अहज्याह, ईजेबेल, अहाब के सत्तर बच्चे, और बाल के पुजारियों पर ईश्वरीय न्याय लाता है, अध्याय 9-10।
(2) योआश का अच्छा शासन, अध्याय 11-12।
(3) इस्राएल में बुरे राजाओं का शासन, जो दस गोत्रों को बन्धुआी में ले जाता है, अध्याय 13-17।
(4) हिजकिय्याह का अच्छा शासन, अध्याय 18-20।
(5) मनश्शे का बुरा शासन, अध्याय 21।
(6) योशिय्याह, अन्तिम अच्छा राजा, अध्याय 22-23।
(7) यहूदा में कुछ बुरे राजा देश को बन्धुआई और यरूशलेम को विनाश में ले जाते हैं, अध्याय 25।

---

1 **इतिहास की पुस्तक**

लेखकः अनिश्चित। माना जाता है एज्रा ने सम्पादन किया था। इब्रानी पाठ में 1 और 2 इतिहास एक पुस्तक हैं।
समयः सम्भवतः बन्धुआई के दौरान या उसके तुरन्त बाद लिखी गई थी। शायद मानी जाती है:
1 और 2 शमूएल, और 1 और 2 राजाओं का परिशिष्ट मानी जाती है। कुछ ऐतिहासिक विवरण पहले की पुस्तकों के बिलकुल समान हैं।
स्पष्ट विशेषताएँ: शमूएल और राजाओं की पुस्तकें दोनों राज्यों की घटनाओं का उल्लेख करती हैं। जबकि इतिहास सिर्फ यहूदा के इतिहास के बारे में है।
प्रमुख विचारः परमेश्वर का प्रभुत्व, 4:9-10; 5:20; 11:14; 12:18; 14:2,10,14-15।
प्रमुख चरित्रः दाऊद

I. पुस्तक का विश्लेषण।

(1) वंशावलियाँ, अध्याय 1-9।
(2) शाऊल तख्ता पलट और मृत्यु, अध्याय 10।

II. दाऊद का शासन।

(1) उसका सिंहासन ग्रहण करना, यरूशलेम को अधिकार में लेना, उसकी योद्धा और सेनाएँ, अध्याय 11-12।

(2) वाचा के सन्दूक को नई गाड़ी पर चढ़ाकर ले जाने की उसकी गलती, अध्याय 13।

(3) उसकी पलिश्तियों पर विजय, अध्याय 14।

(4) सन्दूक यरूशलेम पहुँचता है, अध्याय 15।

(5) आनन्द मनाने का महान पर्व, अध्याय 16।

(6) प्रभु के लिए मन्दिर बनाने की राजा की इच्छा का इन्कार, अध्याय 17।

(7) महान सैनिक विजयें, अध्याय 18-20।

(8) पापी जनगणना, अध्याय 21।

(9) मन्दिर के निमा4ण के लिए चीजों की तैयारी, और सुलैमान को आदेश, अध्याय 22।

(10) राज्य के कारोबार का अतिरिक्त संगठन, अध्याय 23-27।

(11) दाऊद का लोगों और उसके पुत्र सुलैमान को अन्तिम आदेश; सुलैमान का राजा बनना, अध्याय 28-29; दाऊद की मृत्यु, 29:28।

उत्तम चुनाव:

(1) याबेस की प्रार्थना, 4:10।

(2) दाऊद बैतलहम के कुँए का पानी उँडेल देता है, 11:17-19।

(3) दाऊद के भजन, 16:7-36।

(4) दाऊद की गायक-मंडली और संगीतकारों का विवरण, अध्याय 25।

(5) दाऊद की अन्तिम प्रार्थना और आशीर्वाद, 29:10-19।

---

2 इतिहास की पुस्तक

यह पुस्तक 1 इतिहास का शीर्ष और राजाओं की पुस्तकों का परिशिष्ट है।
यहूदा का इतिहास जो यहाँ वर्णित है अस्थिरता और धर्मत्याग की एक काली तस्वीर है, परन्तु कहीं कहीं आत्मिक सुधार के समय हैं।
स्पष्ट विशेषताएँ: इतिहास के आत्मिक तत्त्व को राजाओं से अधिक इतिहास में अधिक बल दिया गया है।
उदाहरण या संदर्भ जो केवल 2 इतिहास में पाए जाते हैं।

-अबिय्याह का भक्त भाषण, 13:5-12।

-आसा का परमेश्वर की उपेक्षा करना, 16:12।

-यहोशापात की मूर्खतापूर्ण संधि, 20:35।

-उज्जिय्याह के कोढ़ का कारण, 26:16-21।

-मनश्शे की बन्धुआई और स्थापना, 33:11-13।

सुधार की पाँच अवधियाँ यहाँ वर्णित हैं।

(1) राजा आसा के अधीन, अध्याय 15।

(2) राजा यहोशापात के अधीन, 17:6-10।

(3) यहोयादा याजक, और राजा योआश के अधीन, 23:16-19।

(4) राजा हिजकिय्याह के अधीन, अध्याय 29-31।

(5) राजा योशिय्याह के अधीन, अध्याय 34-35।

सारांश:

I. सुलैमान का शासन।

(1) गिबोन पर सुलैमान के बलिदान, और उसकी बुद्धिमानी का चुनाव, अध्याय 1।

(2) मन्दिर का निर्माण, अध्याय 2-4।

(3) प्रभु की महिमा भवन को भर देती है, अध्याय 5।

(4) मन्दिर के समर्पण पर सुलैमान की प्रार्थना, अध्याय 6।

(5) यहोवा सुलैमान को रात में दोबारा प्रकट होता है, अध्याय 7।

(6) सुलैमान की समृद्धि और प्रसिद्धि, अध्याय 8।

(7) शीबा की रानी का आना, और सुलैमान की मृत्यु, अध्याय 10।

II. रहूबियाम की मूर्खता, राज्य का बँटवारा होना, अध्याय 10।

III. रहूबियाम से सिदकिय्याह तक विभिन्न शासनों की इतिहास।

अबिय्याह अ. 13; आसा, अ. 14-16; यहोशापात, अ. 17-20; यहोराम, अ. 21; अहज्याह, 22:1-9; अतल्याह (रानी), 22:10-23:15; योआश, अ. 24; अमस्याह, अ. 25; उज्जिय्याह, अ. 26; योताम, अ. 27; आहाज, अ. 28; हिजकिय्याह, अ. 29-32; मनश्शे, 33:1-20; आमोन, 33:12-25; योशिय्याह, अ. 34-35; यहोआहाज, 36:1-3; यहोयाकीम, 36:4-8; यहोयाकीन, 36:9-10; सिदकिय्याह, 36:11-13।

आत्मिक संदेश: सफलता और विजय के लिए प्रार्थना की सामर्थ्य, 11:16; 13:13-18; 14:11; 15:12; 17:4; 20:3; 26:5; 27:6; 30:18-20; 31-21; 32:20; 34:20।

आत्मिक सबक:

(1) बुद्धि की श्रेष्ठता, 1:7-12।

(2) परमेश्वर की महिमा तैयार मन्दिर को भरती है, 5:13-14।

(3) स्तुति की आत्मा परमेश्वर के लोगों को अजेय बनाती है, 20:20-35।

एज्रा की पुस्तक

लेखक: अज्ञात। सामान्यत: माना जाता है कि एज्रा सारी पुस्तक का लेखक नहीं था परन्तु उन भागों का संकलनकर्त्ता होगा जिन्हें उसने नहीं लिखा था। वह बेबिलोन में यहूदी निर्वासित था और याजक वंश का था, 7:1-6।

मुख्य विषय: बेबिलोन में उनकी बन्धुआई में से यहूदियों का लौटना, मन्दिर का पुन:निर्माण, और सामाजिक और धार्मिक सुधारों का आरम्भ।

आत्मिक संदेश: मनुष्य के जीवन में परमेश्वर के वचन का सामर्थ्य। परमेश्वर का वचन, 1:1; 9:4; मूसा की व्यवस्था (की पुस्तक), 3:2; 6:18; 7:6; आज्ञाएँ, 6:14; 10:3; प्रभु की व्यवस्था, 7:10,14।

सारांश:

I. यहूदियों के पहले समूह का लौटना, जरूब्बाबेल की अगुआई में, अध्याय 1-6।

(अ) राजा कुस्रू के कहने पर, 1:1-4।

(आ) लोगों, याजकों, लेवियों, सुलैमान के सेवकों के वंशज के नाम, और उनकी सम्पत्ति और भेंटें, अध्याय 2।

II. उनके निर्माण का उद्यम।

(अ) वेदी का पुन:निर्माण और आराधना स्थापित, 3:1-6।

(आ) मन्दिर की नींव की डाली, 3:8-13।

(इ) शत्रु काम में हाथ बटाना चाहते हैं, 4:1-2।

(ई) जब उनका प्रस्ताव स्वीकार नहीं हुआ वे हिंसक सतानेवाले बन गए, काम को बंद करा दिया, 4:4-24।

(उ) एक लम्बी देरी के बाद, राजा दारा के आदेशानुसार काम दोबारा आरम्भ हुआ, अध्याय 5-6।

(ऊ) मन्दिर का निर्माण पूरा हुआ, समर्पित हुआ, प्राचीन विधियाँ आरम्भ हुई, 6:15-22।

III. राजा अर्तक्षत्र के आदेश पर, एज्रा के अधीन, दूसरे समूह का लौटना, अध्याय 7-10।

(अ) एज्रा के साथ लौटनेवाले निर्वासितों की सूची और उनका यरूशलेम पहुँचना, अध्याय 8।

(आ) एज्रा द्वारा सामाजिक बुराइयों का सुधार, अध्याय 9-10।

एज्रा के साहित्यिक और धार्मिक काम। वह अनेक भजनों का, विशेषकर भजन 119 का प्रसिद्ध लेखक है।

प्राचीन परम्परा के अनुसार, उसने 1 और 2 इतिहास लिखे, परन्तु इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।

उसने नहेम्याह के साथ मिलकर पवित्रशास्त्र के अध्ययन की जाग्रती को आरम्भ किया था, नहेम्याह 8।

वह यहूदी आराधनालय का जन्मदाता माना जाता है और पुराने नियम की अधिकतर पुस्तकों को उसने एकत्र भी किया था।

उत्तम चुनाव:

(1) जब जोखिम भरे स्थानों में से महान खज़ानों को ले जाने का काम सौंपा गया, तब उसने ईश्वरीय सुरक्षा में भरोसा डाला, 8:21-32।

(2) एज्रा की प्रार्थना और लागों की ओर से पाप स्वीकार, 9:5-15।

नहेम्याह की पुस्तक

इब्रानी हस्तलिपियों में, एज्रा और नहेम्याह की पुस्तकें एक पुस्तक है।
लेखक या संकलनकर्त्ताः अनिश्चित। पुस्तक के अधिकतर भाग को कई विद्वान् नहेम्याह की आत्मकथा मानते हैं।
मूल पाठः 6:3।
प्रमुख विषयः यरूशलेम की शहरपनाह का पुनःनिर्माण, कुछ ईश्वरीय नियमों का दोहराया जाना, और प्राचीन विधियों की पुनःस्थापना।
सारांशः

I. प्ररूपों का एक अध्ययन।

(अ) विषयः यरूशलेम की शहरपनाह का पुनःनिर्माण, पृथ्वी पर ईश्वरीय राज्य के पुनःनिर्माण का एक प्ररूप माना जाता है।

(1) टूटी हुई शहरपनाह (1:3) निर्बल हुई परमेश्वर के राज्य की मोर्चाबन्दी का प्ररूप है।

(2) उपवास और प्रार्थना का प्रारंभिक समय (1:4-11) उस सोच-विचार का प्ररूप है जो सब महान आत्मिक उद्यम के पहले होना चाहिए।

(3) नहेम्याह का एक काम के लिए एक अच्छे पद का परित्याग (2:5) उस बलिदान सम्बंधी सेवा का प्ररूप है जिसकी हमेशा जरूरत होती है जब एक बड़ा काम करना होता है।

(4) शहर का रात में निरीक्षण (2:15-16) तथ्यों का सामना करने का प्ररूप है जिसकी निर्माण कार्य के पहले जरूरत होती है।

(5) सहयोग की खोज (2:17-18) सब सफल काम में एक अनिवार्य तत्त्व का प्ररूप है।

(6) सब श्रेणियों को काम में लगाना (अध्याय 3) सम्पूर्ण संगठन के महत्त्व का प्ररूप है।

(आ) आत्मिक काम की बाधाओं को जीतने के लिए उन्हीं तरीकों को इस्तेमाल किया जा सकता है।

(1) उपहास, 2:19, को परमेश्वर में भरोसे के द्वारा जीत लो, 2:20।

(2) रोष और तिरस्कार, 4:3, को प्रार्थना और परिश्रम द्वारा जीत लो, 4:4-6।

(3) षड्यन्त्र, 4:7-8, को जागते रहने और प्र्थिना द्वारा जीत लो, 4:9।

(4) मित्रों की निराशा, 4:10-12, को दृढ़ साहस द्वारा जीत लो, 4:13-14।

(5) स्वार्थी लोभ, 5:1-5, को फटकार और आत्मा बलिदान के उदाहरण द्वारा जीत लो, 5:6-17।

(6) काम पूरा हुआ, शत्रु दृढ़ प्रयत्न द्वारा चकरा गया, 6:1-15।

II. अन्तिम घटनाएँः

(अ) ईश्वरीय व्यवस्था का दोहराया और समझाया जाना, अध्याय 8।

(आ) याजकों और लेवियों का दोष स्वीकरण और वाचा का बाँधा जाना, अध्याय 9-10।

(इ) यरूशलेम में बसने के लिए लोगों से आग्रह, अध्याय 11।

(ई) शहरपनाह का समर्पण, अध्याय 12।

(उ) सामाजिक और धार्मिक सुधार, अध्याय 13।

एस्तेर की पुस्तक

लेखकः अज्ञात।

प्रामाणिकता: इस पुस्तक का पवित्रशास्त्र में एक स्थान पाने के अधिकार पर बहुत बहस की गई है। परमेश्वर का नाम इसमें नहीं दिखता, जबकि एक अन्यजाति राजा का उल्लेख एक सौ पच्चास बार से ज्यादा पाया जाता है। न किसी प्रकार की प्रार्थना या आत्मिक सेवा का कोई संकेत है, केवल उपवास का है।
संदेश: बिना संदेह, इसका परमेश्वर के वचनों में एक स्थान है क्योंकि इसमें परमेश्वर के लोगों और उनके शत्रुओं का पलटा लेने के सम्बंध में पूर्वप्रबंध पर गुप्त शिक्षा पाई जाती है।
प्रमुख विषय: यहूदियों का रानी एस्तेर द्वारा छुटकारा।
मूल पाठ: 4:14।
सारांश: इतिहास की मुख्य घटनाएँ तीन भोजों के सम्बंध में पाई जाती हैं।

I. क्षयर्ष का भोज और इससे सम्बंधित घटनाएँ।
   (1) सातवें दिन, जब राजा दाखमधु से मग्न था, रानी वशती, जिसे राजा ने एकत्रित राजकुमारों के सामने हाज़िर होने को कहा गया, इन्कार करती है, 1:1-12।
   (2) क्रोधित राजा उसके बुद्धिमान पुरुषों की सलाह स्वीकार करने का फैसला करता है, और रानी को पद से उतार देता है, 1:13-22।
   (3) सारे राज्य में नई रानी की खोज के बाद, एस्तेर, एक यहूदी, चुनी जाती है, 2:1-17।

II. एस्तेर का भोज, प्रारंभिक घटनाएँ और इसका अन्तिम परिणाम।
   (1) मोर्दकै, यहूदी, रानी का पालक पिता, राजा का जीवन बचाता है, 2:7 और 2:21-23।
   (2) हामान की पदोन्नति और मोर्दकै का उसको सम्मान न देने के कारण हामान इतना आग-बबूला हो जाता है कि सब यहूदियों का नाश करने का फैसला करता है, 3:1-15।
   (3) हामान के षड्यन्त्र का पता चलने पर यहूदियों में शोक, 4:1-4।
   (4) षड्यन्त्र को विफल करने के लिए मन में एक योजना लिए एस्तेर का राजा के सामने हाज़िर होने की विरोचित दृढ़ता, 4:5-17।
   (5) राजा का एस्तेर का अनुग्रहकारी स्वागत् और उसका राजा और हामान का उसके भोज में आने के लिए निमंत्रण, 5:1-8।
   (6) हामान एक फाँसी का खम्बा बनाता है जिस पर मोर्दकै को लटकाना चाहता है, 5:9-14।
   (7) एक रात नींद न आने के कारण राजा इतिहास की जाँच करवाता है और पाता है कि उसके जीवन को बचाने के लिए मोर्दकै को कोई इनाम नहीं मिला था, 6:1-3।
   (8) हामान के स्वार्थी व्यर्थथा का परिणाम उसका अपना अपमान और मोर्दकै का महान सम्मान होता है, 6:4-11।
   (9) एस्तेर का भोज और हामान का षड्यन्त्र प्रकट होता है। उसे उसी खम्बे पर लटकाया जाता है जिसे उसने मोर्दकै के लिए बनवाया था, अध्याय 7।

III. पूरीम का भोज।
   (1) प्रारंभिक घटनाएँ।
      (अ) राजा यहूदियों को उनके शत्रुओं पर बदला लेने का अधिकार देता है, अध्याय 8।
      (आ) बदला लिया जाता है, अध्याय 9।
   (2) भोज स्थापित किया जाता है, 9:20-31।
   (3) मोर्दकै की महिमा, अध्याय 10।

अय्यूब की पुस्तक

लेखक: अज्ञात।
तिथि: काफी विचार-विमर्श का विषय है। कई विद्वान् इसे बाइबल की सबसे पुरानी पुस्तक मानते हैं; दूसरे इसे निर्वासन के समय की बताते हैं।
स्थान: ऊज का देश।
मुख्य विषय: अय्यूब के दुख की समस्या। पुस्तक इसके वर्णन में काव्यमय और चित्रीय है और बारह दृश्यों में बाँटी जा सकती है।
दृश्य 1: अय्यूब और उसका परिवार उन पर दुख आने से पहले।

अय्यूब अपने घराने के लिए एक भक्त पिता के रूप में, समृद्धि से बिगड़ा नहीं हुआ, सेवा करनेवाला, एक याजक के रूप में दिखाई देता है, 1:5।

दृश्य 2: (अ) शैतान ईश्वरीय उपस्थिति में प्रवेश करता है, संकेत देता है कि अय्यूब परमेश्वर की सेवा विशेष उपकार के कारण करता है, 1:9-11।
(आ) शैतान को, समृद्धि और बच्चों की हानि के द्वारा, अय्यूब की परीक्षा करने की अनुमति दी जाती है, 1:12-20।
(इ) अय्यूब अपनी खराई बनाए रखता है, 1:21-22।

दृश्य 3: (अ) शैतान दोबारा ईश्वरीय उपस्थिति में प्रवेश करता है, कहता है कि यदि अय्यूब के शरीर को दुख दिया गया तब वह परमेश्वर को शाप देगा, 2:1-5।
(आ) शैतान को अय्यूब पर एक भयानक बीमारी लाने की अनुमति दी जाती है, 2:7-8।
(इ) उसकी पत्नी की ईशनिन्दक सलाह और अय्यूब का विजयी समर्पण, 2:9-10।

दृश्य 4: अय्यूब के तीन मित्रों का आना, और सात दिन की चुप सहानुभूति, 2:11-13।

दृश्य 5: अय्यूब का धैर्य समाप्त हो रहा है, वह अपनी शिकायत बोलने लगता है, अध्याय 3।

दृश्य 6: उसके दुख के विषय में अय्यूब और उसके मित्रों के बीच लम्बी और व्यर्थ बहस। उसके मित्र बोलते रहते हैं कि उसका दुख व्यक्तिगत पाप के कारण है। अय्यूब अपना बचाव करता और अपने निर्दोष होने का दावा करता है, अध्याय 4-31।

दृश्य 7: एलीहू बहस में कूद पड़ता है, अध्याय 32-27।

दृश्य 8: प्रभु आँधी में से अय्यूब को उत्तर देता है, प्रकाश और फटकार के शब्दों के साथ, अध्याय 38-39।

दृश्य 9: अय्यूब का अपराध स्वीकार करना, 40:3-5।

दृश्य 10: प्रभु दूसरी बार बोलता है, 40:7-41:34।

दृश्य 11: (अ) अय्यूब का दूसरी बार अपराध स्वीकार, 42:1-6।
(आ) प्रभु की एलीपज, बिलदद और सोपर को फटकार, उनके मूर्खतापूर्ण शब्दों के कारण, और बलिदान चढ़ाने के लिए उनको आज्ञा, 42:7-9।

दृश्य 12: अय्यूब उसके मित्रों के लिए प्रार्थना करता है, उसकी अपनी समृद्धि लौटाई जाती है, और वह वृद्धावस्था तक जीवित रहता है, 42:10-17।

प्रस्तावित सबक:

(1) शैतान की मनुष्य के जीवन में अहितकर शक्ति।

(2) ईश्वरीय योजना में दुख का इस्तेमाल, चरित्र सिद्ध करने के साधन के रूप में।

उत्तम चुनाव: अय्यूब का बुद्धि पर प्रवचन, अध्याय 28।

भजन संहिता की पुस्तक

एक सौ पचास आत्मिक गीत और कविताएँ जिन्हें कलीसिया ने सारे युग में आराधना और भक्तिपूर्ण अभ्यासों के लिए इस्तेमाल किया है। इसे दूसरे मन्दिर की स्तुतिगान पुस्तक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

सर्वाधिक विषय हैं प्रार्थना और स्तुति, परन्तु भजनों में धार्मिक अनुभवों की एक बड़ी विविधता पाई जाती है।

उन्हें यशायाह के बाद नए नियम में सबसे अधिक बार इस्तेमाल किया गया है।

उन्हें अकसर दाऊद के भजन कहा जाता है क्योंकि उसने उन्हें एक बड़ी संख्या में लिखा था।

लेखक: बहुत सारे भजनों में लेखक अनिश्चित है; ऐसा सम्भव है क्योंकि कुछ मामलों में कुछ भजनों में दिए नाम लेखक के बदले संग्राहक का हो सकता है।

निम्नलिखित सुझाव के रूप में लेखकों की एक सूची दी गई है जिन्हें पवित्रशास्त्र के विभिन्न अनुवादों से लिया गया है।

दाऊद, 73; कोरह, 11; आसाप, 12; हेमान, 1; एतान, 1; सुलैमान, 2; मूसा, 1; हाग्गै, 1; जकर्याह, 1; हिजकिय्याह, संख्या अनिश्चित; एज्रा, 1; शेष अज्ञात।

मसीहा के भजन:

निम्नलिखित कुछ भजन हैं जिन्हें माना जाता है मसीह की ओर सीधा या प्ररूपी संदर्भ है:

(1) मसीह, राजा के रूप में, 2; 45; 72; 110; 132:11।

(2) का दुख, 22; 41; 55:12-14; 69:20-21।

(3) का पुनरुत्थान, 16।

(4) स्वर्गारोहण, 68:18।

विषय के अनुसार क्रमः

हर भजन एक विषय के नीचे रखा गया है जो इसमें श्रेष्ठ है।

मनुष्यः (1) की प्रतिष्ठा, 8।

(2) का पापीपन, 10; 14; 36; 55; 59; और कई दूसरे।

सांसारिक और दुष्टः

(1) भक्तों के साथ तुलना, 1; 4; 5।

(2) के दण्ड में देरी, 10।

(3) की समृद्धि, 37; 73।

(4) का भाग्य, 9; 11।

(5) का धन में भरोसा, 49।

धार्मिक अनुभवः

(1) पश्चातापी, 25; 38; 51; 130।

(2) क्षमा, 32।

(3) परिवर्तन, 40।

(4) समर्पण, 116।

(5) भरोसा, 3; 16; 20; 23; 27; 31; 34; 42; 61; 62; 91; 121।

(6) शिक्षणीय, 25।

(7) आकांक्षा, 42; 63; 143।

(8) प्रार्थना, 55; 70; 77; 85; 86; 142; 143।

(9) स्तुति, 96; 98; 100; 103; 107; 136; 145; 148; 149; 150।

(10) आराधना, 43; 84; 100; 122; 132।

(11) दुख, 6; 13; 22; 69; 88; 102।

(12) वृद्धावस्था, 71।

(13) क्षणिक जीवन, 39; 49; 90।

(14) घर, 127।

(15) ग्रहासक्ति, 137।

कलीसिया (प्ररूप)

(1) की सुरक्षा, 46।

(2) की महिमा, 48; 87।

(3) के लिए प्रेम, 84; 122।

(4) में एकता, 133।

परमेश्वर का वचन, 19; 119।

मिशनरी, 67; 72; 96; 98।

शासकों के कर्तव्य, 82; 101।

ईश्वरीय गुणः

(1) बुद्धि, प्रताप, और सामर्थ्य, 18; 19; 29; 62; 66; 89; 93; 97; 99; 118; 147।

(2) दया, 32; 85; 136।

(3) अनन्त ज्ञान, 139।

(4) रचनात्मक सामर्थ्य, 33; 89; 104।

इस्राएल के अनुभवः

(1) अविश्वास, 78।

(2) का उजाड़ और दुख, 79; 80।
(3) का धर्मत्याग, 81।
(4) ईश्वरीय प्रबंध, 105; 106; 114।

नीतिवचन की पुस्तक

नैतिक और धार्मिक सूक्तियों का एक संग्रह, जिसमें सही जीवन के विषय में निर्देश हैं। बुद्धि, न्याय, संयम, परिश्रम, शुद्धता, आदि पर संक्षिप्त भाषण भी।

इन सारगर्भित कहावतों में बुद्धि और मूर्खता, धार्मिकता और पाप के बीच एक स्पष्ट तुलना की गई है।

लेखकः सुलैमान को अधिकतर नीतिवचनों का लेखक माना जाता है। ऐसा सम्भव है ये भी उससे आरम्भ नहीं हुए थे। अध्याय 30 और 31 आगूर और लमूएल के वचन हैं।

प्रमुख उद्देश्यः नैतिक शिक्षा, विशेषकर जवान लोगों को, देने के लिए।

मूल पाठः 1:4।

मूल विचारः प्रभु का भय, कुछ चौदह बार पाया जाता है।

सारांशः

(1) पिता की सलाह और चेतावनियाँ, बुद्धि पाने के लिए उपदेशों के साथ, अध्याय 1-7।
(2) बुद्धि का निमंत्रण, अध्याय 8-9।
(3) सुलैमान के नीचिवचन--भले और बरे, बुद्धि और मूर्खता में तुलना, अध्याय 10-20।
(4) लोकप्रसिद्ध सूक्तियाँ और परामर्श, अध्याय 21-24।
(5) सुलैमान के नीतिवचन जिनकी हिजकिय्याह के लोगों ने नकल की थी, अध्याय 25-29।
(6) आगूर के प्रभावशाली वचन, अध्याय 30।
(7) लमूएल के वचन, उसकी माता ने सिखाए, 31:1-9।
एक आदर्श पत्नी का वर्णन, 31:1-9।

उत्तम चुनावः

बुद्धि का, बुलावा, 1:20-23; अध्याय 8; स्रोत, 2; 6; मूल्य, 3:13-26; प्रमुख चीज, 4:5-13; सबसे धनी खज़ाना, 8:11-36; भोज, 9:1-6।

विशेष उल्लेखित विषयः

-क्रोध, 14:17,29; 15:18; 16:32; 19:11।

-उदारता, 3:9-10; 11:24-26; 14:21; 19:17; 22:9।

-बच्चों का सुधार, 13:24; 19:18; 22:6,15; 23:13-14।

-लुभानेवाले, 4:14; 9:13; 16:29।

-परमेश्वर का भय, 1:7; 3:7; 9:10; 10:27; 14:26-27; 15:16,33; 16:6; 19:23; 23:17; 24:21।

-मूर्ख, निन्दक, 10:18; अल्प जीवन, 10:21; शरारती, 10:21; घमंडी, 12:15; चिढ़ानेवाले, 12:16; पाप पर हँसते हैं, 14:9; व्यर्थ बातें बोलते, 15:2; पागल, 17:10; खतरनाक, 17:12; दूर दूर देखता है, 17:24; दस्तंदाज, 20:3; बुद्धि को तुच्छ जानता, 23:9; मूर्ख, 27:22; आत्म-विश्वासी, 14:16; 28:26।

-मित्रता, 17:17; 18:24; 19:4; 27:10,17।

-ज्ञान, ईश्वरीय, 15:11; 21:2; 24:12।

-आलस, 6:6-11; 10:4-5; 12:27; 13:4,15-19; 18:9; 19:15,24; 20:4,13; 22:13; 24:30-34; 26:13-16।

-सताव, 14:31; 22:22; 28:16।

-अभिमान, 6:17; 11:2; 13:10; 15:25; 16:18-19; 18:12; 21:4,24; 29:23; 30:13।

-विवेक, 12:23; 13:16; 14:8,15,18; 15:5; 16:21; 18:15; 27:12।

-ठट्ठा करनेवाले, 3:34; 9:7; 14:6; 19:25; 24:9।

-झगड़ा, 3:30; 10:12; 15:18; 16:28; 17:1,14,19; 18:6,19; 20:3; 22:10; 25:8; 30:33।

-संयम, 20:1; 21:17; 23:1-3,20; 23:29-35; 25:16; 31:4-7।

-जीभ, 4:24; 10:11-32; 12:6,18,22; 13:3; 14:3; 15:1-7,23; 16:13,23,27; 17:4; 18:7,21; 19:1; 20:19; 21:23; 26:28; 30:32।

-अनुचित लाभ, 10:2; 13:11; 21:6; 28:8।

-धन, 10:2,15; 11:4,28; 13:7,11; 15:6; 16:8; 18:11; 19:4; 27:24; 28:6,22।

-स्त्री, बुरी, 2:16-19; 5:3-14,20,23; 6:24-35; 7:5-27; 9:13-18।

-स्त्री, अच्छी, 5:18-19; 31:10-31।

आत्मिक सबकः

सुलैमान एक उदाहरण के बदले, एक मार्गदर्शक खम्बा था। उसने बुद्धि की ओर मार्ग का संकेत दिया, परन्तु अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वह इस पर नहीं चला। उसका पुत्र, रहूबियाम, उसके उदाहरण पर चला, न कि उसकी सलाह पर, और एक मूर्ख और दुष्ट शासक था।

सभोपदेशक की पुस्तक

नामः पुराने नियम के यूनानी अनुवाद (सैप्चुयाजिन्ट) से लिया है। इब्रानी बाइबल में इसे "Koheleth" कहते हैं। इस शब्द के अर्थ थोड़ा विवाद है, परन्तु इसका अनुवाद "उपदेशक" या जो सभा को सम्भोदित करता है, किया गया है।

लेखकः अनिश्चित, परन्तु सामान्तयः सुलैमान माना जाता है, 1:1-2।

बाइबल में पाई जाने वाली उसके जीवन की रूपरेखा से फैसल किया जा सकता है कि बहुत सारे अनुभव जिनका यहाँ उल्लेख है उसके जीवन से सम्बंध रखते हैं।

मूल पाठः 12:13।

मूल शब्दः व्यर्थ, और सूर्य के नीचे। दोनों शब्द पच्चीस बारे से ज्यादा पाए जाते हैं।

विषय वस्तुः

पुस्तक में एक दार्शनिक के चिन्तन और अनुभव पाए जाते हैं जिसका मन जीवन की समस्याओं के कारण संधर्ष कर रहा था।

अपने मोह-भंग के बारे में बात करने के बाद, वह भोगवादी-भौतिकवादी के विचार प्रस्तुत करता है-कि जीवन के सुखों का सांसारिक आनन्द लेने से बेहतर कुछ नहीं है।

जैसे यह विचार सारी पुस्तक में पाया जाता है, बिलकुल स्पष्ट है कि लेखक इसके साथ संघर्ष कर रहा था, परन्तु उसके साथ साथ वह मनुष्य का परमेश्वर की ओर कर्तव्य और दायित्व के बारे में गूढ़ सत्य भी बोल रहा था। आखिरकार वह निराधार कल्पनाओं और संदेह में से बाहर आता है और महान निष्कर्ष पर पहुँचता है, 12:13, "परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है।"

सारांशः

अध्याय 1-2:

(1) परिचयः जीवन के नीरस क्रम पर चिन्तन, 1:1-11।

(2) स्वाभाविक मनुष्य की संतोष और सुख की खोज।

(अ) यह बुद्धि के इकट्ठा करने में नहीं है, 1:12-18।

(आ) यह सांसारिक सुखों में नहीं पाई जाती, 2:1-3।

(इ) यह कला या खेती-बाड़ी में नहीं पाई जाती, 2:4-6।

(ई) यह बहुत धन-दौलत में नहीं पाई जाती, 2:7-11।

(3) निष्कर्षः

(अ) बुद्धिमान मूर्ख से बेहतर है, 2:12-21।

(आ) भोगवादी का--खाने और पीने और जीवन का आनन्द लेने से बेहतर कुछ नहीं है, 2:24-26।

अध्याय 3: स्वाभाविक मनुष्य का जीवन के थकाऊ क्रम की विचार।

(अ) सब कुछ के लिए समय है, आ. 1-8।

(आ) भौतिकवादी का निष्कर्ष, आ. 13-22।

अध्याय 4: विश्वास के बिना सामाजिक बुराइयों का अध्ययन, आ. 1-15। निष्कर्ष, सब व्यर्थ और तुच्छ है, आ. 16।

अध्याय 5: (अ) धार्मिक कर्तव्यों के बारे में सलाह, आ. 1-7।

(आ) धन की व्यर्थता, आ. 9-17।

(इ) निष्कर्ष--खाओ और पीयो और जीवन का आनन्द लो, आ. 18-20।

अध्याय 6: लम्बे जीवन की व्यर्थता, आ. 3-12।

अध्याय 7: (अ) बुद्धिमान कहावतें, आ. 1-24।

(आ) बुरी स्त्री के बारे में निष्कर्ष, आ. 25-28।

अध्याय 8: (अ) नागरिक कर्तव्य, आ. 1-5।

(आ) जीवन की अनिश्चितता, आ. 6-8।

(इ) ईश्वरीय न्याय, और जीवन के अन्यायों की निश्चितता, आ. 10-14।

(ई) भोगवादी निष्कर्ष, आ. 15।

(उ) परमेश्वर और मनुष्य का काम, आ. 16-17।

अध्याय 9: (अ) धर्मी और दुष्ट के साथ एक समान चीजें घटती हैं; जीवन का लक्ष्य कब्र है; मनुष्य परिस्थितियों का प्राणी है। भोगवादी जैसा निष्कर्ष: "आओ खाएँ और पीएँ, क्योंकि कल हम मरने वाले हैं।" आ. 1-9।

(आ) बुद्धि सर्वश्रेष्ठ है, हालाँकि अकसर सराही नहीं जाती, आ. 13-18।

अध्याय 10: विविध बुद्धिमान कहावतें, बुद्धि और मूर्खता की तुलना, आदि।

अध्याय 11: (अ) उदारता के बारे में सलाह, आ. 1-6।

(आ) जवानों को सलाह, 9-10।

अध्याय 12: वृद्धावस्था का काव्यमय वर्णन, आ. 1-7। उपदेशक के अन्तिम शब्द और मनुष्य के सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य के बारे में अन्तिम निष्कर्ष, आ. 8-14।

श्रेष्ठगीत

लेखक: सुलैमान, परम्परा के अनुसार।

इस पुस्तक की इसकी कामुक भाषा के लिए कड़ी आलोचना की गई है।

परन्तु बाइबल में इसके स्थान के अधिकार का सब युगों में भक्त लोगों ने बचाव किया है। बहुत इसे एक आत्मिक प्रतीक-कथा मानते हैं, जो परमेश्वर और उसके पवित्र लोगों या मसीह और उसकी कलीसिया के बीच पवित्र स्नेह को दर्शाती है।

यह एक पूर्वी कविता है, जिसकी प्रबल अभिव्यक्तियों का अर्थ केवल एक परिपक्व आत्मिक मन ही उचित रूप से निकाल सकता है।

सारांश: (दुल्हा मसीह को दर्शाता; दुल्हिन, कलीसिया को दर्शाती है)।

(1) दुल्हिन और स्वर्गीय दुल्हे के बीच आत्मिक सहभागिता, 1:1-2:7।

(2) दुल्हिन अपने साथी की कमी महसूस करती और उसे खोजती है, 2:8-3:5।

(3) दुल्हे और दुल्हिन के बीच उनके परस्पर प्रेम और एक दूसरे के अनुग्रहों के बारे में प्रबल बातचीत, 3:6-8:14।

मूल विचार: मेरा प्रेमी, मसीह के लिए विश्वासी का नाम, 2:16।

साथी अनुच्छेद: भजन पचपन।

I. स्वर्गीय दुल्हा।

(1) उसका प्रेम उसके सब दोषों को छिपा देता है, 4:7।

(2) वह उसके कारण हर्षित होता है, यशा. 62:5।

(3) उसने उसके लिए अपना जीवन दे दिया, इफि. 5:25।

(4) वह उसे अपने लिए लेने आएगा, मत्ती 25:6।

II. दुल्हिन।

(1) दुल्ह से प्रेम करती है, 2:16।

(2) अपनी अयोग्यता महसूस करती है, 1:5।

(3) शुद्ध की गई और निष्कलंक वस्त्र पहने है, प्रका. 19:8।

(4) ईश्वरीय अनुग्रह के हीरे पहनती है, यशा. 61:10।

(5) विवाह का निमंत्रण भेजती है, प्रका. 2:17।

विवाह भोज।

(1) पिता ने पुत्र के लिए तैयार किया है, मत्ती 22:2।

(2) कीमती तैयारियाँ की गई हैं, मत्ती 22:4।

(3) एक महान सम्मान के निमंत्रण, प्रका. 19:9।

(4) कई निमंत्रण को तुच्छ जानेंगे, मत्ती 22:5।

(5) निमंत्रण सब प्रकार के लोगों के लिए है, मत्ती 22:10।

(6) विवाह के वस्त्र न पहनने के कारण निकाल दिया जाता है, मत्ती 22:11-13।

यशायाह की पुस्तक

भविष्यद्वक्ता। आमोस का पुत्र। उज्जियाह, योताम, आहाज, और हिजकिय्याह के शासनों के दौरान भविष्यद्वाणी की, 1:1।
उसका बुलावा और अभिषेक, 6:1-8।
उसका परिवार, 7:3; 8:3-4।
सामान्यत: पुराने नियम का सबसे महान भविष्यद्वक्ता माना जाता है।

(1) क्योंकि वह मुख्य रूप से उद्धार का भविष्यद्वक्ता है।

(2) उसकी पुस्तक के बहुत सारे अनुच्छेद साहित्य में अति उत्तम हैं।

कुछ आधुनिक विद्वानों ने इस काव्य भविष्यद्वाणी का उस प्रकार अध्ययान किया है जैसे एक वनस्पतिज्ञ फूल का अध्ययन करता है, उसका विच्छेदन और विश्लेषण करता है। इस तरीके के इस्तेमाल से, पुस्तक की सुन्दरता और एकता, जैसी गुलाब की होती है, लगभग भुला दी जाती है, जैसे अलग-अलग भाग जाँच के लिए निकाले जाते हैं।
सारंश
भाग 1, अध्याय 1-39। बन्धुआई तक की घटनाओं का विशेषकर उल्लेख है।

(1) ईश्वरीय न्याय के उपदेश और चेतावनियाँ, साथ में बेहतर दिनों और मसीहा के आने की भविष्यद्वाणियाँ भी हैं, अध्याय 1-12।

(2) आसपास के देशों के बारे में भविष्यद्वाणियाँ - अश्शूर, बेबिलोन, मोआब, मिस्र, पलिश्तीन, सीरिया, एदोम, और सोर, आदि, अध्याय 13-23।

(3) लोगों के पाप और दुखों के लेख, उद्धार की प्रतिज्ञाएँ, परमेश्वर में भरोसे का गीत, और उसकी दाख की बारी की उसकी देखभाल, अध्याय 24-27।

(4) मुख्य रूप से एप्रैम और यरूशलेम पर बोली गई हाय, विशेषकर विदेशी सन्धियों के कारण, अध्याय 28-31।

(5) एक धर्मी राजा और आत्मा के उँडेले जाने, धर्मी की प्रतिष्ठा, और जंगल को प्रभु के बाग में बदल देने की प्रतिज्ञाएँ, अध्याय 32-35।

(6) हिजकिय्याह का अश्शूरियों से बचाव, उसका जीवन बढ़ाना, अध्याय 36-39।

भाग 2
पुस्तक के दूसरे भाग में भविष्यद्वाणियाँ, चेतावनियाँ, और प्रतिज्ञाएँ हैं, जिनका सम्बंध बन्धुआई के बाद की घटनाओं से है और मसीही युग तक पहुँचती हैं। भविष्यद्वाणी के इस भाग में मसीहा के भरपूर संदर्भ हैं।
मूल शब्द: उद्धार। यशायाह नाम का अर्थ है: "यहोवा का उद्धार।"

उद्धार: (अ) के सोते, 12:3।

(आ) का आनन्द, 25:9।

(इ) की शहरपनाह, 26:1।

(ई) का दिन, 49:8।

(उ) का शुभ समाचार लानेवालों के पाँव, 52:7।

(ऊ) का प्रसार, 52:10।

(ए) का भुजबल, 59:16।

(ऐ) का टोप, 59:17।

(ओ) के वस्त्र, 61:10।

(औ) का प्रकाश, 62:1।

सात चीजें जो अनन्त हैं:

(1) शक्ति, 26:4।
(2) नियम, 33:14।
(3) आनन्द, 35:10।
(4) उद्धार, 45:17।
(5) दया, 54:8।
(6) वाचा, 55:3।
(7) ज्योति, 60:19।

यिर्मयाह की पुस्तक

इसमें "रोता भविष्यद्वक्ता" की जीवनी और संदेश हैं।
अवधि: यहूदा के राज्य के काले दिन, योशिय्याह (अन्तिम अच्छा राजा) के तेरहवें वर्ष से लेकर बन्धुआई में कई वर्ष बाद।
मुख्य विषय: यहूदियों का धर्मत्याग, दासता, और पुनःस्थापना।
यिर्मयाह का जीवन:

-परिवार, 1:1
-जन्म, और भविष्यद्वक्ता का ईश्वरीय बुलावा, 1:5
-किशोरावस्था में बुलावा, राजा योशिय्याह के दिनों में, 1:2-6
-ईश्वरीय सामर्थ्य, 1:9
-नियुक्ति, 1:10
-ईश्वरीय उपस्थिति की प्रतिज्ञा, 1:19
-कर्तव्य का दबाव, 20:9,
-परमेश्वर के वचन द्वारा सम्भाला, 15:16
-सताव, की भविष्यद्वाणी, 1:19
-बेड़ियों में जकड़ा, 20:2
-कीचड़ से भरे गड़हे में, 38:6
-मिस्र ले जाया गया, 43:5-7

सारांश:

(1) भविष्यद्वक्ता का बुलावा, अध्याय 1।
(2) यहूदियों की ताड़ना, चेतावनियाँ, और प्रतिज्ञाएँ, अध्यया 2-20।
(3) शासकों, और झूठे चरवाहों और भविष्यद्वक्ताओं की भर्त्सना, अध्याय 21-23।
(4) ईश्वरीय न्याय, यरूशलेम की पराजय, औक सत्तर वर्ष की बन्धुआई की भविष्यद्वाणी, अध्याय 25-29।
(5) यहूदियों की पुनःस्थापना की प्रतिज्ञाएँ, अध्याय 30-33।
(6) यहोयाकीम और सिदकिय्याह के पापों के कारण भविष्यद्वाणियाँ, अध्याय 34-39।
(7) यहूदा में रह गए लोगों की दुर्दशा, और उनके लिए भविष्यद्वाणियाँ, अध्याय 40-44।
(8) बारूक को सान्त्वना, अध्याय 45।
(9) विरोधी देशों के विषय में भविष्यद्वाणियाँ, अध्याय 46-51।

संदेश:

(1) कुछ प्रमुख बातें।
    (अ) सोता और हौद, 2:13।
    (आ) कभी न मिटनेवाला अधर्म का धब्बा, 2:22।
    (इ) एक मनुष्य की खोज, 5:1।
    (ई) प्राचीनकाल के मार्ग उत्तम हैं, 6:16।
    (उ) खोया अवसर, 8:20।

(ऊ) पश्चाताप के लिए आँसूभरा बुलावा, 9:1।

(ए) मनुष्य के हृदय की भ्रष्टता, 17:9।

(ऐ) मिट्टी और कुम्हार, अध्याय 18।

(ओ) झूठे चरवाहे, अध्याय 23च

(औ) परमेश्वर को कैसे खोजें, 29:13।

(अं) नई वाचा, 31:31-34।

(अः) परमेश्वर के वचन का तोड़ा-मरोड़ा जाना, 36:21-24।

(2) अस्वीकारा जाना।

(अ) उसके पड़ोसियों द्वारा, 1:19-21।

(आ) उसके अपने परिवार द्वारा, 12:6।

(इ) याजकों और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा, 20:1-2।

(ई) उसके मित्रों द्वारा, 20:10।

(उ) सब लोगों द्वारा, 26:8।

(ऊ) राजा द्वारा, 36:23।

विलापगीत

यिर्मयाह की पुस्तक का शीर्ष।

विषयः एक परिवर्ती काव्य के रूप में शोकगीतों की एक श्रृँखला, जैसे कि राष्ट्रीय क्रियाक्रम के लिए लिखी गई हो, यरूशलेम को जीत लेने और विनाश को चित्रित करती है।

पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में निम्नलिखित आरंभिक शब्द पाए गए थे, "और ऐसा हुआ कि इस्राएल का बन्धुआ बनाकर ले जाने के बाद यिर्मयाह बैठकर रोने और विलाप करने लगा, और यरूशलेम पर यह शोकगीत गाया।"

इब्रानी पवित्रशास्त्र में अध्याय 1,2,4 और 5 में इब्रानी वर्णमाला के बाइस अक्षर क्रम में हैं।

अध्याय तीन में, पहली तीन आयतें "अलफ" अक्षर से शुरू होती हैं, दूसरी तीन आयतें "बेथ" अक्षर से शुरू होती हैं, आगे तक।

पाँचवें अध्याय में बाइस आयतें हैं, परन्तु परिवर्ती नहीं है।

सारांशः

(1) यरूशलेम का विनाश और निर्वासितों का दुख, उनके पाप के कारण, अध्याय 1।

(2) प्रभु, इस्राएल का प्रचीन रक्षक, उसने उसके लोगों को उनके विस्मयकारी भाग्य पर छोड़ दिया है, अध्याय 2।

(3) उसके लोगों पर यिर्मयाह का दुख, उसका परमेश्वर में भरोसा, और उसका अपना सताव, अध्याय 3।

(4) इस्राएल की पहली महिमा की उनके वर्तमान दुख के साथ तुलना, अध्याय 4।

(5) दया के लिए प्रार्थना, अध्याय 5।

यहेजकेल की पुस्तक

नामः अर्थ हैः "परमेश्वर बल देता है।'

यह पुस्तक, दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य के समान, एक रहस्यमय पुस्तक कहला सकती है। इसमें बहुत सारी आकृति है जिसका अर्थ निकालना कठिन है। फिर भी, इसकी बहुत सारी शिक्षाएँ स्पष्ट हैं और ऊँचे स्तर की हैं।

सारांशः

भाग I. भविष्यद्वक्ता की तैयारी और बुलावा, अध्याय 1-3।

(1) एक याजक का पुत्र, 1:1।

(2) बेबिलोन बँधुआ बनाकर ले जाया गया, 1:1; 2 राजा 24:11-16।

(3) उसका परमेश्वर का दर्शन, अध्याय 1।

(4) उसका बुलावा, 1:3।

(5) उसकी नियुक्ति और सामर्थ्य दिया जाना, अध्याय 2-3।

(6) आत्मिक भोजन, 3:1-3। प्रका. 10:10 देखो।

(7) उसका काम, एक आत्मिक पहरेदार होना, 3:4-11, 17-21।

(8) यहेजकेल सबसे ऊँची श्रेणी के प्रेरणात्मक शब्दों का दावा करता है। "प्रभु यहोवा यों कहता है" शब्द सारी पुस्तक में बारम्बार पाए जाते हैं।

मूल विचार: "मैं प्रभु यहोवा हूँ।"

भाग II. बँधुआई से पहले यहूदा की पतित दशा का एक चित्रण।

(1) लोगों के दोष, और यरूशलेम पर आनेवाले विनाश के बारे में दर्शन, चेतावनियाँ, और भविष्यद्वाणियाँ, अध्याय 4-24।

(2) आसपास के सात देशों पर ईश्वरीय न्याय, अध्याय 25-32।

भाग III. देश की महिमा किस प्रकार लौटेगी के साधनों के बारे में भविष्यद्वाणियाँ और प्रतिज्ञाएँ, 33-48।

(1) आत्मिक पहरेदारों की चेतावनियों को सुनकर और पापों से मन फिराकर, अध्याय 33।

(2) झूठे चरवाहों को निकालकर, और अच्छे चरवाहे का आना, जो झुँड को चारा देगा, अध्याय 34।

(3) एक राष्ट्रीय जागृति और सूखी हड्डियों की तराई में एक आत्मिक पुनरुत्थान के द्वारा, अध्याय 36-37।

(4) देश के शत्रुओं को पराजित करके, अध्याय 38-39।

(5) एक नया मन्दिर बनाकर, अध्याय 40-42।

(6) प्रभु की महिमा के लोटने के द्वारा, 43:4-5; 44:4।

(7) एक स्वामिभक्त याजकपद की सेवकाई के द्वारा, 44:9-31।

(8) मन्दिर से निकल रहे जीवन देनेवाले जल के द्वारा, अध्याय 47। प्रका. 22:1-2 देखो।

पुस्तक की विशिष्ठ घटनाएँ:

(1) मन्दिर से प्रभु की महिमा का चले जाना, 10:16-18; 11:23।

(2) यरूशलेम की पराजय, 33:21।

(3) "शेकायना" महिमा के लौटने की भविष्यद्वाणी।

उत्तम चुनाव:

(1) नया हृदय, 11:19; 36:25-28।

(2) व्यक्तिगत जिम्मेवारी, 18:20-32।

(3) कच्चा गारा, 13:10-15।

(4) खरे मनुष्य की खोज, 22:20।

(5) भावुक सुननेवाले, 33:30-32।

(6) सेवकों के लिए अध्याय 13, 33-34।

(7) जाग्रति, 37।

दानिय्येल की पुस्तक

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की साथी पुस्तक।

लेखक: दानिय्येल, यहेजकेल के समान, जो बेबिलोन में एक बँधुआ था राजा नबूकदनेस्सर के समने लाया गया था और बेबिलोन की भाषा और विज्ञानों में प्रशिक्षण पाया था, 1:17-18।

जीवन-काम: यूसुफ के समान दिखता है-सबसे ऊँचे पद पर पहुँचा था (2:48), उसने एक अन्यजाति राज्य में अपने आत्मिक जीवन को बनाए रखा था, 6:10।

मुख्य विषय: सारे युगों में मनुष्यों के कारोबार पर परमेश्वर की प्रभुता। इस तथ्य का अन्यजाति राजा द्वारा स्वीकार किया जाना इस पुस्तक की मूल आयतें हैं, 2:47; 4:37; 6:26।

भाग I. व्यक्तिगत जीवनी और स्थानीय इतिहास की कहानी। इसमें रोमांचक घटनाओं और ईश्वरीय हस्तक्षेप जैसा पुराने नियम में कभी नहीं हुआ था का वर्णन है। इसमें छ: नैतिक संघर्षो का वर्णन है जिसमें दानिय्येल और उसके साथियों को भाग लेना पड़ा था।

पहला संघर्षः अन्यजाति असंयम, और कर्तव्यनिष्ठ परहेज के बीच, स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए। परहेज जीतता है, 1:8-15।
दूसरा संघर्षः स्वपनों का अर्थ निकालने के लिए अन्यजाति जादू और स्वर्गीय बुद्धि के बीच। ईश्वरीय बुद्धि जीतती है, 2:1-47।
तीसरा संघर्षः अन्यजाति मूर्तिपूजा परमेश्वर की ओर स्वामिभक्ति के सामने तैनात है। परमेश्वर की ओर स्वामिभक्ति जीतती है, 3:1-30।
चौथा संघर्षः एक अन्यजाति राजा का अभिमान ईश्वरीय प्रभुता के सामने तैनात है। परमेश्वर जीतता है-राजा को घास खिलाया जाता है, 4:4-37।
पाँचवाँ संघर्षः पवित्र चीजों को अपवित्र किया जाता है। भयआदर जीतता है-दीवार पर लिखा जाता है। बेलशस्सर का तख्ता पलट, 5:1-30।
छठा संघर्षः दुर्भावपूर्ण षड्यन्त्र और उसके सन्तों पर परमेश्वर का पूर्वप्रबंध। पूर्वप्रबंध जीतता है। शेर का मुँह बंद हो जाता है, 6:1-28।
भाग II. इतिहास में काम कर रहे परमेश्वर के नियंत्रित करने वाले हाथ के सम्बंध में दर्शन और भविष्यद्वाणियाँ। अध्याय 7-12।
अर्थः दानिय्येल की पुस्तक प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की साथी पुस्तक है; दोनों में काफी आकृति है जो रहस्यमय है।
दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की भविष्यद्वाणियों को मानवीय इतिहास के तथ्यों और घटनाओं में ठीक बैठाने के प्रयत्न से विचारों के अनन्त संघर्ष पैदा हुए हैं।
दर्शन के ब्योरों का सच्चा अर्थ हमेशा स्पष्ट नहीं हुआ है।
दो तथ्यों को अधिकतर विद्वानों ने सामान्यतः स्वीकार किया हैः
(1) भविष्यद्वाणियाँ सांसारिक और पवित्र इतिहास में भावी घटनाओं का आंशिक प्रकटिकरण दर्शाती हैं।
(2) दर्शन परमेश्वर के राज्य का सारे शैतानी और सांसारिक शक्तियों पर अन्तिम विजय का संकेत देते हैं।
अध्याय सात में, कई टीकाकार चार पशुओं को बेबिलोन, मादी-फारसी, यूनान, और रोम के चार महान साम्राज्यों को दर्शाता हुआ देखते हैं (आ. 1-7), जिसके पीछे मसीहा का आना होता है।
अध्याय आठ में, मादी-फारसी और यूनानी इतिहास का एक और समय आता है जो एक पशु के अधीन दिखता है।
अध्याय नौ में दानिय्येल की प्रार्थना और मसीहा के आने की एक गुप्त भविष्यद्वाणी है।
अध्याय दस से बारह में भावी घटनाओं की अतिरिक्त दूर की भविष्यद्वाणियाँ और प्रकटीकरण हैं।
ये तीन अध्याय सैद्धान्तिक विवाद का एक युद्धक्षेत्र रहे हैं, जिनके कई विविध अर्थ निकाले गए हैं।
उत्तम चुनावः
(1) दानिय्येल का उद्देश्य, 1:8।
(2) पहाड़ में से निकली चट्टान, 2:44-45।
(3) तीन इब्री बँधुओं का उत्तर, 3:16-18।
(4) बेलशस्सर का भोज, अध्याय 5।
(5) शेन की माँद में दानिय्येल, 6:1-24।
(6) न्याय का दर्शन, 7:9-14।
(7) मनुष्यों को जीतने के लिए प्रतिज्ञा, 12:3।

होशे की पुस्तक

लेखकः होशे, बेरी का पुत्र, 1:1। यशायाह और मीका के समय का। उसका संदेश उत्तरी राज्य के लिए था।
उसके काम के लिए विशेष उपयुक्तताः
(1) माना जाता है वह उत्तर का रहनेवाला था, और इस्राएल की बुरी दशा से परिचित था। इससे उसके संदेश को एक विशेष महत्त्व मिला।
(2) स्पष्ट है उसने एक ऐसी स्त्री से विवाह किया था जो विश्वासघाती निकली। इसका कुछ विद्वानों को संदेह है, परन्तु यदि सत्य है तो इससे उसे परमेश्वर का इस्राएल, उसकी "व्यभिचारी पत्नी" की ओर उसके रवैये का बड़े स्पष्ट रूप से चित्रित करने में सहायता मिली होगी, 1:2-3; 2:1-5। परन्तु पुस्तक की शैली अत्यन्त प्रतीकात्मक है, और हो सकता है कि उसकी पत्नी के साथ उसका यह अनुभव लाक्षणिक था।
आत्मिक संदेशः परमेश्वर के लिए धर्मत्याग आत्मिक व्यभिचार है।

(अ) परमेश्वर, पति, 2:20; यशा. 54:5।

(आ) इस्राएल, व्यभिचारी पत्नी, 2:2।

सारांशः

भाग I. भविष्यद्वक्ता का उसके विवाह का अनुभव इस्राएल का धर्मत्याग का प्रतीक है, अध्याय 1-3।

भाग II. भविष्यसूचक प्रवचन, मुख्य रूप से लोगों के धर्मत्याग और मूर्तिपूजा का वर्णन हैं, जिसमें धमकियाँ और उपदेश भी शामिल हैं, अध्याय 4-13।

पश्चाताप के लिए औपचारिक बुलावा और भावी आशीषों की प्रतिज्ञाएँ, अध्याय 14।

अत्यन्त प्रतीकात्मक भाषा के उदाहरण, इस्राएल की भ्रष्ट हालत को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल किए गए हैं।

(1) आकोर की तराई, आशा के द्वार के लिए, 2:15। यहोशू 7:24-26 देखो।
(2) "मूरतों का संगी" 4:17।
(3) "देश के लोगों से मिला-जुला" (अब एक अलग और पवित्र देश नहीं), 7:8।
(4) "ऐसी चपाती जो उलटी न गई हो" (एक ओर से पकी हुई, आधे-मन को दर्शाता है), 7:8।
(5) "परदेशियों ने उसका बल तोड़ डाला" (दुष्ट संधियों से निर्बल हो गया), 7:9।
(6) "उसके सिर में कहीं कहीं पके बाल हैं" (समय से पहले बूढ़ा हो गया, और अचेतन बिगाड़), 7:9।
(7) "इस्राएल निगला गया" (देश की पहचान खो गई है), 8:8।
(8) "एक व्यर्थ चीज" (प्रभु के लिए एक टूटा और बेकार बरतन), 8:8।
(9) "अन्धेर करना भाता है" (धंधे में बेइमान), 12:7।

उत्तम चुनावः

- धैर्य और इसकी आशीषें, अध्याय 14।

योएल की पुस्तक

लेखकः योएल, यहूदा का भविष्यद्वक्ता। उसकी बहुत कम जानकारी है, 1:1।

नामः अर्थ हैः "यहोवा परमेश्वर है"

तिथिः अनिश्चित।

शैलीः उच्च; पुस्तक बलपूर्वक और सुरुचिपूर्ण लिखी गई है।

मूल विचारः रष्ट्रीय पश्चाताप और इसकी आशीषें।

अवसरः टिड्डियों की एक विपत्ति और एक भारी अकाल, लोगों के पापों के दण्ड के रूप में था, ऐसा माना गया था। विपत्ति यहूदा के शत्रुओं की सेनाओं के आक्रमण का भविष्यसूचक थी।

मूल वाक्यांशः प्रभु का दिन, 1:15; 2:1,11,31।

प्रभु का दिनः

(1) लोगों पर उनके पापों के कारण न्याय का एक समय।
  (अ) टिड्डियों की विपत्ति, 1:4-9।
  (आ) भारी अकाल, 1:10-20।
  (इ) शत्रुओं का आक्रमण, 2:1-10।
(2) पश्चाताप और प्रार्थना के लिए बुलावा, 2:12-17।
(3) भावी छुटकारे की प्रतिज्ञाएँ, 2:18-20।
(4) एक महान आशीष का समय होगा।
  (अ) प्रकृत्ति में, बहुत अधिक वर्षा के कारण भरपूर फसल होगी, 2:23-24।
  (आ) पवित्र आत्मा के उँडेले जाने से एक महान बेदारी आएगी, 2:28-32। प्रेरितों 2 देखो।
(5) यहोशापात की तराई में।
  (अ) अन्यजाति देशों का न्याय होगा, 3:1-16।
  (आ) सिय्योन एक यशस्वी आशीष पाएगा, 3:17-21।

उत्तम चुनावः

(1) सम्पूर्ण हृदय से पश्चाताप, 2:12-17।
(2) अन्त के दिनों में आत्मा के उँडेले जाने की प्रतिज्ञाएँ, 2:28-32।

आमोस की पुस्तक

लेखकः उसके नाम का अर्थ है, "बोझ" या "बोझ-ढोनेवाला"
यहूदा के गोत्र में, तकोआ का रहनेवाला।
गाय-बैल का चरवाहा, और गूलर के वृक्षों का छाँटनेवाला, 7:14।
उसका बुलावा, 7:15।
उसे चुप कराने का प्रयास, 7:10-13।
तिथिः इस्राएल में यारोबाम II और यहूदा में उजिय्याह के शासनकाल के दौरान भविष्यद्वाणी की थी।
शैलीः सरल परन्तु चित्रों वाली।
पुस्तक में प्रभावशाली रूपक भरे पड़े हैं।
उदाहरणः

(1) एक भरी हुई गाड़ी की तुलना में पापियों द्वारा परमेश्वर की दया को चूसना, 2:13।
(2) एक शेर के गरजने की तुलना में भविष्यद्वक्ता पर कर्तव्य की दबाव, 3:8।
(3) एक चरवाहे का एक शेर के मुँह में से दो टाँगों या कान का एक टुकड़ा छुड़ाने की तुलना में इस्राएल के लोगों का कठिनाई से बच निकलना, 3:12।
(4) प्राकृतिक संसार में अकाल की तुलना में परमेश्वर के वचन की कमी, 8:11-12।

भविष्यद्वक्ता आमोस कई विषय में मसीह के समान थाः

(1) अपने पेशे में, एक काम करनेवाला व्यक्ति, 7:14।
(2) अपनी दीनता में, अपने दीन मूल को स्वीकारता है, 7:15।
(3) अपने सिखाने के तरीके में, उदाहरणों द्वारा।
(4) अपने ईश्वरीय प्रेरणा के दावे में: "परमेश्वर यहोवा ने मुझ को यों दिखाया", उसकी भविष्यद्वाणी में चालीस बार मिलता है।
(5) राजद्रोह का दोष लगाया गया, 7-10; यूहन्ना 19:12।
(6) अपने कर्तव्य के दबाव में जो उस पर था, 3:8; यूहन्ना 9:4।
(7) धनियों के स्वार्थीपन की भर्त्सना में, 6-4-6; लूका 12:15-21।

सारांशः

(1) आसपास के देशों पर आनेवाला न्याय, 1:3-15; 2:1-3।
(2) धमकी भरे प्रवचनः
    (अ) यहूदा के विरुद्ध, 2:4-5।
    (आ) इस्राएल के विरुद्ध, 2:6-16।
(3) इस्राएल को सच्चाई में परमेश्वर को खोजने का बुलावा, अध्याय 5।
(4) ऐशो-आराम वाले जीवन की निन्दा, 6:4-14।
(5) एक के बाद एक पाँच दर्शनः
    (अ) टिड्डियों का एक दर्शन, 7:1-3।
    (आ) आग का एक दर्शन, 7:4-5।
    (इ) साहुल का एक दर्शन, 7:7-9।
    (ई) पके फलों की टोकरी का एक दर्शन, 8:1-3।
    (उ) प्रहार हुआ मन्दिर का दर्शन, 9:1-10।
(6) दर्शनों ने भविष्यद्वक्ता को डराने के प्रयास को रोका, 7:10-13।
(7) इस्राएल के बिखरने और पुनःस्थापना की भविष्यद्वाणी, 9:9-15।

ओबद्याह की पुस्तक

लेखकः उसके बारे में कुछ बी जानकारी नहीं।
भविष्यद्वाणीः एदोम और इस्राएल के बीच एक पुराने संघर्ष पर केन्द्रित है। एदोमी एसाव के वंश के थे, और याकूब के विरुद्ध दुर्भाव रखते थे क्योंकि याकूब ने उनके पूर्वज से छल के द्वारा उसका पहिलौठे का अधिकार छीन लिया था, उत्प. 25:21-34।
मूल विचारः आयत 10। एदोमियों ने उनके देश में से इस्राएल को जाने से मना किया था, गिनती 20:14-21। वे यरूशलेम के पतन पर खुश हुए थे, भजन 137:7।
सारांशः
उनके अभिमान और याकूब के साथ बुराई के कारण एदोम का सर्वनाश, आयतें 1-16।
चुने हुए लोगों का छुटकारा और भावी राज्य में उनका एदोम को शामिल करना, आयतें 17-21; गिनती 24:18।
आत्मिक सबकः
परमेश्वर का यहूदियों के लिए विशेष प्रबंध, और उनके दण्ड की निश्चितता जो उन्हें सताते हैं।

योना की पुस्तक

योना, गलील का रहनेवाला, प्रारंभिक भविष्यद्वक्ताओं में से एक, 2 राजाओं 14:25।
नीनवे जाने और उसके देश के शत्रुओं को चेतावनी देने के लिए बुलाया गया, बड़ी अनिच्छा के साथ जाता है।
अविश्वासियों ने इस कहानी की कल्पित कह कर निन्दा की है, और कुछ विद्वान इसे दंत कथा या दृष्टान्त मानते हैं। यहूदी इसे ऐतिहासिक मानते हैं। मसीह ने इसकी सच्चाई की गवाही दी थी, मत्ती 12:39-41; लूका 11:9-30।
योना का चरित्रः

(1) अंश में पवित्र, शक्ति और निर्बलता का अजीबोगरीब मिश्रण।
(2) हठी, 1:1-3।
(3) भक्त, 1:9।
(4) साहसी, 1:12।
(5) प्रार्थना वाला, 2:1-9।
(6) ताड़ना के बाद आज्ञाकारी, 3:3-4।
(7) कट्टर और स्वार्थी, निराश हो गया जब नीनवे ने मन फिराया, 3:4-10; 4:1।
(8) उसकी अपनी नेकनामी की बहुत अधिक चिन्ता, 4:2-3।

सारांशः

अध्याय 1: ईश्वरीय आज्ञा को टाल दिया; भविष्यद्वक्ता का भागना और दण्ड।
अध्याय 2: प्रार्थना और छुटकारा।
अध्याय 3: दूसरी आज्ञा मानता है।
अध्याय 4: भविष्यद्वक्ता की बच्चों जैसी शिकायत, ईश्वरीय दया का महान प्रदर्शन, और भविष्यद्वक्ता को फटकार।

आत्मिक सबकः

(1) कर्तव्य से भागने का जोखिम।
(2) स्वार्थी देशभक्ति और धार्मिक कट्टरपन का प्रलोभन।
(3) सत्य के माध्यम के रूप में अपूर्ण मनुष्य का ईश्वरीय चुनाव।
(4) परमेश्वर की दया का विस्तार।

मीका की पुस्तक

लेखकः मीका, यहूदा में मोरेशेत का निवासी। उसने यहूदा के राजा योताम, आहाज, और हिजकिय्याह के दिनों में भविष्यद्वाणी की; वह यशायाह का समव्यस्क था, 1:1।
उसके नाम का अर्थ है, "यहोवा जैसा कौन है"। वह यहूदा का था, परन्तु यहूदा और इस्राएल दोनों से बोला था।

उसका अभिषेक, 3:8।
सारांश:

I. सामान्य भाग:
   - (1) अध्याय 1-3, मुख्य रूप से आनेवाले न्याय की धमकी।
   - (2) अध्याय 4-5, छुटकारे की भविष्यसूचक प्रतिज्ञाएँ।
   - (3) अध्याय 6-7, मुख्य रूप से उपदेश और देश के पापों का स्वीकरण, और पुनःस्थापना की प्रतिज्ञाएँ।

II. विशेष पापों की निन्दा:
   - (1) मूर्तिपूजा, 1:7; 5:13।
   - (2) बुरी योजनाएँ और युक्तियाँ, 2:1।
   - (3) लोभ, 2:2।
   - (4) राजकुमारों, भविष्यद्वक्ताओं, और याजकों का लालच, 3:2-11।
   - (5) जादूटोना, 5:12।
   - (6) बेइमानी, 6:10-12।
   - (7) विश्वव्यापी भ्रष्टाचार, 7:2-4।
   - (8) विश्वासघात, 7:5-6।

III. भावी आशा:
   - (1) एक धर्मी राज्य की स्थापना, 4:1-8।
   - (2) मसीहा राजा का आगमन, 5:2।
   - (3) देश का सुधार और पुनःस्थापना, 7:7-17।
   - (4) ईश्वरीय अनुग्रह की पूर्ण विजय, 7:18-20।

उद्धरण, इनसे
   - (1) प्राचीनों द्वारा, जिससे यिर्मयाह का जीवन बच सका, यिर्म. 26:16-19; मीका 3:12।
   - (2) महासभा द्वारा, राजा हेरोदेस को, मसीह के जन्म के समय, मत्ती 2:5-6; मीका 5:2।
   - (3) मसीह द्वारा, उसके चेलों को भजने के समय, मत्ती 10:35-36; मीका 7:6।

विशिष्ठ अनुच्छेद
- सच्चे धर्म की परिभाषा, 6:8।
- मसीह के जन्मस्थान की घोषणा, 5:2।
- विश्वासियों के पापों को परमेश्वर द्वारा निकाला जाना, 7:18-19।

नहूम की पुस्तक

लेखक: उसके विषय में कम ही जानकारी है। नाम का अर्थ है, "दयालु" या "सान्त्वना से भरा हुआ"।
तिथि: नीनवे के गिरने के कुछ समय पहले।
मुख्य विषय: नीनवे का विनाश।
ऐतिहासिक स्थापन: इस पुस्तक को कुछ विद्वान योना की शीर्ष मानते हैं।
ऐसा जान पड़ता है कि, अश्शूर के लोग, योना के प्रचार के कारण मन फिराने के बाद, शीघ्र ही मूर्तिपूजा में लौट गए। उन्होंने दूसरे देशों को लूटा, और उनकी राजधानी शिकार से भरी शेर की माँद के जैसी हो गई, 2:11-12।
पुस्तक का उद्देश्य खून से लथपथ नगरी पर ईश्वरीय न्याय की घोषणा करना और भावी छुटकारे के साथ यहूदा को सान्त्वना देना था, 3:1; :13-15।
सारांश:

अध्याय I: यहोवा के प्रतापी और अजेय सामर्थ्य का एक दर्शन, जो अश्शूरियों के जूए को तोड़ेगा और यहूदा को छुड़ाएगा।
अध्याय 2: नीनवे की घेराबंदी का नाटकीय वर्णन।
अध्याय 3: खूनी नगरी पर हाय की घोषणा, और उसके पूर्ण विनाश की भविष्यद्वाणी।
नोट: कुछ व्याख्याकर्त्ता 2:4 में आधुनिक मोटरकार का एक संकेत देखते हैं, परन्तु यह एक अस्वाभाविक अर्थ है।

हबक्कूक की पुस्तक

लेखकः कुछ लोगों ने उसकी भजन प्रार्थना (अध्याय 3) से और प्रधान बजानेवालों के लिए निर्देश से अर्थ निकाला है कि वह मन्दिर में एक गायक था; परन्तु यह केवल अटकलबाजी है।
तिथिः अनिश्चित। भविष्यद्वक्ता स्पष्ट है बेबिलोन के दिनों में जी रहा था। कई विद्वान भविष्यद्वाणी का समय यहोयाकीम के समय का बताते हैं।
मुख्य विषयः ईश्वरीय प्रबंध के रहस्य।
मूल पाठः 1:3।
सारांशः
पुस्तक के शुरू में हम भविष्यद्वक्ता को संसार में बुराई को दण्ड न मिलने के रहस्य पर असमंजस में पड़े देखते हैं।
पहले दो अध्याय मुख्य रूप से हबक्कूक और परमेश्वर के बीच वार्तालाप के विषय में हैं।

(1) भविष्यद्वक्ता परमेश्वर से शिकायत करता है कि वह सब जगह पापी उपद्रव देखता है, फिर भी दुष्टों पर कोई दण्ड नहीं दिया जा रहा है, 1:1-4।
(2) उसे उत्तर मिलता है कि ईश्वरीय योजना कसदियों को दुष्ट देशों पर एक शीघ्र और भयानक न्याय के यन्त्र के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा, 1:5-11।
(3) फिर भी भविष्यद्वक्ता के मन में नैतिक समस्या का समाधान नहीं मिला है। कि एक पवित्र परमेश्वर इस दुष्ट अन्यजाति को उनसे अधिक धर्मी देशों का नाश करने के लिए कैसे इस्तेमाल कर सकता है? क्या गलत और उपद्रव हमेशा चलते रहेंगे? 1:12-17।
(4) भविष्यद्वक्ता संसार को ताकने के लिए अपने गुम्मट पर चढ़ जाता है। उसे प्रभु का उत्तर मिलता है, और उसे बताया जाता है कि परमेश्वर का उद्देश्य शीघ्र पूरा होगा, और उसे इसकी प्रतीक्षा करने के लिए उत्साहित किया जाता है, 2:1-3। फिर इसके बाद एक वाक्य आता है जो मसीही कलीसिया के लिए एक आदर्श-वाक्य ठहरा है, 2:4।
(5) नया प्रकाश पाने से संतुष्ट होकर, भविष्यद्वक्ता महान विश्व शक्ति की बेइमानी पर (2:6); लोभ पर (2:9); हत्या करके नगर को बनाने पर (2:12); मतवालापन पर (2:15); और मूर्तिपूजा पर (2:18-20) एक के बाद एक पाँच हाय घोषित करता है।
(6) अन्त में, वह एक महान प्रार्थना (या स्तुति का भजन) करता है, जिसमें वह यहोवा के प्रताप और महिमा का गुणगान करता और ईश्वरीय योजना में उसका अटल भरोसा व्यक्त करता है, 3:1-19।

विशिष्ठ अनुच्छेदः
- 2:4, सुधार का सुबह का तारा, रोमि. 1:17; इब्रा. 10:38।
- 2:14, मिशनों की विजय।
- 2:15, मतवाला करनेवाले पर हाय।
- 3:17-18, सर्व विजयी विश्वास।

सपन्याह की पुस्तक

लेखकः स्पष्ट है राजा हिजकिय्याह का एक सीधा वंशज था, 1:1।
उसने यहूदा के राजा, योशिय्याह के दिनों में भविष्यद्वाणी की थी, 1:1।
ऐसा सोचा गया है उसने अपनी भविष्यद्वाणी योशिय्याह के शासन के आरम्भ में की थी, उस समय राज्य पर आनेवाली बेदारी के पहले। 2 राजाओं 22-23 देखो।
परम्परा के अनुसार सपन्याह ने राज्य के सुधार के आरम्भ होने में नबिया हुल्दा और यिर्मयाह के साथ मिलकर काम किया था।
मुख्य विषयः परमेश्वर के न्याय, खोजना।
मूल पाठः 1:12।

विषय-वस्तुः पुस्तक इसकी आवाज में अत्यन्त गंभीर है, और धमकियों और निन्दा से भरी हुई है। परन्तु अन्तिम अध्याय में सूर्य निकलता है, और भविष्यद्वक्ता एक खुशी के दिन की भविष्यद्वाणी करता है, जब यहूदी पृथ्वी के सब लोगों के बीच स्तुति के कारण होंगे।

सारांशः

(1) यहूदा पर आनेवाले न्याय की घोषणा, अध्याय 1।

(2) पश्चाताप का आह्वान, 2:1-3।

(3) आसपास के देशों पर न्याय की धमकियाँ, 2:4-15।

(4) यरूशलेम के पापियों पर एक हाय घोषित की जाती है, उनकी भ्रष्टता और दुष्टता में बने रहने के उनके आत्मिक अंधेपन के कारण, अन्यजाति देशों पर सारे न्यायों के बावजूद, 3:1-8।

(5) सारे संसार पर न्याय की भविष्यद्वाणी, जिसमें से केवल एक भक्त समूह की बच पाएगा, 3:8-13।

(6) इस्राएल की भावी महिमा, जब यहोवा उसके लोगों को छुड़ाएगा, और उन्हें सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करेगा, 3:14-20।

हाग्गै की पुस्तक

लेखकः "मन्दिर का भविष्यद्वक्ता" का जन्म बेबिलोन की सत्तर वर्ष की बन्धुआई के समय हुआ था, और ज़रूब्बाबेल के साथ यरूशलेम लौट आया था। वह जकर्याह का सहकर्मी था, एज्रा 5:1; 6:14।

मुख्य विषयः मन्दिर के पुनःनिर्माण पर ध्यान नहीं देने के कारण भारी फटकार, और काम करनेवालों के लिए उत्साहित करनेवाले उपदेश और प्रतिज्ञाएँ।

मूल पाठः 2:4।

ऐतिहासिक अवसरः बचे हुए लोग जो बन्धुआई से लोटे थे स्वार्थी होकर उनके अपने कारोबार में लग गए थे, और प्रभु के भवन के पुनःनिर्माण के बदले उनके अपने घरों को बनाने में अधिक चिन्ता दिखा रहे थे। काम कई वर्षों से बंद पड़ा था, 1:4।

संदेशः

(1) एक तीखी फटकार, दिखाने के लिए कि परमेश्वर ने उनकी प्राकृतिक आशीषों को रोक रखा था, क्योंकि उसका मन्दिर टूटा पड़ा था, 1:3-11।

(2) जैसे मन्दिर के पुनःनिर्माण का काम शुरू होने लगा, प्रोत्साहन के शब्द आए, 1:12-15।

(3) बुजुर्ग लोगों के लिए जिन्होंने सुलैमान का मन्दिर देखा था और जिस मन्दिर को वे बना सके थे उनकी कम महिमा के कारण प्रेरणा से भरी प्रतिज्ञाएँ, 2:3। उन्हें एक आनेवाली ईश्वरीय सामर्थ्य के प्रदर्शन के बारे में और मसीहा के आने के बारे में बताया गया, जब प्रभु की महिमा उसके भवन में भर जाएगी, 2:7-9।

(4) सेनाओं के प्रभु के लिए एक भवन बना सकने की उनकी अयोग्यता की याद दिलाना, 2:1-14।

(5) अन्यजाति देशों के सर्वनाश की भविष्यद्वाणियाँ और परमेश्वर के चुने हुए यन्त्र के रूप में ज़रूब्बाबेल के लिए प्रशंसा के शब्द, 2:20-23।

उत्तम चुनाव, 2:4-9।

- ईश्वरीय उपस्थिति, द्वारा शक्ति देना, आ. 4।
- ईश्वरीय सामर्थ्य, का कार्य करना, आ. 6।
- ईश्वरीय महिमा, का भरना, आ. 7।
- ईश्वरीय शान्ति, का आना, आ. 9।

जकर्याह की पुस्तक

लेखकः बेरेक्याह का पुत्र, 1:1।

इस भविष्यद्वक्ता के बारे में कुछ जानकारी है। उसने हाग्गै के समय में भविष्यद्वाणी की थी और यरूशलेम में मन्दिर के पुनःनिर्माण के लिए यहूदियों को जगाने में उसके साथ मिलकर काम किया था, एज्रा. 6:14।

स्पष्ट है वह एक जवान व्यक्ति था जिस समय वह भविष्यद्वाणी कर रहा था, 2:4।

पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में, कई भजनों का श्रेय हाग्गै और जकर्याह को दिया गया है।
तिथिः हाग्गै की भविष्यद्वाणी के दो महिनों बाद (हाग्गै 1:1 और जकर्याह 1:1 की तुलना करो)।
शैलीः अत्यन्त प्रतीकात्मक।
लम्बे दर्शन का भविष्यद्वक्ता।
हग्गै के समान, उसने भी लोगों की पापी दशा और धार्मिक उदासीनता देखी, और प्रेरणात्मक उपदेश दिए जिससे मन्दिर के पुनःनिर्माण में सहायता मिली। परन्तु उसकी भविष्यद्वाणी की लम्बी पहुँच है - उसने आगे युगों में देखा और मसीहा राजा को आते और सिय्योन के लिए एक नया दिन देखा।
मूल पाठः 1:3; 4:6।
भावी आशाः "परन्तु साँझ के समय उजियाला होगा।" 14:7।
सारांशः
प्रारंभिक उपदेश, 1:1-6।
भाग I. एक के बाद एक आठ दर्शन।

(1) मेंहदियों के बीच खड़ा मनुष्य, और घोड़े, 1:7-17।
(2) चार सींग और चार लोहार, 1:18-21।
(3) नापने की डोरी लिए मनुष्य, अध्याय 2।
(4) महा जायक का शुद्धीकरण, अध्याय 3।
(5) सोने का दीवट और दो जैतून के पेड़, अध्याय 4।
(6) उड़ते हुए पत्र, 5:1-4।
(7) टोकरी में बैठी स्त्री, 5:5-11।
(8) चार रथ, 6:1-8; और महा याजक का राज्याभिषेक, 6:10-15।

भाग II. उपवास से सम्बंधित बेतेल से प्रतिनिधि-मंडल का उत्तर। अन्त में उपवास भोज बन जाएँगे, अध्याय 7-8।
भाग III. यहूदियों के इतिहास के एक समय के विषय में भविष्यद्वाणी, और परमेश्वर के राज्य की अन्तिम विजय का एक दर्शन, अध्याय 9-14।
मसीहा के विषय में तत्त्वः
राजा मसीहाः

(1) पहला आना दीनता में होगा, 9:9।
(2) शान्ति का राजकुमार, 9:10।
(3) क्रूस पर चढ़ाया जाना, 12:10।
(4) उसकी भेड़ों द्वारा त्यागा हुआ चरवाहा, 13:7।

उत्तम चुनावः

(1) आत्मिक उद्यमों में सफलता का रहस्य, 8:9-10।
(2) शान्ति के राजकुमार का आना, 9:9-10।
(3) शुद्धता का सोता, 13:1।

मलाकी की पुस्तक

लेखकः भविष्यद्वक्ता के जीवन के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं है केवल वही जो पुस्तक में पाई जाती है। वह सम्भवतः नहेम्याह का समव्यस्क था; पुस्तक में वर्णित घटनाएँ उस समय से मेल खाती हैं।
शैलीः प्रभावशाली और असाधारण। प्रभु को उसके लोगों के साथ वर्तालाप करते दिखाया गया है। "परन्तु तुम पूछते हो" के विरुद्ध "सेनाओं के यहोवा का यह वचन है" पाया जाता है।
विषयः पुराने नियम के इतिहास की समाप्ति का चित्रित वर्णन, दिखाया गया है कि मसीहा के आने से पहले बड़े-बड़े सुधारों की आवश्यकता थी।
मूल पाठः 3:8।
सारांशः

I. चित्र का काला पहलू। एक बेइमान, अकृतज्ञ लोगों और एक विश्वासघाती याजकपद के पाप।

(1) परमेश्वर से चुराना:

(अ) ईश्वरीय प्रेम की ओर प्रतिक्रिया दिखाने में असफलता के द्वारा, 1:2।

(आ) परमेश्वर के नाम का अपमान करने के द्वारा, 1:6।

(इ) दोषपूर्ण बलि चढ़ाने के द्वारा, 1:7,13-14।

(ई) याजक, बुरे उदाहरण द्वारा, आत्मिक अगुवे बनने के बदले, ठोकर के कारण बन रहे हैं, 2:1-8।

(उ) पापियों का सम्मान करने के द्वारा, 2:17; 3:15।

(ऊ) स्वार्थीपन से दशमांश रोके रखने के द्वारा, 3:8।

(ए) अधार्मिकता को सही बोलकर, 3:14।

(2) सामाजिक पाप:

(अ) बेइमानी के सौदे, 2:10।

(आ) अविश्वासियों के साथ विवाह, 2:11।

(इ) पत्नियों को तलाक, 2:14-16।

(ई) टोन्हे, अशुद्धता, अत्याचार, 3:5।

II. चित्र का सुन्दर पहलू:

यशस्वी प्रतिज्ञाएँ:

(अ) वाचा के दूत का आना, 3:1-4।

(आ) बड़ी आशीष का उँडेला जाना, 3:10-12।

(इ) सन्तों का यहोवा का विशेष खज़ाना होना, 3:16-18।

(ई) एक नए दिन का उदय होना जब धार्मिकता विजय होगी, 4:2-3।

(उ) प्रभु के दिन के आने के पहले एक आत्मिक सुधारक का प्रकट होना, 4:5-6।

उत्तम चुनाव:

- अध्याय 3, वाचा का शुद्ध करनेवाला दूत, आ. 1-4।
- अध्याय 3, आशीषों की वर्षा, आ. 10।
- अध्याय 3, परमेश्वर के हीरे, आ. 10-17।

मत्ती का सुसमाचार

लेखक: मत्ती (जो लेवी भी कहलाता है), बारह में से एक प्रेरित, मरकुस 2:14। दुर्भाग्यवश, एक यहूदी जो एक रोमी महसूल लेनेवाला था, मत्ती 10:3। जब यीशु ने बुलाया, उसने सब छोड़ा और उसके पीछे हो लिया, लूका 5:27-28। उसने यीशु के सम्मान में एक भोज दिया, वह गया जानते हुए भी कि महसूल लेनेवाले तुच्छ समझ जाते थे, लूका 5:29।

किसे सम्भोदित किया गया है: मुख्य रूप से यहूदियों को। इसकी पुष्टि होती है क्योंकि सुसमाचार में साठ से अधिक यहूदी भविष्यद्वाणियाँ और लगभग पुराने नियम के चालीस उद्धरण हैं। मसीह का यहूदियों की ओर कार्य पर विशेष बल दिया गया है, मत्ती 10-5-6; 15-24।

मूल शब्द: पूरा हुआ, जिसे बारम्बार दोहराया गया है जो संकेत देता है कि पुराने नियम की मसीह के बारे में भविष्यद्वाणियाँ यीशु में पूरी हुई हैं। राज्य पचास बार और स्वर्ग का राज्य तीस बार पाया जाता है। यीशु, राजा के रूप में, 2:2; 21:5; 22:11; 25:34; 27:11,37,42।

स्पष्ट उद्देश्य: दिखाना कि यीशु नासरी यहूदी भविष्यद्वाणी का राजा मसीहा था।

स्पष्ट विशेषताएँ:

(1) मसीह की पूर्ण वंशावली, 1:1-17।

(2) इसी सुसमाचार में पाए जाने वाली घटनाएँ और उपदेश।

(अ) अध्याय 2, ज्योतिषियों का आगमन, आ. 1।
मिस्र को जाना, आ. 13-14
छोटे लडक़ों का मारा जाना, आ. 16
नासरत लौटना, आ. 19-23
(आ) अध्याय 3, फरीसी और सदूकियों का यूहन्ना बपतिस्मादाता के पास आना, आ. 7।
(इ) अध्याय 5-7, पहाड़ी उपदेश (सम्पूर्ण)।
(ई) 11:28, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आए।"
(उ) 14:28-31, पतरस का पानी पर चलना।
(ऊ) अध्याय 23, फरीसियों की भर्त्सना, एक विस्तारित उपदेश।
(ए) 26:15, यहूदा का तीस चाँदी के सिक्के लेना।
(ऐ) अध्याय 27, तीस चाँदी के सिक्कों को लौटाना, आ. 3-10।
पिलातुस की पत्नी का स्वपन, आ. 19।
पुनरुत्थान पाए सन्तों का दिखाई देना, आ. 52।
कबर पर पहरा, आ. 64-66।
(ओ) अध्याय 28, सिपाहियों को घूस देना, आ. 12-13।
भुँचाल, आ. 2।
महान नियुक्ति, आ. 19-20।

(3) केवल मत्ती में पाए जानेवाले चमत्कार।
(अ) दो अंधे व्यक्ति चंगाई पाते हैं, 9:28-30।
(आ) कर का पैसा, 17:24-27।

(4) केवल मत्ती में पाए जानेवाले दृष्टान्त।
(अ) अध्याय 13, जंगली पौधे, आ. 24; छिपा हुआ खज़ाना, आ. 44; अनमोल मोती, आ. 45; जाल, आ. 47।
(आ) अध्याय 18, निर्दयी सेवक, आ. 23।
(इ) अध्याय 20, बारी के मजदूर, आ. 1-16।
(ई) अध्याय 21, दो पुत्र, आ. 28-32।
(उ) अध्याय 22, राजा के पुत्र का विवाह, आ. 1-14।
(ऊ) अध्याय 25, दस कुँवारियाँ, आ. 1-13।
तोड़े, आ. 14-30।
भेड़ें और बकरियाँ, आ. 31-46।

विश्लेषण: मसीह के राजा होने के दृष्टिकोण से।
राजा: राजा मसीहा की कहानी।
वंश और जन्म, अध्याय 1; की खोज, 2:2; की प्रशंसा, 2:11; का अग्रदूत, 3:1-12; की आत्मिक विजय, 4:1-11; की घोषणा, 4:17; चेलों को बुलाना, 4:18-22; के नियम और आदेश, अध्याय 5-7; के शब्द और कार्य, अध्याय 8-12; के दृष्टान्त, अध्याय 13; उसके अग्रदूत का कत्ल, 14:1-12; प्राकृतिक शक्तियों और रोगों पर उसका सामर्थ्य, 14:14-36; 15:32-39; मनुष्यों के कठोरपन का, उसके अपने आनेवाले दुखों और महिमा का उसका प्रकाशन, अध्याय 16-17; उसके राज्य के सम्बंध में उसके निर्देश, अध्याय 18-20; राजधानी में उसका प्रवेश, उसकी अस्वीकार किया जाना, दृष्टान्त और भविष्यद्वाणियाँ, 21:1-22:14; फरीसियों और सदूकियों के षड्यन्त्र का उसका पर्दापाश, 22:15-46; उसकी अगुवों की भर्त्सना, अध्याय 23; भविष्य के बारे में उसकी भविष्यद्वाणियाँ और दृष्टान्त, अध्याय 24-25; उसके साथ विश्वासगात तक की घटनाएँ, 26:1-46; उसका मुकदमा, 26:57-75; 27:1-31; उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना, 27:31-50; उसकी मृत्यु के तुरन्त बाद की घटनाएँ, 27:51-56; पृथ्वी पर उसका प्रकट होना, उसके चेलों की उसकी नियुक्ति, अध्याय 28।

मरकुस का सुसमाचार

लेखक: मरकुस, यरूशलेम की मरियम का पुत्र, प्रेरितों 12:12।

जिसे यूहन्ना मरकुस भी कहा जाता है, प्रेरितों 12:25 में।
बरनाबस का एक सम्बंधी, कुलु. 4:10।
पौलुस और बरनाबस के साथ उनकी पहली मिशनरी यात्रा पर गया, प्रेरितों 12:25; 13:5।
अस्थाई रूप से पौलुस से दूर रहा, प्रेरितों 13:13; 15:37-39।
बाद में उसके साथ मित्रता हो गई, 2 तीमु. 4:11।
प्राचीन परम्परा प्रमाण देती है कि मरकुस पतरस का एक साथी था। कुछ प्रचानी लेखक पुस्तक को पतरस का सुसमाचार कहते हैं। सामान्यतः माना जाता है कि पतरस ने पुस्तक में पाया जाने वाला अधिकाँश सामग्री या तो जुटाई होगी या सुझाव दिया होगा।
किसे सम्भोदित की गई: ऐसा सोचा जाता है कि लेखक के मन में अन्यजाति मसीही थे।
कि यह यहूदी पाठकों के लिए नहीं बनाई गई थी इस बात से स्पष्ट होता है कि इसमें पुराने नियम की बहुत कम भविष्यद्वाणियाँ पाई जाती हैं। और, यहूदी शब्दों और रीति-रिवाजों का समझाया जाना संकेत देता है कि लेखक के मन में अन्यजाति थे। 3:17; 5:1; 7:1-4,11,34 देखो।
मुख्य विषय: मसीह, परमेश्वर और मनुष्य का अथक सेवक।
यीशु का जीवन भले कामों से भरा दिखाया गया है।
उसका प्रार्थना का समय में रुकावट, 1:35-37। उसके पास कभी-कभी खाना खाने को भी समय नहीं होता था, 3:20। क्योंकि वह सेवा के लिए निरन्तर बुलावों को पूरा करने में लगा रहता था, उसके मित्रों ने सोचा वह असन्तुलित है, 3:21। जब उसने विश्राम चाहा, लोगों ने उसे खोज निकाला, 6:31-34।
मूल शब्द: तुरन्त, सारी पुस्तक में पाया जाता है।
स्पष्ट विशेषताएँ: यह चारों सुसमाचारों में से सबसे छोटा है।
शैली स्पष्ट और चित्रोमय है। इसकी बहुत सारा सामग्री मत्ती और लूका में भी पाई जाती है, परन्तु यह केवल दोहराई नहीं गई है, क्योंकि इसमें कुछ चीजें पाई जाती हैं जो उन दोनों में नहीं हैं। मरकुस का सुसमाचार, यूहन्ना के जैसे, यीशु मसीह के परमेश्वरत्व की घोषणा से आरम्भ होता है; परन्तु, यूहन्ना के असमान, यह सिद्धान्त को विस्तार से नहीं बताता। परन्तु, पुस्तक के ध्यानपूर्वक अध्ययन से पता चलता है कि लेखक का उद्देश्य था कि, यीशु के अद्‌भुत काम, न कि लेखक के वक्तव्य उसके परमेश्वर होने का प्रमाण दें।
इस सुसमाचार में अनेक व्यक्तिगत संस्पर्श पाए जाते हैं, जैसे कि: "वन पशुओं के साथ रहा," 1:13; "जिनका नाम उसने बुअनरगिस, अर्थात् 'गर्जन के पुत्र' रखा," 3:17; यीशु "क्रुद्ध होकर", 10:14; "चेले अचम्भित थे," 10:32; और "भीड़ के लोग उसकी आनन्द से सुनते थे," 12:37; आदि।
हालाँकि यीशु के ईश्वरीय सामर्थ्य की ओर संकेत है, लेखक अकसर उसकी मानवीय भावनाओं का संकेत भी देता है: उसका उदास होना, 3:5; उसका थका होना, 4:38; उसका आश्चर्य, 6:6; उसकी आहें, 7:34; 8:12; उसका स्नेह, 10:21।
मत्ती यहूदी पाठकों के कारण पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों से मूल रूप से निपटता है, और प्रभु के उपदेशों को अधिक स्थान देता है। मरकुस अधिक संक्षिप्त है; भविष्यद्वाणियों के विषय में बहुत कम कहता है; उपदेशों के विषय में भी कम बताता है, परन्तु यीशु के सामर्थी कामों पर बल देता है।
इस पुस्तक में वर्णित उन्नीस चमत्कार प्रभु के अलौकिक सामर्थ्य को प्रदर्शित करते हैं।
आठ बीमारियों पर उसके सामर्थ्य को प्रमाणित करते हैं, 1:31, 41; 2:3-12; 3:1-5; 5:25; 7:32; 8:23; 10:46।
पाँच प्रकृति पर उसके अधिकार को प्रकट करते हैं, 4:39; 6:41, 49; 8:8-9; 11:13-14।
चार दुष्टात्माओं पर उसके अधिकार को प्रकट करते हैं, 1:25; 5:1-13; 7:25-30; 9:26।
दो मृत्यु पर उसकी विजय को प्रकट करते हैं, 5:42; 16:9।
सारांश: पुस्तक को छः भागों में बाँटा जा सकता है।
भाग I. परिचय और मसीह की सार्वजनिक सेवा तक की प्रारंभिक घटनाएँ। 1:1-19।
अपने पहले अध्याय में मरकुस अचानक इस विषय पर आ जाता है।
वह इस घोषणा के साथ आरम्भ करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, आ. 1।
तब वह उसके काम के पाँच तैयारी के कदमों के बारे में बताता है।

(1) उसके अग्रदूत का आगमन, आ. 2-8।
(2) उसका पानी का बपतिस्मा, आ. 9।
(3) पवित्र आत्मा का उसका सामर्थ्य पाना, आ. 10।
(4) उसके पुत्र होने की ईश्वरीय गवाही, आ. 11।

(5) उसके मुख्य शत्रु के साथ उसका संघर्ष, आ. 12-13।

भाग II. गलील की आरम्भ की सेवकाई, 1:14-7:21। (मरकुस यहूदा की आरम्भ की सेवा के विषय में कुछ नहीं बताता; यूहन्ना 2:13-4:2 देखो)

भाग III. सूर और सैदा की यात्रा, 7:24-30।

भाग IV. उत्तरी गलील में मसीह की शिक्षाएँ और काम, 7:31-9:50।

भाग V. यरदन पार की अन्तिम सेवकाई, और यरूशलेम की ओर यात्रा, 10:1-52।

भाग. VI. दुखभोग सप्ताह की घटनाएँ, 11:1-16:8।

लूका का सुसमाचार

लेखकः प्रिय वैद्य लूका, कुलु. 4:14 देखो। प्रेरितों के काम का लेखक भी; दोनों पुस्तकें एक ही व्यक्ति को सम्भोदित की गई हैं। लूका पौलुस का घनिष्ठ मित्र और सफरी साथी था, जैसे वह प्रेरित की यात्राओं के विवरण लिखने में उसके अपने व्यक्तिगत संकेत देता है। प्रेरितों की पुस्तक में देखिए जहाँ लूका संज्ञा को "हम" और "हमारे" में बदल देता है, जिससे संकेत मिलता है कि वह उन समयों में उपस्थित था, प्रेरितों 16:10; 20:6; 27:1; 28:16।

कई विद्वान लूका के सुसमाचार में पौलुस के सिद्धान्त देखते हैं। सुसमाचार के लिखे जाने की ठीक-ठीक तिथि अज्ञात है। परन्तु यदि यह लूका के पौलुस के प्रभाव में आने के बाद लिखा गया था तब तो स्वाभाविक ही है पौलुस ने उसकी कहानी पर कुछ रंग चढ़ाया होगा।

किसे सम्भोदित हैः थियुफिलुस को, जिसकी पहचान अज्ञात है। भीतरी प्रमाण संकेत देता है कि पुस्तक विशेषकर अन्यजातियों को लिखी गई थी। इसका संकेत इस तथ्य से मिलता है कि लेखक यहूदी रीति-निवाजों को समझाने का कष्ट उठाता है और कभी-कभी इब्रानी नामों के स्थान पर यूनानी इस्तेमाल करता है।

उद्देश्यः यीशु के जीवन का एक सम्बंधित और व्यवस्थित विवरण देना जैसे गवाहों ने देखा था, 1:1-4।

मूल पाठः 1:4।

स्पष्ट विशेषताएँः

(1) यह परमेश्वर के विश्वव्यापी अनुग्रह का सुसमाचार है, 2:32; 3:6; 24:47।

(2) यह "मनुष्य का पुत्र" का सुसमाचार है। यह मसीह के गरीबों, दीनों, और दरिद्रों की ओर उसके सहानुभूतिक रवैये पर बल देता है। दीन चेले, 6:20; पापी स्त्री, 7:37; मरियम मगदलीनी, 8:2; सामरी, 10:33; चुंगी लेनेवाले और पापी, 15:1; त्यागे हुए भिखारी, 16:20-21; कोढ़ी, 17:12; मर रहा चोर, 23:43, आदि।

(3) यह एक भक्तिपूर्ण सुसमाचार हैः यह विशेषकर प्रार्थना पर बल देता है।
(अ) इसमें प्रार्थना पर तीन दृष्टान्त हैं जो दूसरे सुसमाचारों में नहीं पाए जाते हैं। आधी रात वाला मित्र, 11:5-8; अधर्मी न्यायाधीश, 18:1-8; फरीसी और चुंगी लेनेवाला, 18:9-14।
(आ) इसमें मसीह की प्रार्थना है -- उसके बपिस्मा के समय, 3:21; जंगल में, 5:16; चेलों के चुनाव के पहले, 6:12; रूपान्तरण के पहले, 9:29; प्रभु की प्रार्थना देने के पहले, 11:1; पतरस के लिए, 22:32; गतसमनी के बाग में, 22:44; क्रूस पर, 23:46; आदि।

(4) इसके प्रारंभिक अध्यायों में आनन्द और स्तुति का वातावरण है।
कुछ महान मसीही स्तुतिगान इसी सुसमाचार में से लिए गए हैं। "अवे मरिया," स्वर्गदूत के मरियम को बोले गए शब्द, 1:28-33; "मरिया का भजन," 1:46-55। "जकर्याह का स्तुतिगान, 1:68-79; स्वर्गीय स्वर्गदूतों का स्तुतिगान, 2:13-14; शमौन का धन्यवाद का स्तुतिगान, 2:29-32।

(5) यह स्त्रित्व को अत्यन्त सम्मान देता है। स्त्रियाँ लूका के सुसमाचार में विशिष्ठ रूति से दिखाई देती हैं।
अध्याय एक में, मरियम, इलीशिबा; मरियम और उसकी बहन मार्था अध्याय दस में; यरूशलेम की पुत्रियो 23:37 में। कई विधवाओं का भी उल्लेख है, 2:37; 4:26; 7:12; 18:3; 21:2।

(6) मसीह की जीवनी लूका में अधिक सम्पूर्ण है, दूसरे सुसमाचारों की तुलना में। इस पुस्तक की आधी सामग्री दूसरों में नहीं है। हमारे प्रभु की सबसे महत्त्वपूर्ण बातें और उसके जीवन की उल्लेखनीय घटनाएँ केवल इसी सुसमाचार में पाई जाती हैं।

उदाहरणः मछलियों का चमत्कारी रूप से पकड़ा जाना, 5:6; विधवा के बेटे को जीवित करना, 7:11-15; दस कोढ़ी, 17:12; मालकुस की चंगाई, 22:51।

केवल लूका में ही पाए जाने वाली घटनाएँ और कहावतें: मसीह का यरूशलेम के लिए रोना, 19:41; रूपान्तरण के पर्वत पर मूसा और एलिय्याह के साथ बातचीत, 9:30-31; लहू वाला पसीना, 22:44; हेरोदेस के सामने मसीह, 23:28; पश्चातापी चोर, 23:40; इम्माऊस की ओर जाना, 24:13-31।

सारांशः

(1) परिचय, 1:1-4। यीशु का जन्म और उसके बपतिस्मा और परीक्षा तक की उसके प्रारंभिक जीवन से सम्बंधित घटनाएँ, 1:5-4:13।

(2) उसकी सार्वजनिक सेवकाई का आरम्भ, मुख्य रूप से गलील में, 4:14-9:50।

(3) यरूशलेम की ओर, सामरिया और पीरिया से होते हुए, यात्रा; मुख्य रूप से पीरिया में सेवकाई, 9:51-19:28।

(4) अन्तिम दिन, दुखभोग का सप्ताह और क्रूस पर चढ़ाए जाने की घटनाएँ, 19:29-23:55।

(5) पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण से सम्बंधित घटनाएँ, 24:1-51।

यूहन्ना का सुसमाचार

लेखकः प्रेरित यूहन्ना।

तिथिः अनिश्चित। सम्भवतः पहली सदी के अन्त की ओर।

मुख्य उद्देश्यः यीशु मसीह में परमेश्वर के पुत्र के रूप में विश्वास प्रेरित करना।

मूल पाठः 20:31।

स्पष्ट विशेषताएँ:

(1) कई लोग इस सुसमाचार को बाइबल की सबसे गूढ़ और आध्यात्मिक पुस्तक मानते हैं।

(2) इसमें मसीह अपना, और परमेश्वर का सबसे सम्पूर्ण प्रकाशन देता है, दूसरे किसी भी सहदर्शी सुसमाचार से।

(अ) अपने व्यक्ति और गुणों का। मसीह के "मैं हूँ" को देखो।

(आ) अपने परमेश्वरत्व का, 1:1; 10:30-38; 12:45; 14:7-9; 16:15।

(इ) पवित्र आत्मा के काम का।

(ई) अपने ईश्वरीय नियुक्ति का। उदाहरणार्थ, अध्याय पाँच में वह एक के बाद एक छः बार कहता है कि उसे परमेश्वर से भेजा गया है, आयतें 23, 24, 30, 36, 37 और 38।

(उ) परमेश्वर के पितृत्व का। मसीह परमेश्वर को "पिता" एक सौ से भी अधिक बार बोलता है। परमेश्वर आत्मिक पिता है, 4:23; वह जीवन देनेवाला पिता है, 5:21; संदेश पिता का है, 7:16; पिता सबसे बड़ा है, 10:29; काम पिता के हैं, 14:10; भला निवास करनेवाला पिता है, 14:23; अनन्त पिता, 17:5; पवित्र पिता, 17:11; धर्मी पिता, 17:25, आदि।

(3) सम्भवतः सुसमाचार का सबसे विशिष्ठ भेद यह तथ्य है कि पुस्तक में आधे से थोड़ा अधिक स्थान मसीह के अन्तिम दिनों में उसके जीवन और कथनों को दिया गया है।

(4) केवल यूहन्ना में पाए जाने वाले उपदेश और बातचीत--नीकुदेमुस के साथ बातचीत, 3:1-21; सामरिया की स्त्री के साथ, 4:1-26; झोपड़ियों के पर्व के समय यहूदियों को उपदेश, 7:14-39; 8:3-58; अच्छे चरवाहे का दृष्टान्त, अध्याय 10; चेलों को एक के बाद एक व्यक्तिगत निर्देश, उसके शान्त से भरे शब्द और मध्यस्थता की प्रार्थना, अध्याय 14-17; गलील की झील पर उसका चेलों से मिलना, अध्याय 21, आदि।

(5) यूहन्ना ने उसके परमेश्वरत्व को प्रमाणित करने के लिए मसीह के आठ चमत्कारों (उसके पुनरुत्थान के अलावा) को लिखा है। उनमें से छः केवल इस सुसमाचार में पाए जाते हैं:
पानी का दाखरस में बदलना, 2:1-11; अधिकारी के बेटे को चंगा करना, 4:46-54; कुण्ड पर पड़े व्यक्ति को चंगा करना, 5:1-9; जन्म से अंधे व्यक्ति को चंगा करना, 9:1-7; लाजर को जीवित करना, अध्याय 11; दूसरी बार मढलियाँ पकड़ना, 21:1-6।

(6) पुस्तक में से दो विचारों के प्रवाह बहते हैं जिन पर ध्यान लगाना लाभदायक होगा।

(अ) विश्वास, 3:16-18; 5:24; 6:29,40; 7:38; 8:24; 10:37-38; 11:25-27; 12:46; 14:12।

(आ) अनन्त जीवन, 3:15,16,36; 4:14; 4:14; 5:24; 6:27, 51; 11:26; 12:50; 17:3;20:31।

सारांश: पुस्तक को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है।

(1) प्रस्तावना। अनन्त वचन देह धारण करता है, 1:1-18।

(2) मसीह के परमेश्वरत्व का प्रदर्शन और छः गुणा गवाही। यूहन्ना बपतिस्मादाता, पवित्र आत्मा, चेले, मसीह के सामर्थी काम, पिता के, और पवित्रशास्त्र। 1:19-12:50

(3) चेलों को निजि प्रकाशन और निर्देश, अध्याय 13-17।

(4) उसका मानभंग और मृत्यु पर उसकी विजय, अध्याय 18-20।

(5) उपसंहार, 21:1-23।

प्रेरितों के काम

लेखक: लूका, प्रिय वैद्य। पुस्तक एक प्रकार से लूका के सुसमाचार का शीर्ष है और उसी व्यक्ति, थियुफिलुस को सम्भोदित की गई है, 1:1।

मुख्य विषय: प्रारंभिक कलीसिया के इतिहास का विकास, मसीह के स्वर्गारोहण से लेकर पौलुस के रोम में कैद, और वहाँ उसकी सेवकाई आरम्भ होने तक। अनेक बाइबल के विद्यार्थी पुस्तक में पवित्र आत्मा के युग का आरम्भ देखते हैं। जा रहा मसीह, पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के अधीन मानवीय माध्यम के द्वारा, सारे विश्व भर में एक महान मिशन की घोषणा करता है, 1:8।

पुस्तक को दो भागों में बाँटा जा सकता है। ग्रह मिशन की अवधि और विदेशी मिशन की अवधि।

I. ग्रह मिशन की अवधि, यरूशलेम केन्द्र है।

काम मुख्य रूप से पलिश्तीन में यहूदियों के बीच है, प्रेरित पतरस सबसे विशिष्ठ व्यक्ति है।

(1) तैयारी की घटनाएँ:

(अ) ईश्वरीय नियुक्ति, 1:4-8।

(आ) स्वर्गारोहण हो रहा प्रभु, 1:10-11।

(इ) उतर रहा प्रभु, 2:1-4।

(ई) कार्यकर्त्ताओं के उपकरण, 2:4; 4:31।

(2) सेवकाइयाँ:

(अ) पतरस की पिन्तेकुस्त के दिन, 2:14-40। पतरस का दूसरा उपदेश, 3:12-26।

(आ) स्तिफनुस की, 7:1-60।

(इ) फिलिप्पुस और पतरस की, 8:5-25।

(ई) फिलिप्पुस की, 8:26-40।

(3) कलीसिया के विषय में तथ्य:

(अ) इसका विकास।

(आ) पवित्र आत्मा से भरना, 4:31।

(इ) की एकता और परोपकार, 4:32-37।

(ई) का आत्मिक सामर्थ्य, 5:12-16।

(उ) डीकनों की नियुक्ति, 6:1-6।

(4) कलीसिया का सताव, 4:1-3, 17-22; 5:17-18,40; 6:8-15। तरसुस के शाऊल के अधीन सताव, 8:1-3; 9:1।

II. विदेशी मिशनों की अवधि।

कार्य का केन्द्र यरूशलेम है, जो शीघ्र ही सीरिया में अन्ताकिया हो गया।

(1) विश्वव्यापी मिशन तक पहुँचाने वाली प्रारंभिक घटनाएँ।

(अ) फिलिप्पुस की सामरिया में सेवकाई, पतरस और यूहन्ना के साथ मिलकर, 8:5-25।

(आ) पौलुस का परिवर्तन, जो इस समय के दौरान एक महान मिशनरी और कलीसिया में एक प्रमुख व्यक्ति बनता है, 9:1-30।

(इ) उसके याफा में दर्शन के द्वारा पतरस का दृष्टिकोण बढ़ता है, जिससे वह कैसरिया में सेवकाई कर पाता है, 10:1-43।

(ई) कैसरिया में अन्यजातियों पर पवित्र आत्मा का उँडेला जाना और वहाँ पतरस की सेवकाई का सही सिद्ध होना, 10:44-11:18।

(उ) अन्ताकिया में काम का बरनाबस द्वारा समर्थन, जो यरूशलेम की कलीसिया का प्रतिनिधि था, 11:22-24।

(ऊ) बरनबास का पौलुस को तरसुस से अन्ताकिया लाना और वहाँ दोनों का मिलकर कलीसिया को स्थापित करना जहाँ चेले पहलो पहल मसीही कहलाए थे, 11:25-26।

(ए) निक्षिप्त वाक्य। हेरोदेस द्वारा यरूशलेम की कलीसिया को सताना। याकूब की मृत्यु और पतरस की कैद और छुटकारा, 12:1-19।

(2) विदेशी मिशन के इतिहास में युगान्तरकारी घटना। पवित्र आत्मा के निर्देश में, अन्ताकिया की कलीसिया द्वारा पौलुस और बरनाबस को मिशनरियों के रूप में भेजना। यूहन्ना मरकुस उनके साथ जाता है, 13:1-5।

(3) पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा। मिशनरी, पौलुस, बरनाबस, और यूहन्ना मरकुस, 13:4-14:26।
जिन स्थानों पर गए और विशिष्ठ घटनाएँ:
- साइप्रस का टापू जहाँ हाकिम विश्वास करता है और शाऊल का नाम बदलकर पौलुस हो जाता है, 13:4-12।
- पंफूलिया का पिरगा, जहाँ से यूहन्ना मरकुस उन्हें छोड़ कर लौट जाता है, 13:13।
- पिसिदिया का अन्ताकिया, पौलुस का आराधनालय में महान संदेश, 13:14-41।
- यहूदियों का विरोध और अन्यजातियों के बीच काम, 13:44-49।
- शहर से यहूदियों द्वारा निकाल देने के बाद, मिशनरी इकुनियुस जाते हैं। यहाँ वे कुछ समय काम करते हैं, परन्तु सताव उठता है और वे लुस्त्रा और दिरबे भाग जाते हैं, 14:6।
- लुस्त्रा में लंगड़े की चंगाई के बाद लोग पौलुस और बरनाबस की उपासना करना चाहते थे, परन्तु यहूदी विरोध भड़काते हैं और पौलुस को पथराव किया जाता है।
- निडर रहकर, दोनों नायक दिरबे भाग जाते हैं, जहाँ वे सुसमाचार प्रचार करते और बहुतों को सिखाते हैं, 14:8-20।
- यहाँ से मिशनरी वापस लौटते हैं, कलीसियाओं में दोबारा जाते और उन्हें स्थापित करते हैं, और सीरिया के अन्ताकिया लौट जाते हैं, जहाँ वे उनकी यात्रा की रिपोर्ट देते हैं, 14:21-28।

(4) यरूशलेम की सभा।

(अ) विवाद का मामला, 15:5-6।

(आ) मसीही स्वतंत्रता के पक्ष में पतरस का तर्क, 15:7-11।

(इ) पौलुस और बरनाबस उनके अनुभव बताते हैं, 15:12।

(ई) याकूब का भाषण और समिति फैसला करती है कि अन्यजाति विश्वासियों को शुद्धीकरण के नियमों से दूर रखा जाए, 15:13-29। यहूदा और सीलास को समिति का पत्र कलीसिया को देने के लिए भेजा जाता है, 15:27-30।

(5) पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा, 15:26-18:22।

(अ) प्रारंभिक घटनाएँ:
यूहन्ना मुरकुस को लेकर पौलुस और बरनाबस के बीच विवाद। पौलुस सीलास को उसके साथ यात्रा पर चलने के लिए चुनता है, 15:36-40।

(आ) जिन जिन स्थानों पर गए और विशिष्ठ घटनाएँ:
- सीरिया और किलिकिया की कलीसियाओं में जाना, 15:41; लुस्त्रा में, तीमुथियुस मिशनरियों के साथ जाता है, और एशिया मायनर के शहरों में जाते हैं और कलीसिया को मजबूत किया जाता है, 15:41-16:5।
- आत्मा उन्हें त्रोआस ले जाता है, जहाँ उन्हें एक दर्शन द्वारा यूरोप में मकिदुनिया भेजा जाता है, 16:7-10।
- फिलिप्पी में पौलुस और सीलास को कैद किया जाता है, और दारोगा परिवर्तित होता है, 16:12-34, और एक कलीसिया स्थापित हो जाती है।
- अगली महत्त्वपूर्ण घटना थिस्सलुनीके में कलीसिया स्थापित करना है, जहाँ सताव उठता है और वे बीरिया चले जते हैं, 17:1-10। यहाँ मिशनरियों को वचन के कुछ विश्वासयोग्य विद्यार्थी मिलते हैं और वे विश्वास करने लगते हैं, 17:11-12।
- दोबारा सताव का एक तूफान आता है, और पौलुस एथेंस चला जाता है, सीलास और तीमुथियुस को कलीसिया स्थापित करने छोड़ जाता है, 17:13-15।

- एथेंस में पौलुस को शहर मूरतों से भरा मिलता है, और मार्स हिल पर एक भाषण देता है, और कुछ लोगों को विश्वास में ला पाता है, 17:15-34।
- कुरिन्थुस में सीलास और तीमुथियुस पौलुस से मिल जाते हैं, और एक कलीसिया स्थापित होती है। काम सताव के बीच भी अठारह महिनों तक चलता रहता है, 18:1-17।
- काफी समय के बाद पौलुस भाइयों से विदाई लेता है, और सीरिया को चला जाता है, एक थोड़े समय के लिए इफिसुस रुकता है और अन्ताकिया पहुँचता है, 18:18-22।

(6) पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा, 18:23-21:15।
जिन जिन स्थानों पर गए और विशिष्ठ घटनाएँ:
- गलातिया और फ्रूगिया की कलीसियाओं में जाना, 18:23।
- निक्षिप्त वाक्य। इफिसुस में अपुल्लोस, 18:24-28।
- पौलुस इफिसुस लौटता है और अपूर्ण शिक्षा पाए चेलों का एक समूह मिलता है और उन्हें आत्मा के बड़े जीवन में ले जाता है, 19:1-17।
- वह इफिसुस में दो वर्ष तक काम करता रहता है, 19:8-10। प्रभु पौलुस पर चंगाई के वरदान डालकर काम की पुष्टि करता है, 19:11-12। पापी उद्धार पाते हैं और उनकी बहुत सारी बुरी पुस्तकें जलाई जाती हैं।
- फिर वहाँ कारीगरों के बीच हुल्लड़ मचता है, वे डरते हैं कि पौलुस के प्रचार के कारण उनका मूरतें बनाने का धंधा चौपट हो जाएगा, 19:23-41।
- पौलुस इफिसुस से निकलता है और मकिदुनिया की कलीसिया में फिरता हुआ, यूनान पहुँचता है, 20:1-2। वह तीन महिने यूनान में बिताता है, फिर मकिदुनिया लौटता है और त्रोआस आकर प्रचार करता है, 20:3-12।
- त्रोआस से वह मिलेतुस जाता है और इफिसुस के प्राचीनों को उसके पास बुला भेजता है।
- मिलेतुस पर वह प्राचीनों को अपना विदाई का भाषण देता है, 20:17-38।
- मिलेतुस से पौलुस यरूशलेम को निकलता है, आत्मा द्वारा चिताया जाकर कि वहाँ उसके लिए दुख प्रतीक्षा कर रहे हैं, 21:1-17।

(7) पौलुस यरूशलेम और कैसरिया में:
(अ) वह अन्यजातियों के बीच उसकी सेवकाई के अनुभव कलीसिया को बताता है, 21:18-20।
(आ) संदेह शान्त करने के लिए, उसे यहूदी मन्नत मानने के लिए आग्रह किया जाता है, जिसे वह करता है, 21:20-26।
(इ) मन्दिर में उसे यहूदी शत्रु पकड़ लेते हैं परन्तु रोमी सैनिक उसे आकर छुड़ाते हैं, 21:27-40।
(ई) वह भीड़ के सामने अपना बचाव पेश करता है, 22:1-21।
(उ) कोड़े खाने से बचने के लिए वह अपनी रोमी नागरिकता इस्तेमाल करता है, 22:25-30।
(ऊ) उसकी महासभा के सामने उपस्थिति, 23:1-10।
(ए) प्रभु उसे रात को एक प्रोत्साहन के संदेश के साथ दिखाई देता है, 23:11।
(ऐ) यहूदियों में उसे घात करने के षड्यन्त्र के कारण उसे कैसरिया भेज दिया जाता है, 23:12-33।
(ओ) यहूदियों द्वारा उस पर लाए दोषारोपण और गवर्नर फेलिक्स के सामने उसकी सफाई, 24:1-21।
(औ) मसीह में उसके विश्वास के विषय में फेलिक्स के सामने उसका भाषण, 24:24-26।
(अं) फेस्तुस के सामने उसकी सफाई और कैसर से दोहाई, 25:1-12।
(अः) अग्रिप्पा के सामने उसका भाषण, 26:1-29।

(8) कैदी के रूप में पौलुस का रोम जाना, 27:1-28:16।
(अ) यात्रा का पहला चरण, 27:2-13।
(आ) तूफान और पौलुस की आत्मिक शक्ति, 27:14-36।
(इ) जहाज का टूटना और भूमि पर बच निकलना, 27:38-44।
(ई) माल्टा के द्वीप पर के अनुभव, 28:1-10।
(उ) रोम पहुँचना और वहाँ पौलुस की सेवकाई, 28:16-31।

रोमियों का पत्र

लेखकः प्रेरित पौलुस
किसे लिखा गयाः रोम के मसीहियों को, 1:7।
मूल पाठः 1:16; 5:1।
पत्र को दो मुख्य भागों में बाँटा जा सकता हैः भाग I. सिद्धान्त-सम्बंधी, अध्याय 1-11। भाग II. व्यावहारिक, अध्याय 12-16।
मुख्य विषयः भाग I. उद्धार की योजना। विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना और पवित्र आत्मा द्वारा पवित्रीकरण।
भाग II. मुख्य रूप से मसीही कर्तव्यों के विषय में उपदेश।
एक प्रभावशाली दलील। भाग I में, प्रेरित प्रमाणित करता है कि सारी मानवजाति तीन अलंघ्य दीवारों द्वारा घिरी हुई है।

(1) विश्वव्यापी दोष की दीवार, अध्याय 1-3।
(2) पाप की ओर झुकाव और शारीरिक लालसाओं की दीवार, 7:15-24।
(3) परमेश्वर के चुनाव की दीवार, 9:7-18।
स्वाभाविक मनुष्य की भयानक स्थिति को दिखाने की अपनी दलील के बीच, वह उद्धार की योजना में दिए गए ईश्वरीय दया के द्वारों की ओर संकेत करता है, जिसके द्वारा सब मनुष्य परमेश्वर के सन्निकट न्याय से बच सकते हैं, यदि वे चाहें तो। मानव जाति के लिए ईश्वरीय दया के द्वार अलगाव के दीवारों में से देखी जा सकती हैं: (1) विश्वव्यापी अवसर (रोमियों 10:13); (2) वचन और आत्मा द्वारा नया जीवन (रोमियों 8:1-4); और विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना (रोमियों 5:1)।

मूल जंजीर, विचार धारा को दिखाता है, 1:16; 3:22-23,28; 4:3; 5:1,18; 9:31-32; 10:3-4, 6-9।
सारांशः
भाग I. उद्धार की योजना।

(1) की जरूरत, मानवजाति के विश्वव्यापी दोष में आधारित है।
    (अ) अन्यजाति संसार की, 1:18-2:7।
    (आ) उसी प्रकार यहूदी भी, व्यवस्था के दण्ड के अधीन हैं, 2:8 से 3:20।
    (इ) सब पापी हैं, 3:23।
(2) धर्मी ठहराया जाने, या धार्मिकता का तरीका, विश्वास द्वारा, 3:21-28।
    (अ) विश्वव्यापी, 3:29-30।
    (आ) व्यवस्था का सम्मान करता है, 3:31।
(3) अब्राहम के जीवन में चित्रित है, अध्याय 4।
    (अ) कामों से अलग, आ. 1-6।
    (आ) विधियों से अलग, आ. 9-12।
    (इ) व्यवस्था से अलग, आ. 13-25।
(4) की आशीष, परमेश्वर के प्रेम के द्वारा कारगार की जाती है जैसे मसीह की बलिदान संबंधी मृत्यु में प्रकट होती है, आ. 5:1-11।
(5) उद्धार के मुफ्त दान की पहुँच समझाई गई है, 5:12-21।
(6) मुफ्त दान पाप में बने रहने को प्रोत्साहित नहीं करता, परन्तु मनुष्य के पापी स्वभाव के क्रूसित होने की और परमेश्वर की पवित्र सेवा के एक जीवन की माँग करता है, 6:1-23।
(7) अध्याय सात में, पौलुस स्पष्ट है पापी झुकावों और शारीरिक इच्छाओं के साथ संघर्ष की बात कर रहा है। क्या वह अपने परिवर्तन के पहले या बाद के अपने अनुभव की बात कर रहा है, एक प्रश्न है जिसके विषय में बाइबल के विद्यार्थी असहमत हैं। सब सहमत हैं कि वह स्पष्ट रूप से संघर्ष को चित्रित कर रहा है जो मनुष्य के हृदय में होता रहता है, 7:7-24।
(8) उद्धार की ईश्वरीय योजना का चरम बिन्दु अध्याय आठ में चित्रित किया गया है। यह मसीह में विश्वास के द्वारा स्वतंत्रता और धार्मिकता का एक नया आत्मिक जीवन है। यह बाइबल का एक सबसे महान आत्मिक अध्याय है, जिसके पवित्र आत्मा का उन्नीस बार उल्लेख है।
(9) निक्षिप्त वाक्य। पौलुस का उसके अपने लोगों के लिए गहरी चिन्ता, 9:1-5।
(10) ईश्वरीय चुनाव का रहस्य और इस्राएल के साथ परमेश्वर का बर्तावः
    (अ) इस्राएल के विशेषाधिकार, 9:4-5। 3:1-2 भी देखो।
    (आ) अब्राहम के स्वाभाविक और आत्मिक वंशों के बीच भिन्नता, 9:6-13।

(इ) ईश्वरीय प्रभुत्व का रहस्य, 9:14-24।

(ई) भविष्यद्वक्ताओं ने यहूदियों की असफलता की भविष्यद्वाणी की थी कि वे उनके विशेषाधिकारों के अनुसार नहीं जी सकेंगे; अन्यजातियों का बुलावा और विश्वास द्वारा धार्मिकता की ईश्वरीय योजना की स्वीकृति, 9:25-33।

(11) यहूदियों की ईश्वरीय योजना के विषय में गलतफहमी, जिसका परिणाम उनकी आत्म-धार्मिकता हुआ, 10:1-3।

(12) विश्वास द्वारा उद्धार की योजना की व्याख्या और इसका विश्वव्यापी उपयोग सामने रखा गया, 10:4-18।

(13) इस्राएल के साथ परमेश्वर का व्यवहार, 10:19-11:12।

(14) अन्यजातियों को उनके विशेषाधिकारों के कारण अभिमान न करने की चेतावनी, परन्तु सावधान रहें ऐसा न हो कि वे दण्ड के भोगी बन जाएँ, 11:13-22.

(15) इस्राएल की पुनःस्थापना की भविष्यद्वाणी और परमेश्वर के तरीकों के रहस्य की घोषणा कि वे अगम्य हैं, 11:23-36।

भाग II. व्यावहारिक। मुख्य रूप से उपदेश और मसीही कर्तव्यों के सम्बंध में निर्देश, अध्याय 12-16।

अध्याय 12। इस अध्याय में पवित्रशास्त्र में पाया जाने वाला सबसे उत्तम मसीही कर्तव्यों का सार है।

अध्याय 13। (1) नागरिक और सामाजिक कर्तव्य, आ. 1-10।

(2) ज्योति में जीने का कर्तव्य, आ. 11-14।

अध्याय 14:1 से 15:7 तक। निर्बलों की ओर कर्तव्य।

(1) न्याय करने में लिहाज, 14:1-13।

(2) नाराज़ न करें, के लिए सावधानी, 14:15-23।

(3) उनकी सहायता करना और अपने को प्रसन्न नहीं करना, 15:1-7।

अन्तिम विचारः मुख्य रूप से अनुभव और नमस्कार।

अध्याय 15 (जारी है)

(1) अन्यजातियों के कारण और उनके बीच प्रेरित की व्यापक सेवकाई के लिए धन्यवाद, आ. 8-21।

(2) रोम जाने की पौलुस की इच्छा और विभिन्न मसीही मित्रों को उसका नमस्कार, 15:22-16:16।

(3) अन्तिम शब्द और आशीर्वाद, आ. 17-27।

कुरिन्थियों को लिखा पहला पत्र

लेखकः प्रेरित पौलुस।

ऐतिहासिक अवसरः कुरिन्थुस की कलीसिया इसके व्यभिचारी शहर की बुराइयों से दूषित हो जाती है। यूनानी उनकी शिक्षा और तत्त्व-ज्ञान का घमंड करते थे परन्तु उसी के साथ-साथ अत्यन्त अनैतिक थे। वे विशेषकर वाक्पटुता पसन्द करते थे। स्पष्ट था कि अपुल्लोस, एक वाक्पटु मसीही कुरिन्थुस आया था और यूनानी मसीहियों की कल्पना को अधिकार में कर लिया था, प्रेरितों 18:24-28।

इस तथ्य के कारण तुलनाएँ होने लगीं, उसकी वाक्पटुता, और दूसरे धार्मिक अगुवों के बीच विशेषकर पौलुस को बदनाम करने के लिए, जिसका शारीरिक रूप-रंग लगता है प्रभावशाली नहीं था (2 कुरिं. 10:10)।

यह सम्भवतः कलीसिया में फूट का संकेत देता है, 1 कुरिं. 1:11-13। पौलुस की इच्छा थी कि वह दलबंदी की आत्मा और अनैतिकता से कलीसिया को शुद्ध करे, जो इस पत्र को लिखने का प्रमुख कारण था।

पत्र को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

भाग I. मुख्य विषयः सेवा के झूठे विचार, बौद्धिक अभिमान, सामाजिक बुराइयों, और दूसरी अव्यवस्थाओं से कलीसिया को शुद्ध करना, अध्याय 1-11।

सेवकाई के झूठे विचार को दिखा रही मूल श्रृँखला, 1:12-17; 3:4-7,21-22; 4:6-7।

सारांशः

(1) अभिवादन, 1:1-9।

(2) दलबंदी की फूट, मनुष्य की उपासना, और सांसारिक बुद्धि में महिमा से कलीसिया को शुद्ध करने की आवश्यकता, 1:10-31।

(3) पौलुस की असाधारण सेवकाई। उसकी ओर से सांसारिक बुद्धि दिखाने का कोई प्रयत्न नहीं था। उसने केवल परमेश्वर की बुद्धि एक संदेश में घोषित की जो उसे पवित्र आत्मा ने प्रकट किया था, 2:1-16।
(4) अगुवों को लेकर संघर्ष बचपने और सांसारिकता का चिन्ह है, 3:1-8।
(5) सेवकाई सा सच्चा दृश्य। सेवकों को समझा जाना चाहिए:
 (अ) सत्य फैलानेवाले, 3:1-2।
 (आ) माली, 3:6-8।
 (इ) परमेश्वर के सहकर्मी, 3:9।
 (ई) चरित्र निर्माण करनेवाले, 3:10।
 (उ) विश्वासयोग्य सेवक, 4:1-2।
 (ऊ) मसीह की खातिर दुख उठानेवाले, 4:9-13।
 (ए) आदर्श, 4:16-17।
 (ऐ) अनुशासन लागू करनेवाले, 4:18-21।
(6) कलीसिया के शुद्धीकरण का कर्तव्य:
 (अ) अनैतिकता से, 5:1-13।
 (आ) मुकदमेबाजी से, 6:1-8।
 (इ) मसीह की देह और पवित्र आत्मा के मन्दिर के रूप में, विश्वासियों को सब प्रकार की कामुकता से अपने आपको शुद्ध करना चाहिए, 6:9-20।
(7) विवाह और सब यौन सम्बंधों का पवित्रीकरण और आध्यात्मिक जीवन के परम दावे, 7:1-40।
(8) मसीही आदर्श माँग करते हैं कि कुछ हक और विशेषाधिकार अज्ञानियों और निर्बलों की खातिर बलिदान किए जाएँ। उधाहरणार्थ, पूरतों को चढ़ाया हुआ मांस, 8:1-13।
(9) मनुष्यों को मसीह के लिए जीतने के लिए पौलुस का उसके कुछ अधिकारों और स्वतंत्रता को त्यागना, 9:1-27।
(10) इस्राएल का अविश्वास के उदाहरण कलीसिया के लिए एक चेतावनी, 10:1-15।
(11) प्रभु भोज के समय संगति की माँग है बुरे सम्बंधों से अलग रहना, 10:16-21।
(12) खाने और पीने के मामलों में मसीही प्रभाव की रक्षा करना, 10:23-33।
(13) पहनावे के मामलों में सामाजिक रीति-रिवाजों को मानना, 11:1-16।
(14) कलीसिया का शुद्धिकरण, प्रभु भोज से सम्बंधित अव्यवस्था से, और उसका सही तरीके से माना जाना, 11:17-34।

भाग II. सिद्धान्तीय निर्देश और सलाह।
(1) आत्मिक वरदानों की विविधता के विषय में, 12:1-31।
(2) प्रेम की श्रेष्ठता, 13:1-13।
(3) अन्यभाषाओं के वरदान पर भविष्यद्वाणी की श्रेष्ठता और सामूहिक सभाओं में उचित व्यवस्था बनाए रखने का महत्व, 14:1-40।
(4) पुनरुत्थान का सिद्धान्त, 15:1-58।
(5) अन्तिम निर्देश और नमस्कार, 16:1-24।

कुरिन्थियों को लिखा दूसरा पत्र

लेखक: प्रेरित पौलुस।
मुख्य विषय: यह कुछ छिपा हुआ है, परन्तु स्पष्ट होता है कि जब पौलुस यह पुस्तक लिख रहा था तब उसके मन में उसकी प्रेरिताई का बचाव करने का विचार था।
कुरिन्थियों को लिखे दोनों पर संकेत देते हैं कि इस कलीसिया में एक तत्त्व ता जो उसकी सेवकाई और अधिकार को बदनाम करने का प्रयास कर रहा था। यह प्रवृत्ति निम्नलिखित "मूल श्रँखला" में दिखाई गई है।
विषय-वस्तु: यह पौलुस का एक सबसे व्यक्तिगत पत्र है। वह इसमें अपनी सेवकाई की अधिक बात करता है। वह अपना हृदय खोलता और अपने अभिप्राय, अपने आत्मिक उत्साह, और कलीसिया के लिए अपना कोमल प्रेम प्रकट करता है।
मूल श्रँखला: 3:1; 5:12; 7:2; 10:2; 11:5-6; 12:11; 13:3।

सारांशः इस पत्र में विचारों के कोई निश्चित भाग नहीं हैं, परन्तु विषय वस्तु को तीन शीर्षकों में रखा जा सकता है।

I. प्रेरित की सेवकाई की विशेषताएँ।

(1) शांति देना, 1:4-7; 7:7,13।

(2) दुख उठाना, 1:5-9; 4:8-12; 5:4; 6:4-10; 7:5; 11:24-28; 12:7-10।

(3) सच्चाई, 1:12; 2:17; 4:2; 7:2।

(4) दृढ़ता, 1:17-19; 4:1,16।

(5) चिन्ता, 2:3-4; 7:7-8; 11:2-3; 12:20-21।

(6) जयवन्त, 2:14; 4:8-9; 12:10।

(7) आत्म-बलिदान, 4:5,11,15; 5:13; 11:7,9।

(8) मसीह का प्रेम नियंत्रित करनेवाला अभिप्राय, 4:11; 5:14।

(9) आध्यात्मिक, 4:18; 5:16; 10:4।

(10) प्रत्यायक, 5:11,20; 6:1; 10:1-2।

(11) मेल-मिलाप, 5:19-21।

(12) गंभीरता, दुखों, और भले कामों, के द्वारा प्रदर्शन, 5:13; 6:4-10; 12:12।

(13) प्रामाणिक, 10:1-11।

(14) आत्म-निर्भर, 11:9।

II. उदारता के विषय में उपदेश और निर्देश, अध्याय 8-9।

III. पौलुस की प्रेरिताई।

(1) कलीसिया में एक तत्त्व ने बदनाम किया, 10:7-10; 12:11; 13:3।

(2) का अधिकार, 2:9; 13:2।

(3) प्रमाणितः

(अ) प्रभु द्वारा, 1:1,21-22; 3:5-6; 4:6।

(आ) काम के लिए अद्वितीय दुखों के द्वारा, 6:4-10; 11:23-27।

(इ) अदभुत प्रकाशन पाने के द्वारा, 12:1-5।

(ई) बड़े बड़े काम करने के द्वारा, 12:12।

उत्तम चुनावः

(1) आदर्श सेवकाई, 4:1-18।

(2) मृत्यु पर विजय, 5:1-9।

(3) संसार से अलग होने का बुलावा, 6:14-18।

(4) पौलुस द्वारा सहे दुखों की सूची, 11:24-33।

गलातियों का पत्र

लेखकः प्रेरित पौलुस।

तिथिः सम्भवतः सन् 55-60।

किसे सम्भोदित हैः गलातियों को, एशिया मायनर में एक राज्य, जिसकी सही सीमाएँ अनिश्चित हैं।

मुख्य विषयः विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त का बचाव, यहूदा धर्म में लौटने के बारे में चेतावनियाँ, और पौलुस की प्रेरिताई का दोषनिवारण।

कलीसिया का महाधिकार-पत्र। इस पत्र को कुछ लोग इस प्रकार पुकारते हैं। मुख्य तर्क यहूदा मत वालों की शिक्षा के विरोध में और मसीही स्वतंत्रता के पक्ष में है। ये झूठे शिक्षक इस बार पर बल देते थे कि शुद्धिकरण के नियमों का पालन उद्धार की योजना का एक मूलभूत अंग है।

मूल पाठः 5:1।

मूल श्रँखलाः विचार धारा को दिखाना, 1:6; 2:11-16; 3:1-11; 4:9-11; 5:1-7; 6:15।

जोरदार शब्दः विश्वास, अनुग्रह, स्वतंत्रता, क्रूस।

पत्र को चार भागों में बाँटा जा सकता है।

भाग I. अभिवादन और परिचय, 1:1-9।

भाग II. सच्चा प्रेरित होने के उस के दावे के समर्थन में पौलुस के अनुभवों का कहानी।

(1) जिस सुसमाचार का उसने प्रचार किया वह सीधे प्रकाशन के द्वारा मसीह से आया था जब वह एक जोशीला यहूदी था जो कलीसिया को सता रहा था, 1:10-16।

(2) कई वर्षो तक वह यरूशलेम की कलीसिया से दूर था और दूसरे प्रेरितों से अलग अकेला परिश्रम कर रहा था, 1:17-23।

(3) वह अपना काम ईश्वरीय निर्देश के तहत अन्यजातियों में कर रहा था, और तीतुस के मामले में, जो यूनानी था, उसने आग्रह किया था कि उसे शुद्धिकरण के नियम के पालन से छूट मिलनी चाहिए, 2:1-5।

(4) यरूशलेम की कलीसिया ने उसकी प्रेरिताई और अन्यजातियों में उसके काम को समर्थन दिया, 2:7-10।

(5) वह पतरस, बरनाबस और दूसरे मसीही यहूदियों को फटकारने से न हिचका, जब उसने देखा कि वे अनुष्ठानिक प्रवृतियों में पड़ रहे हैं, 2:11-14।

भाग III. पौलुस का, व्यवस्था के कामों से अलग, विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त का बचाव।

(1) मसीही यहूदियों की मूर्खता को दिखाकर जो उनके नए विश्वास और ज्योति को छोड़कर पुराने विधिवादिता में लौट रहे थे, 2:15-21।

(2) गलातियों के पहले आध्यात्मिक अनुभवों की याद दिलाकर, 3:1-5।

(3) दिखाकर कि अब्राहम विश्वास से धर्मी ठहरा था, 3:6-9।

(4) दिखाकर के व्यवस्था में उद्धार करने की सामर्थ्य नहीं थी, बल्कि अवज्ञाकारियों पर शाप लाता है, जिसमें से मसीह ने हमें छुड़ा लिया है, 3:10-4।

(5) प्रमाणित करके कि व्यवस्था ने विश्वास द्वारा उद्धार की वाचा को रद्द नहीं किया, 3:15-18।

(6) व्यवस्ता के उद्देश्य को दिखाकर, जो मसीह के लिए मार्ग तैयार करने की मार्गदर्शिका थी, 3:19-25।

(7) उनकी हानियों को दिखाकर जो मसीह में उनके विश्वास को त्यागते और विधिवादिता में लौटते हैं।

(अ) वे परमेश्वर की सन्तान के रूप में उनकी मीरास को खोते हैं, और शुद्धिकरण की दासता में लौटते हैं, 3:26-4:11।

(आ) उन्होंने उनके लिए प्रशंसा की भावना खो दी थी जिन्होंने उनके लिए परिश्रम किया था, 4:11-16।

(इ) वे, प्रतिज्ञा की सन्तान बनने के बदले, शरीर के भाव से अब्राहम की सन्तान बनने के जोखिम में थे, 4:19-31।

(ई) वे न केवल उनकी स्वतंत्रता खोएँगे बल्कि मसीह के बलिदान को उनके लिए किसी लाभ का न छोड़ेंगे, 5:1-6।

भाग IV. चेतावनी, शिक्षा, और उपदेश।

(1) झूठे शिक्षकों, स्वतंत्रता के दुरूपयोग के बारे में चेतावनियाँ, 5:7-13।

(2) आध्यात्मिक जीवन के विषय में उपदेश।

(अ) शरीर और आत्मा के बीच संघर्ष, 5:17-18।

(आ) शरीर के काम जो परमेश्वर के राज्य से दूर रखते हैं, 5:19-21।

(इ) आत्मा के फल जो मसीही जीवन में प्रकट होते हैं, 5:22-26।

(3) आध्यात्मिक जीवन की विशेषताएँ।

(अ) सहायता और बोझ ढोना, 6:1-2।

(आ) दीनता, आत्म-जाँच, आत्म-निर्भरता, और परोपकार, 6:3-6।

(इ) बोने और काटने का नियम नैतिक क्षेत्र में भी लागू होता है, 6:7-9।

(4) झूठे शिक्षकों और पौलुस के सिद्धान्तों में तुलना। पहले विधि-विधान के नियमों और शरीर के चिन्हों में अभिमान करते हैं; दूसरा क्रूस और प्रभु यीशु के चिन्हों में, 6:12-17।

इफिसियों का पत्र

लेखकः प्रेरित पौलुस।

तिथिः सम्भवतः रोम में लिखा गया था।

इफिसुस में पौलुस की सेवकाई।
उसका पहली बार जाना, प्रेरितों 18:18-21; दूसरी बार जाने के समय, विश्वासियों को पवित्र आत्मा मिलता है, प्रेरितों 19:2-7; असाधारण सफलता के साथ उसका काम जारी रहता है, प्रेरितों 19:9-20; कारीगरों के साथ उसका संघर्ष, प्रेरितों 19:23-41; इफिसियों के प्राचीनों को उसका भाषण, प्रेरितों 20:17-35।
लिखने का ऐतिहासिक अवसर।
पहली कलीसियाओं में परिवर्तित यहूदी उनके अन्यजाति भाइयों से अपने को अलग करने लगते थे। इफिसुस की कलीसिया में इस स्थिति के कारण हो सकता है यह पत्र लिखा गया था, जिसका मूल वाक्य मसीही एकता है।
मूल पाठः 4:13।
मूल श्रँखला, विचार दारा को प्रकट करती है, 1:10; 2:6,14-22; 4:3-16।
मुख्य विषयः कलीसिया की एकता, विशेषकर यहूदी और अन्यजाति विश्वासियों में।
इसे कुछ शब्दों और वाक्यांशों के बार बार दोहराए जाने से देखा जा सकता है, जैसे किः
(1) शब्द साथ और में, 1:10; 2:6; 2:22।
(2) शब्द एक-एक नया मनुष्य, 2:14-15; एक देह, 2:16; एक आत्मा, 2:18; एक आशा, 4:4; एक प्रभु, एक विश्वास, एक बपतिस्मा, सब का एक परमेश्वर और पिता, 4:5-6।
दूसरे बार बार पाए जाने वाले शब्द और वाक्यांश।
(1) मसीह में, 1:1, 3, 6, 12, 15, 20; 2:10, 13; 3:11; 4:21।
(2) स्वर्गीय स्थानों में, 1:3, 20; 2:6; 3:10।
(3) अनुग्रह का धन, 1:7; 2:7; महिमा का धन, 1:18; 3:16; मसीह का धन, 3:8।
सारांशः
भाग I. कलीसिया और उद्धार की योजना। नोटः विभिन्न पत्रों में उद्धार की योजना की चर्चा करने में, पौलुस अलग-अलग पहलुओं पर बल देता है। रोमियों में, वह कामों से अलग विश्वास की बात करता है; गलातियों में, विधि-विधान के पालन के अलावा विश्वास पर; और इफिसियों में विश्वासियों की एकता पर।
अध्याय 1.
(1) अभिवादन, आ. 1-2।
(2) कलीसिया का ईश्वरीय प्रारंभ, आ. 3-6।
(3) उद्धार की योजना।
(अ) मसीह के मोल देकर छुड़ाने के काम के द्वारा, आ. 7-8।
(आ) इसके विस्तार में विश्वव्यापी है, आ. 9-10।
(इ) एक भरपूर आत्मिक मीरास को निश्चित करता है, आ. 11-14।
(ई) प्रार्थना कि इसके प्रबंधों के धन के सम्बंध में, विश्वासी ज्योति पाएँ, आ. 15-23।
अध्याय 2.
(उ) योजना पाप से आत्मिक पुनरुत्थान और विश्वासी का स्वर्गीय स्थानों में बैठाए जाने का प्रबंध करती है, आ. 1-6।
(ऊ) यह पूर्ण रूप से अनुग्रह का काम है, कामों का नहीं, आ. 7-10।
(ए) यह अन्यजातियों को ग्रहण करता है जो परमेश्वर से दूर थे परन्तु मसीह के लहू के द्वारा निकल लाए गए हैं, आ. 11-13।
(ऐ) यह यहूदी और अन्यजातियों के बीच सब बाधाओं को निकालती है और उन्हें एक देह में जोड़ती है, पवित्र आत्मा के निवास के लिए, आ. 14-22।
अध्याय 3.
(ओ) ईश्वरीय उद्देश्य के रहस्य पौलुस को प्रकट किए गए थे और अन्यजातियों के लिए प्रेरित नियुक्त किया गया था, आ. 1-12।
(औ) कलीसिया की आत्मिक भरपूरता और मसीह के असीम प्रेम के विषय में उसके प्रकाशमान होने के लिए पौलुस की दूसरी प्रार्थना, आ. 14-21।
भाग II. व्यावहारिक उपयोग। कलीसिया की ओर से, ईश्वरीय योजना की क्या माँग है।
अध्याय 4.

(1) विश्वासियों की एकता।

(अ) आत्मा में, 1-3।

(आ) सात एकताओं का जिक्र है, आ. 4-6।

(इ) वरदानों की विविधता परन्तु मसीह की एक देह में एकता, आ. 7-16।

(2) एक समान मसीही जीवन, विश्वासी की चाल।

(अ) दूसरे पापी लोगों के जैसे नहीं, आ. 17-21।

(आ) नया जीवन, पुराने पापों को त्यागना, आ. 22-32।

अध्याय 5.

(इ) प्रेम और शुद्धता में चलना, आ. 1-7।

(ई) ज्योति में चलना, आ. 8-14।

(उ) ध्यानपूर्वक चलना, आत्मा से भरकर, आ. 15-21।

(3) घरेलु जीवन।

(अ) पति और पत्नियों के कर्तव्य, आ. 22-23।

अध्याय 6.

(आ) बच्चों, पिताओं, सेवकों, और स्वामियों के कर्तव्य, आ. 1-9।

(4) आत्मिक युद्ध।

(अ) शक्ति का स्रोत, आ. 10।

(आ) शस्त्र और शत्रु, आ. 11-18।

(5) अन्तिम शब्द और आर्शीवाद, आ. 19-24।

उत्तम चुनावः

-पौलुस की कलीसिया के लिए प्रार्थना, 1:16-23; 3:14-21।

-मसीही एकता, 4:3-16।

-आत्मिक अस्त्र-शस्त्र, 6:10-17।

फिलिप्पियों का पत्र

लेखकः प्रेरित पौलुस।

तिथिः अनिश्चित। सम्भवतः रोम से लिखा गया था, सन् 60-64।

कलीसियाः फिलिप्पी की कलीसिया बहुत अंश तक एक आदर्श कलीसिया थी। यह प्रशंसक और परोपकारी थी। 4:15-16; 2 कुरिं. 8:2 देखो।

इसे पौलुस ने उसकी दूसरी मिशनरी यात्रा के समय स्थापित किया था, सताव के तूफान के बीच। काम से प्रारंभ छोटे थे, कुछ स्त्रियों के साथ जिन्हें वह नदी किनारे मिला था। लुदिया, एक बैंजनी कपड़ा बेचनेवाली पहली विश्वास करने वाली स्त्री थी, और उसके साथ शीघ्र ही फिलिप्पियों का दारोगा और उसका परिवार शामिल हो गए थे। ये, और सम्भवतः कुछ और, कलीसिया के केन्द्र बन गए। प्रेरितों 16:12-40 देखो।

पत्र की विशेषताएँ। यह कलीसिया को लिखा प्रेम का पत्र, और स्नेह और कृतज्ञता से भरा है। कठिन परिस्थितियों में लिखा, जबकि पौलुस एक कैदी थी, यह विजय और आनन्द पर बल देता है।

प्रार्थना में आनन्द, 1:4; सुसमाचार में आनन्द, 1:18; मसीही संगति में आनन्द, 2:1-2; उद्देश्य के लिए बलिदान में आनन्द, 2:17-18; प्रभु में आनन्द, 3:1; कलीसिया की स्नेहपूर्ण देखभाल के लिए आनन्द, 4:10।

प्रमुख संदेश। यीशु मसीह।

अध्याय 1. (1) आत्मिक फल के स्रोत के रूप में, आ. 11।

(2) प्रचार के विषय के रूप में, आ. 18।

(3) मसीही सेवा के उच्च अभिप्राय के रूप में, आ. 20-21।

अध्याय 2. (4) एकमात्र सिद्ध आत्मा और उदाहरण प्रदर्शित करने के रूप में, आ. 5-11।

अध्याय 3. (5) जीवन में संघर्ष करने के लिए सर्वोच्च इनाम कौन है का ज्ञान, आ. 7-14।

(6) जिसके प्रकट होने पर विश्वासियों के शरीर नए हो जाएँगे, आ. 20-21।

अध्याय 4. (7) जिसका सामर्थ्य मसीही जीवनों में असीम है, आ. 13।

(8) जो हर आवश्यकता के लिए ईश्वरीय भंडार का माध्यम है, आ. 19।

सारांश:

अध्याय 1.

(1) अभिवादन, आ. 1-7।

(2) उसके भीतरी जीवन और कलीसिया की ओर उसके रवैये का प्रेरित द्वारा व्यक्तिगत प्रकटीकरण।

(अ) इसके आत्मिक विकास के लिए उसकी गहरी चिन्ता, आ. 8-11।

(आ) उसका आश्‍वासन कि उसकी जंजारों से बहुतों को आशीष मिली है, आ. 12-19।

(इ) उसकी अपेक्षा और इच्छा कि, उसके कैद का चाहे कुछ भी परिणाम हो, उसके जीवन या मृत्यु द्वारा मसीह को महिमा मिले, आ. 20।

(ई) विश्‍वासी के लिए मृत्यु की आशीष की उसकी अनुभुति, परन्तु महसूस करना कि उसका काम अभी अधूरा है, वह फिलिप्पी की कलीसिया में दोबारा जाने की आशा करता है, आ. 21-25।

(उ) उसकी मुख्य चिन्ता सताव के मध्य कलीसिया की विश्‍वासयोग्यता है, आ. 27-30।

अध्याय 2.

(3) मसीही जीवन और चरित्र के विषय में उपदेश।

(अ) एकता, दीनता, और अपने आपको भूल जाने के बारे में, आ. 1-4।

(आ) मसीह का मन खोजने के बारे में, आ. 5-13।

(इ) व्यक्तिगत उद्धार का काम पूरा करने में परमेश्‍वर के साथ सहयोग और एक दुष्ट संसार में परमेश्‍वर के पुत्रों की नाईं जीना, आ. 12-16।

(4) उसके संदेशवाहकों, तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस के लिए प्रेरित की सराहना, आ. 19-30।

अध्याय 3.

(5) यहूदा मत वालों के बारे में चेतावनी, 1-3।

(6) प्रेरित के अनुभवों का वर्णन।

(अ) एक विशेष सुविधा-प्राप्त, उत्साही यहूदी के रूप में, जिसने अपनी सारी कानूनी धार्मिकता को व्यर्थ जान कर त्याग दिया था, ताकि मसीह में विश्‍वास द्वारा धार्मिकता को प्राप्त करे, आ. 4-9।

(आ) मसीह को जानने और उसके पुनरुत्थान में भागी होने और एक मसीह-समान चरित्र के अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने की उसकी सर्वोच्च्य अभिलाषा, आ. 10-14।

(7) कलीसिया को और उपदेश।

(अ) प्रेरित के उदाहरण का अनुकरण करना, आ. 15-17।

(आ) क्रूस के शत्रुओं से सावधान रहना, आ. 18-19।

(इ) स्वर्गीय नागरिक बनना, जो प्रभु के आगमन पर एक महान परिवर्तन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, आ. 20-4।

अध्याय 4.

(ई) दृढ़ता, एकता, सहायता करने का गुण, नम्रता, बेचैनी से स्वतंत्रता, प्रार्थना करने का गुण, और ऊँची सोच के लिए, आ. 1-8।

(8) प्रशंसा के अन्तिम शब्द, हर आवश्यकता के लिए ईश्‍वरीय प्रबंध की प्रतिज्ञा; अभिवादन और आर्शीवाद, आ. 10-23।

कुलुस्सियों को लिखा पत्र

लेखक: प्रेरित पौलुस।

तिथि: सम्भवत: रोम से लिखा गया था, सन् 60-64।

किसे लिखा गया था। कुलुस्से की कलीसिया को, जो एशिया मायनर में एक शहर था।

उद्देश्य:

(1) सामान्य, सद्भाव का एक संदेश, विश्‍वासियों को उपदेश और शिक्षा देने के लिए।

(2) विशेष, यहूदा मत की शिक्षाओं और पूर्वी और दार्शनिक कल्पनाओं के मिश्रण से निकलने वाले सिद्धान्त-सम्बंधी भ्रम का खंडन करना।

विशेषताएँ: यह पत्र विचार और भाषा में इफिसियों के पत्र से काफी कुछ मिलता जुलता है, फिर भी इसका अपना एक सुस्पष्ट संदेश है। इफिसियों में पौलुस, मसीह की देह के रूप में कलीसिया के विचार के बारे में बात करता है, जबकि कुलुस्सियों में वह मसीह कलीसिया का सिर है की बात करता है।

सांसारिक बुद्धि में भरोसा करने के विषय में चेतावनी जो 1 कुरिन्थियों में पाई जाती है, कुलुस्सियों में भी पाई जाती है।

सारांश: पत्र को छः भागों में बाँटा जा सकता है।

अध्याय 1.

I. (1) प्रेरित का नमस्कार और प्रशंसा, आ. 1-8।

(2) कलीसिया के लिए प्रार्थना।

(अ) कि यह बुद्धि से भरे, भले कामों के फल लाए, और ईश्वरीय सामर्थ्य से शक्ति पाए, आ. 9-11।

(आ) आत्मिक मीरास, महान छुटकारा, और पापों से छुड़ाए जाने के लिए धन्यवाद, आ. 12-14।

II. सिद्धान्त-सम्बंधी भाग। मुख्य विषय, मसीह के व्यक्ति और काम की महिमा।

अध्याय 1.

(1) उसकी यशस्वी श्रेष्ठता।।

(अ) परमेश्वर के प्रतिरूप के रूप में, आ. 15।

(आ) सब चीजों के सिरजनहार के रूप में, आ. 16।

(इ) उसके पूर्व-अस्तित्व के रूप में, आ. 17।

(ई) कलीसिया के सिर के रूप में, आ. 18।

(उ) उसकी ईश्वरीय परिपूर्णता, आ. 19।

(ऊ) उसका मेल-मिलाप कराने का काम, आ. 2--23।

(ए) उसके विश्वासियों में निवास करने का रहस्य जिसकी पौलुस की सेवकाई में घोषणा हुई थी, आ. 24-29।

अध्याय 2.

(2) कलीसिया की दशा के विषय में पौलुस की चिन्ता।

(अ) कि सदस्य प्रेम में एक हों, और पिता और मसीह के आत्मिक रहस्यों की पूर्ण समझ पाएँ, आ. 1-3।

(आ) वह झूठे सिद्धान्त के विरुद्ध चेतावनी देता है और मसीह में विश्वास में दृढ़ रहने का आग्रह करता है, आ. 4-7।

III. सिद्धान्त-सम्बंधी और विवादात्मक भाग।

अध्याय2.

(1) सांसारिक तत्त्व-ज्ञान और विधिवादिता का जोखिम, आ. 8।

(2) मसीह की श्रेष्ठ महिमा और उसकी आत्मिक विधियों की सामर्थ्य जिसकी तुलना समारोही प्रणाली से की गई है, आ. 4-13।

(3) मसीह के क्रूस की स्वतंत्र करने वाली सामर्थ्य, पुराने समारोही विधियों का अन्त करने के लिए, आ. 14-17।

(4) स्वर्गदूतों की उपासना और झूठे रहस्यवाद के विरुद्ध चेतावनी, जो मसीह का जो कलीसिया का सिर है अपमान करते हैं, आ. 18-19।

(5) समारोही विधियों और तपस्या के विरुद्ध चेतावनी, आ. 20-23।

IV. उपदेश का भाग।

अध्याय 3।

(1) स्वर्गीय अभिलाषाओं और स्नेहों के लिए, आ. 1-4।

(2) शारीरिक लालसाओं और इच्छाओं का अधीनीकरण, आ. 5-7।

(3) बुरी कामुकताओं और आदतों को उतारना और मसीही सद्गुणों और गुणों को पहने लेना, आ. 8-14।

(4) शांति, एकता और कृतज्ञता की आत्मा के अधीन रहना, आ. 15।

(5) सत्य की खोज करना, ताकि शिक्षा और चेतावनी और प्रशंसा में एक दूसरे की सहायता कर सको, सब कुछ मसीह के नाम से करो, आ. 16-17।

V. परिवार का भाग।

अध्याय 3,4।

मसीही घराने के विभिन्न सदस्यों के कर्तव्यः पत्नियाँ, पति, बच्चे, पिता, दास, स्वामी, 3:18-4:1।

VI. संगति का भाग।

अध्याय 4।

(1) पौलुस की प्रार्थना की माँग और सामाजिक आचरण के विषय में सलाह, आ. 3-6।

(2) अन्तिम अभिवादन और कार्यकर्त्ताओं की प्रशंसा, आ. 7-18।

थिस्सलुनीकियों को लिखा पहला पत्र

लेखकः प्रेरित पौलुस।

तिथिः समय और स्थान अनिश्चित हैं। यह सामान्यतः माना जाता है कि यह पौलुस का सबसे पहला पत्र था और सम्भवतः कुरिन्थुस से सन् 49-54 में लिखा गया था।

कलीसियाः पौलुस ने उसकी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान स्थापित की थी। उसने उसके काम में हिसंक विरोध का सामना किया, परन्तु वह कुछ यहूदियों और असंख्य यूनानियों को जीतने में सफल हुआ, जिससे वह एक विश्वासयोग्य कलीसिया स्थापित कर सका। प्रेरितों 17:1-10 देखो।

ऐतिहासिक अवसरः पौलुस ने तीमुथियुस को कलीसिया को प्रोत्साहित करने और मजबूत करने भेजा था। उसके लौटने पर, जो रिपोर्ट उसने दी उससे प्रेरित होकर प्रेरित ने यह पत्र लिखा, 3:6।

मुख्य विषयः यह पौलुस के सब पत्रों से सबसे अधिक व्यक्तिगत पत्र है। यह दूसरे कुछ पत्रों के समान सिद्धान्त-सम्बंधी या विवादात्मक नहीं है।

पत्र के ढाँचे में मुख्य रूप से प्रशंसा, व्यक्तिगत यादें, सलाह, और उपदेश शामिल हैं।

प्रमुख सत्य, जिस पर जोरदार बल दिया गया है, मसीह के आने की भावी आशा है।

सारांशः पत्र को पाँच बागों में बाँटा जा सकता है।

I. प्रशंसात्मक भाग।

अध्याय 1.

(1) अभिवादन, आ. 1।

(2) कलीसिया की प्रशंसा। इसके विश्वास और स्नेहभरी सेवा के लिए, आ. 2-4; आत्मिक ग्रहणशीलता के लिए, आ. 5-6; आदर्श प्रभाव के लिए, आ. 7-8; मूर्तिपूजा के त्याग के लिए और आत्मिक आशा के लिए, आ. 9-10।

II. यादों का भाग। पौलुस उन्हें उसकी सेवकाई की विशेषताओं की याद दिलाता है।

अध्याय 2।

(1) साहसी, सच्ची, परमेश्वर का भय माननेवाली, ईमानदार और निस्वार्थ, आ. 2-5।

(2) दीन, नम्र, स्नेही, परिश्रमी, निर्दोष, और पैतृक, आ. 6-12।

(3) वह कलीसिया के सीखने के मन और दुखों की बात करता है, आ. 13-14।

(4) कलीसिया में आने की प्रेरित की इच्छा के संकेत, और उसके आनन्द के मुकुट के रूप में वह उनमें महिमा करता है, आ. 17-20।

III. संदेशवाहकों का भाग।

अध्याय 3।

(1) कलीसिया को बल देने के लिए तीमुथियुस को भेजना, आ. 1-5।

(2) उसके संदेशवाहक की अनुकूल रिपोर्ट और इसके शांतिदायक और आनन्दपूर्ण परिणाम, आ. 6-9।

(3) पौलुस की तीव्र प्रार्थना कि वह सम्भवतः कलीसिया में आएगा और उनके आत्मिक विकास को पूरा करेगा, आ. 10-13।

IV. उपदेश का भाग।

अध्याय 4।

(1) व्यक्तिगत और सामाजिक शुद्धता के लिए उपदेश, आ. 1-8।

(2) भाईचारे के प्रेम और परिश्रम के लिए उपदेश, आ. 9-12।

V. भावी आशा का भाग।

अध्याय 4। प्रभु का आगमन।

(1) शोकार्त्तों के लिए शांतिदायक आशा, आ. 13-14।

(2) पुनरुत्थान का क्रर्म, आ. 15।

(3) मसीह के प्रकट होने का तरीका और उसके साथ घटने वाली घटनाएँ, आ. 16-18।

अध्याय 5.

(4) उसके आगमन का समय अज्ञात, आ. 1-2।

(5) अविश्वासियों को अपेक्षा नहीं है, आ. 3।

(6) ज्योति की सन्तानों को तैयार रहना चाहिए, आ. 4-8।

(7) पर विश्वासियों की सुरक्षा, आ. 9-11।

VI. कर्तव्य का भाग।

(1) मसीही जीवन के व्यावहारिक कर्तव्यों के विषय में उपदेश, 5:12-22।

(2) अन्तिम आदेश और आर्शीवाद, 5:23-28।

उत्तम चुनावः

- मसीह का पुनरागमन, 4:13-5:11।
- व्यावहारिक कर्तव्य, 5:12-22, रोमियों के अध्याय 12 का एक साथी अनुच्छेद।

थिस्सलुनीकियों को लिखा दूसरा पत्र

1 थिस्सलुनीकियों का शीर्ष।

लेखकः प्रेरित पौलुस।

तिथिः सम्भवतः पहले पत्र के तुरन्त बाद कुरिन्थुस से लिखा गया था।

ऐतिहासिक अवसरः स्पष्ट होता है कि पौलुस के इस कलीसिया को लिखे पहले पत्र की कुछ बातें को गलत समझा गया था। जब उसने मसीह के आगमन के समय की अनिश्चितता की बात की थी, उसके शब्दों को इस प्रकार समझा गया कि मसीह का आगमन पास में है। इससे अनुचिक उत्तेजना पैदा हो गई थी। विश्वासी अस्थिर और घबरा गए थे, 2:2। वे प्रभु के आगमन के पास होने की बात के गलत विचार निकाल बैठे थे, जिससे उनके जीवन गड़बड़ हो गए थे।

कुछ लोगों ने दूसरे अध्याय की आयतों 2 और 3 से यह निष्कर्ष निकाला है कि कलीसिया को एक नकली पत्र मिला था जिससे समस्याएँ बढ़ गईं थी, परन्तु यह बिलकुल अटकलबाजी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि पौलुस का यह पत्र इस उलझी और बेचैन कलीसिया को शांत करने के लिए लिखा गया था।

प्रमुख विषयः मसीह का पुनरागमन।

मूल पाठः 3:5।

सारांशः पत्र को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

I. अध्याय 1.

(1) अभिवादन और धन्यवाद, आ. 1-3।

(2) (अ) सताव में पड़ी कलीसिया के लिए शांति के शब्द, आ. 4-6।

(आ) मसीह के पुनरागमन के समय विश्वासियों की नियति, और पश्चातापहीन दुष्टों के भाग्य के बीच एक स्पष्ट भेद दिखाया गया है, आ. 7-12।

II. अध्याय 2।

(1) प्रभु के आगमन के विषय में गलत विचारों से पैदा हुई अशांति के विरुद्ध चेतावनी, आ. 1-2।

(2) आगमन से पहले घटने वाली घटनाओं की घोषणा,

(अ) विनाश के पुत्र का आना, आ. 3।

(आ) पाप के पुत्र का अपने को ऊँचा करना, आ. 3-4।

(इ) पाप का पुत्र सही समय पर प्रकट होगा, चिन्हों और झूठी सामर्थ्य के साथ, आ. 5-9।

(ई) यह शैतानी व्यक्ति मसीह के आगमन पर नष्ट किया जाएगा, आ. 8।

(उ) एक शक्तिशाली धोखा दुष्ट को धोखा देगा, आ. 10-12।

(3) विश्वासियों से जिन्होंने सुसमाचार के महान विशेषाधिकारों का आनन्द लिया है, एक स्नेहभरा आग्रह कि वे खरी शिक्षा को थामे रखें, आ. 13-15।

(4) एक शांति देनेवाला आर्शीवाद, आ. 16-17।

III. अध्याय 3।

(1) प्रेरित का कलीसिया में भरोसा।

(अ) वह उनकी प्रार्थना की माँग करता है, आ. 1-2।

(आ) वह विश्वास करता है वे बुराई से सुरक्षित रखे जाएँगे और उसकी आज्ञा का पालन करेंगे, आ. 3-4।

(इ) वह उन्हें आज्ञा देता है वे मसीह के आने का धीरज के साथ प्रतीक्षा करें और अनुचित चाल चलनेवाले भाइयों से अपने आप को अलग रखें, आ. 5-6।

(2) प्रेरित का उदाहरण।

(अ) अनुशासित जीवन, आ. 7।

(आ) एक अच्छे प्रभाव के लिए स्वैच्छिक आत्म-निर्भरता, आ. 8-9।

(इ) विश्वासियों के काम करने पर बल, आ. 10।

(3) अन्तिम चेतावनियाँ।

(अ) आलसी और दूसरों के काम में हाथ डालने के विषय में, आ. 11-12।

(आ) दृढ़ परिश्रम और हठी आज्ञा न माननेवालों के विषय में, आ. 13-14।

(4) आर्शीवाद और नमस्कार, आ. 16-18।

तीमुथियुस को लिखा पहला पत्र

लेखकः प्रेरित पौलुस।

तिथिः अनिश्चित।

मुख्य विषयः एक जवान पास्टर के व्यक्तिगत आचरण और सेवकाई के काम के लिए सलाह और उपदेश।

मूल पाठः 3:15

सारांशः

I. मुख्य रूप से सिद्धान्त-सम्बंधी सलाह और व्यक्तिगत अनुभव।

अध्याय 1.

(1) अभिवादन, आ. 1-2।

(2) विधिवादी शिक्षकों से निपटने के विषय में सलाह।

(अ) जो सच्ची भक्ति पर बल देने के बदले अनावश्यक पर बल देते हैं; जो, चरित्र को बनाए रखने के बदले, झगड़े पैदा करते हैं, आ. 3-6।

(आ) जो इसके महत्त्व को समझे बिना, व्यवस्था के शिक्षक बनना चाहते हैं, आ. 7-11।

(3) पौलुस के अनुभव।

(अ) सुसमाचार का विरोध करने के समय में ही उसका सेवकाई के लिए बुलावा, आ. 12-13।

(आ) ईश्वरीय अनुग्रह की और अयोग्यता की उसकी स्वीकृति, आ. 14-15।

(इ) उसका मसीह का धैर्य अनुभव करना, आ. 16।

(4) उसका तीमुथियुस को आदेश, आ. 18-20।

II. प्रार्थना और पुरुषों और स्त्रियों के लिए सलाह।

अध्याय 2.

(1) सब मनुष्यों के लिए मध्यस्थता की प्रार्थना, आ. 1-4।

(2) मध्यस्थ मसीह, आ. 5-6।

(3) पौलुस अन्यजातियों का प्रेरित, आ. 7।

(4) पुरुषों और स्त्रियों के कर्तव्य, आ. 8-15।

III. आत्मिक निरीक्षण। अध्यक्षों और डीकनों की योग्यताएँ।

अध्याय 3.

(1) एक अध्यक्ष की योग्यताएँ।
  (अ) व्यक्तिगत चरित्र और आदतें, आ. 2-3।
  (आ) उसके परिवार की ओर रवैया, आ. 4-5।
  (इ) अनुभव और अच्छा नाम, आ. 6-7।
(2) डीकनों की योग्यताएँ।
  (अ) चरित्र, आदतें, और मसीही अनुभव, आ. 8-9।
  (आ) एक समय के लिए परखा गया, आ. 10।
  (इ) विश्वासयोग्य पत्नियाँ और उनको घरों में उचित अधिकार होना, आ. 11-12।
  (ई) एक डीकन होने की आशीषें, आ. 13।
(3) पत्र का उद्देश्य, आ. 15।
(4) मसीह के दहधारण का रहस्य, आ. 16।

IV. भविष्यद्वाणियाँ और सलाह।

अध्याय 4।

(1) भावी धर्मत्याग और शैतानी शिक्षाओं का प्रचलन जो घर के महत्त्व को कम करेंगे और परिणाम भक्तिहीन तपस्या होगा, आ. 1-4।
(2) शिक्षा, सेवकाई के आचरण, उदाहरण, आदि के विषय में सलाह।
  (अ) मसीह के अच्छे सेवक के चिन्ह, आ. 6।
  (आ) भक्तिहीनों की क्षेष्ठता, आ. 7-8।
  (इ) एक भक्त उदाहरण का महत्त्व, आ. 12।
  (ई) पढ़ने और सिखाने में परिश्रम का कर्तव्य; व्यक्तिगत वरदानों का उपयोग, आ. 13-14।
  (उ) मनन और सम्पूर्ण समर्पण का महत्त्व, और उसके साथ व्यक्तिगत आचरण पर ध्यान, उद्धार के लिए प्रभाव के लिए, आ. 15-16।

V. सेवकाई का प्रशासन, निम्नलिखित के विषय में सलाह, अध्याय 5।

(1) बूढ़े और जवानों की ओर शिष्टाचार, आ. 1-2।
(2) कलीसिया का विधवाओं की ओर रवैया, आ. 3-16। नोटः इस परिच्छेद का उस समय के सामाजिक हालातों को मन में रखकर अध्ययन करना चाहिए।
(3) कलीसिया के प्राचीनों की ओर कर्तव्य, आ. 17-20।
(4) निष्पक्ष और सुविचारित क्रिया का कर्तव्य, आ. 21-22।
(5) निक्षिप्त वाक्य, व्यक्तिगत मामलों के विषय में सलाह, आ. 23-25।

अध्याय 6।

(6) सेवकों के कर्तव्य, आ. 1-2।
(7) झगड़ालु शिक्षकों से अलग होने का कर्तव्य, आ. 3-5।
(8) संतोष की आशीषें, आ. 6-8।
(9) धन के जोखिम और लोभ से बचने का सेवक का कर्तव्य, मसीही सद्‌गुण खोजना, और "विश्वास की अच्छा कुश्ती लड़ना।" आ. 9-12।
(10) जवान पास्टर को उसकी शिक्षा शुद्ध रखने का आदेश, जब तक राजाओं का राजा प्रकट नहीं होता, आ. 13-16।
(11) धनवानों को अभिमान और आत्म-विश्वास के विरुद्ध चेतावनी और उनसे भलाई करने का आग्रह, आ. 17-19।
(12) ईमानदारी के लिए अन्तिम आदेश और झूठी शिक्षा से बचना, आ. 20-21।

तीमुथियुस को लिखा दूसरा पत्र

लेखकः प्रेरित पौलुस।

स्थान और तारीखः सम्भवतः रोम से सन् 65-67 में लिखा था। इसमें प्रेरित पौलुस के अन्तिम शब्द पाए जाते हैं।

उद्देश्यः

(1) सामान्य, एक जवान पास्टर को उसकी सेवा के काम के लिए प्रोत्साहित करना और शिक्षा देना।

(2) विशेष, सुसमाचार में अपने पुत्र तीमुथियुस से आग्रह करना कि वह शीघ्रता के साथ रोम आए ताकि वह उसकी संगति की सुविधा पा सके, 1:4; 4:9,21।

ऐतिहासिक अवसर। यह सामान्यतः माना जाता है कि पौलुस रोम में दो बार कैद किया गया था, और कि दूसरी बार यह पत्र लिखा गया था। पहले तो उसने कुछ स्वतंत्रता का आनन्द लिया था और अपने भाड़े के घर में रहता था, प्रेरितों 28:30।

उस समय उसके मित्र उसके पास आ-जा सकते थे, परन्तु अब वह बंद कैद में था और उनेसिफुरूस को उसे खोजने में कठिनाई हुई थी, 1:17। उसके पहले के कई साथी उसे छोड़ गए थे, 1:15, और अपेक्षा कर रहा था कि बहुत जल्द की मार डाला जाएगा, 4:6। पत्र में अकेलेपन का एक कारुणिक तनाव पाया जाता है, और आश्चर्य की बात नहीं कि पौलुस उसके प्रिय तीमुथियुस को देखना चाहता था।

पत्र की विशेषताएँ।

तीमुथियुस को लिखे दोनों पत्रों में तात्कालिक उपदेश पाए जाते हैं। काफी सम्भव है कि वह डरपोक भी था, 2 तीमुथियुस 1:6-7। "लज्जित" शब्द पत्र में विशिष्ठ रूप से पाया जाता है। उसे आग्रह किया गया है कि वह उसकी गवाही, उसके कैदी मित्र, से लज्जित न हो, 1:8, या न उसके काम से, 2:15। उसे एक कठिन काम के बीच अपने आप को एक योद्धा समझने का आग्रह किया गया है, 2:3-4।

पत्र को चार भागों में बाँटा जा सकता है, अध्याय स्वाभाविक भाग दिखाते हैं।

सारांशः

I. व्यक्तिगत अभिवादन, उपदेश, और अनुभव।

अध्याय 1.

(1) स्नेही अभिवादन, आ. 1-4।

(2) तीमुथियुस को उसके भक्त वंश की याद दिलाना और उत्सुकता और साहस के लिए एक उपदेश, आ. 5-8।

(3) मसीह द्वारा उद्धार की योजना का संदर्भ, आ. 9-10।

(4) काम के लिए लेखक के अपने व्यक्तिगत बुलावे के संकेत और प्रभु में उसका अटल भरोसा, आ. 11-12।

(5) दूसरा उपदेश, आ. 13-14।

(6) एशिया की कलीसियाओं के विश्वासघात का उल्लेख और उनेसिफुरुस की विश्सनीयता की प्रशंसा, आ. 15-18।

II. मुख्य रूप से प्रभु के जवान सेवक को सलाह।

अध्याय 2.

(1) एक आत्मिक योद्धा, खिलाड़ी, और किसान के रूप में।

  (अ) ईश्वरीय अनुग्रह में बलवन्त होना, और विश्वासयोग्य सहायक चुनना, आ. 1-2।

  (आ) सहनशक्ति और सांसारिक जटिलताओं से अलग होने के योद्धा के गुणों के प्रकट करना, आ. 3-4।

  (इ) एक आत्मिक खिलाड़ी के रूप में खेल के नियमों पर चलना, आ. 5।

  (ई) किसान के रूप में फसल की अपेक्षा करना, आ. 6।

(2) मन में रखने के लिए सत्य।

  (अ) मसीह का पुनत्त्थान, जिसके प्रचार के कारण पौलुस कैद में था, आ. 7-9।

  (आ) कलीसिया के लिए दुख उठाना और मसीह के साथ मरना अनन्त जीवन और आत्मिक सम्मान लाता है, आ. 9-12।

(3) अपसिद्धान्त और धार्मिक विवाद से निपटने की सलाह।

  (अ) झगड़ालुओं के लिए गंभीर चेतावनी से, आ. 14।

  (आ) सत्य का कुशल व्याख्याकर्त्ता बनने के प्रयत्न से, आ. 15।

  (इ) अभक्त बातें और अजीब शिक्षाओं से दूर रहने से जो आत्मिक जीवन को और विश्वास को नष्ट करते हैं, आ. 16-18।

  (ई) ईश्वरीय बुनियादों को याद करके और कि मसीहियों को अपने आप को बुराई से अलग करना चाहिए, आ. 19।

  (उ) याद करके कि कलीसिया में, एक बड़े घर के समान, कुछ आदर के बरतन और कुछ अनादर के बरतन होते हैं, और हर विश्वासी का उद्देश्य होना चाहिए कि "स्वामी के काम" आए, आ. 20-21।

III. मुख्य रूप से धर्मत्याग, और सामाजिक भ्रष्टता की भविष्यद्वाणियाँ, और साथ में दृढ़ रहने के लिए उपदेश।

अध्याय 3।

(1) अन्तिम दिनों में मनुष्यों की विभिन्न बुरी विशेषताएँ, जो धर्म के नाम से कामुकता के काम करेंगे, आ. 1-6। उनकी बुद्धिहीनता और मूर्खता एक दिन सब पर प्रकट होगी, आ. 7-9।

(2) निक्षिप्त वाक्य, सताव के उल्लेख, आ. 11-12।

(3) पाप के बढ़ते ज्वार-भाटा की एक भविष्यद्वाणी, आ. 13।

(4) तीमुथियुस से एक आग्रह कि वह उसके आत्मिक अवसरों और प्रारंभिक पवित्रशास्त्र के प्रशिक्षण के कारण दृढ़ बना रहे, आ. 14-15।

(5) परमेश्वर के प्रेरित वचन में मसीही कार्यकर्त्ता को उसके काम के लिए सज्जित और सिद्ध करने की सामर्थ्य, आ. 16-17।

IV. एक आदेश, एक जयवन्त अन्त, एक दुखद परित्याग, एक गंभीर आग्रह, एक सिद्ध भरोसा।

अध्याय 4.

(1) एक आदेश:

(अ) संदेश आगे पहुँचाने में विश्वासयोग्य के विषय में, आ. 1-2।

(आ) एक समय की भविष्यद्वाणी जब मनुष्य सत्य को तुच्छ जानेंगे और शिक्षकों की खोज में रहेंगे जो उनकी कामुकताओं को पूरा करेंगे, आ. 3-4।

(इ) एक उत्साही और विश्वासयोग्य सेवकाई के लिए उपदेश, आ. 5।

(ई) तीमुथियुस से शीघ्र आने का आग्रह, आ. 9,21।

(उ) अन्तिम नमस्कार और आर्शीवाद, आ. 19-22।

तीतुस को लिखा पत्र

लेखक: प्रेरित पौलुस।

तीतुस से सम्बंधित तथ्य। वह एक अन्यजाति था, गला. 2:3; पौलुस का एक प्रिय मित्र और सहयोगी, 2 कुरिं. 2:13; 7:6,13; 8:23। कुरिन्थुस की कलीसिया का एक संदेशवाहक, 2 कुरिं. 8:16-18। वह पूरी तरह विश्वासनीय और निस्वार्थी था, 2 कुरिं. 12:18। यरूशलेम की यात्रा के समय पौलुस और बरनाबस का साथी, गलातियों 2:1। पौलुस ने उसे क्रेते में कलीसियाओं का रिरीक्षण के लिए छोड़ा था, तीतुस 1:5। वह पौलुस की कैद के समय उसके साथ रोम में था, 2 तीमु. 4:10। वह तीमुथियुस से अधिक स्वस्थ और सम्भवत: अधिक परिपक्व लगता है।

मुख्य विषय: सेवकाई के कर्तव्यों और सिद्धान्तों के सम्बंध में सलाह और उपदेश, और साथ में भले कामों को बनाए रखने पर विशेष बल।

मूल पाठ: 1:5; 3:8।

मुख्य विचार: भले कामों पर बल देखा जा सकता है, 1:16; 2:7,14; 3:1,8,14। यह उनके लिए पर्याप्त उत्तर है जो सोचते हैं कि पौलुस के पत्रों और याकूब के पत्रों में सिद्धान्तों में एक संघर्ष है।

क्रेते के लोगों का चरित्र ऐसा था कि पौलुस को लगा कि उसे उसके सेवक को सलाह देनी चाहिए कि वह एक समान मसीही जीवन पर बल दे। फिर भी यह पत्र कामों के द्वारा उद्धार की बात नहीं सिखाता है, 3:5।

सारांश:

I. कलीसिया के प्रशासन और अनुशासन के विषय में मुख्य रूप से निर्देश।

अध्याय 1.

(1) अभिवादन और सुसमाचार की यशस्वी आशा का उल्लेख, आ. 1-4।

(2) तीतुस का क्रेते में काम का उद्देश्य, आ. 5।

(3) कलीसिया की व्यवस्था और अनुशासन।

(अ) प्राचीनों और अध्यक्षों का चरित्र और योग्यताएँ, आ. 6-9।

(आ) स्वार्थी शिक्षकों को दबाने का कर्तव्य, आ. 10,11।

(इ) क्रेते के लोगों के बुरे चरित्र के कारण कठोर बर्ताव और सत्य की ओर दृढ़ पालन की आवश्यकता, आ. 12-14।

(ई) भीतरी भ्रष्टता और पाखंड की निन्दा, आ. 15-16।

II. खरी शिक्षा और भले काम।

अध्याय 2.

(1) प्रेरित के निर्देश, विभिन्न श्रेणियों के लिए।

(अ) वृद्ध पुरुषों और स्त्रियों की आत्मा और व्यवहार के विषय में, आ. 2-3।

(आ) जवान पुरुषों और स्त्रियों के लिए शिक्षाएँ, आ. 4-6।

(इ) तीतुस को उसके व्यक्तिगत उदाहरण के लिए उपदेश, आ. 7-8।

(ई) दासों के कर्तव्य, आ. 9-10।

(2) उद्धार के विश्वव्यापी अवसर की माँग है।

(अ) इस संसार में आत्म-त्याग और भक्ति, आ. 11-12।

(आ) मसीह के आगमन की धन्य आशा की पूर्ति के प्रतीक्षा, आ. 13।

(इ) पवित्र जीवन, आ. 14।

III. मुख्य रूप से भले कामों के सिद्धान्त को बनाए रखने के लिए अतिरिक्त निर्देश, और उद्धार का ईश्वरीय तरीका।

अध्याय 3.

(1) सामाजिक दायित्व और कर्तव्य, आ. 1-2।

(2) उद्धार का अनुग्रहकारी तरीका।

(अ) पाप की व्यापकता, आ. 3।

(आ) मसीह के द्वारा, भले कामों के द्वारा नहीं, शुद्धीकरण का अनुग्रह, उद्धार का आधार है, आ. 4-7।

(3) भले कामों का महत्त्व निरन्तर सिखाया जाना चाहिए, आ. 8।

(4) मूर्खता के विवादों और अपसिद्धान्तों का बर्ताव, आ. 9-11।

(5) अन्तिम शब्द और आर्शीवाद, आ. 12-15।

उत्तम चुनावः

- धन्य आशा, 2:11-14।
- अनुग्रह द्वारा उद्धार, 3:4-7।

फिलेमोन को लिखा पत्र

मध्यस्थता का एक निजि पत्र जिसे पौलुस ने सम्भवतः रोम से लिखा था, और फिलेमोन को कुलुस्से में भेजा था, कुलु. 4:7-9।

फिलेमोन के विषय में तथ्य। वह स्पष्ट है कुलुस्से की कलीसिया का एक सदस्य था, जो लगता है उसके घर पर मिला करती थी, आ. 2। उसका परोपकार (आ. 5-7) और पौलुस का उससे एक रहने का स्थान बनाने के लिए अनुरोध (आ. 22) से संकेत मिलता है कि वह एक सम्पन्न व्यक्ति था। जैसे कि पौलुस कभी भी कुलुस्से नहीं गया था (2:1), फिलेमोन उसे कहीं और मिला होगा, सम्भवतः इफिसुस में, जो अधिक दूर नहीं था। वह सम्भवतः अपने विश्वास के लिए प्रेरित का आभारी था, आ. 19।

उनेसिमुस की कहानी। वह फिलेमोन का भागा हुआ दास था। इसका तात्पर्य है कि उसने उसके मालिक की चोरी की और रोम भाग गया, आ. 18, जहाँ वह पौलुस के प्रभाव में आया और विश्वास किया (आ. 10 देखो)।

वह मसीह का भक्त चेला बन गया, कुलु. 4:9। पौलुस उसे सहायक के रूप में रोम में रखना चाहता था (आ. 13), परन्तु बिना फलेमोन की सहमति के नहीं (आ. 14), उसे लगा यह उसका कर्तव्य है कि दास को उसके मालिक के पास भेजे।

तो प्रेरित मध्यस्थता का यह सुन्दर पत्र लिखता है, फिलेमोन से क्षमा करने और उनेसिमुस पर कृपा करने का आग्रह करता है।

सारांशः

(1) हार्दिक और प्रशंसात्मक अभिवादन, आ. 1-7।

(2) उनेसिमुस के बदले हुए चरित्र की गवाही, आ. 10-11।

(3) लौट रहे दास को क्षमा करने का कोमल आग्रह, आ. 12-19।

(4) विदाई अभिवादन और आर्शीवाद, आ. 20-25।

आत्मिक सबक, पौलुस के उदाहरण से।

(1) अभागों के लिए चिन्ता का महत्त्व।

(2) विश्वासियों द्वारा नियम के आज्ञापालन का कर्तव्य: उनेसिमुस को उसके मालिक के पास लौटना चाहिए।
(3) मसीही भाईचारा सब सामाजिक और वर्ग की असमानताओं को मिटा देता है।

इब्रानियों को लिखा पत्र

लेखक और तिथि: अनिश्चित।
पत्र गुमनाम है और इसका श्रेय पौलुस, बरनाबस, लूका, अपुल्लोस, और विभिन्न दूसरों को दिया गया है।
उद्देश्य: स्पष्ट है कि पत्र मुख्य रूप से इब्रानी मसीहियों को लिखा गया था। ये विश्वासी यहूदा धर्म में लौटने के, या कम से कम समारोही विधियों के पालन को बहुत अधिक महत्त्व देने के खतरे में थे। लेखक का प्रमुख सिद्धान्त-सम्बंधी उद्देश्य पुराने नियम की तुलना में मसीही युग की श्रेष्ठ महिमा को दिखाना था।
मुख्य शब्द: उत्तम, या श्रेष्ठ। इन शब्दों को मन में रखकर पाठक विचार की मुख्य धारा को देख सकेगा।
दूसरे बारम्बार आनेवाले शब्द या वाक्यांश: जा बैठा, मसीह के समाप्त काम की बात करता है, 1:3; 10:12; 12:2; स्वर्गीय बुलाहट, 3:1; याजक, 4:14; वरदान, 6:4; संपत्ति, 10:34; देश, 11:16; नगर, 12:22।
"आओ हम", ग्यारह उपदेशों की एक श्रृँखला:

(1) सावधान रहो, 4:1।
(2) प्रयत्न करें, 4:11।
(3) अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाब बाँधकर चलें, 4:16।
(4) आगे बढ़ते जाएँ, 6:1।
(5) समीप आएँ, 10:22।
(6) दृढ़ता से थामे रहें, 10:23।
(7) एक दूसरे की चिन्ता किया करें, 10:24।
(8) हर एक बाधा को दूर करके, धीरज से दौड़ें, 12:1।
(9) परमेश्वर को प्रसन्न करनेवाली आराधना करें, 12:28।
(10) निकल चलें, 13:13।
(11) स्तुतिरूपी बलिदान चढ़ाया करें, 13:15।

पत्र को दो भागों में बाँटा जा सकता है: भाग I, मुख्य रूप से सिद्धान्त-सम्बंधी; भाग II, मुख्य रूप से व्यावहारिक।
सारांश:
I. भाग I. मसीह की श्रेष्ठता।
अध्याय 1.

(1) भविष्यद्वक्ताओं पर, उसकी ईश्वरीय महिमा के कारण, आ. 1-3।
(2) स्वर्गदूतों पर।
    (अ) उत्तम नाम, आ. 4।
    (आ) पिता का एकलौता सच्चा पुत्र स्वीकारा गया है, आ. 5।
    (इ) स्वर्गदूतों को उसकी आराधना करने की आज्ञा दी गई है, आ. 6।
    (ई) परमेश्वर के दाहिने अनन्त सिंहासन पर स्वर्गदूतों से ऊपर किया गया है, आ. 8-14।

अध्याय 2.

    (उ) उसका संदेश महत्त्व में अन्तिम और उपेक्षा की तो विनाशक होगा, आ. 1-4।
    (ऊ) यीशु को स्वर्गदूतों से थोड़ा कम बनाया गया था, मानवजाति के लिए मरा ताकि वह बहुत से पुत्रों को पिता के साथ अपनी महिमा में लाए और उसका नाश करे जिसको मृत्यु पर शक्ति मिली थी, आ. 9-14।

भाग 2. मसीह के याजकपद की श्रेष्ठता।

(1) उसने मानव स्वभाव को पहिन लिया।
    (अ) मेलमिलाप के उसके काम की तैयारी, आ. 16-17।
    (आ) उसकी परीक्षा से उसे परीक्षा पा रहों की सहायता करने की तैयारी मिली, आ. 18।

अध्याय 3.

(2) मसीह के याजकपद पर विचार करना का आग्रह।

(3) एक सेवक के रूप में, मूसा पर उसकी श्रेष्ठता, मसीह पुत्र था, आ. 2-6।

(4) निक्षिप्त वाक्य, इस्राएल की असफलता

(अ) कनान के विश्राम में प्रवेश करने की, आ. 7-11।

(आ) अविश्वास के कारण वे वंचित रहे, आ. 12-19।

अध्याय 4.

(इ) कलीसिया को चेतावनी कि वे अविश्वासी इस्राएल की नकल न करें, परन्तु विश्वास के विश्राम में प्रवेश करें, आ. 1-18।

(ई) विश्वासी उद्धार के काम में विश्राम करता है और उसके अपने कामों में भरोसा करना बंद करता है, आ. 9-11।

(उ) परमेश्वर के वचन का सामर्थ्य, आ. 12-13।

मसीह के याजकपद का विषय दोबारा आरम्भ होता है।

मसीह का सहानुभूतिक याजकपद, दृढ़ता और प्रार्थना के लिए एक प्रोत्साहन, आ. 14-16।

अध्याय 5.

(2) महा याजक, उसका पद और काम।

(अ) मनुष्यों में से लिया जाता था, आ. 1।

(आ) उसकी अपनी निर्बलताओं के कारण सहानुभूति रखता है, आ. 2।

(इ) अपने लिए और लोगों के लिए बलिदान चढ़ाता है, आ. 3।

(ई) परमेश्वर चुनता था, आ. 4।

(3) मसीह के याजकपद की विशेषताएँ।

(अ) एक नए क्रम के अनुसार, परमेश्वर द्वारा चुना गया, आ. 5-6।

(आ) अधीनता की आत्मा में छुटकारे के लिए गंभीर प्रार्थनाएँ कीं, आ. 7-8।

(इ) अनन्त उद्धार का कारण हुआ, आ. 9-10।

(4) निक्षिप्त वाक्य, ताड़ना, आग्रह, चेतावनी, और प्रशंसा।

(ई) मन्दी और बचपने के कारण फटकार, आ. 11-14।

अध्याय 6.

(उ) सिद्धान्त-सम्बंधी सत्य में प्रगति का आग्रह, आ. 1-3।

(ऊ) उनके विषय में चेतावनी, जिन्होंने नई वाचा के विशेषाधिकारों का आनन्द लिया है, परन्तु मसीह से फिर रहे हैं, आ. 4-8।

(ए) कलीसिया की प्रशंसा और एक भरोसा कि विश्वासी विश्वास बने रहेंगे और प्रतिज्ञाओं के वारिस होंगे, आ. 9-12।

मसीह के याजकपद का विषय दोबारा आरम्भ होता है।

(5) ईश्वरीय प्रतिज्ञाओं की पूर्ति निश्चित है।

(अ) अब्राहम के जीवन में चित्रित है, आ. 13-15।

(आ) शपथ से प्रमाणित है, आ. 16-17।

(इ) प्राण के लिए लंगर के रूप में, आ. 18-19।

(ई) हमारे स्वर्गीय महा याजक से निश्चित है, आ. 20।

अध्याय 7.

(6) मलिकिसिदक का याजकपद, मसीह का एक रूपक है।

(अ) एक महान नाम था और एक अनन्त क्रम के अनुसार था, आ. 1-3।

(आ) अब्राहम ने दशमांश देकर सम्मान किया और हारून के याजकपद से उत्तम है, आ. 4-10।

(7) मसीह के याजकपद के उत्तम गुणों का सार।

(अ) मलिकिसिदक के समान, यह अनन्त क्रम का है और ईश्वरीय शपथ से प्रमाणित हुआ था, आ. 11-22।

(आ) अटल और सामर्थ्य में अनन्त है, आ. 23-25।

(इ) निष्पाप और सिद्ध था, और एक सम्पूर्ण बलिदान चढ़ाया, आ. 26-28।

अध्याय 8.

(ई) अब स्वर्गीय तम्बू में काम करता है, आ. 1-5।

(उ) एक उत्तम वाचा के द्वारा मध्यस्थता करता है, आ. 6-13।

अध्याय 9.

(ऊ) प्राचीन विधियाँ और समारोह और बलिदान जिन्हें याजक करते थे केवल रूपक थे, आ. 1-10।

(ए) मसीह का उद्धार का काम और उसका लहू जो पाप धोता है गंभीर वास्तविकताएँ हैं, आ. 11-15।

(ऐ) पुरानी वाचा के प्रबंध नई वाचा में मसीह के बलिदान के काम का आदिरूप हैं, आ. 16-28।

अध्याय 10.

बार-बार दोहराए जाने वाले यहूदी बलिदान पाप नहीं मिटा सक रहे थे। जबकि मसीह ने उसके अपने एक महान बलिदान के द्वारा मानवजाति के उद्धार के काम को पूरा किया और परमेश्वर के दाहिने जा बैठा, अब ईश्वरीय योजना के समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहा है, आ. 1-18।

II. मुख्य रूप से व्यावहारिक शिक्षाएँ और उपदेश।

(1) मसीह के बलिदान और याजकपद के द्वारा ईश्वरीय उपस्थिति में प्रवेश करने का सौभाग्य, आ. 19-21।

(2) उपदेश।

(अ) पूरे विश्वास और तैयार हृदय के साथ, आराधना में समीप आना, आ. 22।

(आ) दृढ़ता, आपसी प्रोत्साहन, और विश्वासयोग्यता का, आ. 23-25।

(3) धर्मत्याग के खतरों के विषय में चेतावनी।

(अ) मूसा की व्यवस्था के अधीन उल्लंघन करनेवालों को मिलने वाला दण्ड, आ. 28।

(आ) उनका भाग्य सबसे बुरा होगा जो मसीह के बलिदान और परमेश्वर के अनुग्रहकारी आत्मा का अपमान करते हैं, आ. 29-31।

(4) उनके पहले के दुखों में दृढ़ रहने की बात, इब्री विश्वासियों को याद दिलाना और धीरज रखने और दृढ़ बने रहने का उपदेश, आ. 32-39।

अध्याय 11.

(5) विश्वास के नायकों और नायिकाओं के नाम और काम।

(अ) विश्वास का क्षेत्र, आ. 1-3।

(आ) विश्वास के उच्च उदाहरणः हाबिल, आ. 4। हानोक, आ. 7। नूह आ. 7। अब्राहम और सारा, आ. 8-19। इसहाक, याकूब और यूसुफ, आ. 20-22। मूसा और उसके माता-पिता, आ. 23-29। यहोशू और इस्राएल, आ. 30। राहाब, आ. 31। दूसरे विशिष्ठ विश्वासी, आ. 32-40।

अध्याय 12।

(6) आत्मिक खिलाड़ी, मसीही दौड़।

(अ) श्रोता, तैयारी, और कैसे दौड़ना है, आ. 1।

(आ) लक्ष्य की ओर स्वामी पर निगाहें, जय को याद रखना, आ. 2।

(इ) थकने पर प्रेरणा, आ. 3-4।

(ई) दुख और प्रशिक्षण में अनुशासन का मूल्य, आ. 5-10।

(उ) दुख और अनुशासन के अच्छे परिणाम, आ. 11।

(ऊ) दृढ़ता और सीधापन का एक उपदेश, आ. 12-13।

(7) मेलमिलाप, शुद्धता, और बुरे प्रभावों की ओर ध्यान देने के उपदेश, आ. 14-15।

(8) जीवन की आशीषों को बेच देने के विषय में चेतावनियाँ, आ. 16-17।

(9) पुराने नियम के सीनै पर्वत और नए के सिय्योन पर्वत की तुलना।

(अ) ईश्वरीय सामर्थ्य के इसके अदभुत प्रदर्शन के साथ सीनै पर्वत, आ. 18-21।

(आ) स्वर्गीय यरूशलेम के भीतर यशस्वी मण्डली के साथ सिय्योन पर्वत, आ. 22-24।

(10) पृथ्वी की चीजों के अस्थाईपन और परमेश्वर के राज्य के स्थाईपन के विषय में स्वर्गीय संदेश को सुनने की गंभीर चेतावनी, आ. 25-28।

अध्याय 13।

(1) मसीही कर्तव्यों के विषय में अन्तिम उपदेश।

(अ) सामाजिक कर्तव्य, आ. 1-6।

(आ) धार्मिक अगुवों की ओर कर्तव्य, आ. 7।

(इ) एक कभी न बदलनेवाला मसीह मसीही सिद्धान्त में दृढ़ता प्रेरित करता है, आ. 8-9।

(ई) मसीही अलगाव का कर्तव्य, 10-14।

(उ) धन्यवाद देने, परोपकार, और शासकों का आज्ञापालन का कर्तव्य, आ. 15-17।

(2) अन्तिम शब्द।

(अ) प्रार्थना की विनती, और एक आशीष घोषित, आ. 18-21।

(आ) अन्तिम अभिवादन और आर्शीवाद, आ. 22-25।

उत्तम चुनावः

- दुख, याजकपद की तैयारी, 2:9-18।
- विश्वास का विश्राम, 4:1-11।
- आत्मिक परिपक्तवा, 5:12-6:2।
- नई वाचा, 8:8-13।
- विश्वास का अध्याय, नायकों के नाम और काम, अध्याय 11।

आत्मिक "खिलाड़ियों" और मसीही दौड़ का अध्याय। कठिनाइयाँ, दुख, सुधार, और अनुशासन, जय के लिए तैयारी, 12:1-13।

याकूब का पत्र

लेखकः अनिश्चित। नए नियम में याकूब नामक तीन प्रमुख व्यक्ति हैं। सामान्यतः सहमति है कि पौलुस जिसे "प्रभु का भाई" कहता है (गला. 1:19), वही याकूब इस पत्र का लेखक है।

किसे लिखा गयाः स्पष्ट है यहूदी विश्वासियों को लिखा गया था जो पवित्र देश के बाहर रहते थे; सम्भवतः तितर-बितर होकर रह रहे भक्त यहूदियों के लिए भी था, 1:1।

मुख्य विषयः व्यावहारिक धर्म, जो भले कामों में दिखाई देता है, जिसकी तुलना विश्वास की मात्र घोषणा से की गई है।

मूल पाठः 1:27; 2:26।

पौलुस और याकूब के बीच कल्पित सिद्धान्त-सम्बंधी संघर्ष।

इस पत्र और रोमियों के पत्र के बीच कोई भी तथाकथित संघर्ष मात्र कल्पना है। पौलुस ने, जिसे यहूदा मत वाले सताया करते थे, समारोही विधियों के पालन के अलावा विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने पर अधिक बल दिया था। फिर भी, जब वह तीतुस को लिखता है, उसने भले कामों को अपने पत्र का मुख्य विषय बनाया है, जिससे याकूब की शिक्षाओं के साथ सिद्ध मेलमिलाप है। स्पष्ट है कि जब याकूब विश्वास के महत्त्व को कम करता जान पड़ता है, वह सत्य की ओर मात्र बौद्धिक स्वीकृति की बात कर रहा है, न कि उद्धार लाने वाले विश्वास की जिसकी बात पौलुस करता है।

सारांशः इस पत्र का विश्लेषण आसानी से नहीं किया जा सकता है, परन्तु अधिकाँश सामग्री दो शीर्षकों में बाँटी जा सकती है, सच्चा और झूठा धर्म।

I. सच्चे धर्म के चिन्ह।

अध्याय 1।

(1) परीक्षाओं के बीच आनन्द और धीरज, आ. 2-4।

(2) अटल विश्वास और एक मन, आ. 5-8।

(3) जीवन के ईश्वरीय प्रबंधों को स्वीकार करना, आ. 9-11।

(4) परीक्षाओं को सहना, आ. 12।

(5) परीक्षाओं के साधनों को पहचानना और इसमें दे देने के परिणाम, आ. 13-15।

(6) सब आशीषों के ईश्वरीय स्रोत को पहचानना, आ. 16-18।

(7) आत्मिक रूप से सुनना, बोलने में ध्यान देना, और उत्तेजना में धीरज धरना, आ, 19-20।

(8) सब बुराइयों को त्यागना, और उद्धार पानेवाले सत्य को दीनता से स्वीकार करना, आ. 21।

(9) सत्य की खोज और उसका पालन करना, आ. 25।

(10) व्यावहारिक उदारता और शुद्धता, आ. 27।

अध्याय 2।

(11) भले काम।
(अ) विश्वास के प्रदर्शन के रूप में, आ. 18।
(आ) विश्वास के साथ सहयोग और सिद्ध करना, आ. 21-25।

अध्याय 3।
(12) स्वर्गीय बुद्धि, आ. 17-18।

II. झूठे स्वीकरण के चिन्ह।

अध्याय 1।
(1) वचन को लापरवाही के साथ सुनना और भूल जाना, आ. 22-24।
(2) व्यर्थ धर्म, जिसके साथ अनियंत्रित जीभ भी होती है, आ. 26।

अध्याय 2।
(3) पक्षपात, धनियों का सम्मान और निर्बलों का अपमान, आ. 1-9।
(4) व्यवस्था का अधूरा आज्ञापालन, आ. 10-12।
(5) दया नहीं दिखाना, आ. 13।
(6) विश्वास की मात्र स्वीकृति, जिसके साथ दया और सहायता के काम भी नहीं है, आ. 14-16।
(7) निष्क्रिय विश्वास, आ. 17-18।
(8) सत्य की बौद्धिक स्वीकृति, व्यवहार के परिवर्तन के बिना, आ. 14-16।

अध्याय 3।
(9) अनियंत्रित जीभ, इसका प्रभाव विनाशकारी है, आ. 1-8।
(10) एक ही मुँह से स्तुतियाँ और गालियाँ निकलती हैं, आ. 9-12।
(11) ईर्ष्या, स्वार्थी अभिलाषा, और शैतानी बुद्धि, आ. 14-16।

अध्याय 4।
(12) अशांति और अपवित्र उत्साह, आ. 1-2।
(13) बिना उत्तर वाली प्रार्थना और सांसारिकता, आ. 3-4।
(14) घमंड, हठ, अशुद्धता, दुचित्तापन, और पश्चातापहीन, आ. 5-9।
(15) निन्दा और अनिचुत न्याय, आ. 11-12।
(16) भावी व्यवसायों की योजना में अभिमान, आ. 13-16।
(17) कर्तव्यों की उपेक्षा, आ. 17।

III. चेतावनियाँ, उपदेश, और शिक्षा।

अध्याय 5।
(1) धनियों को चेतावनी।
(अ) भावी दुख के विषय में, आ. 1-2।
(आ) जमा किए गए धन और निर्धनों की मजदूरी न देने के विषय में, आ. 3-4।
(इ) सुख खोजने और धर्मी के सताव के विषय में, आ. 5-6।
(2) प्रभु के आगमन के प्रकाश में उपदेश।
(अ) धीरजवंत और दृढ़ रहना, एक दूसरे पर कुड़कुड़ाना नहीं, आ. 7-10।
(आ) धीरज सहने में भविष्यद्वक्ताओं और अय्यूब के उदाहरण का अनुकरण करना, आ. 10-11।
(इ) शपथ खाने से बचना, आ. 12।
(3) प्रार्थना, भूलों को स्वीकारना, और मनुष्यों को जीतना की शिक्षाएँ।
(अ) संकट के समय प्रार्थना और बीमारों के लिए, आ. 13-15।
(आ) भूलों को स्वीकारना और मध्यस्थता की प्रार्थना, आ. 16।
(इ) एलिय्याह द्वारा दिखाई प्रभावशाली प्रार्थना, आ. 16-18।
(ई) मनुष्यों को जीतने का कर्तव्य, आ. 19-20।

पतरस का पहला पत्र

लेखकः प्रेरित पतरस।
यह शुरू का शिमौन पतरस नहीं था, आवेगी और कमज़ोरी से भार हुआ, जिसे मसीह ने शिमौन बुलाया था, मरकुस 14:37; लूका 22:31; यूहन्ना 21:15-17। यह पतरस था जिस के लिए मसीह ने भविष्यद्वाणी की थी कि वह चट्टान बनेगा, यूहन्ना 1:42 - वही मनुष्य जिसे वर्षो के दुखों और परीक्षाओं द्वारा अनुशासित किया और पवित्र आत्मा के बपतिस्मा द्वारा दृढ़ किया गया था। पत्र स्पष्ट है उसके जीवन के बाद के दिने में लिखा गया था।
लिखने की तिथि और स्थान। अनिश्चित। 5:13 में जिस बेबिलोन का उल्लेख है, यूफरेटिस नदि पर बना शहर हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। बहुत सारे सोचते हैं यह रोम था, जिसे प्रतीकात्मक रूप से बेबिलोन कहा गया है।
किसे लिखा गया थाः एशिया मायनर में तितर-बितर होकर रहे चुने हुओं को। सम्भवतः उस क्षेत्र में, यहूदी और अन्यजाति दोनों को जो मसीहियों का समूह था। उन कलीसियाओं को जिन्हें मुख्य रूप से पौलुस ने स्थापित किया था, पतरस अपना प्रोत्साहन, शिक्षा, और प्रशंसा का आत्मिक संदेश भेजता है।
उद्देश्यः इस पत्र को लिखने में, पतरस ने दो निश्चित आज्ञाओं को पूरा किया जिन्हें यीशु ने उसे दिया था।

(1) भाइयों को प्रोत्साहित और बल प्रदान करना, लूका 22:32।
(2) परमेश्वर के झुंड को चारा देना, यूहन्ना 21:15-17।

मूल शब्दः दुख। पत्र में पंद्रह या उससे अधिक बार पाया जाता है।
मूल पाठः 4:1।
प्रमुख विषयः दुखों पर जय जैसे मसीह के जीवन में देखी गई थी।
सारांशः
I. यशस्वी उद्धार।
अध्याय 1.

(1) मसीह के पुनरुत्थान पर केन्द्रित एक जीवित आशा, आ. 3।
(2) एक अविनाशी और अमिट मीरास, आ. 4।
(3) एक ईश्वरीय सामर्थ्य जिसके द्वारा विश्वासी दुखों के बीच विजयी रखे गए हैं।
    (अ) विश्वास के द्वारा, आ. 5।
    (आ) परीक्षाओं में आनन्दित, आ. 6।
    (इ) मसीह के आगमन पर आग में ताए हुए सोने के समान चमकना, आ. 7।
    (ई) वर्णन से बाहर प्रेम और आनन्द, आ. 8।
(4) रहस्यमय योजना।
    (अ) जिसके विषय में भविष्यद्वक्ता खोज-बीन करते थे, जिन्होंने मसीह के दुखों की बात की थी और महिमा की जो अन्तिम दिनों में प्रकट होनेवाली थी; स्वर्गदूत भी लालसा रखते हैं, आ. 10-12।
    (आ) इसके लिए विश्वासियों की ओर से संयम, आज्ञापालन, अ-सांसारिकता, पवित्रता, और भक्ति आदर की आवश्यकता है, आ. 13-17।
    (इ) की असीम कीमत, आ. 18-19।
    (ई) संसार की सृष्टि के पहले से चुना हुआ, आ. 20-21।

II. विश्वासी का जीवन, महान उद्धार के प्रकाश में।
अध्याय 1 (जारी है).

(1) अनन्त सत्य के द्वारा शुद्ध किया और नया जन्म पाया, और भाईचारे का प्रेम दिखाना, आ. 22-25।

अध्याय 2.

(2) सब प्रकार के बुरी प्रवृत्तियों से स्वतंत्र होकर वचन के दूध की लालसा रखना ताकि बढ़ सको, आ. 1-3।
(3) एक आत्मिक मंदिर में जीवित पत्थर बनना, जिसका सिरे का पत्थर मसीह है, आ. 5-6।
(4) मसीह को बहुमूल्य समझना, जो अस्वीकारा और अविश्वासियों के लिए एक ठोकर का पत्थर है, आ. 7-8।

III. विश्वासी की स्थिति और कर्तव्य।
अध्याय 2 (जारी है).

(1) परमेश्वर के लोगों के रूप में सम्माननीय और पवित्र, और उनके ईश्वरीय छुड़ानेवाले की स्तुति करनी चाहिए, आ. 9-10।

(2) परदेशी और यात्री, पापी इच्छाओं से दूर रहना, आ. 11।

(3) नागरिक और सामाजिक कर्तव्य। संसार के सामने निर्दोष आचरण, नागरिक अधिकारियों का आज्ञापालन, जिससे विरोधी आलोचकों को चुप करा सकें, आ. 12-15।

(4) अच्छे नागरिक, आ. 16-17।

(5) विश्वास के घराने में कर्तव्य।

(अ) सेवक, कि आज्ञाकारी और धीरजवंत हों, तब भी जब गलती के कारण दुख उठा रहे हों, जिससे परमेश्वर को प्रसन्न कर सको, आ. 18-20।

(आ) मसीह पर विचार करो, आदर्श दुखभोगी और पाप-ढोनेवाला, आ. 21-25।

अध्याय 3.

(इ) पत्नियाँ, शुद्ध और आत्मिक सद्गुणों ने लदी हुई, आ. 1-6।

(ई) पति, उनकी पत्नियों की ओर विचारशील, आ. 7।

(उ) सब, प्रेमी, दयालु, सहानुभूतिक, शिष्ट, और क्षमाशील हों, आ. 8-9।

(ऊ) स्मरण करके कि लम्बे जीवन और प्रार्थनाओं के उत्तरों की प्रतिज्ञा उनसे की गई है जो उनकी जीभ पर नियंत्रण रखते, बुराई त्यागते, भला करते, और शांतिपूर्वक जीवन जीते हैं, आ. 10-13।

IV. दुखों के विषय में शिक्षा और प्रोत्साहन।

अध्याय 3.

(1) धार्मिकता के लिए दुख उठाना आनन्द के लिए एक कारण है, डर नहीं है, और जिसमें मसीही अनुभव के विषय में गवाही देने के द्वारा, और एक अच्छे जीवन के द्वारा तैयार रहना शामिल है, आ. 14-17।

(2) मसीह के प्रतिनिधिक दुख, आत्मिक काम, और ऊँचा उठाया जाने का उदाहरण, आ. 18-22।

अध्याय 4.

(3) मसीह के बलिदान-सम्बंधी दुखों की माँग है, स्वयं का इन्कार, परमेश्वर की ओर समर्पण, और पहले के सारे कामुक लालसाओं को त्यागना, आ. 1-3।

(4) निक्षिप्त वाक्य, मसीही जीवन के व्यावहारिक कर्तव्यों के विषय में निर्देश जिनसे परमेश्वर की महिमा होती है, आ. 7-11।

(5) दुख रूपी अग्नि से अचम्भा नहीं करना है, परन्तु आनन्द के साथ सहना है, आ. 12।

(6) मसीह के साथ और के लिए दुख उठाना, आनन्दपूर्वक सहना, जानते हुए कि यह आत्मिक महिमा में ले जाएगा, आ. 13-14।

(7) बुराई करनेवालों के रूप से दुख उठाना, परन्तु जब मसीहियों के रूप में दुख उठाते हो, परमेश्वर की महिमा हो और अपने प्राणों को उसकी रखवाली में रखो, आ. 15-19।

V. अन्तिम उपदेश और चेतावनियाँ।

अध्याय 5.

(1) कलीसिया के प्राचीनों के लिए, जिस हृदय के साथ झुंड की रखवाली करनी है, आ. 1-4।

(2) जवानों और बूढ़ों के लिए, दीनता और विश्वसनीयता का आग्रह, आ. 5-7।

(3) शैतान के विषय में चेतावनी, आ. 8-9।

(4) आर्शीवाद और अभिवादन, आ. 10-14।

पतरस की मसीहः

-आशा का स्रोत, 1:3।

-बलिदान का मेम्ना, 1:19।

-कोने के सिरे का पत्थर, 2:6।

-सिद्ध उदाहरण, 2:21।

-आदर्श दुखभोगी, 2:23।

-पाप-ढोनेवाला, 2:24।

-प्राणों का रखवाला, 2:25।

-उच्च प्रभु, 3:22।

पतरस के पत्रों में सात बहुमूल्य चीजें:

-अग्नि रूपी दुख, 1:7।
-मसीह का लहू, 1:19।
-जीवित पत्थर, 2:4।
-स्वयं मसीह, 2:6।
-नम्र और शांत आत्मा, 3:4।
-विश्वासी का विश्वास, 2 पतरस 1:1।
-ईश्वरीय प्रतिज्ञाएँ, 2 पतरस 1:4।

पतरस का दूसरा पत्र

लेखकः प्रेरित पतरस, 1:1।
तिथिः सम्भवत् सन् 60-70 में लिखा गया था।
केन्द्रीय विषयः झूठे शिक्षकों और निन्दकों के विरुद्ध चेतावनी। झूठे सिद्धान्तों के प्रभाव को व्यर्थ करने के लिए, परमेश्वर के वचन और ईश्वरीय प्रतिज्ञाओं के पूरा होने की निश्चितता पर बड़ा बल दिया गया है।
मूल पाठः 3:1।
एक समान्तर, 2 तीमुथियुस और 2 पतरस के बीच।
दोनों पत्रों में लेखक लिखते हैं कि उनकी मृत्यु का समय निकट आ गया है, 2 तीमु. 4:6; 2 पत. 1:14।
दोनों लेखक कलीसिया के लिए संकटपूर्ण समयों की भविष्यद्वाणी करते हैं।

(अ) झूठी शिक्षा का होना, 2 तीमु. 3:13; 4:3; 2 पत. 2:1।
(आ) समाज की सामान्य भ्रष्टता, 2 तीमु. 3:1-7; 2 पत. 2:10-22।

सारांशः
अभिवादन, 1:1-2।
I. आध्यात्मिक जीवन।
अध्याय 1.

(1) के लिए बुलावा, आ. 3।
(2) बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं के द्वारा सुरक्षित किया है, आ. 4।
(3) इसके विकास और फलदायकता के लिए सात अनिवार्य कदम, आ. 5-8।
(4) की अन्तिम नियति, आ. 10-11।
(5) एक विदाई और स्मरण रखने की चीजें, आ. 12-15।
(6) का एक यशस्वी अनुभव, आ. 16-18।
(7) पवित्रशास्त्र का ईश्वरीय प्रारंभ और प्रकाशमान करने की सामर्थ्य, आ. 19-21।

II. झूठे शिक्षक, उनके भ्रष्ट चरित्र और सिद्धान्त।
अध्याय 2.

(1) उनके अपसिद्धान्त और मसीह का इन्कार, आ. 1।
(2) उनकी लोकप्रियता, बुरा प्रभाव, लोभ, और पाखंड, आ. 2-3।
(3) गिरे हुए स्वर्गदूतों, भक्तिहीन संसार, और सदोम और अमोरा पर परमेश्वर के न्याय भक्तिहीनों के लिए चेतावनियाँ हैं, आ. 4-6।
(4) धर्मियों का ईश्वरीय छुटकारा और भावी न्याय के लिए दुष्टों का रखा जाना, आ. 7-9।
(5) इन धर्मत्यागी शिक्षकों के अतिरिक्त ब्योरा, उनकी विशेषताएँ, काम और भाग्य।
    (अ) उनकी अशुद्ध अभिलाषाएँ, अभिमान, हठ और असंयम, आ. 10-13।
    (आ) उनका हानिकर प्रभाव और लोभ के कारण धर्मत्याग, आ. 14-16।
    (इ) उनका खोखलापन, अस्थिरता, और भावी नियति, आ. 17।
    (ई) उनकी घमंड की बातें, लुचपन के काम, लोगों से स्वतंत्रता का वादा करते हैं परन्तु भ्रष्टता की दासता हाथ लगती है, आ. 18-19।

(उ) उनका धर्मत्याग, एक अत्यन्त भ्रष्टता, आ. 20-22।

III. निन्दकों के विषय में भविष्यद्वाणी, प्रभु के दिन का आना, और दृढ़ता के लिए उपदेश।

अध्याय 3.

(1) पत्र का उद्देश्य, आ. 1-2।

(2) निन्दकों की चनौती, आ. 3-4।

(3) चुनौती देनेवालों की आज्ञानता, आ. 3-4।

(अ) पुराने नियम के पवित्रशास्त्रों के विषय में, आ. 5-6।

(आ) वर्तमान संसार को जलाए जाने के रखा गया है के विषय में, आ. 7।

(4) ईश्वरीय देरी का स्पष्टीकरण।

(अ) परमेश्वर के दिन का दीर्घता, आ. 8।

(आ) ईश्वरीय कृपा दण्ड को रोकती है, आ. 9।

(5) प्रभु के दिन के आने की निश्चितता, आ. 10।

(6) विश्वासी का रवैया और आशा, आ. 11-14।

(7) पौलुस के पत्रों की प्रशंसा और पवित्रशास्त्र को बिगाड़ने के विरुद्ध चेतावनी, आ. 15-16।

(8) दृढ़ता और आत्मिक विकास के लिए उपदेश, आ. 17-18।

यूहन्ना का पहला पत्र

लेखकः प्रेरित यूहन्ना।

स्थान और तिथिः अनिश्चित। सम्भवतः पहली सदी के अन्त के समय इफिसुस से लिखा गया था।

किसे लिखा गया था। स्पष्ट है सम्पूर्ण कलीसिया को, क्योंकि इसने न कई अभिवादन, विदाई संदेश, या दूसरे व्यक्तिगत संकेत हैं; इसलिए यह सामान्य पत्रों में आता है।

यह विश्वासियों को स्नेही नाम, "प्रिय बच्चो" से बुलाता है, 2:1,18; 3:7,18; 4:4; 5:21; और "प्रिय मित्रो", 3:2,21; 4:1,7,11।

उद्देश्यः लेखक विश्वासियों को यह पत्र लिखने के चार कारण देता हैः (1) उनके आनन्द को पूरा करना, 1:4; (2) उनको पाप से दूर रखना, 2:1; (3) उन्हें झूठे शिक्षकों की चेतावनी देना, 2:26; और (4) मसीह में उनके विश्वास को मजबूत करना और अनन्त जीवन का आश्वासन देना, 5:13।

मूल शब्दः सहभागिता, जानना, प्रेम।

केन्द्रीय विषयः परमेश्वर जीवन, ज्योति, और धर्मी प्रेम है। उनका चरित्र पवित्र जीवन जीने और विश्वासियों के लिए भाईचारे के प्रेम के लिए बुलाता है।

सुस्पष्ट विशेषताएँः इसको "निश्चितताओं का पत्र" नाम दिया जा सकता है। यह मसीह के व्यक्तिगत ज्ञान के एक सकारात्मक वक्तव्य के साथ खुलता है, 1:1-3।

यह विश्वासियों द्वारा पाए जा सकने वाले आत्मिक ज्ञान पर बहुत बल देता है। "जानना" या इसके रूपान्तर शब्द तीस बार से भी अधिक बार पाए जाते हैं।

सात महत्त्वपूर्ण घटनाएं जहाँ "हम (या तुम) जानते हैं" शब्द पाए जाते हैं। विश्वासी जानते हैं:

(1) कि एक धर्मी जीवन नए जन्म का संकेत देता है, 2:29; 5:18।

(2) कि हम हम उसके आने पर उसके समान होंगे, 3:2।

(3) कि मसीह हमारे पापों को ले जाने आया था, 3:5।

(4) कि भाईचारे का प्रेम संकेत देता है कि हम मृत्यु से जीवन में प्रवेश कर चुके हैं, 3:14।

(5) कि वह पवित्र आत्मा की गवाही के द्वारा हम में रहता है, 3:24।

(6) कि हम में अनन्त जीवन है, 5:13।

(7) कि हमारी प्रार्थनाएँ सुनी गई हैं, 5:15।

सारांशः

I. परमेश्वर ज्योति और जीवन है।

अध्याय 1.

(1) मसीह में प्रकट हुआ है, आ. 1-2।

(2) पत्र का उद्देश्य, आ. 3-4।

(3) ईश्वरीय सहभागिता की शर्तें।

(अ) ज्योति में चलना, आ. 5-7।

(आ) पाप को स्वीकार करना, आ. 8-10।

अध्याय 2.

(इ) मसीह को सहायक और प्रायश्चित के बलिदान के रूप में स्वीकार करना, आ. 1-2।

(4) सहभागिता का परीक्षण आज्ञापालन।

(अ) मसीह के उदाहरण का अनुकरण करना, आ. 3-6।

(आ) प्रेम की नई आज्ञा का पालन ज्योति में बने रहना है, आ. 7-11।

(5) आत्मिक ज्ञान और दुष्ट को जीतने के विषय में विश्वासियों की विभिन्न श्रेणियों के लिए संदेश, आ. 12-14।

(6) संसार से प्रेम के विरुद्ध चेतावनी, 15-17।

(7) मसीह विरोधियों का उदय होना, उनके धर्मत्याग और मसीह के इन्कार के साथ, अन्तिम समय का संकेत है, आ. 18-23।

(8) सत्य में बने रहने के लिए उपदेश, आश्वासन के साथ कि ईस्वरीय अभिषेक सारी आवश्यक शिक्षा देगा, आ. 24-27।

(9) बने रहने से भरोसा मिलता, और धार्मिकता नए जन्म का एक चिन्ह है, आ. 28-29।

II. परमेश्वर धर्मी प्रेम है।

अध्याय 3.

(1) उसका प्रेम विश्वासियों को पुत्र बनाने से प्रकट हुआ है, आ. 1-2।

(2) पुत्र होने का प्रमाण धर्मी जीवन जीना है, आ. 3-10।

(3) भाईचारे का प्रेम आध्यात्मक जीवन का सुस्पष्ट चिन्ह है, आ. 11-15।

(4) प्रेम अपने आप को बलिदान में, न केवल शब्दों में दिखाता है, आ. 16-18।

(5) प्रेम का परिणाम आश्वासन और उत्तर मिली प्रार्थनाएँ हैं, आ. 19-22।

(6) विश्वास और भाईचारे का प्रेम परमेश्वर के साथ सहभागिता के लिए अनिवार्य, आ. 23-24।

अध्याय 4.

(7) निक्षिप्त वाक्य, संसार में सत्य और भ्रम की आत्मा और उनको परखने के तरीके।

(अ) मसीह के देहधारण की ओर उनका रवैया उनके प्रारंभ और चरित्र को प्रकट करेगा, आ. 1-3।

(आ) मसीह विरोधी के सांसारिक चिन्ह, आ. 4-6।

(8) ईश्वरीय प्रेम।

(अ) मनुष्य के हृदय में, नए जन्म का संकेत देता है, आ. 7।

(आ) मसीह के देहधारण और बलिदान-सम्बंधी काम में प्रकट हुआ था, आ. 8-10।

(इ) विश्वासियों में बने रहने से भाईचारे का प्रेम पैदा करता है, और मानवजाति के उद्धारकर्त्ता के रूप में मसीह की गवाही प्रेरित करता है, आ. 11-16।

(ई) जब सिद्ध हो जाता है, आश्वासन देता और डर को निकालता है, आ. 17-18।

(उ) परमेश्वर के लिए प्रेम और भाईचारे का प्रेम जगाता है, आ. 19-21।

III. संसार और सब दुष्ट शक्तियों के साथ संघर्ष में विश्वास और प्रेम जय पानेवाले सिद्धान्त।

अध्याय 5.

(1) प्रेमी आज्ञापालन का जीवन, आ. 1-3।

(2) विश्वास की जय, आ. 4-5।

(3) पृथ्वी और स्वर्ग में ईश्वरीय गवाह, आ. 6-9।

(4) आत्मा की गवाही, आ. 10।

(5) परमेश्वर के पुत्र के द्वारा अनन्त का वरदान, आ. 11-13।

(6) उत्तर पाई प्रार्थना की निश्चितता, आ. 14-15।

(7) एक पापी भाई से निपटना, आ. 16।

(8) विश्वासी का चार-गुणा ज्ञान, आ. 18-20।

यूहन्ना का दूसरा पत्र

लेखकः प्रेरित यूहन्ना।
किसे लिखा गया थाः "चुनी हुई महिला और उसके बच्चों" को। कुछ सोचते हैं कि यह इफिसुस में रह रही एक मसीही महिला और उसके बच्चों को लिखा गया था, दूसरे कि एक कलीसिया और उसके सदस्य का मानवीकरण है।
यदि पहला अनुमान सही है तो यह नए नियम की एकमात्र पुस्तक है जो एक महिला को सम्भोदित है।
जोरदार शब्दः प्रेम, जो चार बार पाया जाता है, और सत्य, पाँच बार।
उद्देश्यः पत्र स्पष्ट है मित्रों को अपसिद्धान्त और झूठे शिक्षकों के साथ संगति के विरुद्ध चेतावनी देने के लिए लिखा गया था, आ. 7-11।
सारांशः
मुख्य विषय, सत्य और भ्रम पर एक भाषण।

I. विश्वासियों के सम्बंध में ईश्वरीय सत्य।
    (1) उनको सहभागिता में जोड़ता है, आ. 1।
    (2) अनन्त के लिए उनमें बना रहता है, आ. 2।
    (3) प्रेम के साथ मिलकर, उनके अभिवादन की आत्मा की विशेषता दिखाता है, आ. 3।
    (4) जिस मार्ग पर वे चलते हैं उसकी ओर प्रेम सहित आज्ञापालन, आ. 4-6।
II. सांसारिक भ्रम।
    (1) बहुत सारे भरमानेवाले हैं, आ. 7।
    (2) मसीह के देहधारण का इन्कार करता है, आ. 7।
    (3) की रक्षा की जानी चाहिए, आ. 8।
    (4) मसीह की शिक्षाओं से दूर चला जाता है, आ. 9।
    (5) इसके अनुयायियों के साथ संगति का खतरा, आ. 10-11।
III. अन्तिम शब्द, आ. 12-13।

यूहन्ना का तीसरा पत्र

लेखकः प्रेरित यूहन्ना।
किसे सम्भोदितः गयुस, आ. 1।
मूल विचारः मसीही अतिथि-सत्कार।
सारांशः विषय वस्तु तीन व्यक्तियों पर केन्द्रित है, गयुस, दियुत्रिफेस, और दिमेत्रियुस, और कुछ सफरी सुसमाचार प्रचारक।

I. गयुस, जिसे यह पत्र लिखा गया है।
    (1) की पहचान। इसे सकारात्मक रूप से निर्धारित नहीं किया जा सकता है। नए नियम में इसी नाम के बहुत सारे लोग हैं जिनका उल्लेख हुआ है। एक जिसकी बात पौलुस रोमियों 16:23 में करता है वही व्यक्ति हो सकता है जिसे यूहन्ना लिख रहा है, परन्तु यह अनिश्चित है।
    (2) के गुण।
        (अ) यूहन्ना के स्नेह के योग्य, आ. 1-2।
        (आ) एक संगत मसीही, सत्य पर चलता है, आ. 3-4।
        (इ) अतिथि-सत्कार करता है, आ. 5-6।
II. दियुत्रिफेस, स्पष्ट है कलीसिया में एक अगुवा है।
    (1) आत्म-केन्द्रित और कट्टर, आ. 9।
    (2) दाख की बारी का मालिक समझता है, प्रेरित के आने पर फटकार पाएगा, आ. 10।
III. दिमेत्रियुस, दियुत्रिफेस की तुलना में, उत्तम नाम वाला एक आदर्श मसीही, आ. 12।
IV. मसीही सुसमाचार प्रचारक।
    (1) सफरी मसीही कार्यकर्त्ता मसीह की खातिर एक आभारी सेवा दे रहे हैं, आ. 7।

(2) हार्दिक स्वागत और अतिथि-सत्कार के योग्य, परन्तु अभिमानी दियुत्रिफेस उनके जमकर विरोध करता है, आ. 8-11।

V. अन्तिम अभिवादन, आ. 13-14।

यहूदा का पत्र

लेखकः सम्भवतः याकूब का भाई, यहूदा। यदि यह सत्य है तो वह हमारे प्रभु का भाई रहा होगा; मरकुस 6:3; गलातियों 1:19 देखो।

पहले तो प्रभु के भाइयों ने उस पर विश्वास नहीं किया, यूहन्ना 7:5; परन्तु पुनरुत्थान के बाद, वे उसके चेले बन गए, प्रेरितों 1:14। ऐसा सम्भव है कि यहूदा उसके शुरू के अविश्वास के कारण, अपने आपको प्रभु का भाई कहने के योग्य नहीं समझ रहा था। इसलिए पत्र में वह अपने आपको केवल एक सेवक कहता है, आ. 1।

मुख्य उद्देश्यः पत्र स्पष्ट है कलीसिया को अनैतिक शिक्षकों और भयप्रद अपसिद्धान्तों के विरुद्ध चेतावनी देने के लिए लिखा गया था जो विश्वासियों के विश्वास को जोखिम में डाल रहे थे।

मूल पाठः आ. 3-4।

सारांशः

(1) अभिवादन, आ. 1-2।

(2) पत्र का अवसर और विश्वास की रक्षा करने के विषय में एक उपदेश, जो अनैतिक और अपसिद्धान्ती शिक्षकों के घुस आने के कारण था, आ. 3-4।

(3) पूर्व में पापियों के साथ परमेश्वर के निपटाने के उदाहरण।

(अ) इस्राएल के अविश्वास के कारण दण्ड, आ. 5।

(आ) गिरे हुए स्वर्गदूतों और भ्रष्ट सदोमियों का भाग्य, आ. 6-7।

(4) अभक्त शिक्षकों की विशेषताएं बताई गई हैं, और उन पर एक हाय घोषित की गई है, आ. 8-13।

(5) भविष्यद्वाणियों की ओर संकेत।

(अ) हानोक की, जिसने अभक्त मनुष्यों के सर्वनाश की भविष्यद्वाणी की थी, आ. 14-16।

(आ) प्रेरितों की, अन्तिम दिनों में निन्दकों के विषय में, आ. 17-19।

(6) मसीही कर्तव्यों का एक सार।

(अ) आध्यात्मिक विकास और प्रार्थना करना, आ. 20।

(आ) परमेश्वर की ओर प्रेम और अनन्त उद्धार के लिए मसीह में भरोसा, आ. 21।

(7) आर्शीवाद, आ. 24-25।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक

लेखकः प्रेरित यूहन्ना।

स्थानः सम्भवतः पतमुस का टापु, जो एशिया मायनर के पश्चिमी तट के निकट है, जहाँ यूहन्ना को "परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही" के कारण भेज दिया गया था।

तिथिः अनिश्चित; परम्परा के अनुसार सन् 95 के लगभग।

अधिकारः इसे यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य कहा गया है, 1:1।

व्याख्या के तरीकेः ये अत्यन्त अलग-अलग प्रकार के और अकसर काल्पनिक रहे हैं। इस पुस्तक पर सैकड़ों पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं।

विषय वस्तु से निपट रहे चार प्रमुख विचार हुए हैं।

(1) भूतकाल के। विश्वास करते हैं कि प्रकाशितवाक्य की भविष्यद्वाणियाँ पूरी हो चुकी हैं।

(2) भविष्यवादी। मानते हैं कि पुस्तक में विश्वव्यापी इतिहास के भविष्य की बातें हैं।

(3) इतिहासवादी। पुस्तक की घटनाओं को कलीसिया के इतिहास, नए नियम से लेकर युग के अन्त तक के समय को प्रतीक के रूप में देखता है।

(4) ग्रहणशील, या आदर्शवादी। पुस्तक के आत्मिक सिद्धान्तों पर बल देता है और अधिक रहस्यवादी दर्शनों की विवरणों को सिद्धान्त बधारता नहीं है।

यह प्रकार विश्वास करता है कि प्रकाशितवाक्य में तीन प्रकार के अनुच्छेद हैं; जो उनकी आत्मिक शिक्षा में बहुत स्पष्ट हैं; जो अधिक रहस्यमय हैं, फिर भी उनमें सत्य का एक तत्त्व है जो शिक्षा देता है; और जो इतने अस्पष्ट हैं कि हमारे वर्तमान ज्ञान से उनको सकारात्मक व्याख्या देना व्यर्थ है।

ऐसा सम्भव है कि कुछ भविष्यद्वाणियों में दो तत्त्व हैं, निकट के और दूर के। पहले में विशेषकर यूहन्ना के समय या उसके तुरन्त बाद की घटनाएँ हैं; दूसरा आनेवाले युग की घटनाओं से निपटता है।

विशिष्ठ तत्त्वः

(1) प्रकाशितवाक्य बाइबल की एकमात्र पुस्तक है जिसमें पढ़नेवालों के लिए एक विशेष प्रतिज्ञा है (1:3) और साथ में उन पर एक शाप घोषित करती है जो इसकी विषय वस्तु में हेरा-फेरी करते हैं, 22:18-19।

(2) सात पुस्तक का प्रमुथ अंक है।

सात दीवट, कलीसियाएँ, मोहरें, स्वर्गदूत, तुरहियाँ, गर्जन, धूपदान, आत्माएँ, तारे, आदि।, और सात "न होगा"।

(3) प्रकाशितवाक्य के अन्तिम अध्याय उत्पत्ति के प्रारंभिक अध्यायों से कितने उलटे हैं।

उत्पत्ति की पुस्तक सूर्य की सृष्टि, पाप का संसार में आने, शाप को घिषित किया जाने, शैतान की विजय, और "जीवन के वृक्ष" से दूर किए जाने की बात करती है।

प्रकाशितवाक्य उस स्थान की बात करती है जहाँ सूर्य की कोई आवश्यकता नहीं होगी, जहाँ पाप नहीं है, जहाँ से शाप चला गया है, शैतान उखाड़ा गया है, और "जीवन के वृक्ष" के निकट जाया जा सकता है।

अध्ययन की योजना

हालाँकि यह पुस्तक इसके रहस्यमय चरित्र के कारण अकसर अनदेखी की गई है, बहुत सारे दृष्टिकोण हैं जिनका सैद्धान्तिक या निरंकुश व्याख्या की कोशिश किए बिना अध्ययन किया जा सकता है। यदि पुस्तक कूट-भाषा में लिखी गई है तो हम एक कुंजी पा लेने का कोई दावा नहीं करते जो इसके रहस्यों को खोलेगा।

हम निम्नलिखित विषय का सुझाव देते हैं जिसकी लाभपूर्वक खोज करनी चाहिए।

सुझावित विषयः युगों का नैतिक और आत्मिक संघर्ष।

केन्द्रीय रूप। मेम्ना, दुष्ट की सारी शक्तियों पर आकिरकार विजय। मेम्ने का तीस बार से भी अधिक बार उल्लेख है।

युगों की घटनाएँः पुस्तक में ऐसी बहुत सारी घटनाएँ; हम दो का सुझाव देते हैं, जिनको दर्शनों का अध्ययन करते समय मन में रखना चाहिए।

(1) मानव-बच्चे का जन्म, जिसे बहुत सारे यीशु मसीह का देहधारण मानते हैं, अध्याय 12।

(2) सातवीं तुरही का फूँका जाना (11:15), जो उसकी विश्वव्यापी विजय की घोषणा करता है।

सारांशः

पुस्तक को दर्शनों की एक श्रँखला में बाँटा जा सकता है, जिनमें से कुछ आंशिक या पूर्ण रूप से गुप्त हैं; दूसरे उनकी शिक्षा में अपेक्षाकृत स्पष्ट हैं। यह सदा बता पाना कि कहाँ एक दर्शन समाप्त होता और दूसरा आरम्भ होता आसान नहीं है, परन्तु सुविधा के लिए उनको विभिन्न अंकों के अधीन अध्ययन किया जा सकता है, अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार।

अध्याय 1.

(1) परिचय और आज्ञाकारी पाठकों के लिए प्रतिज्ञा, आ. 1-3।

(2) यूहन्ना और महामयुक्त मसीह का अभिवादन, आ. 4-8।

दर्शन I.

(1) महिमायुक्त मसीह का, आ. 9-16।

(2) सात कलीसियाओं को लिखने की उसकी आज्ञा, आ. 19।

(3) कलीसियाओं को संदेश, अध्याय 2-3।

अध्याय 2.

(अ) इफिसुस को, धर्मत्यागी कलीसिया, सेवा में दृढ़, अनुशासन में मजबूत, परन्तु प्रेम ठंडा हो रहा है, आ. 1-2।

(आ) स्मुरना को, निर्धन परन्तु सच में धनी कलीसिया, सताव के समय में से गुज़र रही है, आ. 8-11।

(इ) पिरगमुन को, एक बुरे वातावरण में कलीसिया, दृढ़, परन्तु अपसिद्धान्तों से भरी हुई, आ. 12-17।

(ई) थुआतीरा को, भले कामों वाली कलीसिया, परन्तु एक झूठी भविष्यद्वक्तिन को सहन कर रही है, आ. 18-29।

अध्याय 3.

(उ) सरदीस को, मर रही कलीसिया, आ. 1-6।

(ऊ) फिलदिलफिया को, निर्बल, परन्तु विश्वासयोग्य कलीसिया, आ. 7-13।

(ए) लौदीकिया को, गुनगुनी, आत्म-संतुष्ट कलीसिया, अपने धन का घमंड जबकि अभागी, कंगाल और अंधी है, आ. 14-22।

आवर्तक विचार, जय पानेवालों के लिए प्रतिज्ञा।

दर्शन II. -- कुछ अंश तक गुप्त।

अध्याय 4.

(1) परमेश्वर का उसके सिंहासन पर स्वर्ग में दर्शन, सृष्टि का सिरजनहार, जीवित प्राणियों और चौबीस प्राचीनों की आराधना ले रहा है, आ. 1-11।

अध्याय 5.

(2) मेम्ने की सात मुहरों वाली पुस्तक का खोला जाना, नया गीत गाया जाना, और मेम्ने की सारी सृष्टि में आराधना।

अध्याय 6.

(3) छः मुहरों का खोला जाना, (गुप्त), आ. 1-17। बहुत सारी विभिन्न व्याख्याएँ हैं, एक और जोड़ना ठीक नहीं होगा। एक स्पष्ट सबक, आ. 9-11, कि विश्वासियों को ईश्वरीय देरी द्वारा परखा जाता है।

दर्शन III. -- कुछ अंश तक गुप्त।

अध्याय 7. आ. 1-8, सुझावित विचार, परमेश्वर की उसके चुने हुए लोगों के लिए सुरक्षा।

दर्शन IV. -- अध्याय 7. शांति देनेवाले आश्वासन।

(अ) उद्धार पाए हुओं के असंख्य झुंड, आ. 9-10।

(आ) जिन साधनों के द्वारा वे परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट होते हैं, आ. 13-15।

(इ) उनकी क्रियाएँ और अनन्त आनन्द, आ. 15-17।

दर्शन V. -- कुछ अंश तक गुप्त।

अध्याय 8. महत्त्वपूर्ण घटना, सातवीं मुहर का खुलना, स्वर्ग में सन्नाटा छा जाता है, आ. 1।

सम्भव व्याख्या। स्वर्गदूतों का सारा संगीत और आवाजें चुप हो जाती हैं इस तथ्य से कि सातवीं मुहर के समय में, मसीह उसके पृथ्वी के मिशन के लिए जाने वाला था।

यह पूरी तरह काल्पनिक नहीं है। समय का पूरा होना निकट आ रहा था, 10:6। यदि यह व्याख्या सही है, तो 8:1 में, हम उद्धार के ईश्वरीय योजना के साधनों के बिलकुल निकट हैं और हम अध्याय 12 में मानव-बच्चे के जन्म से सम्बंधित घटनाओं को देखेंगे। 8:3-4 में, विचार पाया जाता है कि सन्तों की प्रार्थनाएँ मसीहा के राज्य के आने के लिए परमेश्वर की ओर ऊपर जा रही हैं।

अध्याय 9. तब दर्शन का एक आंशिक भाग आता है, छः तुरहियों का फूँका जाना, अध्याय 8 और 9, स्पष्ट है आनेवाले न्यायों की घोषणा करते हैं।

दर्शन VI. -- कुछ अंश तक गुप्त. -- अध्याय 10 और 11।

कुछ और भी कहा जा सकता है कि घटनाएँ समापन की ओर बढ़ रही हैं। इसका संकेत शक्तिशाली स्वर्गदूत की घोषणा से मिलता है (10:5-7), कि अब देरी नहीं होगी, परन्तु भविष्यद्वक्ताओं द्वारा जिस सुसमाचार की बात की गई थी पूरी होने वाली है।

इतनी सारी व्याख्याओं के बीच अध्याय 10 की छोटी पुस्तक और अध्याय 11 के दो गवाहों की व्यख्या देना जोखिम भरा है। क्योंकि ये दोनों अध्याय 12 में मानव-बच्चे के जन्म के बिलकुल पहले हैं, वे मसीह के आने के पहले के भविष्यद्वक्ताओं के समय की बात कर रहे होंगे।

सम्भवतः अध्याय 12-20 में कुछ अंश तक गुप्त दर्शन हैं जो महान मसीहा के युद्ध से जुड़े हैं।

दर्शन VII. -- अध्याय 12 और 13। महान युगान्तर घटना।

मानव-बच्चे, मसीह का जन्म, और उसे नष्ट करने के लिए खड़ीं शैतानी शक्तियों का प्रदर्शन। इस दृष्टिकोण की सफाई यह है कि मसीह के पृथ्वी के जीवन के दौरान अन्धकार की शक्तियाँ काफी हरकत में थीं। बच्चे यीशु को नष्ट करने की हेरोदेस की कोशिश, असंख्य दुष्टात्माग्रस्त घटनाएँ, और अहितकर विरोध जिसके कारण मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया।

रहस्यों का कुछ भी विस्तार से व्याख्या नहीं दी गई है परन्तु आत्मिक हथियारों की ओर ध्यान खींचा गया है जिनके द्वारा जय पाई जाने वाली थी, 12:11।

दर्शन VIII. -- कुछ अंश तक गुप्त.

अध्याय 14. आ. 1-13। बिना व्याख्या के खींचातानी के, कहा जा सकता है कि यह अध्याय मेम्ने और उसके शत्रुओं के बीच आने वाले युद्ध का भविष्यसूचक सार है।

यदि इस दृष्टिकोण को स्वीकार किया जाता है तो, पहली पाँच आयतों में एक लाख चवालिस हज़ार पुराने नियम के विशिष्ट विश्वासियों को दर्शाता है; आयतें 6-7 सारे विश्व में मिशनरी के काम का खोला जाना है; आ. 8-11 अन्तिम विजय की प्रारंभिक घोषणा है; और आ. 12-13 विश्वास में मरे हुओं की धन्यता है।

दर्शन IX. -- कुछ अंश तक गुप्त।

अध्याय 14। फसल और अंगूरों का संचयन, आ. 16-20।

दर्शन X. -- कुछ अंश तक गुप्त -- अध्याय 15।

(1) शुरू वाले वियजी और उनके गीत, आ. 1-4।

(2) सात स्वर्गदूत और सोने के कटोरे, आ. 5-8।

अध्याय 16। प्रकोप के सात कटोरों का उँडेला जाना, आ. 1-21।

दर्शन XI. -- गुप्त।

अध्याय 17 और 18। बेबिलोन का सर्वनाश, व्यभिचारी नगर, और मेम्ने के शत्रु जिनको वह जीत लेता है।

दर्शन XII. -- अध्याय 19।

(1) स्वर्ग में हालेलुया गीत जो आत्मिक जय को मनाता है, आ. 1-16।

(2) मेम्ने का विवाह, आ. 7-9।

दर्शन XIII.

(1) आत्मिक विजयी मसीह, जो सफेद घोड़े पर सवार है देशों को आत्मा की तलवार से मानता है, 19:11-16।

(2) कुछ अंश तक गुप्त। पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता और उनकी सेना को मसीह जीत लेता है।

दर्शन XIV. -- कुछ अंश तक गुप्त -- अध्याय 20।

(1) शैतान का बाँधा जाना, आ. 1-3।

(2) पहला पुनरुत्थान, आ. 4-6।

(3) शैतान छोड़ा गया, और उसके बुरे काम, आ. 7-9।

(4) शैतान, पशु, और झूठे भविष्यद्वक्ता का सर्वनाश, आ. 10।

(5) अन्तिम न्याय, आ. 11-15।

दर्शन XV.

अध्याय 21-22। नया स्वर्ग और नई पृथ्वी। पवित्र नगर, कलीसिया का प्ररूप, मेम्ने की पत्नी।

अध्याय 21। विशेषताएँ: स्वर्गीय प्रारंभ, 21:2; तेजस्वी, आ. 11; अलग और सुरक्षित, आ. 12; अभिगम्य, आ. 13; पक्की नींव, आ. 14; अटल, आ. 16; सुन्दर सँवरी हुई, आ. 18-21; एक आत्मिक मंदिर है, आ. 22; ईश्वरीय रूप से प्रकाशमान, आ. 23-25; महिमा पाई हुई, आ. 26; निष्कलंक, आ. 27।

अध्याय 22। स्वर्ग मिल गया। जीवन की नदी के विशेष चिन्ह, आ. 1; जीवन का वृक्ष, आ. 2; शाप का निकाला जाना, आ. 3; परमेश्वर के दर्शन और सन्तों के माथों पर उसका नाम, आ. 4; अनन्त दिन और सन्तों का शासन, आ. 5।

अन्तिम शिक्षाएँ, विश्वसनीय और सत्य, आ. 6; प्रभु के सन्निकट लौटने पर बल, आ. 7; केवल परमेश्वर की आराधना हो, आ. 11; अन्तिम प्रतिज्ञा, आ. 14; अन्तिम निमंत्रण, आ. 17; अन्तिम चेतावनी, आ. 18-19।

आर्शीवाद और प्रार्थना, आ. 21।

==

यह कुल 16 पुस्तकों के एक सेट की पुस्तक क्र. 6 है

इसका अध्ययन मिनिस्ट्री और ट्रेनिंग कोर्स में होना है, जो "केवल एक बार" का कोर्स है - Project of M.L.T.C. Ministries.

(केवल निजि वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - "केवल एक बार" प्राजक्ट का एक अंश)

दॅ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी, पी. ओ. बॉक्स 19106, वरली, मुम्बई - 400 030

+ या ईमेल करें : **mltc_ministries@yahoo.com**